ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1116/1052-54/છ, તા.28/11/2016 –થી મંજૂર

हिन्दी

(द्वितीय भाषा)

कक्षा 12

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर-382010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं। इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय परामर्शन

डॉ. रघुवीर चौधरी

लेखन-संपादन

डॉ. एच.एन. वाघेला (कन्वीनर)
डॉ. रामगोपाल सिंह जादोन
डॉ. उर्मिला विश्वकर्मा
डॉ. हेमंत ओझा
डॉ. एम.डी. प्रजापति
डॉ. अमृतभाई प्रजापति
डॉ. जल्पा क्याड़ा
डॉ. वीरभद्रसिंह राओल

समीक्षा

डॉ. अर्जुन तडवी
डॉ. योगेन्द्रनाथ मिश्रा
डॉ. प्रीति राठौड
श्री सुनिता त्रिवेदी
श्री प्रभातसिंह मोरी

संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गये नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 12 हिन्दी (द्वितीय भाषा)** की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सन्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नई पाठ्यपुस्तक की हस्तप्रत निर्माण में एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यो के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नई पाठ्यपुस्तकों गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय, इसके लिए संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयास किया है ।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रसिद्ध करने से पहले इसी विषय के विषय विशेषज्ञों तथा इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों द्वारा सवाँगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजुरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुरूप इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रकाशित किया गया हैं ।

नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खुबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सिखें, इस लिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रूचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है ।

एच. एन. चावडा	**डॉ. नीतिन पेथाणी**
नियामक	कार्यवाहक प्रमुख
दिनांक : 19-1-2017	**गांधीनगर**

प्रथम आवृत्ति : 2017

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -*

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले,

(ट) माता-पिता अथवा अभिभावक 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के अपने बालक या पाल्य को शिक्षण के सुअवसर प्रदान करे।

***भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क**

अनुक्रमणिका

1.	कृष्ण-भक्ति होरी खेलत हैं गिरधारी	(पद)	मीराबाई	1
2.	नमक का दारोगा	(कहानी)	मुंशी प्रेमचन्द	3
•	**प्रयोजन मूलक हिन्दी : पुस्तकालय का महत्त्व व उपयोगिता**			10
3.	कान्ह भए बस बांसुरि के	(सवैया)	रसखान	12
4.	अकेली	(कहानी)	मन्नू भण्डारी	14
•	**प्रयोजनमूलक हिन्दी : सूचना प्राद्योगिकी**			20
5.	भारत शिररत्न : भरत	(कविता)	जयशंकर प्रसाद	25
6.	घर	(निबन्ध)	भोलाभाई पटेल	27
•	**प्रयोजन मूलक हिन्दी शब्दावली : विश्वकोश, थीसौरस परिचय और उपयोग**			31
7.	बादल को घिरते देखा है	(कविता)	नागार्जुन	37
8.	चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग	(आत्मकथांश)	महात्मा गांधी	39
•	**प्रयोजन मूलक हिन्दी : डाक घर से संबंधित प्रपत्र**			42
9.	बाढ़ की संभावनाएँ	(ग़ज़ल)	दुष्यंतकुमार	50
10.	कारतूस	(एकांकी)	हबीब तन्वीर	52
•	**प्रयोजनमूलक हिन्दी : उपभोक्ता न्यायालय में शिकायत करना**			56
11.	जो बीत गई सो बात गई	(कविता)	हरिवंशराय बच्चन	59
12.	रेडियम की आत्मकथा	(विज्ञान कथा)	महावीरप्रसाद द्विवेदी	62
•	**प्रयोजनमूलक हिन्दी : आधुनिक मुद्रण तकनीक**			66
13.	महाप्रस्थान	(खंडकाव्यांश)	नरेश महेता	69
14.	सुभाष मानव : सुभाष महामानव	(रेखाचित्र)	माखनलाल चतुर्वेदी	74
•	**प्रयोजनमूलक हिन्दी : भारत वर्ष के पर्यटन स्थल एवं टुरिस्ट गाईड**			78
15.	बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ	(कविता)	रामदरश मिश्र	84
16.	एक और जन्मदिन	(व्यंग्य लेख)	हरिशंकर परसाई	86
•	**व्याकरण : शब्द भंडार, शब्दनिर्माण**			90
17.	नींव की ईंट हो तुम दीदी	(कविता)	उदय प्रकाश	99
18.	मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	(निबंध)	विद्यानिवास मिश्र	103
•	**व्याकरण - वाक्य विचार, वाक्य अशुद्धि शोधन, विराम चिह्न**			109
19.	कैलेंडर	(कविता)	सूरज बड़त्या	129
20.	मनोहरपुरी की सीमा पर	(उपन्यास-अंश)	गोवर्धनराम त्रिपाठी	131

पूरक वाचन

1.	वापसी	(कहानी)	उषा प्रियंवदा	135
2.	दो कलाकार	(एकांकी)	भगवतीचरण वर्मा	141
3.	दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो	(गीत)	गोपालदास, नीरज	146
4.	मैं एक मजदूर	(कविता)	फूलचन्द गुप्ता	148

•

1	# कृष्ण-भक्ति

मीराबाई

(जन्म : सन् 1498, मृत्यु : सन् 1563 ई.)

मीराबाई का जन्म जोधपुर के कुकड़ी गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के परिवार में हुआ था । उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के कुँवर भोजराज से हुआ था । विवाह के कुछ साल बाद पहले पति, फिर पिता और एक युद्ध के दौरान श्वसुर का भी देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने अपना अधिकांश समय श्रीकृष्ण भक्ति और साधु-संतों के सत्संग में बिताना शुरू किया। भौतिक जीवन से निराश मीरा ने अपना घर त्याग दिया और वृंदावन में डेरा डाल पूरी तरह कृष्ण की भक्तिभावना में लीन हो गई। जीवन के उत्तरार्ध में द्वारका में ही उनका स्वर्गवास हुआ।

मीरा की भक्ति मूलतः माधुर्यभाव की भक्ति है। उनके पदों में कहीं-कहीं दास्य-दैन्यभाव की छाया भी परिलक्षित होती है। मीरा के द्वारा गाये गए विरह के गीत भारतीय साहित्य की अनमोल निधि हैं। मीरा के पद सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हैं। मीरा हिन्दी और गुजराती दोनों की कवयित्री मानी जाती हैं। उनके पदों की भाषा में राजस्थानी ब्रज और गुजराती का मिश्रण पाया जाता है। संत रैदास की शिष्या मीरा की कुल सात-आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। उनकी रचनाएँ 'मीरा पदावली' नाम से उपलब्ध हैं।

प्रथम पद में कृष्ण के वियोग से तड़पती मीरा के मनोभावों का सटीक चित्रण किया गया है। कृष्ण के बगैर मीरा को कुछ भी अच्छा नहीं लगता। कृष्ण का दर्शन पाने को व्याकुल मीरा उनके दर्शन न होने पर बहुत दुःखी हैं।

दूसरे पद में कृष्ण गोपियों तथा राधा के साथ ब्रज में होली खेलते हैं उस अवसर का मीरा ने बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है।

---

(1)

हरि बिन कछु न सुहावै।
परम सनेही राम की नीति ओलूँरी आवै।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावै
आवण कह गए अजहुँ न आये; जिउड़ा अति उकलावै।
तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिलावै।
चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुःख पावै।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, आणंद बरण्यूँ न जावै।

(2)

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारौ, संग जुवति ब्रजनारी।
चंदन केसर छिरकत मोहन अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ देत सबन पै डारी।
छैल छबीले नवल कान्ह संग स्यामा प्राण पियारी।
गावत चार धमार राग तहँ दै दै कल करतारी।
फागु जु खेलत रसिक साँवरी बाढ़यौ रज ब्रज भारी।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर मोहनलाल बिहारी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ओलूँरी माफिक, अनुकूल **अजहुँ** आज भी, अभी भी **जिउड़ा** जीव, मन, हृदय **उकलावै** बेचैन होता है **चरण कँवल** चरण रुपी कमल **चंग** चमड़ा मढ़ा एक बाजा, जो हाथ से बजाया जाता है **डफ** चमड़ा मढ़ा एक बाजा, जो लकड़ी से बजाया जाता है यह चंग से बड़ा होता है। **छिरकट** छिड़कते हैं **छैलछबीला** अत्यंत सुंदर, बहुत आकर्षक **धमार** फाग या होली गीत का एक राग ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) 'ओलूँरी' का क्या अर्थ है :-

(क) विरोधी (ख) माफिक (ग) कौतूहल (घ) विनय

(2) किसके बिना मीरा को कुछ भी नहीं सुहाता?

(क) राम (ख) कृष्ण (ग) हरि (घ) शंकर

(3) कृष्ण अपने हाथों से गोपियों पर क्या डालते हैं?

(क) रंग (ख) अबीर (ग) गुलाल (घ) चंदन-केसर

(4) कान्ह के संग कौन विराजमान है?

(क) ग्वालबाल (ख) यशोदा (ग) स्यामा अर्थात् राधा (घ) नंद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) मीरा को किसने आने के लिए कहा है?

(2) कृष्ण क्या कर रहे हैं?

(3) कृष्ण के साथ कौन-कौन होली खेल रहा है?

(4) कृष्ण किस राग में गीत गा रहे हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) मीरा को हृदय क्यों व्याकुल हो उठा है?

(2) मीरा क्यों दुखी हैं?

(3) कृष्ण कैसे होली खेल रहे हैं?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(2) ब्रज में कृष्ण द्वारा होली खेलने का वर्णन कीजिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विधार्थी प्रवृत्तिः** मीरा के अन्य पदों को याद कर कक्षा में सुनाइए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** मीरा के पदों के कैसेट अथवा सी.डी. प्राप्त कर सुनिए और कक्षा में सुनाइए।

⊙

2	# नमक का दारोगा

प्रेमचंद

(जन्म : सन् 1880, मृत्यु : सन् 1936 ई.)

प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। जीवन संघर्ष में जूझते हुए वे एक स्कूल अध्यापक से ऊपर उठकर स्कूलों के सब - इन्स्पेक्टर पद पर भी आसीन हुए थे। वे कुछ समय तक काशी विद्यापीठ में भी अध्यापक रहे। उन्होंने कई साहित्यिक पत्रों का सम्पादन किया जिनमें 'हंस' प्रमुख था। आत्म गौरव के साथ उन्होंने साहित्य के उच्च आदर्शों की रक्षा का प्रयत्न किया।

प्रेमचन्द के उपन्यास तथा कहानियाँ हिन्दी साहित्य की धरोहर हैं। 'गोदान', 'निर्मला', 'गबन', 'सेवासदन', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं तथा उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित है।

प्रस्तुत कहानी समाज की यथार्थ स्थिति को उद्घाटित करती है। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति हैं। पण्डित अलोपीदीन दातागंज के सबसे अधिक अमीर और इज्जतदार व्यक्ति थे। उन्होंने धन के बल पर सबको गुलाम बना रखा था। वह पैसे कमाने के लिए नियम विरुद्ध कार्य करता है। दारोगा वंशीधर उनकी नमक की गाड़ियाँ पकड़ लेता है। उनके प्रलोभन को वह ठुकराता है। उनको अदालत में ले जाता है, लेकिन वकील और प्रशासनिक अधिकारी ने उसे निर्दोष साबित कर दिया और वंशीधर को नौकरी से बेदखल कर दिया। अंत में पण्डित अलोपीदीन बंशीधर के घर जाकर माफी मांगते हैं और अपने कारोबार में स्थाई मैनेजर बना देते हैं। वंशीधर की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के आगे नतमस्तक हो जाते हैं।

जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वरदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़ कर लोग इस विभाग की बरकन्दाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का जी भी ललचता था। यह वह समय था जब अँगरेजी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और श्रृंगाररस के काव्य पढ़कर फारसीदाँ लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर भी जुलेखा की विरह-कथा समाप्त करके मजनू और फरहाद के प्रेम-वृत्तान्त को नल और नील की लड़ाई और अमेरिका के आविष्कार से अधिक महत्त्व की बातें समझते हुए रोजगार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, ''बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगार पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह, चढ़ावे और चादर पर रखना चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना, जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखायी देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है; इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ, इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर देखो, उसके उपरान्त जो उचित समझो, करो। गरज वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ-ही-लाभ है। लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्म भर की कमाई है।''

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया । वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथदर्शक और आत्मावलम्बन ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते-ही-जाते नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गये। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशीजी को सुख-संवाद मिला तो फूले न समाये। महाजन लोग कुछ नरम पड़े, कलवार की आशालता लहलहाई। पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

2

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ

आये अभी छः महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस समय में ही उन्होंने अपनी कार्य-कुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बन्द किये मीठी नींद सो रहे थे। अचानक आँख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गये गाड़ियाँ क्यों नदी के पार जाती हैं? अवश्य कुछ-न-कुछ गोलमाल है । तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वरदी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात-की-बात में घोड़ा बढ़ाये हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लम्बी कतार पुल के पार जाते देखी। डाँट कर पूछा, ''किसकी गाड़ियाँ हैं?''

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई, तब आगे वाले ने कहा, ''पण्डित अलोपीदीन की।''

''कौन पण्डित अलोपीदीन?''

''दातागंज के।''

मुंशी वंशीधर चौके। पण्डित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपये का लेन-देन करते थे। इधर छोटे से बड़े कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों। व्यापार भी बड़ा लम्बा-चौड़ा था। बड़े चलते-पुरजे आदमी थे। अंगरेज अफसर उनके इलाके में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशीजी ने पूछा, 'गाड़ियाँ कहाँ जायेंगी ?' उत्तर मिला, 'कानपुर।' लेकिन इस प्रश्न पर कि इसमें है क्या, फिर सन्नाटा छा गया । दारोगा साहब का सन्देह और भी बढ़ा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देख कर वह जोर से बोले, 'क्या तुम सब गूँगे हो गये हो? हम पूछते हैं, इनमें क्या लदा है?'

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला, तो उन्होंने घोड़े को गाड़ी से मिला कर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के ढेले थे।

3

पण्डित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार कुछ सोते कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवाले घबराये हुए आकर जगाया और बोले, 'महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।'

पण्डित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं नचाती हैं। लेटे-ही लेटे गर्व से बोले, 'चलो हम आते हैं।' यह कह कर पण्डितजी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगा कर खाये। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले, 'बाबूजी, आशीर्वाद! कहिये, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।'

वंशीधर रुखाई से बोले, 'सरकारी हुक्म!'

पं. अलोपीदीन ने हँसकर कहा, 'हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावे। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।' वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़क कर बोले, 'हम उन नमकहरामों में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। सबेरे आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।'

पं. अलोपीदीन स्तम्भित हो गये। गाड़ीवानों में हलचल मच गयी। पण्डितजी के जीवन में कदाचित् यह

पहला ही अवसर था कि पण्डितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलू सिंह आगे बढ़ा, किन्तु रोब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पण्डितजी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दंड लड़का है। माया-मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीन-भाव से बोले, ''बाबू साहब, ऐसा न कीजिए, हम मिट जायेंगे ! इज्जत धूल में मिल जायगी। हमारा अपमान करने से आपके क्या हाथ आयेगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं!''

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा, ''हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते हैं।''

अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और धन ऐश्वर्य को कड़ी चोट लगी। किन्तु अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले, ''लालाजी, एक हजार के नोट बाबू साहब को भेंट करो। आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।''

वंशीधर ने गरम होकर कहा, ''एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।''

धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछलकर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पन्द्रह और पन्द्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा रहा था।

अलोपीदीन निराश होकर बोले, ''अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।''

वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा। बदलू सिंह मन में दारोगाजी को गालियाँ देता हुआ पण्डित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पण्डितजी घबड़ाकर दो-तीन कदम पीछे हट गये। अत्यन्त दीनता से बोले, ''बाबू साहब, ईश्वर के लिये मुझ पर दया कीजिये, मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने को तैयार हूँ।''

''असम्भव बात है।''

''तीस हजार पर?''

''किसी तरह सम्भव नहीं।''

''क्या चालीस हजार पर भी नहीं?''

''चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असम्भव है। बदलू सिंह इस आदमी को हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।''

धर्म ने धन को पैरों-तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियाँ लिये हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराशा और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद यकायक मूर्छित होकर गिर पड़े।

4

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सबेरे ही देखिए तो बालक-वृद्ध सब के मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए वही पण्डितजी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था; निन्दा की बौछारें हो रही थीं; मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पण्डित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गयी। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी। पण्डित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी-वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञा-पालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य-साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, क्यों वह कानून के पंजे में आवे। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति

प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट-भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किन्तु लोभ से डावाँडोल।

यहाँ तक कि मुंशीजी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ दीख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था, परन्तु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। किन्तु पक्षपात और न्याय का क्या मेल? जहाँ पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना भी नहीं कही जा सकती। मुकद्दमा शीघ्र ही समाप्त हो गया। डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने अपनी तजवीज में लिखा, पण्डित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना से बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उनकी उद्दण्डता और विचारहीनता के कारण एक भलेमानुस को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम में सजग और सचेत रहता है, किन्तु नमक के महकमे की बढ़ी हुई नमकहलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।

वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पण्डित अलोपीदीन मुस्कुराते हुए बाहर निकले। स्वजन-बान्धवों ने रुपयों की लूट की! उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंग्य-बाणों की बर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुक कर सलाम किये। किन्तु इस समय एक-एक कटु-वाक्य एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कदाचित इस मुकद्दमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लम्बी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।

वंशीधर ने धन से वैर मोल लिया था। उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्यपरायणता का दंड मिला। बेचारे भग्नहृदय, शोक-खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। बस मनमानी करता है। हम तो कलवार कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनख्वाह! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोल कर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अन्धेरा, मस्जिद में अवश्य दीया जला देंगे। खेद है ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरवस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने यह समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले, जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता-पछता कर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दुख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गयीं। पत्नी ने तो कई दिन तक सीधे मुँह से बात भी नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। सन्ध्या का समय था। बूढ़े मुंशीजी बैठे राम-नाम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर एक सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी परदे, पछहियें बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दनों में नीले धागे, सींगें पीतल से जड़ी हुईं। कई नौकर लाठियाँ कन्धों पर रखे साथ थे। मुंशीजी अगवानी को दौड़े। देखा तो पण्डित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत् की और लल्लो-चप्पो की बातें करने लगे, ''हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आये। आप हमारे पूज्य देवता हैं। आपको कौन-सा मुँह दिखावें मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किन्तु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर नि:सन्तान चाहे रक्खे, पर ऐसी सन्तान न दे।''

अलोपीदीन ने कहा - नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए।

मुंशीजी ने चकित होकर कहा - ऐसी सन्तान को और क्या कहूँ?

अलोपीदीन ने वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा! कुलतिलक और पुरुषों को कीर्ति उज्जवल करनेवाले संसार

में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं, जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें?

पं. अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा – 'दारोगाजी, यह खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से मुझे अपनी हिरासत में लिया था, किन्तु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखे, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा; किन्तु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बना कर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूँ।'

वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया, किन्तु स्वाभिमान सहित। समझ गये कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आये हैं। क्षमा-प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरना उन्हें अपने पिता की यह ठकुरसुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पण्डितजी की बातें सुनीं, तो मन की मैल मिट गयी। पण्डितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्माते हुए बोले, 'यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर।'

अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा – 'नदी के तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी, किन्तु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।'

वंशीधर बोले, – 'मैं किस योग्य हूँ किन्तु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है उसमें त्रुटि न होगी।'

अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले – 'इस पद को स्वीकार कीजिए और अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा, द्वार से न हटूँगा।'

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढ़ा, तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आये। पण्डित अलोपीदीन ने उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छ हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बँगला, नौकर-चाकर मुक्त। कल्पित स्वर से बोले – 'पण्डितजी, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी इस उदारता की प्रशंसा कर सकूँ! किन्तु मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ।

अलोपीदीन हँस कर बोले-मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।'

वंशीधर ने गम्भीर भाव से कहा, यों मैं आपका दास हूँ। आप जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। किन्तु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह अनुभव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले, 'न मुझे विद्वत्ता की चाह है न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और अवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है, जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए; अधिक सोच विचार मत कीजिए; दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बेमुरौवत, उद्दण्ड, कठोर परन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।''

वंशीधर की आँखें डबडबा आयीं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना अहसान न समा सका। कई बार फिर पण्डितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर पर दिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ग्लानि लज्जा, क्षोभ **अगाध** अपार **वाचालता** वाक्छटा **शीघ्र** तत्काल **तजवीज** कार्यवाही **भ्रमात्मक** अस्पष्ट **कीर्ति** यश **कृतज्ञता** उपकार **मर्मज्ञ** मन की बात जानकर **ईश्वरदत्त** ईश्वर का दिया हुआ; प्राकृतिक **छल-प्रपंच** धोखाधड़ी **सूत्रपाता** आरंभ, शुरुआत **पटवारीगिरी** पटवारी यानी लेखपाली का काम, गाँव की जमीन तथा उसके लगान का

हिसाब रखनेवाला सरकारी कर्मचारी पटवारी या लेखपाल होता है **बरकंदाजी** चौकादारी, जी-हजूरी **प्राबल्य** प्रबलता, बोलबाला, **फारसीदाँ** फारसी जाननेवाला **जुलेखाँ** एक प्रसिद्ध प्रेमकथा की नायिका **आविष्कार** किसी नई चीज की खोज **कगार** नदी का खड़ा किनारा **ओहदा** पद **वीर की मजार** पूजा की वस्तु **ऊपरी आय** रिश्वत **उपरी आय** रिश्वत **बरकत** वृद्धि, बढ़ना **गरज** जरुरत, लाचारी **बेगरज** जो लाचार न हो **शकुन** शुभ धड़ी **कलवार** पुराने समय की शराब बचनेवाली एक जाति **गोलमाल** गड़बड़ **सन्नाटा** एकदम शांति **कानाफूसी** एक दूसरे के कान में फुसफुसा का बात कहना **चलता-पुरजा** बहुत प्रभावशाली **सदाव्रत** गरीबों को मुफ्त में खाना खिलाना **सजीला** सजा हुआ **ऐश्वर्य** धन-दौलत **हिरासत** गिरफतारी **स्तंभित होना** चकित होना **रोब** प्रभाव, दबदबा, दबाव, **उद्दंड** किसी की लिहाज या अदब न करनेवाला **झिझकना** संकोच करना **सांख्यिक शकित** संख्या का बल, **मुख्तार** अधिकारी या कर्मचारी, **मूर्छित** बेहोश **रोजनामचा** रोज के क्रिया-कलाप, हिसाब आदि लिखने की किताब **अभियुक्त** आरोपी, जिस पर किसी अपराध का आरोप लगा हो **ग्लानि** अपने किसी अनुचित कार्य पर उत्पन्न खेद (दुख) पश्चाताप **अदालत** कचहरी **गहन** वन, बहुत विस्तृत वन **विस्मित** आश्चर्यचकित **वाचालता** वाणी की चतुराई, वाणी की कुशलता, **डाँवाडोल** अस्थिर, चंचल **तजवीज** फैसला, निर्णय **महकमा** सरकारी विभाग **नमकहलाली** वफादारी, **मुअत्तली** बरखास्तगी, नौकरी से निकाला जाना, **कुड़बुड़ाना** किसी नाराजगी की वजह से अंदर-अंदर कुढ़ना, दुखी होना **अकारथ** व्यर्थ, अगवानी आगे बढ़कर किसी का स्वागत करना **वात्सल्यपूर्ण** आत्मीयतापूर्ण, अपनेपन के भाव से पूर्ण **कुलतिलक** कुल यानी वंश का गौरव **खुशामद** चापलूसी, जी-हजूरी **ठकुरसुहाती** किसी व्यक्ति को खुश करने के लिए कही जानेवाली अच्छी-अच्छी बातें, चापलूसी **त्रुटि** भूल, गलती, **जायदाद** धन-संपत्ति, चल-अचल संपत्ति **मर्मज्ञ** कुशल, समझदार, **कलमदान** कलम रखने का पात्र **बेमुरौवत** किसी की लिहाज न करनेवाला

मुहावरे

निगाह में बाँध लेना सदैव याद रखना **हृदय में शूल उठना** बहुत दुख होना। **पौ बारह होना** लाभ ही लाभ होना **घास-फूल की तरह बढ़ना** बहुत तेजी से बढ़ना, **हृदय में शूल उठना** हृदय या मन में बहुत पीड़ा होना **इज्जत धूल में मिलना** बहुत बेइज्जत होना **पैरों तल कुचल डालना** नष्ट कर देना, विजय पाना **टीका-टिप्पणी करना** निंदा करना **सिर पीटना** बहुत अधिक दुखी होना **सीधे मुँह से बात न करना** नाराजगी व्यक्त करना, **लल्लो-चप्पो करना** खुशादम या चापलूसी करना **मुँह में कालिख लगना** अपमानित और कलंकित होना.

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) नमक विभाग के दरोगा पद पर किसकी नियुक्ति हुई थी?
(क) पण्डित अलोपीदीन (ख) वंशीधर
(ग) बदलू सिंह (घ) वृद्ध मुंशीजी

(2) नमक की गाड़ियाँ किसकी थी?
(क) मुन्शी वंशीधर की (ख) पण्डित जगप्रसाद की
(ग) पण्डित अलोपीदीन की (घ) बदलू सिंह

(3) पण्डित अलोपीदीन को किस पर अखंड विश्वास था?
(क) शिवजी पर (ख) रामजी पर (ग) लक्ष्मीजी पर (घ) हनुमानजी पर

(4) वंशीधर को पण्डित अलोपीदीन ने कौन-से पद पर नियुक्त किया?
(क) स्थायी मैनेजर (ख) दारोगा (ग) जज (घ) वकील

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:।

(1) वंशीधर किस विभाग के दारोगा थे?

(2) वंशीधर ने पुल पर क्या देखा?

(3) पण्डित अलोपीदीन को किसने हिरासत में लिया?

(4) मुकद्दमे में किसकी जीत हुई?

(5) वंशीधर की माता की कौन-सी कामना मिट्टी में मिल गई?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए:

(1) वृद्ध मंशीजी क्यों फूले न समाये?

(2) वंशीधर रात को जमुना नदी पर क्यों गए?

(3) पण्डित अलोपीदीन को क्यों हिरासत में लिया गया?

(4) बंशीधर की अदालत में क्यों हार हुई?

4. निज़्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ वाक्य में दीजिए:।

(1) पण्डित अलोपीदीन के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

(2) पण्डित अलोपीदीन ने वंसीधर को जायदाद का स्थायी मैनेजर क्यों नियुक्त किया?

5. आशय स्पष्ट कीजिए:।

(1) न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं।

(2) धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

6. निम्नलिखित कथनों की पूर्ति के लिए दिए गये विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(1) वंशीधर के अनुभवी पिताने कहा....

(अ) ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है। ईसी से बरकत होती है।

(ब) वेतन सरकार देती है और ऊपरी आमदनी धनवान देते है।

(ग) ऊपरी आमदनी कभी मत लेना।

(घ) वेतन के साथ ऊपरी आमदनी भी लेना।

(2) पण्डित आलोपीदीन को वंशीधर उत्तर देता है - ......

(अ) पैसे से निपहारा हो जाएगा।

(ब) चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असम्भव है।

(ग) पचास हजार तक सम्भव है।

(घ) ईश्वर के लिए मुझे माफ कर दीजिए।

(3) पं. अलोपीदीन हंसकर बोले......

(अ) ऐसी सन्तान को और क्या कहूँ?

(ब) हमारा भाग्य हुआ।

(ग) मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।

(घ) मैं आपका दास हूँ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः 'भ्रष्टाचारः एक समस्या'' विषय पर निबंध लिखिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः प्रेमचन्द की कहानी 'पंच परमेश्वर' का सारांश कहिए।

⊙

प्रयोजन मूलक हिन्दी पुस्तकालय का महत्त्व व उपयोगिता

*** पुस्तकालय :**

पुस्तकें विविध विषयों पर विविध भाषाओं में विविध विद्वानों द्वारा लिखी जाती हैं। विश्व में मानव ज्ञान के जितने भी क्षितिज हैं, उनमें से अधिकांश पर सरल, ज्ञानवर्धक एवं महत्त्वपूर्ण तथा सारगर्भित जानकारी देने वाली पुस्तकें उपलब्ध हैं। व्यक्ति अपने घर में अपने सीमित संसाधनों से अधिक से अधिक संख्या में पुस्तकें खरीदकर रखने की कोशिश करता है; फिर भी उसकी यह कोशिश अधूरी ही रह जाती है।

इस दिशा में पुस्तकालय पुस्तकों के आलय अर्थात् घर हैं। एक छोटे से विद्यालय से लेकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में बड़े-बड़े पुस्तकालय होते हैं जिनमें सरकारी सहायता से अनेक विषयों की प्रकाशित पुस्तकें खरीदकर पाठकों को उपलब्ध कराई जाती हैं तथा अनेक दुर्लभ ग्रंथों को सुरक्षित रखा जाता है। आजकल पंचायत से लेकर म्युनिसिपल कोर्पोरेशनों, सरकारी कार्यालयों आदि के भी अपने पुस्तकालय मौजूद हैं जहाँ पाठक अपनी ज्ञान पिपासा शांत करते हैं। प्रत्येक राज्य में पुस्तकालय निर्देशालय है जो कि सरकारी खर्चे पर लेखकों और प्रकाशकों आदि से थोक में पुस्तकें खरीदकर उनके अंतर्गत आनेवाले विभिन्न पुस्तकालयों में पुस्तकें भेजते हैं ताकि पाठकों को प्रत्येक विषय और भाषा की पुस्तकें उनके निकट के पुस्तकालय में आसानी से मिल सकें।

*** पुस्तकालय का महत्त्व :**

वैसे तो हर समय में पुस्तकालय अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं क्योंकि संचित ज्ञान का भंडार इनमें सदैव उपलब्ध रहा है। पुस्तकालय विज्ञान के अनुप्रयोग के साथ आज पुस्तकालय सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों का भी उपयोग पाठकों को त्वरित रूप से सेवाएँ प्रदान करने के लिए करने लगे है। बाल-ग्रंथालय विभाग से लेकर भाषा, विषय आदि के क्रम में पुस्तकें अत्यंत व्यवस्थित रूप में पुस्तकालय में रखी जाती हैं ताकि प्रयोक्ता को पुस्तकों तक पहुँच बनाने में सुविधा हो। साथ ही, प्रयोक्ता पुस्तकालय के कम्प्यूटर के माध्यम से भी जानकारी प्राप्त कर सकता है कि जिस पुस्तक को वह पढ़ना चाहता है वह पुस्तकालय में उपलब्ध हैं अथवा किस पाठक के पास है। आजकल इंफोर्मेशन और लाइब्रेरी नेटवर्क का जमाना है अत: प्रयोक्ता इंफ्लिबनेट की वेबसाइट पर जाकर बहुविघ जानकारी एक क्लिक में प्राप्त कर सकता है।

आजकल प्रतियोगिता का दौर है तथा शिक्षा से लेकर रोजगार तक में प्रतियोगिता ही प्रतियोगिता है जिसमें सफलता के लिए पुस्तकों के माध्यम से तैयारी करनी होती है और प्रत्येक विषय की श्रेष्ठ, अघतन, सारगर्भित, उपयोगी एवं विविध विषयक पुस्तकें हमें पुस्तकालय में एक जगह मिलती हैं जिन्हें हम संबंधित पुस्तकालय की सदस्यता प्राप्त करके उसके वाचनालय में भी पढ़ सकते हैं तथा नियत समय के लिए जारी कराकर घर में भी पढ़ सकते हैं। प्रतियोगिताओं की तैयारी करने के लिए तो अत्यंत कीमती, विश्वस्तरीय, अद्यतन पुस्तकें हमें पुस्तकालय में ही मिलती हैं। अत: पुस्तकालय का महत्त्व हमारे लिए अत्यधिक है।

*** पुस्तकालय की उपयोगिता :**

पुस्तकालय चूँकि विविध विषयों की पुस्तकों के ज्ञानागार होते हैं अत: विविध भाषाओं और विषयों की पुस्तकें हमें पुस्तकालयों में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। पुस्तकालय की सदस्यता ग्रहण करने से हम पुस्तकालय के नियमों के अनुसार पुस्तकालय का उपयोग कर सकते हैं। पुस्तकें ज्ञान का भंडार है तथा पुस्तकों से दोस्ती ही सच्ची दोस्ती होती है क्योंकि वे हमारा ज्ञानवर्धन तो करती ही हैं, साथ ही, हमें सच्ची राह भी दिखाती हैं।

आजकाल पुस्तकालय अद्यतन सुविधाओं से सुसज्जित होकर पाठकों की सेवा और अच्छी तरह करने हेतु प्रस्तुत हो रहे हैं। पुस्तकालय प्रकाशित अधिकांश समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ भी पाठकों हेतु मँगवाते हैं अत: ज्ञान के साथ सूचनाओं को भी हम पुस्तकालय के माध्यम से अद्यतन कर सकते हैं। आज के जमाने में पुस्तकालय मानव जीवन के लिए, उसके ज्ञानवर्धन हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पुस्तकालय से क्या आशय है?

(2) पुस्तकालय ज्ञान के भंडार क्यों हैं?

(3) पुस्तकालय पुस्तकों के आलय क्यों हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्य में लिखिए :

(1) पुस्तकालय किसे कहते हैं?

(2) पुस्तकालय का महत्त्व समझाइए?

(3) पुस्तकालय की उपयोगिता बताइए?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : पुस्तकालय में आपने जो अनुभव किया हो, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को अपने विद्यालय के पुस्तकालय में अथवा नजदीक के किसी पुस्तकालय में ले जाकर उन्हें पुस्तकालय का प्रत्यक्ष अनुभव कराइए।

⊙

3	कान्ह भए बस बाँसुरि के

3 कान्ह भए बस बाँसुरि के

रसखान

(जन्म : सन् 1548 ई. : निधन : सन् 1628 ई.)

रसखान का असली नाम सैयद इब्राहिम था। उनका जन्म दिल्ली के एक सम्पन्न पठान परिवार में हुआ था। रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। गोस्वामी विठ्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण कर ब्रज में रहकर कृष्ण-भक्ति के पद इन्होंने लिखे। इस मुसलमान कवि की कृष्ण-भक्ति अत्यंत सराहनीय है। इनकी कविता में कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रजमहिमा और राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन किया गया है। उनकी भक्ति में प्रेम, श्रृंगार और सौंदर्य का अनोखा संगम है।

रसखान के कवित्त - सवैये अपने आप में अद्वितीय हैं। रसखान ने ब्रजभाषा में काव्य-रचना की। उनकी भाषा मधुर एवं सरस है। उनकी लिखी दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं- 'सुजान रसखान' व 'प्रेमवाटिका'।

यहाँ प्रस्तुत प्रथम कवित्त में सदैव कृष्ण के पास रहनेवाली बाँसुरी से गोपियाँ ईर्ष्या करती हैं। सौतिया-डाह से पीड़ित गोपियाँ अब ब्रज में रहना नहीं चाहती क्योंकि उनका स्थान अब बाँसुरी ने ले लिया है। दूसरे कवित्त में कृष्ण का स्वाँग रचनेवाली गोपियाँ सौतियाडाह के कारण उनकी बाँसुरी को जो कृष्ण के ओठों पर थी, को अपने ओठों पर रखने से इन्कार कर देती हैं। कवि ने दोनों कवित्तों में गोपियों की मन:स्थिति का मार्मिक वर्णन किया है।

---

(1) कान्ह भए बस बाँसुरि के, अब कौन सखी, हमको चहिहै।
निसिद्यौस, रहे सँग-साथ लगी, यह सौतिन-तापन क्यों सहिहै।
जिन मोहि लियो मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखि, भागि चलैं, अब तो ब्रज में बँसुरि रहिहै।

(2) मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पीतम्बर लै लकुटी, बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

चहिहै चाहेगा **निसि** रात **घौस** दिन, **दहिहै** जलाएगी **मोर पखा** मोर पंख **गुंज** घुँघची, गुंजा **भावतो** रुचिकर, पसंद **अधर** ओठ, **धरौंगी** रखूँगी **सौतिन** सौत, पति की दूसरी पत्नी (यहाँ कृष्ण की बाँसुरी से अर्थ है) **तापन** दुख, कष्ट, संताप **लकुटी** लाठी **गोबन** गायरुपी धन (गायें), **ग्वारन संग** ग्वाल बालों के साथ, **फिरौगी** घूमूँगी, **स्वाँग** नकल करना, वेश धारण करना, **अधरान** ओंठों पर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए:

(1) कृष्ण किसके हो गए हैं?
(क) गोपी के (ख) राधा के (ग) बाँसुरी के (घ) मोरपंख के

(2) गोपियाँ ब्रज छोड़कर क्यों भाग जाना चाहती हैं?
(अ) ब्रज में गाय के रहने से (ख) ब्रज में ग्वाल-बाल के रहने से
(ग) ब्रज में ताप बढ़ने से (घ) ब्रज में बाँसुरी के रहने से

(3) गोपियाँ किसकी बनी माला पहनेंगी?
(अ) गुंजा की (ख) मोरपंख की (ग) फूलों की (घ) मोती की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए: ।

(1) कृष्ण को किसने मोह लिया है?

(2) गोपियाँ कृष्ण की मुरली को क्या समझती हैं?

(3) कृष्ण अपने सिर पर कौन-सा मुकुट धारण करते थे?

(4) कृष्ण गले में किसकी माला पहनते थे?

(5) किसके कहने पर गोपी कृष्ण का स्वाँग कर रही हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए: ।

(1) गोपियाँ कृष्ण का कौन-सा स्वाँग रचती हैं?

(2) गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपने ओठों पर क्यों नहीं रखना चाहतीं?

(3) गोपियाँ ब्रज से क्यों भाग जाना चाहती हैं?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए:।

(1) गोपियाँ कृष्ण की मुरली को अपनी सौत क्यों समझती हैं?

(2) कृष्ण के वियोग में गोपियाँ किसका स्वांग रचेंगी? कैसे?

(3) गोपियाँ बाँसुरी से क्यों ईर्ष्या करती हैं? रसखान के दोनों सवैयों के आधार पर उत्तर लिखिए।

(4) कृष्ण के स्वाँग में गोपियों का वर्णन कीजिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्ति :** कृष्णभक्त रसखान के अन्य सवैये पढ़िए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्ति :** रसखान के सवैयों का सस्वर पाठ कक्षा में कराइए।

⊙

4	# अकेली

मन्नू भण्डारी
(जन्म : सन् 1931 ई.)

मन्नू भण्डारी का जन्म मध्यप्रदेश के भागपुर नामक ग्राम में हुआ था। मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व के विकास में उनके पिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे दिल्ली विश्व विद्यालय के मिराण्डा हाउस में प्राध्यापिका रही हैं। आधुनिक कहानीकारों में मन्नू भण्डारी का नाम आदर से लिया जाता है।

मन्नू भण्डारी ने कहानी, उपन्यास एवं नाटक विधा को अपनाया है। 'मैं हार गयी', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यह सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ' आदि कहानी संग्रह है। 'आपका बंटी', 'स्वामी', 'महाभोज', 'कलावा' आदि उपन्यास हैं। 'बिना दीवारों का घर' नाटक है।

प्रस्तुत कहानी में गाँव की एक महिला के व्यवहार एवं मानवता का चित्रण किया गया है। सोमा बुआ के जवान बेटे की मृत्यु हो गयी थी, इस कारण उसके पति पुत्र वियोग की पीड़ा के कारण तीर्थो में रहा करते थे। अत: बुआ अकेली थी। गाँव में किसी के यहाँ प्रसंग होता तो वे जी-जान से काम करती थीं। संबंधियों के यहाँ जाने के लिए मृत पुत्र की एक मात्र निशानी अंगूठी बेच देती है लेकिन न्यौता नहीं मिलता। यह कहानी एक दु:खी महिला के एकाकी जीवन की संवेदना व्यक्त करती है।

सोमा बुआ बुढ़िया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।

सोमा बुआ का जवान बेटा क्या जाता रहा। उनकी अपनी जवानी चली गई। पति को पुत्र-वियोग का ऐसा सदमा लगा कि वे पत्नी, घर-बार तजकर तीरथवासी हुए और परिवार में कोई ऐसा सदस्य था नहीं जो उनके एकाकीपन को दूर करता। पिछले बीस वर्षों से उनके जीवन की इस एकरसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ; कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महीने के लिए उनके पति उनके पास आकर रहते थे; पर कभी उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता, क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छन्द धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घूमना-फिरना, मिलना-जुलना बन्द हो जाता और संन्यासीजी महाराज से तो यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोलबोलकर सोमा बुआ को एक ऐसा सम्बल ही पकड़ा दें, जिसका आसरा लेकर वह उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दें। इस स्थिति में बुआ को अपनी जिन्दगी पास-पड़ोसवालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या ग़मी; बुआ पहुँच जातीं और फिर छाती फाड़कर काम करतीं, मानो वे दूसरे के घर में नहीं अपने ही घर में काम कर रही हों।

आजकल सोमा बुआ के पति आए हुए हैं और अभी-अभी कहा-सुनी होकर चुकी है। बुआ आँगन में बैठी धूप खा रही हैं। पास रखी कटोरी से तेल लेकर हाथों में मल रही हैं; और बड़बड़ा रही हैं। इस एक महीने में अन्य अवयवों के शिथिल हो जाने के कारण उनकी जीभ ही सबसे अधिक सजीव और सक्रिय हो उठती है। तभी हाथ में एक फटी साड़ी और पापड़ लेकर ऊपर से राधा भाभी उतरीं।

''क्या हो गया बुआ, क्यों बड़बड़ा रही हो? फिर संन्यासीजी महाराज ने कुछ कह दिया क्या?''

''अरे, मैं कहीं चली जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता। कल चौकवाले किशोरीलाल के बेटे का मुंडन था, सारी बिरादरी का न्यौता था। मैं तो जानती थी कि ये पैसे का ही गरूर है, जो मुंडन पर भी सारी बिरादरी को न्यौता है; पर काम उन नई नवेली बहुओं से सँभलेगा नहीं, सो जल्दी ही चली गई। हुआ भी वही'' और सरककर बुआ ने राधा के हाथ से पापड़ लेकर सुखाने शुरू कर दिए - 'एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा-बूढ़ा हो तो बतावे, या कभी किया हो तो जानें। गीतवाली औरतें मुंडन पर बन्ना-बन्नी गा रही थीं, मेरा तो हँसते-हँसते पेट फूल गया।' और उसकी याद से ही कुछ देर पहले का दुख और आक्रोश धुल गया। अपने सहज स्वाभाविक रूप में वे कहने लगीं - भट्ठी पर देखो तो अजब तमाशा; समोसे कच्चे ही उतार दिए और

इतने बना दिए कि दो बार खिला दो और गुलाब जामुन इतने कम कि एक पंगत में भी पूरे न पड़ें। उसी समय खोवा मँगाकर नए गुलाब-जामुन बनाए। दोनों बहुएँ और किशोरीलाल तो बिचारे इतना जस मान रहे थे कि क्या बताऊँ? कहने लगे, 'अम्मा! तुम न होतीं तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा! तुमने लाज रख ली!'' मैं ने तो कह दिया कि अरे अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं। ये तो आजकल इनका रोटी-पानी का काम रहता है नहीं तो मैं तो सवेरे से ही चली जाती!

'तो संन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? उन्हें तुम्हारा आना-जाना अच्छा नहीं लगता बुआ!'

'यों तो मैं कहीं आऊँ-जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता, और फिर कल किशोरी के यहाँ से बुलावा नहीं आया। अरे, मैं तो कहूँ कि घरवालों का कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्ठी और भंडार-घर सौंप दे? पर उन्हें अब कौन समझावे। कहने लगे, तू जबर्दस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।'' और एकाएक उन्हें उस क्रोध-भरी वाणी और कटु वचनों का स्मरण हो आया, जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उन पर होकर चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।

''अरे रोती क्या हो बुआ! कहना-सुनना तो चलता ही रहता है। संन्यासीजी महाराज एक महीने को तो आकर रहते हैं, सुन लिया करो, और क्या?''

''सुनने को तो सुनती ही हूँ; पर मन तो दुखता ही है कि एक महीने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना-जाना इन्हें सुहाता नही, सो तू ही बता राधा, ये तो साल में ग्यारह महीने हरिद्वार रहते हैं। इन्हें तो नाते-रिश्तेवालों से कुछ लेना-देना नहीं; पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़ताड़ कर बैठ जाऊँ तो कैसे चले। मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अन्त समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं। सारा धरम-करम ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी-पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ। उस पर से कहीं आऊँ-जाऊँ वह भी इनसे बर्दाश्त नहीं होता...'' और बुआ फूट-फूटकर रो पड़ीं। राधा ने आश्वासन देते हुए कहा, ''रोओ नहीं बुआ! अरे, वे तो इसलिए नाराज़ हुए कि बिना बुलाए तुम चली गईं।''

''बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घरवालों का कैसा बुलाना? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर नहीं जाऊँ; और प्रेम रखे तो बिना बुलाए भी सिर के बल जाऊँ। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती? मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल! आज हरखू नहीं है; इसी से दूसरों को देख-देखकर मन भरमाती रहती हूँ!'' और वे हिचकियाँ लेने लगीं।

पापड़ों को फैलाकर स्वर को भरसक कोमल बनाकर राधा ने कहा, ''तुम भी बुआ बात को कहाँ-से कहाँ ले गईं? अब चुप भी होओ! अच्छा देखो; तुम्हारे लिए एक पापड़ भूनकर लाती हूँ; खाकर बताना कैसा है?'' और वह पापड़ लेकर ऊपर चढ़ गई।

कोई सप्ताहभर बाद बुआ बड़े प्रसन्न मन से आईं और संन्यासीजी से बोलीं ''सुनते हो, देवरजी के ससुरालवालों की किसी लड़की का सम्बन्ध भागीरथजी के यहाँ हुआ है। वे सब लोग यहीं आकर ब्याह कर रहे हैं। देवरजी के बाद तो उन लोगों से कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा; फिर भी हैं तो समधी ही। वे तो तुमको भी बुलाए बिना नहीं मानेंगे। समधी को आखिर कैसे छोड़ सकते हैं?'' और बुआ पुलकित होकर हँस पड़ीं। संन्यासीजी की मौन उपेक्षा से उनके मन को ठेस तो पहुँची; फिर भी वे प्रसन्न थीं। इधर-उधर जाकर वे इस विवाह की प्रगति की खबरें लातीं! आखिर एक दिन वे यह भी सुन आईं कि उनके समधी यहाँ आ गए। ज़ोर-शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी - खूब रौनक होनेवाली है। दोनों ही पैसेवाले ठहरे।

''क्या जानें हमारे घर तो बुलावा आएगा या नहीं? देवरजी को मरे पच्चीस बरस हो गए, उसके बाद से तो कोई सम्बन्ध ही नहीं रखा। रखे भी कौन? यह काम तो मरदों का होता है, मैं तो मरदवाली होकर भी बेमरद की हूँ।'' और एक ठंडी साँस उनके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं हो सकता। तुम तो समधिन ठहरीं। देवर चाहे न रहे; पर कोई

रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है!'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहू बोली।

''है बुआ! नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली। बैठे-ही-बैठे दो क़दम आगे सरककर बुआ ने बड़े उत्साह से पूछा, ''तू अपनी आँखों से देखकर आई है नाम? नाम तो होना ही चाहिए। पर मैंने सोचा कि क्या जाने आजकल के फैशन में पुराने सम्बन्धियों को बुलाना हो, न हो।'' और बुआ बिना दो पल भी रुके वहाँ से चल पड़ीं। अपने घर जाकर सीधे राधा भाभी के कमरे में चढ़ीं - ''क्यों री राधा, तू तो जानती है कि नई फैशन में लड़की की शादी में क्या दिया जावे है? समधियों का मामला ठहरा, सो भी पैसेवाले। खाली हाथ जाऊँगी तो अच्छा नहीं लगेगा। मैं तो पुराने जमाने की ठहरी, तू ही बता दे क्या दूँ? अब कुछ बनाने का समय तो रहा नहीं, दो दिन बाकी हैं सो कुछ बना-बनाया ही खरीद लाना।''

''क्या देना चाहती हो अम्मा? जेवर, कपड़ा, श्रृंगारदान या कोई और चाँदी की चीज़?''

''मैं तो कुछ भी नहीं समझूँ री। जो कुछ पास है तुझे लाकर दे देती हूँ, जो तू ठीक समझे ले आना। बस, भद्द नहीं उड़नी चाहिए! अच्छा देखूँ पहले कि रुपए कितने हैं?'' और वे डगमगाते कदमों से नीचे आईं। दो-तीन कपड़ों की गठरियाँ हटाकर एक छोटा-सा बक्स निकाला। उसका ताला खोला। इधर-उधर करके एक छोटी-सी डिबिया निकाली। बड़े जतन से उसे खोला उसमें सात रुपए की कुछ रेजगारी पड़ी थी और एक अँगूठी। बुआ का अनुमान था कि रुपए कुछ ज्यादा होंगे पर जब सात ही रुपए निकले तो सोच में पड़ गई। रईस समधियों के घर में इतने से रुपयों से बिन्दी भी नहीं लगेगी। उनकी नज़र अँगूठी पर गई। यह उनके मृत-पुत्र की एकमात्र निशानी उनके पास रह गई थी। बड़े-बड़े आर्थिक संकटों के समय भी वे उस अँगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी थीं। आज भी एक बार उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपए और एक अँगूठी आँचल में बाँध ली। बक्स को बन्द किया और फिर ऊपर को चलीं पर इस बार उनके मन का उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल! राधा के पास जाकर बोलीं ''रुपए तो नहीं निकले बहू। आएँ भी कहाँ से! मेरे कौन कमानेवाला बैठा है? उस कोठरी का किराया आता है, उसमें दो समय की रोटी निकल जाती है जैसे-तैसे!'' और वे रो पड़ीं। राधा ने कहा- ''क्या करूँ बुआ, आजकल मेरा भी हाथ तंग है, नहीं तो मैं ही दे देती। अरे, पर तुम देने के चक्कर में पड़ती ही क्यों हो? आजकल तो देने-लेने का रिवाज ही उठ गया है।''

''नहीं रे राधा! समधियों का मामला ठहरा! पच्चीस बरस हो गए तो भी वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं-नहीं, इससे तो न जाऊँ सो ही अच्छा!''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आईं या नहीं।'' राधा ने सारी समस्या का सीधा-सा हल बताते हुए कहा।

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जावेंगे और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो सम्बन्ध भी तोड़ लिया। नहीं-नहीं, तू यह अँगूठी बेच ही दे।'' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने जमाने की अँगूठी राधा के हाथ पर रख दी। फिर बड़ी मिन्नत के स्वर में बोली, ''तू तो बाजार जाती है राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे खरीद लेना। बस, शोभा रह जावे इतना ज़्याल रखना।''

गली में बुआ ने चूड़ीवाले की आवाज सुनी तो एकाएक ही उनकी नज़र अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर जाकर टिक गई। कल समधियों के यहाँ जाना है; जेवर नहीं हैं, तो कम-से-कम काँच की चूड़ी तो अच्छी पहन लें। पर एक अव्यक्त लाज ने उनके कदमों को रोक दिया, कोई देख लेगा तो। लेकिन दूसरे ही क्षण अपनी इस कमज़ोरी पर विजय पाती - सी वे पीछे के दरवाजे पर पहुँच गईं और एक रुपया कलदार खर्च करके लाल-हरी चूड़ियों के बन्द पहन लिए। पर सारे दिन हाथों को साड़ी के आँचल से ढँके-ढँके फिरीं।

शाम को राधा भाभी ने बुआ को चाँदी की एक सिन्दूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दे दिया। सब कुछ देख पाकर बुआ बड़ी प्रसन्न हुई और यह सोच-सोचकर कि जब वे ये सब दे देंगी तो उनकी समधिन पुरानी बातों की दुहाई दे-देकर उनकी मिलनसारिता की कितनी प्रशंसा करेंगी, उनका मन पुलकित होने लगा। अँगूठी बेचने का ग़म भी जाता रहा। पासवाले बनिए के यहाँ से एक आने का पीला रंग लाकर रात में उन्होंने साड़ी

रँगी। शादी में सफेद साड़ी पहनकर जाना क्या अच्छा लगेगा? रात में सोईं तो मन कल की ओर दौड़ रहा था।

दूसरे दिन नौ बजते-बजते खाने का काम समाप्त कर डाला। अपनी रँगी हुई साड़ी देखी तो कुछ जँची नहीं। फिर ऊपर राधा के पास पहुँचीं- ''क्यों राधा, तू तो रँगी साड़ी पहिनती है, तो बड़ी आब रहती है, चमक रहती है, इसमें तो चमक आई नहीं?''

''तुमने कलफ जो नहीं लगाया अम्मा, थोड़ा-सा माँड़ दे देतीं तो अच्छा रहता। अभी दे लो, ठीक हो जाएगी। बुलावा कब का है?''

अरे, नए फैशनवालों की मत पूछो, ऐन मौकों पर बुलावा आता है। पाँच बजे का मुहरत है, दिन में कभी भी आ जावेगा।

राधा भाभी मन-ही-मन मुस्कुरा उठीं।

बुआ ने साड़ी में माँड़ लगाकर सुखा दिया। फिर एक नई थाली निकाली, अपनी जवानी के दिनों में बुना हुआ क्रोशिए का एक छोटा-सा मेजपोश निकाला। थाली में साड़ी, सिन्दूरदानी, एक नारियल और थोड़े-से बताशे सज़ाए, फिर जाकर राधा को दिखाया। संन्यासी महाराज सवेरे से इस आयोजन को देख रहे थे। उन्होंने कल से लेकर आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दे दी थी कि यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। हर बार बुआ ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा, - ''मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए चली जाऊँगी? अरे, वह पड़ोसवालों की नन्दा अपनी आँखों से बुलावे की लिस्ट में नाम देखकर आई है। और बुलावेंगे क्यों नहीं? शहरवालों को बुलावेंगे और समधियों को नहीं बुलावेंगे क्या?''

तीन बजे के करीब बुआ को अनमने भाव से छत पर इधर-उधर घूमते देख राधा भाभी ने आवाज लगाई- ''गईं नहीं बुआ?''

एकाएक चौंकते हुए बुआ ने पूछा - ''कितने बज गए राधा?'...क्या कहा, तीन? सरदी में तो दिन का पता ही नहीं लगता है। बजे तीन ही हैं और धूप सारी छत पर से ऐसे सिमट गई मानो शाम हो गई हो।'' फिर एकाएक जैसे ख़याल आया कि वह तो भाभी के प्रश्न का उत्तर नहीं हुआ तो ज़रा ठंडे स्वर में बोली, ''मुहरत तो पाँच बजे का है, जाऊँगी तो चार तक जाऊँगी, अभी तो तीन ही बजे हैं।'' बड़ी सावधानी से उन्होंने स्वर में लापरवाही का पुट दिया! बुआ छत पर से गली में नज़र फैलाए खड़ी थीं, उनके पीछे ही रस्सी पर धोती फैली हुई थी, जिसमें कलफ लगा था और अभरक छिड़का हुआ था। अभरक के बिखरे हुए कण रह-रहकर धूप में चमक जाते थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता था।'

सात बजे के धुँधलके में राधा ने ऊपर से देखा तो छत की दीवार से सटी, गली की ओर मुँह किए एक छाया मूर्ति दिखाई दी। उसका मन भर आया। बिना कुछ पूछे इतना ही कहा, ''बुआ! सर्दी में खड़ी-खड़ी यहाँ क्या कर रही हो? आज खाना नहीं बनेगा क्या, सात तो बज गए?

जैसे एकाएक नींद में से जागते हुए बुआ ने पूछा, ''क्या कहा, सात बज गए?'' फिर जैसे अपने से ही बोलते हुए पूछा, ''पर सात कैसे बज सकते हैं, मुहूरत तो पाँच बजे का था।'' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए, स्वर को भरसक संयत बनाकर बोलीं - ''अरे, खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।''

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे-धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोलीं, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीज़ें बड़े जतन से अपने एकमात्र सन्दूक में रख दीं।

और फिर बड़े ही बुझे हुए दिल से अँगीठी जलाने बैठीं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

परित्यकता पति द्वारा त्यागी हुई स्त्री **सदमा** आघात **एकाकीपन** अकेलापन **एकलता** लंबे समय तक एक जैसी स्थिति का होना **व्यवधान** विघ्न, अवरोध **अंकुश** नियंत्रण **संबल** सहारा **आसरा** अवलंबन **गसूर** धमंड, **जस मानना**

उपकार मानना **हंगामा** भीडभाड़ शोरशराबा **ठेस** चोट, **पुलकित** प्रसन्न **जेवर** गहना, आभूषण **श्रृंगारदान** श्रृंगार के सामान रखने का छोटा बकसा **रेजगारी** छुट्टे पैसे **सिंदूरदानी** सिंदूर रखने की डिब्बी **मिलनसारिता** हिलमिलकर रहने का स्वमान **आब** शोभा, सुंदरता **फलक** कपड़े को कड़ा करने का तरल पदार्थ **माँड़** पके हुई चावल का पानी, **मुहरत** मुहूर्त, शुभ घड़ी **मेजपोश** मेज पर बिछाने का कपड़ा **बावली** मूर्ख, नादान, नासमझ **अनमना** उदास **अभरक** एक चमकीला पदार्थ **धुँधलका** हल्का अँधेरा, **संयत** नियंत्रित, शांत, स्थिर **तह करना** मोड़ना, लपेटना

मुहावरे

राह में आँखें बिछाना बेसबी से किसी का इंतजार करना **छाती फाड़कर काम करना** बहुत अधिक काम करना **भद उड़ना** इज्जत बिगड़ना **लाज रखना** इज्जत बचाना **टाँग अड़ाना** दखल देना, अवरोध पैदा करना **पल्ला पकड़ना** सहारा देना **मन भरमाना** मन को तसल्ली देना **दिल धड़कना** धबराहट होना.

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) 'अकेली' कहानी की लेखिका का क्या नाम है?
(क) सोमा बुआ (ब) मन्नू भण्डारी (ग) मृदुला गर्ग (घ) कृष्णा सोबती

(2) सोमा बुआ का पति क्यों तीरथवासी हुआ?
(अ) परिवार की नफरत से (ब) धर्म के लगाव से
(ग) पुत्र की मृत्यु से दुखी होकर (घ) बेकारी से

(3) सोमा बुआ की पड़ोसन का नाम क्या था?
(अ) राधा (ब) रोहिणी (ग) रूपा (घ) रश्मि

(4) सोमाबुआ के मृत पुत्र की एक मात्र निशानी क्या थी?
(अ) कलम-कापी (ब) संदूक (ग) मकान (घ) अंगुठी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'अकेली' कहानी का प्रमुख पात्र कौन है?
(2) सोमा बुआ को अपनी जिन्दगी किसके भरोसे काटनी पड़ती थी?
(3) सोमा बुआ के बेटे का नाम क्या था?
(4) सोमा बुआ को किसके ब्याह का न्यौता नहीं मिला?
(5) सोमा बुआ की छोटी सी डिबिया में कितने रुपए थे?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) सोमा बुआ पिछले बीस साल से कैसा जीवन जीती थीं?
(2) सोमा बुआ पड़ोसवालों के घर कैसे प्रसंग पर पहुंच जाती थीं? वहाँ क्या करती थीं?
(3) सोमा बुआ के पति का व्यवहार कैसा था?
(4) सोमा बुआने अंगूठी क्यों बेच दी?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ में दीजिए :

(1) सोमा बुआ की पारिवारिक समस्या क्या थी?
(2) सोमा बुआ ने सम्बंधी के वहाँ ब्याह में जाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की थीं?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) अपने ही काम नहीं आवेंगे तो कोई बाहर से तो आवेगा नहीं?
(2) एक काम गत से नहीं हो रहा था। अब घर में कोई बड़ा-बूढ़ा हो तो बतावे, या कभी किया हो तो जानें।

6. निम्नलिखित कथनों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) बुआ ने बड़े-बड़े आर्थिक संकटों के समय ....मोह नहीं छोड़ा था ।

(क) मृत पुत्र की एक मात्र निशानी अंगूठी का

(ख) अपने पति के साथ तीर्थों में रहने का

(ग) रिश्तेदारों के यहाँ समारोहों में जाने का

(घ) अच्छा खाने-पीने का

(2) गली में चूड़ी वाले की आवाज सुनकर उनकी दृष्टि ....जाकर टिक गयी।

(क) अपने हाथ की सुनहरी चूड़ियों पर

(ख) अपने हाथ की चमकीली चूड़ियों पर

(ग) अपने हाथ की नीली-हरी चूड़ियों पर

(घ) अपने हाथ की भद्दी मटमैली चूड़ियों पर

(3) राधा भाभी ने समधियों के यहाँ विवाह में देने के लिए बुआ को बाजार से क्या लाकर दिया ?

(अ) चाँदी के बर्तन, कुछ कपड़े तथा सोने की अंगूठी

(ब) चाँदी की एक सिन्दूरदानी, एक साड़ी तथा ब्लाउज का कपड़ा

(ग) कुछ आभूषण और साड़ियाँ

(घ) चाँदी की पाजेब और ओढ़नी

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः प्रेमचन्द की 'बूढ़ी काकी' और मन्नू भण्डारी की मजबूरी कहानी प्राप्त करके पढ़िए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः महिलाओं की समस्या संबंधित अन्य कहानियों की चर्चा करके छात्रों के मन में महिलाओं के प्रति आदर और सहानूभुति के भाव जाग्रत कीजिए।

⊙

प्रयोजनमूलक हिंदी : सूचना प्रौद्योगिकी

सूचना का अर्थ है - जानकारी या ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का अर्थ है - तकनीक। सूचनाएँ आंकड़ों (डेटा) के संसाधन (प्रोसेसिंग) से प्राप्त होती हैं तथा आँकड़ों का भंडारण (स्टोरिंग), पुन): प्राप्ति, सुधार और संसाधनगत कार्य इसके अंतर्गत आते हैं तथा इनका उपयोग विशिष्ट प्रयोजनमूलक क्षेत्र के कार्य हेतु किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के तीन घटक सूचना (इंफोर्मेशन), डेटा (आँकड़े) और ज्ञान (नॉलेज) महत्त्वपूर्ण होते हैं जिनके विविध उपादान इस प्रकार हैं :

*** कंम्प्यूटर :**

कंम्प्यूटर को दिमाग का मशीनी रूप भी कह सकते हैं। कंम्प्यूटर का मतलब होता है गणना करना। कंम्प्यूटर का प्रारंभिक रूप मूलतः गणना करने वाली मशीन के रूप में था। लेकिन अब इसमें प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों, आँकड़ों, संख्याओं और चित्रों की सूचनाओं को उसके स्मृति कोश में संचित किया जाता है और इस प्रकार यह अपने आधुनिक रूप में जटिल से जटिल काम कर सकता है। कंम्प्यूटर की सबसे बड़ी क्षमता है तेज़ गति से कार्य करना और उसमें निश्चितता लाना। आमतौर पर हम जिन कंम्प्यूटरों को देखते हैं उन्हें पी.सी. यानी पर्सनल कंम्प्यूटर कहा जाता है। अब ये छोटे-छोटे रूप में भी सामने आने लगे हैं। लैपटॉप यानी ऐसा छोटा-सा कंम्प्यूटर जिसे आप साथ लेकर कहीं भी जा सकते हैं और अपनी गोद यानी लैप पर रखकर काम कर सकते हैं। पामटॉप कंम्प्यूटर इससे भी छोटा होता है और इसे आप अपनी हथेली यानी पाम पर रख कर काम कर सकते हैं। पामटॉप में हालांकि पी.सी. जितने फ़ीचर नहीं होते हैं, लेकिन इनका और विकास जारी है।

*** सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर :**

सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर बहुत प्रचलित शब्द है। ये दोनों कंम्प्यूटर के अभिन्न अंग हैं। हार्डवेयर का मतलब हम मशीन से लगा सकते हैं, जिसमें मानीटर, कुंजीपटल, केंद्रीय संसाधन एकक, माउस और मुद्रक शामिल हैं। सॉफ्टवेयर कई तरह के प्रोग्रामों का सेट होता है जो कंम्प्यूटर को काम करने के योग्य बनाते हैं। वास्तव में कंम्प्यूटरों की स्मृति में आँकड़े और प्रोग्रामों को संचित किया जा सकता है। प्रोग्राम एक विशिष्ट क्रम में जरूरी आदेशों की पूरी श्रृंखला है। विशेष प्रकार के कार्यो को संपन्न करने के लिए विकसित प्रोग्राम ही सॉफ्टवेयर हैं। सॉफ्टवेयर मुख्यतः दो तरह के होते हैं जिनकी मदद से हम कंम्प्यूटर को कमांड देकर अपनी मर्जी से काम ले पाते हैं- (1) सिस्टम सॉफ्टवेयर और (2) एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर। सिस्टम सॉफ्टवेयर का संबंध डॉस, विंडोज़, युनिक्स आदि प्रणाली से है। इनमें फोर्टान, कोबोल, बेसिक, पास्कल आदि में प्रोग्राम तैयार किए जाते हैं। प्रयोग की प्रकृति के आधार पर पुस्तक प्रकाशन, शब्द संसाधन, आँकड़ा संसाधन आदि महत्त्वपूर्ण कार्यों का अनुप्रयोग एप्लीकेशन सोफ्टवेयर में होता है।

*** फ्लॉपी :**

कंम्प्यूटर में हम डाटा यानी आँकड़े एकत्र करते हैं या उन पर काम करते हैं। फ्लॉपी डिस्क इन आँकड़ों और सूचनाओं को एकत्र करने का काम करती है। एक तरह से हम इसे डिजिटल फाइल भी कह सकते हैं। यह बाजार में बहुत सस्ती मिल जाती है। एक कंम्प्यूटर से आँकड़े इसमें स्टोर कर हम दूसरे कंम्प्यूटर में ले जाकर देख सकते हैं।

*** सीडी रोम :**

इसका पूरा नाम काम्पैक्ट डिस्क-रोम ओनली मेमोरी होता है। काम्पैक्ट डिस्क नाम से ही स्पष्ट होता है कि इसमें काफ़ी अधिक सूचना एकत्र की जा सकती है। इस छोटी डिस्क के नाम में रीड ओनली मेमोरी भी जुड़ा है। इसका मतलब है कि इसमें एकत्र सूचना को कंम्प्यूटर पर सिर्फ पढ़ा जा सकता है। ज़्फ्लॉपी की तरह इसमें आप अपने कंम्प्यूटर से सूचना एकत्र नहीं कर सकते हैं। लगभग दो दशक पहले जब पहली बार इन्हें बनाया गया

था तो इनका आकार 12 इंच हुआ करता था लेकिन अब यह 12 सेमी की छोटी डिस्क होती है।

*** इंटरनेट :**

आज के युग को इंटरनेट युग कहा जाता है और इसकी वजह से सूचना के आदान-प्रदान ने क्रांतिकारी रूप ले लिया है। यह दुनिया भर में फैले कम्प्यूटरों को जोड़कर बनाया गया नेटवर्क है। इस नेटवर्क को तैयार करने के काम में सेटेलाइट, ऑप्टिक फाइबर, टेलीफोन लाइन आदि की मदद ली गई है। इंटरनेट खुद एक तरह की दुनिया है जहाँ हर मसले पर सूचना उपलब्ध है। लेकिन इस पर किसी तरह का सरकारी नियंत्रण और भौगोलिक सीमाओं का दबाव नहीं है। इंटरनेट तक पहुँचने के लिए कुछ समय पहले तक हम कम्प्यूटरों का ही सहारा लेते थे, लेकिन अब तकनीकी क्रांति के साथ मोबाइल फोन, टेलीविजन जैसे उपकरणों पर भी इंटरनेट एक्सेस किया जा सकता है। इंटरनेट ने सूचना हासिल करना और भेजना इतना आसान बना दिया है कि इंटरनेट क्रांति को सूचना तकनीक क्रांति भी कहा जाने लगा है।

*** इंट्रानेट :**

इंटरनेट आपस में जुड़े कंम्प्यूटरों का विश्वव्यापी जाल है तो इंट्रानेट इसका छोटा रूप है। सरकार और कंपनियों के विभिन्न ऑफिसों का जो आपसी नेटवर्क होता है उसे इंट्रानेट भी कह सकते हैं। इंटरनेट को कोई भी एक्सेस कर सकता है वही इंट्रानेट किसी खास संस्थान की जरूरतों को पूरा करने के लिए ही होता है।

*** डब्लूडब्लूडब्लू :**

इसका मतलब होता है वर्ल्ड वाइड वेब यानी दुनिया भर में फैला जाल। इंटरनेट पर यह हमें अपनी पसंद की साइट तक पहुँचाता है। इस समय इंटरनेट पर हजारों वेब सर्वर हैं। वेब पेज पर सुचनाएँ मल्टीमीडिया रूप में होती हैं, यानी कि इसमें हम चीज़ें पढ़ सकते हैं, सजीव चित्र देख सकते हैं और आवाज़ भी सुन सकते हैं। वर्ल्ड वाइड वेब और इंटरनेट को सामान्यत: हम एक ही मान लेते हैं लेकिन इंटरनेट कई तरह वर्ल्ड वाइड वेब का मिला-जुला रूप है और अधिक व्यापक है।

*** ई-मेल :**

पत्र भेजने का इलैक्ट्रानिक तरीका। सबसे विशेष बात यह है कि आपका संदेश पलक झपकते ही दुनिया मं कहीं भी पहुँच जाता है। इंटरनेट को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने में ई-मेल का सबसे अधिक योगदान रहा है और इंटरनेट सर्फिंग करने वाले अधिकतर लोग ई-मेल का इस्तेमाल करते हैं। कई वेब साइटें मुक्त ई-मेल सेवा पेश करती हैं। इसके अंतर्गत आप अपनी एक ई-मेल पहचान बनाते हैं और उस खास साइट पर आपके पते यानि पहचान पर संदेश भेजा जा सकता है। विश्व में कहीं से और किसी भी कंम्प्यूटर से इंटरनेट तक पहुँच कर आप ई-मेल भेज और प्राप्त कर सकते हैं। ई-मेल के साथ आप चित्र और आवाज़ वाली फाइलें भी भेज सकते हैं। रोज़ाना के काम-काज के अलावा बिज़नेस संबंधी कार्यों में भी ई-मेल का महत्त्व बढ़ गया है।

*** एचटीएमएल :**

एचटीएमएल का मतलब होता है हायपर टेक्स्ट मार्कअप लैंगुएज। वर्ल्ड वाइड वेब पर डाटा पेश करने के लिए इस कंम्प्यूटरी जुबान का इस्तेमाल किया जाता है।

*** एचटीटीपी :**

एचटीटीपी का अर्थात् हाइपर टेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल। वर्ल्ड वाइड वेब से डॉक्युमेंट मँगाने या भेजने के लिए इस सिस्टम का इस्तेमाल होता है। इसे भी वेब साइट के पते में 222 से पहले लिखा जाता है।

*** ऑपरेटिंग सिस्टम :**

यह दर असल एक ऐसा प्लेटफॉर्म होता है जो आपके कंम्प्यूटर पर विभिन्न सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम चलाने में मदद करता है।

*** ब्राउजर :**

यह ऐसा सॉफ्टवेयर है जो कि वर्ल्डवाइड वेब तक पहुँचने में मदद करता है। नेटस्केप नेवीगेटर एक्सप्लोरर

इसके प्रमुख उदाहरण हैं। जब हम अपने कंप्यूटर पर ब्राउसर के चिह्न पर क्लिक करते हैं तो इंटरनेट से जुड़ जाते हैं।

*** सर्च इंजन :**

इंटरनेट सूचना का सागर है, लेकिन इस सागर में से मनमाफिक जानकारी ढूँढ़ना कठिन काम हो सकता है। लेकिन सर्च इंजन नाम की सुविधा इस काम को आसान बना देती है। लगभग सभी वेबसाइटों में सर्च इंजनों की सुविधा होती है लेकिन कुछ ऐसी खास वेबसाइट भी हैं जो सर्च इंजन का काम करती हैं, जिनमें गूगल, लाइकोस और आस्क प्रमुख हैं। सर्च इंजन में आपको जिस बारे में जानकारी चाहिए उससे संबंधित शब्द लिखने होते हैं और वह पलक झपकते ही वर्ल्ड वाइड वेब से सारी जानकारी खोज लाता है।

*** ई-कॉमर्स :**

इसका मतलब है इलैक्ट्रानिक कामर्स (वाणिज्य) इंटरनेट की मदद से कंम्प्यूटर के सामने बैठे-बैठे ही कारोबार करना संभव हो गया है। इसमें अब तक सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पैसे का भुगतान किस तरह किया जाए। लेकिन क्रेडिट कार्ड और डिजिटल हस्ताक्षर नाम की तकनीक से इसे अब संभव कर दिया गया है। ई-कॉमर्स दो तरह का होता है - बी2बी यानी बिज़नेस टु बिज़नेस। इसके अंतर्गत दो कंपनियाँ आपस में कारोबार करती हैं। बी2सी का मतलब होता है बिज़नेस टु कस्टमर। इसके तहत कंपनियाँ इंटरनेट के ज़रिए आम लोगों को सामान बेचती हैं।

*** ब्रॉडबैंड :**

इसके द्वारा हम बहुत तेज़ी से इंटरनेट एक्सेस कर सकेंगे। डिजिटल और फ़ाइबर ऑप्टिक की मदद से ब्रॉडबैंड का सपना पूरा हो पाएगा। समूचे विश्व में इस समय इस दिशा में काम हो रहा है इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि इंटरनेट से आने वाली सूचना को अधिक तेज़ी से कंप्यूटर या फिर अन्य मशीनों पर हासिल किया जा सकेगा। विशेष रूप से चित्रों और आवाज़ वाली फ़ाइलों को अभी इंटरनेट से कंम्प्यूटर पर लेने में बहुत समय लग जाता है लेकिन ब्राडबैंड इस काम को आसान बना देगा।

*** बैंडबिड्थ :**

यह किसी नेटवर्क कनेक्शन की क्षमता होती है। इस क्षमता से पता चलता है कि उस नेटवर्क में डाटा का प्रवाह कितनी गति से हो रहा है। जितनी अधिक बैंडविड्थ होगी इंटरनेट आदि से डाउनलोड भी उतनी ही तेज़ी से किया जा सकेगा।

*** वायरस :**

यह एक तरह घुसपैठिया कंम्प्यूटर प्रोग्राम होता है जो नेटवर्क या फिर कंप्यूटर पर आकर ऑपरेटिंग सिस्टम को तबाह कर देता है। यह टेलीफोन लाइन या फिर फ्लॉपी या डिस्क के जरिए घुसपैठ करता है। आजकल ई-मेल के जरिए वायरस भेजे जाने लगे हैं। पिछले दिनों आईलवयू वायरस के ज़रिए कुछ हैकरों ने दुनिया भर के कंम्प्यूटर सिस्टमों को तबाह कर करोड़ों का नुकसान पहुँचाया था।

*** आईएसपी :**

इसका मतलब होता हैं इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर, यानी वह कंपनी जो इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती हैं। ये कंपनियाँ ऑप्टिक फ़ाइबर, टेलीफोन लाइन या फिर केबल के जरिए अपनी सेवा उपलब्ध कराती हैं। अभी तक टेलीफोन लाइन का तरीका अधिक प्रचलित था, लेकिन अब ऑप्टिक फाइबर और केबल के जरिए इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने लगे हैं। इस सेवा के लिए आईएसपी प्रति घंटे के हिसाब से पैसे लेते हैं लेकिन कई आईएसपी ने फ्री सेवा भी शुरू की है, उनकी आय के स्त्रोत इंटरनेट सेवा के साथ आने वाले विज्ञापन होते हैं।

*** एएसपी :**

इसका मतलब होता है एप्लिकेशन सर्विस प्रोवाइडर यानी ये इंटरनेट और उससे जुड़े करोबार की जरूरतों के अनुरूप सॉफ्टवेयर आदि तैयार करते हैं। ई-कॉमर्स को दुनिया में इनकी जरूरत रोज़ बढ़ती जा रही है।

*   **3जी और 4जी फोन :**

आजकल जिन मोबाइल फोन का इस्तेमाल हो रहा है वह दूसरी पीढ़ी का है। लेकिन अब तीसरी और चौथी पीढ़ी के मोबाइल फोन विकसित करने की दिशा में काम होने लगा है। इन सेलफोन की विशेषता यह है कि उनमें हम पी.सी. की ही तरह इंटरनेट देख सकेंगे, मल्टीमीडिया संदेश भेजना आसान हो जाएगा और सूचना भेजने की रफ्तार बहुत तेज हो जाएगी।

*   **वैप :**

वायरलेस एक्सेस प्रोटोकॉल वह तकनीक है जिनसे हम मोबाइल उपकरणों पर इंटरनेट देख सकते हैं। इन मोबाइल उपकरणों में सेलफोन, पामटॉप, डिजिटल डायरी आदि शामिल हैं। अभी वैप की मदद से हम सिर्फ टेक्स्ट इंटरनेट यानी बिना चित्रों वाला इंटरनेट देख पाते हैं।

*   **एसएमएस और ईएमएस :**

जिस तरह इंटरनेट पर ई-मेल के ज़रिए संदेश भेजते हैं उसी तरह मोबाइल फोन से छोटे-छोटे लिखित संदेश भी किसी दूसरे मोबाइल फोन पर भेजे जा सकते हैं। इन संदेशों को एसएमएस यानी शॉर्ट मैसेज सर्विस कहते हैं। दुनिया भर में एसएमएस काफी लोकप्रिय हैं, लेकिन इनके आकार की सीमा निर्धारित होती है। इसके अधिक करने के लिए एक्सटेंडेट मैसेज सर्विस यानी ईएमएस विकसित करने पर काम हो रहा है जिससे लंबे संदेश (जिनमें चित्र और संगीत वाली फाइल शामिल होंगी) भेजे जा सकेंगे।

*   **इंटरनेट टेलीफोनी :**

इंटरनेट की दुनिया की अगली क्रांति इंटरनेट टेलीफोनी होगी। इसके जरिए इंटरनेट का इस्तेमाल टेलीफोन की तरह किया जा सकेगा। इससे टेलीफोन कॉल पर आने वाला भारी खर्च भी बच जाएगा। कुछ पश्चिमी देशों में तो इनका प्रचलन लोकप्रिय भी हो गया है। इसमें वॉयस ऑन इंटरनेट तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। कई देशों में परंपरागत टेलीफोन कंपनियों ने इसके खतरे को भाँपते हुए इसे रोकने की कोशिश भी की, लेकिन वे असफल रही हैं।

*   **सर्वर :**

यह किसी नेटवर्क का ऐसा कंम्प्यूटर होता है जो कि सारे नेटवर्क के लिए किसी एक खास काम की जिम्मेदारी संभालता है। उदाहरण के लिए अगर किसी नेटवर्क में प्रिंट सर्वर है तो वह नेटवर्क के सभी कंम्प्यूटरों के प्रिंट निकालने संबंधी काम की देखरेख करेगा।

*   **फैंक्स :**

इसे फैक्सीमाइल भी कहते हैं। यह रेडियो तरंगों या फिर टेलीफोन लाइनों से लिखित जानकारी को एक जगह से दूसरी जगह भेजना और उसे उसी स्वरूप में हासिल करना संभव बनाता है। साधारण फैक्स मशीन से जब सूचना भेजी जाती है तो वह उसकी लिखित और ग्राफिक जानकारी को स्कैन कर लेती है और टेलीफोन नेटवर्क से दूसरी फैक्स मशीन तक भेज देती है, जहाँ उसे उसके मूल स्वरूप में हासिल कर लिया जाता है। इंटरनेट और सूचना क्रांति के आने के बाद इंटरनेट से भी फैक्स भेजना संभव हो गया है। यहाँ तक मोबाइल फोन पर भी आप फैक्स हासिल कर सकते हैं।

*   **मोडेम :**

डिजिटल डाटा भेजने के लिए मोडेम का इस्तेमाल किया जाता है। जब हम किसी कंम्प्यूटर को टेलीफोन लाइन के जरिए इंटरनेट से जोड़ते हैं तो वहाँ भी यह काम मोडेम ही करता है। यह डिजिटल डाटा को एनालॉग सिगनल में बदल कर तरंगों के रूप में भेजता है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सूचना प्रौद्योगिकी का क्या अर्थ है ?

(2) कंम्प्यूटर से क्या आशय है ?

(3) सॉफ्टवेयर किसे कहते हैं ?

(4) हार्डवेयर किसे कहते है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्य में लिखिए :

(1) नवीनतम इलैक्ट्रोनिक उपकरणों के विकास से सूचना और संचार क्षेत्र में एक नई क्रांति आ गई है, कैसे ?

(2) कंम्प्यूटर को मानव मस्तिष्क का मशीन रूप क्यों कहा जाता है ?

(3) आज के युग को इंटरनेट युग क्यों कहा जाता हैं ?

(4) निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

- इंट्रानेट
- डब्लूडब्लूडब्लू
- ई-मेल
- फैक्स

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने अध्यापक से सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः सूचना प्रौद्योगिकी के विविध उपादानों से विद्यार्थियों को अवगत कराएँ तथा उपलब्ध उपादानों का उपयोग सिखाएँ।

⊙

5 भारत शिररत्न : भरत

जयशंकर प्रसाद

(जन्म : सन् 1889, मृत्यु : सन् 1937 ई.)

छायावाद के प्रमुख कवि, नाटककार और कहानीकार जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी (वाराणसी) के एक सुप्रतिष्ठित वैश्य सुँधनी साहु के परिवार में हुआ था। 12 साल की उम्र में पिता के निधन से पारिवारिक जिम्मेदारी की वजह से मिडल के आगे पढ़ाई न कर सके। उन्होंने संस्कृत, फारसी, ऊर्दू और अंग्रेजी का अध्ययन घर पर ही किया। वे दर्शन, पुराण, इतिहास एवं पुरातत्त्व के विद्वान थे।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। छायावादी कविता को उन्होंने विकास के उन्नत शिखर तक पहुँचाया। 'कामायनी' उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसके अतिरिक्त 'लहर', 'झरना' एवं 'आँसू' उनकी उत्तम काव्य-कृतियाँ हैं। 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' तथा 'अजातशत्रु' उनके श्रेष्ठ नाटक हैं तथा 'तितली' उनके दो उपन्यास हैं। 'आँधी' एवं 'आकाशदीप' उनके कहानी संग्रह हैं।

प्रसादजी मुख्यतः प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। उनकी कविताओं में लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना, प्रकृति एवं नारी सौंदर्य का चित्रण, प्रभु के प्रति आत्म-निवेदन और भारत के गौरवमय अतीत के प्रति आकर्षण व्यक्त हुआ है। उनकी भाषाशैली अत्यन्त प्रौढ़, परिष्कृत और साहित्यिक है।

प्रस्तुत कविता 'चित्राधार' से ली गई है। कवि ने दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भारत की निर्भीकता का सजीव वर्णन किया है। शेर के मुँह में से दाँत गिननेवाला यह बालक आगे चलकर भरत के नाम से जाना गया। इसी के नाम से भारत देश का नामकरण हुआ।

अहा! खेलता कौन यहाँ शिशु सिंह से,
आर्य वृन्द के सुंदर सुखमय भाग्य-सा!
कहता है उसको लेकर निज गोद में -
''खोल, खोल मुख सिंह बाल, मैं देखकर
गिन लूँगा तेरे दाँतों को हैं, भले,
देखूँ तो कैसे यह कुटिल कठोर हैं!''
देख वीर बालक के इस औद्धत्य को
लगी गरजने भरी सिंहनी क्रोध से।
छड़ी तानकर बोला बालक रोष से -
''बाधा देगी क्रीड़ा में यदि तू कभी
मार खाएगी, और तुझे दूँगा नहीं-
इस बच्चे को; चली जा अरी भाग जा!''
अहा, कौन यह वीर बाल निर्भीक है
कहो भला भारतवासी! हो जानते,
यही 'भरत' वह बालक है, जिस नाम से
'भारत' संज्ञा पड़ी इसी वरभूमि की।
कश्यप के गुरुकुल में शिक्षित हो रहा
आश्रम में पलकर, कानन में घूम कर,
निज माता की गोद मोद भरता रहा
जो पति से थी बिछुड़ गई दुर्दैववश!
जंगल के शिशु सिंह सभी सहचर रहे
रहा घूमता हो निर्भीक प्रवीर यह,
जिसने अपने बलशाली भुजदण्ड से
भारत का साम्राज्य प्रथम स्थापित किया।
वही वीर यह बालक है दुष्यन्त का
भारत का शिररत्न 'भरत' शुभ नाम है।

(चित्राधार)

शब्दार्थ और टिप्पणी

औद्धत्य धृष्टता, उज्जडता **क्रीड़ा** खेल **निर्भीक** निडर, **कानन** जंगल **दुर्दैववश** दुर्भाग्य से **मोद** आनंद **आर्यवृंद** समस्त आर्यजाति **कुटिल** टेढ़ा **सहचर** साथी **प्रवीर** प्रबल वीर **भुजदंड** भुजाएँ **शिररत्न** सर्वश्रेष्ठ, नायक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) शिशु सिंह के साथ कौन खेल रहा था?

(क) बालक भरत (ख) बालक राम (ग) बालक कृष्ण (घ) बालक गणेश

(2) बालक किसके आश्रम में पढ़ रहा था?

(क) द्रोणाचार्य के (ख) कश्यप के (ग) गौतम के (घ) दुर्वासा के

(3) बालक भरत का सहचर कौन था?

(अ) शिशुसिंह (ख) शेर (ग) हाथी (घ) बंदर

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) शिशु सिंह के साथ बालक कया कर रहा था?

(2) बालक का लालन-पालन कहाँ हुआ?

(3) बालक भरत के माता-पिता कौन थे?

(4) भारत का प्रथम साम्राज्य किसने स्थापित किया?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्य में दीजिए :

(1) सिंहनी क्यों गर्जने लगी?

(2) बालक ने क्रोधित सिंहनी से क्या कहा?

(3) शकुन्तला अपने पति से क्यों बिछड़ गई थी?

(4) शिशु सिंह को गोद में लेकर बालक ने क्या कहा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) बालक भरत की निर्भीकता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(2) 'भारतरत्न : भरत' कविता का भावार्थ लिखिए।

(3) बालक भरत का लालन-पालन कैसे हुआ?

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्तिः** जयशंकर प्रसाद का 'चित्राधार' काव्य-संग्रह प्राप्त करके पढ़िए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** भरत के विषय में जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाइए।

⊙

6	# घर

भोलाभाई पटेल

(जन्म : सन् 1934 ई. : निधन : सन् 2012 ई.)

डॉ. भोलाभाई पटेल गुजराती भाषा के साहित्यकार हैं। उनका जन्म महेसाणा (गुजरात) निकट सोजा गाँव में हुआ था। बनारसयुनि. से हिन्दी, संस्कृत और प्राचीन भारतीय संस्कृति के विषय में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। गुजरात युनि. में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर थे।

डॉ. भोलाभाई पटेल की प्रमुख रचना में 'अधुना', 'विदिशा', 'कांचन जंघा', 'अज्ञेय एक अध्ययन' आदि है। उनको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। गुजराती साहित्य सभा की ओर से 'रणजित राम सुवर्ण चंद्रक' हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान का 'श्री स्वामी सच्चिदानंद सम्मान', भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से सम्मानित किया है।

प्रस्तुत निबंध में लेखक शहर में स्थायी होने से गाँव के घर को बेच देने का विचार करते है। वह मिट्टी का घर उनके परिवार ने बड़ी महेनत से बनाया था। घर बेचने से पहले सब भाई एक बार इस घर में साथ रहने जाते हैं। लेखक की माँ पुरानी घटनाओं को याद करके रोने लगती है। अंत में घर न बेचने का निर्णय लेते है। घर केवल चार दीवार और छप्परवाला ही नहीं लेकिन भावनाओं का प्रतीक होता है।

गाँव से शहर में स्थायी होने के बाद लगभग बंद रहनेवाले अपने छोटे-से गाँव के पुश्तैनी घर को बेच देने का विचार आया। जिस मुहल्ले में हमारा घर है वहाँ के पुराने पड़ोसी तो अब शहर में रहने लगे थे। अधिकतर लोगों ने तो अपने पुराने घर बेच भी दिए थे। इसलिए शादी-मृत्यु जैसे अवसर पर किसी सामाजिक रिवाज के लिए या लम्बी छुट्टियों में गाँव के इस घर में रहने जाते तो बड़ा बेढंगा लगता। नए पड़ोसी आ गए हैं और उनसे अभी नाता ही नहीं बँध पाया है। वे हमें भी आगन्तुक ही मानते थे। इसलिए उस घर को रखने का कोई आकर्षण नहीं था।

बंद रहने के कारण पुराना घर और जर्जरित होता जा रहा था। चौमासे में अधिक बरसात पड़ने पर टीन के छप्पर से भी पानी अंदर आता था जिससे घर की एक मुख्य दीवार में दरार पड़ गई थी। खुले दालान एवं आँगन में कूड़े के ढेर लग जाते। इसलिए बूढ़ी माँ की अनुमति लेकर घर बेच देने का विचार पक्का कर लिया। योग्य ग्राहक मिले तो एक गाँव में रहनेवाले व्यवहार-कुशल मित्र से बेचने की सिफारिश करके हम शहर चले आए। फिर एक दिन 'ऑफर' आया भी सही। ऑफर ठीक था और करनेवाला व्यक्ति अच्छा और भरोसेमंद था, इसलिए अब देर करने या आना-कानी करने का प्रश्न ही नहीं था।

परन्तु उसी क्षण से मन में टीस सी उठी। बार-बार मन को व्यग्र बनाता, विचार आने लगा कि पुश्तैनी घर क्यों बेचा जाए? तीन-चार पीढ़ियों से चले आते मिट्टी के कमरे के स्थान पर मेरे पिता ने यह ईंट का पक्का घर बनवाया था। कहना चाहिए कि घर के सभी सदस्यों ने स्वयं मजूरी करके घर बनाया था। पिताजी इसके लिए अपनी बैलगाड़ी में ईंटें लाए थे। चिनाई के लिए गारा बनाने के लिए गाँव के 'आँबा तालाब' की चिकनी मिट्टी स्वयं खोदकर लाए थे। मेरी माँ ने शहतीर तक गारे के तसले चढ़ाए थे। फिर शहर में अपने लड़कों के जब नए मकान बनने लगे तब उनके मकान, वेतनभोगी सुपरवाइजरों की देखरेख में मज़दूरों द्वारा बनते देखकर, मन में थोड़ा खुश होते हुए माँ-पिताजी अनेक बार, गाँव के घर को कैसे स्वयं मेहनत करके बनाया था, उसकी बात करते हुए भावुक हो जाते थे।

इसी घर में ही हम सभी भाई-बांधवों का जन्म हुआ था। इतना ही नहीं इसी कमरे में हमारे दाम्पत्यजीवन का आरंभ हुआ और उसी कमरे में हमारी संतानों का जन्म भी हुआ। जीवन में जो अनेक अच्छे-बुरे प्रसंग आए, यह घर उनका साक्षी है।

घर के आँगन में कैसे खेलते थे! एक दिन उस आँगन को पार कर कँधे पर थैला लटकाकर गाँव की पाठशाला में पढ़ने गए थे। एक दिन उसी आँगन को पार कर दूर परगाँव पढ़ने गए। एक दिन उसी आँगन को पारकर शहर में जाकर बसे। इसी घर के आँगन में हमारी बहनों और भाइयों के विवाह-मंडप बँधे थे। यहीं बिरादरीवालों के साथ झगड़े और स्नेह-मिलन भी हुए थे। यहीं पड़ोसियों के साथ ऊँची आवाज़ में बोला-चाली और जाड़ों में अलाव के पास बैठकर मधुर विश्रंभ कथाएँ हुईं थीं। इसी आँगन में हमारे परिवार के कुछ सदस्य —भैंस, पड़िया,

बैल, बछड़े बाँध जाते थे।

इसी घर के दालान में, मेरी दादी और फिर दादा की मृत्यु के समय, गोबर से लीपकर उस पर उन्हें सुलाकर, पूजाएँ हुईं थीं, और कुछ वर्ष पहले मेरे पिता को भी इसी दालान में सुलाया गया था।

हमारे घर के दोनों ओर दूसरे घर हैं। एक घर हमारे एकदम निकट के साथी का है। वह भी बंद है। मेरा मित्र रोजी-रोटी कमाने देश के अनेक स्थलों में घूमने के बाद, पत्नी की मृत्यु होने पर अब, अहमदाबाद में रहता है। उसके बाद के मकान में काशी बुआ रहती थीं। उनकी मृत्यु को वर्षों हो गए। वर्षों तक जहाँ वे रेत घड़ी लेकर रोज सामयिक करतीं, उस दालान में अब एक तोंदवाला बारोट सोता दिखाई देता है। सामनेवाले मकान का मालिक प्रौढ़ अवस्था में परन्तु कुँवारा ही चल बसा। उसके बाद जिसने वह मकान खरीदा उसने, आँगन के लिए झगड़ा करके पड़ोसी-हक स्थापित किया। एक दिन वह घर भी गिर पड़ा। अब नई दिशा में नये दरवाजे के साथ बना है।

इस तरह सब बदल चुका है। फिर भी लगता है कि हम अपना घर क्यों बेचें! पुराना है तो भी, है तो पुश्तैनी घर। वह घर है। चार दीवारों और छप्परवाला कोई मकान नहीं है। मकान पैसों से खरीदा जा सकता है, बनवाया जा सकता है, पैसे लेकर बेचा जा सकता है, परन्तु घर? घर तो एक भावना है। घर न होने पर, घर की भावना भी अच्छी है। वह घर सिर्फ पैसे से खरीदा या बनवाया नहीं जा सकता। इसलिए लगने लगा कि भले ही घर पुराना होता जाए, जीर्ण होता जाए, भले ही गिर पड़े, परन्तु वह बना रहे।

दूसरी ओर, मन दूसरा तर्क करता है कि यह सब भावुकता है। यदि गाँव में जाना ही न हो तो वहाँ घर रखने का क्या अर्थ है? अच्छे पैसे मिल रहे हैं। इतने पैसे 'फिक्स्ड डिपोजिट' में रखें, तो भी...

अन्त में निकाल देने का ही निर्णय लिया। परन्तु हम सब भाइयों ने, एक बार सपरिवार, अपने उस घर में कुछ दिन एक साथ रहने के लिए सोचा। हमेशा के लिए निकाल देना है तो एक बार उस घर में सब एक साथ रह लें।

और फिर लम्बे समय के बाद वह बंद घर खुला।

देखते-देखते छोटे-बड़े परिवारजनों से वह सूना घर गूँजने लगा। इस अवसर पर एक नगरवासी मित्र को गाँव के इस घर को देखने के लिए साथ ले गया था। पुराने दिन वापस लौट आए थे। पिताजी की मृत्यु के बाद मेरी माँ करीब-करीब उदास रहतीं। घर के सामाजिक प्रसंगों में भी विशेष रुचि नहीं लेती थी। वह भी यहाँ आकर सबके बीच प्रसन्न लगीं।

परन्तु अब घर की प्रत्येक दीवार मुझे उलाहना देने लगी। दालान में जहाँ मैं हमेशा बैठता; जहाँ बैठकर पहली बार ककहरा लिखा; और जहाँ बैठकर छुट्टियों में उच्च शिक्षा के ग्रंथ पढ़ता था, वहाँ जाकर बैठा। वहाँ भीत से टेक लेते ही वह अन्दर से मुझे हिला गई। मैंने पीछे मुड़कर उस पर हाथ फेरा। वह कह रही थी- 'एक तो इतने दिन बाद आए और अब बस हमेशा के लिए...'

मैं व्यग्र हो गया। आँगन में खाट बिछाकर बैठ गया। अब वहाँ खाली नाद थी। खूँट थे। परन्तु ढोर-डंगर नहीं थे। परन्तु, उस ओर देखते ही मानो वे सब एक साथ रंभाने लगे। मैं एकदम खड़ा हो गया। शून्य आँखों में भरा हुआ आँगन देखता रहा... घर की यह खपरैल। कितने सारे चौमासों में इसका संगीत सुना है! यहाँ तोरण के बीच नीचे मेरी बहनें विवाह-मंडप में बैठी थीं, और यहीं दादी, दादा और पिताजी की अर्थियाँ बँधी थीं। ऐसा लगा जैसे मेरा गला रुँध गया हो।

घर के अन्दर के कमरे में गया। बंद जर्जरित कमरा, अधिक मुखर लगा। पिछली दीवार की एक जाली से थोड़ा प्रकाश आ रहा था। एक समय यह कमरा अनाज भरने की मिट्टी की कोठियों और पिटारों से भरा रहता था। वह सब तो कब का निकाल दिया है। परन्तु अभी भी कोने में दही बिलोने का बड़ा मटका और खूँटी पर बड़ी रई लटकी है। मैं यहाँ जन्मा था; मेरी संतानें भी... अब?

बीच के खंड में, जहाँ हम खाना खाते थे, वहाँ से होकर फिर दालान में आता हूँ। माँ अकेली बैठी हैं। सब इस समय इधर-उधर हैं। देखता हूँ कि बूढ़ी माँ रो रही हैं। माँ को कम दिखाई देता है, कम सुनाई देता है।

अब अधिक दिन निकाल सकें, ऐसा भी नहीं लगता। मैंने पास जाकर पूछा– 'यह क्या, तू रो रही है माँ?'

और वह जोर से रो पड़ी– 'यह घर...' बस इतना ही वह आँसू और हिचकियों के बीच बोल पाईं। पिताजी के अवसान के समय नहीं रोई थीं, उतना माँ इस समय रो रही थीं। धीरे-धीरे हिचकियों के बीच उसने कहा– यह घर, मैं जी रही हूँ तब तक मत निकालो। मैं अब कुछ दिनों की ही मेहमान हूँ। फिर तुम लोग जो चाहो...'

'परन्तु, माँ, तूने ही तो कहा था!'

'कहा होगा, परन्तु वापस यहाँ आने के बाद... नहीं, इसे तुम मत बेंचो।' उसका रोना बंद नहीं हो रहा था।

माँ को रोता देखकर मुझे दु:ख तो हुआ परन्तु आनंद विशेष हुआ। लगा कि उसका हृदय अभी जीवन्त है। उसे अभी जगत में, जीवन में रुचि है। हम तो मान बैठे थे कि अब तो माँ बस दिन गिन रही हैं। परन्तु, घर के प्रति उसका यह गहरा राग...

घर निकाल देने की बात को लेकर मेरे मन में भी अन्दर-ही-अन्दर अपराध-बोध तो था। परन्तु अब तो एक प्रकार की तीव्र कसक उठी। घर को सभी की सहमति से बेचने का निर्णय लिया था। इकरारनामा भी हो चुका था। लेकिन उस दिन से प्रत्येक सदस्य घर की बात निकलते ही मौन हो जाता था।

इतने में छोटा भाई मकान खरीदनेवाले के साथ आया। घर के अन्य सदस्य भी एकत्र होकर माँ के आस-पास बैठ गए थे। माँ को समझाने का प्रयत्न करने लगे। 'हम अधिक सुविधावाला नया मकान इस गाँव में ही बनाएँगे। इसी घर के पैसों से, तुम कहोगी वैसा ही...'

माँ ने कहा– 'मैंने इस घर की शहतीर तक, ईंटे चढ़ाई हैं। तुम्हारे पिता ने कितनी उमंगों से बाँधा है। इसलिए, मेरे जाने के बाद भगवान करे कि तुम लोग महल बनवाओ... परन्तु यह घर तो...' । छोटा भाई समय की नज़ाकत समझ गया। उसने मकान खरीदनेवाले से कहा– भाई, कुछ समय रुक जाओ। यह घर देंगे तब, तुमको ही देंगे।'' मैंने देखा कि हम सबकी छाती पर से एक पत्थर-सा हट गया था। बरसात के बाद खुले आकाश जैसा माँ का मुँह देखकर मानो जर्जरित घर हँस रहा था। अदृष्ट गृहदेवता की प्रसन्नता का स्पर्श सभी को हुआ था।

अनुवाद : डॉ. आलोक गुपता

शब्दार्थ और टिप्पणी

पुश्तैनी कई पीढ़ियों से चला आया, **व्यग्र** व्याकुल, **जाड़ों** शर्दी **अलाव** तापने के निमित्त जलाई गई आग **विश्रामकथाएँ** प्रेम की बातें **सामयिक** धार्मिक पाठ, **उलाहना** उपालंभ, शिकायत, मा **इकरारनाम** करारपत्र **शहतीर** ऊँचाई तक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) लेखनने अपना कैसा घर बेचने का विचार किया?
(क) नया (ख) पुश्तैनी (ग) शहर का (घ) बड़ा

(2) बंद रहने के कारण पुराना घर कैसा होता जा रहा था?
(क) खंडर (ख) पशु-पक्षी का निवास स्थान
(ग) जर्जरित (घ) कोठी

(3) लेखक के पिताजी घर बनाने के लिए कहाँ से चिकनी मिट्टी लाते थे?
(क) आँबा तालाब (ख) सरोवर (ग) नदी (घ) हंस तालाब

(4) लेखक की माँ क्यों रोने लगी?
(क) घर बेचने के कारण (ख) पिता का अवसान
(ग) खेत में नुकसान (घ) अकेली रहने से

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) गाँव का पुश्तैनी घर बंद क्यों रहता था?

(2) लेखक ने किसी की अनुमति लेकर घर बेचने का विचार पक्का किया?

(3) लेखक के पिता ने यह घर कैसे बनाया था?

(4) लेखक के सब भाइयों ने एक बार सपरिवार उस घर में साथ रहने को क्यों सोचा?

(5) लेखक के छोटे भाई ने मकान खरीदने वाले को क्या कहा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लेखक ने पुराना घर बेच देने का विचार क्यों किया?

(2) लेखक का पुराना घर कैसे बनाया गया था?

(3) लेखक को कयों लगा कि माँ का ह्रदय अभी जीवन्त है?

(4) घर न बेचने के निर्णय के बाद लेखक को कैसा अहसास हुआ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लेखक के पुराने घर के साथ परिवार का क्या संबंध था?

(2) घर बेचने से माँ को क्यों दुःख हो रहा था?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) घर पैसे लेकर बेचा जा सकता है, परंतु घर? घर तो एक भावना है ।

(2) घर की प्रत्येक दीवार मुझे उलाहना देने लगी ।

6. निम्नलिखित विधानों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) घर को रखने का कोई आकर्षण नहीं था क्योंकि

(अ) घर बेचने से बड़ी रकम मिल रही थी।

(ख) घर बंद रहने के कारण जर्जरित होता जा रहा था।

(ग) घर की देख भाल करने वाला कोई नहीं था।

(घ) पुराना घर खंडर बन चुका था।

(2) लेखक के छोटे भाई ने खरीदने वाले से कहा-

(अ) अब हमें घर बेचना नहीं है। (ख) यह हमारा पुराना घर है।

(ग) यह घर देंगे तब, तुम को ही देंगे।(घ) हम सस्ते में घर नहीं बेच सकते।

(3) माँ ने रोते हुए कहा कि-

(अ) यह घर अब जर्जरित हो गया है। (ख) यह घर बेच देना चाहिए।

(ग) मुझे अब घर की जरूरत नहीं। (घ) यह घर, मैं जी रही हूँ तब तक मत निकालो।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति :

(1) 'शाला का मकान' आत्मकथा लिखिए।

(2) मेरा घर मेरा परिवार : निबंध लिखिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : 'घर' विषय पर आधारित काव्य-कहानी ढूँढ़कर पढ़िए। घर भावना का प्रतीक है, छात्रों को जानकारी कीजिए।

⊙

शब्दावली - विश्वकोश, थिसोरस : परिचय और उपयोग

शब्दकोश (अन्य वर्तनी : शब्दकोष) : एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रंथ जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का सन्निवेश हो। शब्दकोश एकभाषीय हो सकते हैं, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है, जैसे - अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या आडियो संचिका के रूप में। कुछ शब्दकोशों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों के लिये अलग-अलग शब्दकोश हो सकते हैं, जैसे - विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधिक (कानूनी) शब्दकोश, गणित का शब्दकोश आदि।

सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। सही अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है। सही शब्द के चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक हैं। शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझ कर आरंभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखाजोखा रखना शुरू कर दिया था। इस के लिए उस ने कोश बनाना शुरू किया। कोश में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है।

शब्दकोश :

हमारे परिचित भाषाओं के कोशों में ओक्सफोर्ड-इंग्लिश-डिक्शनरी के परिशीलन में उपर्युक्त समस्त प्रवृत्तियों का उत्कृष्ट निदर्शन देखा जा सकता है। उसमें शब्दों के सही उच्चारण का संकेत-चिह्नों से विशुद्ध और परिनिष्ठित बोध भी कराया है। योरप के उन्नत और समृद्ध देशों की प्राय: सभी भाषाओं में विकसित स्तर की कोशविद्या के आधार पर उत्कृष्ट, विशाल, प्रमाणिक संपन्न कोशों का निर्माण हो चुका है और उन दोशों में कोशनिर्माण के लिये ऐसे स्थायी संस्थान प्रतिष्ठापित किए जा चुके हैं जिनमें अबाध गति से सर्वदा कार्य चलता रहता है। लब्धप्रतिष्ठा और बड़े-बड़े विद्वानों का सहयोग तो उन संस्थानों को मिलता ही है, जागरूक जनता भी सहयोग देती है। अंग्रेजी डिक्शनरी तता अन्य भाषाओं में निर्मित कोशकारों के रचना-विधान-मूलक वैशिष्टयों का अध्ययन करने से अद्यतन कोशों में निज़्ननिर्दिष्ट बातों का अनुयोग आवश्यक लगता है-

(क) उच्चाणमसूचक संकेतचिह्नों के माध्यम से शब्दों के स्वरों व्यंजनों का पूर्णत: शुद्ध और परिनिष्ठित उच्चारण स्वरूप बताना और स्वराघात बलगात का निर्देश करते हुए यतासंभव उच्चार्य अंश के अक्षरों की बद्धता और अबद्धता का परिचय देना,

(ख) व्याकरण संबंध उपयोगी और आवश्यक निर्देश देना,

(ग) शब्दों की इतिहास-संबंध वैज्ञानिक-व्युत्पत्ति प्रदर्शित करना,

(घ) परिवार-संबंध अथवा परिवारमुक्त निकट या दूर के शब्दों के साथ शब्दरूप और अर्थरूप का तुलनात्मक पक्ष उपस्थित करना,

(ड) शब्दों के विभिन्न और पृथक्कृत नाना अर्थों को अधिक- न्यून प्रयोग क्रमानुसार सूचित करना।

(च) अप्रयुक्त - शब्दों अथवा शब्दप्रयोगों की विपोसूचना देना,

(छ) शब्दों के पर्याय बताना, और

(ज) संगत अर्थों के समर्थनार्थ उदाहरण देना,

(झ) चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों आदि के द्वारा अर्थ को अधिक स्पष्ट करना।

आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी का नव्यतम और बृहत्तम संस्करण आधुनिक कोशविद्या की प्राय: सभी विशेषताओं से संपन्न है। नागरीप्रचारिणी सभा के हिंदी शब्दसागर के अतिरिक्त हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाश्यमान मानक शब्दकोश एक विस्तृत आयास है। हिंदी कोशकला के लब्धप्रतिष्ठ संपादक रामचन्द्र वर्मा के

इस प्रशंसनीय कार्य का उपजीव्य भी मुख्यात: शब्दसागर ही है। उसका मूल कलेवर तात्विक रूप में शब्दसागर से ही अधिकांशत: परिकलित है। हिंदी के अन्य कोशों में भी अधिकांश सामग्री इसी कोश से ली गयी है। थोडे-बहुत मुख्यत: संस्कृत कोशों से और यदा-कदा अन्यत्र से शब्दों और अर्थों को आवश्यक-अनावश्यक रूप में ठँस दिया गया है। ज्ञानमंडल के बृहद् हिंदी शब्दकोश में पेटेवाली प्रणाली शुरू की गई है। परंतु वह पद्धति संस्कृत के कोशों में जिनका निर्माण पश्चिमी विद्वानों के प्रयास से आरंभ हुआ था, सैकड़ो वर्ष पूर्व से प्रचलित हो गई थी। पर आज भी, नव्य या आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोश उस स्तर तक नहीं पहुँचे पाए हैं जहाँ तक ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी अथवा रूची, अमेरिकन, जर्मन, इताली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के उत्कृष्ट और अत्यंत विकसित कोश पहुँच चुके हैं। कोशरचना की ऊपर वर्णित विधा को हम साधारणत: सामान्य भाषा शब्दकोश कह सकते हैं। इस प्रकार शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी, त्रिभाषी और बहुभाषी भी होते हैं। बहुभाषी शब्दकोशों में तुलनात्मक शब्दकोश भी युरोपीय भाषाओं में ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान की प्रौढ उपलब्धियों से प्रमाणीकृत रूप में निर्मित हो चुके हैं। इनमें मुख्य रूप से भाषावैज्ञानिक अनुशीलन और शोध के परिणामस्वरूप उपलब्ध सामग्री का नियोजन किया गया है। ऐसे तुलनात्मक कोश भी आज बन चुके हैं जिनमें प्राचीन भाषाओं की तुलना मिलती है। ऐसे भी कोश प्रकाशित हैं जिनमें एक से अधिक मुल परिवार की अनेक भाषाओं के शब्दों का तुलनात्मक परिशीलन किया गया है।

शब्दकोशों के नाना रूप :

शब्दकोशों के और भी नाना रूप आज विकसित हो चुके हैं और हो रहे हैं। वैज्ञानिक और शास्त्रीय विषयों के सामूहिक और उस-उस विषय के अनुसार शब्दकोश भी आज सभी समृद्ध भाषाओं में बनते जा रहे हैं। शास्त्रो और विज्ञानशाखाओं के परिभाषिक शब्दकोश भी निर्मित हो चुके हैं और हो रहे हैं। इन शब्दकोशों की रचना एक भाषा में भी होती है और दो या अनेक भाषाओं में भी। कुछ में केवल पर्याय शब्द रहते हैं और कुछ में व्याख्याएँ अथवा परिभाषाएँ भी दी जाती है। विज्ञान और तकनीकी या प्रविधिक विषयों से संबद्ध नाना पारिभाषिक शब्दकोशों में व्याख्यात्मक परिभाषाओं तथा कभी कभी अन्य साधनों की सहायता से भी बिलकुल सही अर्थ का बोध कराया जाता है। दर्शन, भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान और समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि समस्त आधुनिक विद्याओं के कोश विश्व की विविध संपन्न भाषाओं में विशेषज्ञों की सहायता से बनाए जा रहे हैं और इस प्रकृति के सैकडों-हजारों कोश भी बन चुके हैं। शब्दार्थ कोश संबंधी प्रकृति के अतिरिक्त इनमें ज्ञानकोशात्मक तत्त्वों की विस्तृत या लघुव्याख्याएँ भी संमिश्रित रहती है। प्राचीन शास्त्रों और दर्शनों आदि के विशिष्ट एवं पारिभाषिक शब्दों के कोश भी बने हैं और बनाए जा रहे हैं। अनेक अतिरिक्त एक-एक ग्रंथ के शब्दार्थ कोश (यथा मानस शब्दावली) और एक-एक लेखक के साहित्य की शब्दावली भी युरोप, अमेरिका और भारत आदि में संकलित हो रही है। इनमें उच्च कोटि के कोशकारों ने ग्रंथसंदर्भों के संस्करणात्मक संकेत भी दिए हैं। अकारादि वर्णानुसारी अनुक्रमणिकात्मक उन शब्दासूचियों का- जिनके अर्थ नहीं दिए जाते हैं पर संदर्भ संकेत रहता है- यहाँ उल्लेख आवश्यक नहीं है। योरप और इंग्लैंड में ऐसी शब्दसूचियाँ अनेक बनीं। शेक्सपियर द्वारा प्रयुक्त शब्दों की ऐसी अनुक्रमणिका परम प्रसिद्ध है। वैदिक शब्दों की और ऋक्संहिता में प्रयुक्त पदों की ऐसी शब्दसूचियों के अनेक बनीं। शेक्सपियर द्वारा प्रयुक्त शब्दों की ऐसी अनुक्रमणिका परम प्रसिद्ध है। वैदिक शब्दों की और ऋक्संहिता में प्रयुक्त पदों की ऐसी शब्दसूचियों के अनेक संकलन पहले ही बन चुके हैं। व्याकरण महाभाष्य की भी एक एक ऐसी शब्दानुक्रमणिका प्रकाशित है। परंतु इनमें अर्थ न होने के कारण यहाँ उनका विवेचन नहीं किया जा रहा है।

ज्ञानकोश :

कोश की एक दूसरी विद्या ज्ञानकोश भी विकसित हुई है। इसके वृहत्तम और उत्कष्ट रूप को इन्साइक्लोपिडिया कहा गया है। हिंदी में इसके लिये विश्वकोश शब्द प्रयुक्त और गृहीत हो गया है। यह शब्द बँगाल विश्वकोशकार ने कदाचित् सर्वप्रथम बँगाल के ज्ञानकोश के लिये प्रयुक्त किया। उसका एक हिंदी संस्करण हिंदी विश्वकोश के नाम से नए सिरे से प्रकाशित हुआ। हिंदी में वह शब्द प्रयुक्त होने लगा है। यद्यपि हिंदी

के प्रथम किशोरोपयोगी ज्ञानकोश (अपूर्ण) को श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा पं. कृष्ण वल्लभ द्विवेदी द्वारा विश्वभारती अभिधान दिया गया तो भी ज्ञान कोश, ज्ञानदीपिका, विश्वदर्शन, विश्वविद्यालय भंडार आदि संज्ञाओं का प्रयोग भी ज्ञानकोश के लिये हुआ है। स्वयं सरकार भी बालशिक्षोपयोगी ज्ञानकोशात्मक ग्रंथ का प्रकाशन ज्ञानसरोवर नाम ले कर रही है। परंतु इन्साइक्लोपीडिया के अनुवाद रूप में विश्वकोश शब्द ही प्रचलित हो गया। उडीया के एक विश्वकोश का नाम शब्दार्थानुवाद के अनुसार ज्ञान मंडल रखा भी गया। ऐसा लगता है कि बृहद् परिवेश के व्यापक ज्ञान का परिभाषिक और विशिष्ट शब्दों के माध्यम से ज्ञान देनेवाले ग्रंथ का इन्साइक्लोपीडिया या विश्वकोश अभिधान निर्धारित हुआ और अपेक्षाकृत लघुतरकोशों को ज्ञानकोश आदि विभिन्न नाम दिए गए। अंग्रेजी आदि भाषाओं में बुक आफ नालेज, डिक्शनरी आवा जनरल कालेज आदि शीर्षकों के अंतरेगत नाना प्रकार के छोटे बड़े विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश बने हैं और आज भी निरंतर प्रकाशित एवं विकसित होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं इन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजन ऐंड एथिक्स आदि विषयविशेष से संबंद्ध विश्वकोशों की संख्या भी बहुत ही बड़ी है। अंग्रेजी आदि भाषाओं में बुक आफ नालेज, डिक्शनरी आव जनरल कालेज आदि शीर्षकों के अंतरेगत नाना प्रकार के छोटे बडे विश्वकोश अथवा ज्ञानकोश बने हैं और आज भी निरंतर प्रकाशित एवं विकसित होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं इन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजन ऐंड एथिक्स आदि विषयविशेष से संबंद्ध विश्वकोशों की संज़्या भी बहुत ही बड़ी है। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से निर्मित अनेक सामान्य विश्वकोश और विशेष विश्वकोश भी आज उपलब्ध हैं।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना अंग्रेजी के ऐसे विश्वकोश हैं। अंग्रेजी के सामान्य विश्वकोशों द्वारा इनकी प्रमाणिकता और संमान्यता सर्वस्वीकृत है। निरंतर इनके संशोधित, संवर्धित तता परिष्कृत संस्करण निकलते रहते हैं। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के दो परिशिष्ट ग्रंथ भी हैं जो प्रकाशित होते रहते हैं और जो नूतन संस्करण की सामग्री के रूप में सातत्य भाव से संकलित होते रहते हैं। इंग्लैंड में इन्साइक्लोपीडिया के पहले से ही ज्ञानकोशात्मक कोशों के नाना रूप बनने लगे थे।

ज्ञानकोशों के नाना प्रकार :

ज्ञानकोशों के भी इतने अधिक प्रकार और पद्वतियाँ हैं जिनकी चर्चा का यहाँ अवसर नहीं है। चरितकोश, कथाकोश, इतिहासकोश, ऐतिहासिक कालकोश, जीवनचरितकोश पुराज़्यानकोश, पौराणिक-ज़्यातपुरुषकोश आदि आदि प्रकार के विविध नामरूपात्मक ज्ञानकोशों की बहुत सी विधाएँ विकसित और प्रचलित हो चुकी हैं। यहाँ प्रसंगत: ज्ञानकोशों का संकेतात्मक नामनिर्देश मात्र कर दिया जा रहा है। हम इस प्रसंग को यहीं समाप्त करते हैं और शब्दर्थकोश से संबंद्ध प्रकृत विषय की चर्चा पर लौट आते हैं।

विश्वकोश :

अंग्रेजी भाषा में बुक ओफ नोलेज, 'डिक्शनरी ओफ जनरल नोलेज' आदि नामों से अनेक प्रकार के छोटे-बड़े विश्वकोश छपे हैं। यहाँ तक कि अब इन्साइक्लोपीडिया ओफ रिलीजन एण्ड एथिक्स, इन्साइक्लोपीडिया ओफ हिस्ट्री आदि प्रकार के विश्वकोशों का बहुत ज्यादा प्रकाशन हो रहा है, जिनमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों की विस्तृत व्याख्या-परिभाषा आदि सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाए संकलित की गई हैं। अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार के अनेक सामान्य और विशेष विश्वकोश आजकल उपलब्ध हैं। हिन्दी में भी अंग्रेजी के तर्ज पर अनेक रूपों एवं आकारों में विश्वकोशों का प्रकाशन हुआ है। इन्हें इतिहास कोश, चरित कोश, कथाकोश, पुराज़्यानकोश आदि शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित किया गया है। जनसंचार माध्यमों के तीव्र विकास ने जहाँ कोशों के प्रचलित स्वरूप में बुनियादी परिवर्तन ला दिया है, वहीं इन क्षेत्रों में प्रयुक्त नई शब्दावली को केन्द्रित करके कई विश्वकोश भी प्रकाशित किए गए हैं। जैसे- अशोक गुप्त द्वारा निर्मित हिन्दी पत्रकारिता संदर्भ कोश, डॉ. रामप्रकाश और डॉ. सुधीन्द्र कुमार के संयुक्त संपादन में संकलित पत्रकारिता संदर्भ कोश, विष्णु पंकज द्वारा संपादित साक्षात्कार कोश, प्रताप नारायण टंडन का बृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश आदि। प्रो. रमेश जैन द्वारा संपादित एवं नेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित जनसंचार विश्वकोश ऐसा ही कोश है, जिसे हिन्दी का पहला जनसंचार कोश माना जाता है। इसमें जनसंचार क्षेत्र से जुड़े विविध विधाओं के पारिभाषिक शब्दों का शोधपूर्ण एवं तथ्यात्मक विवेचन

किया गया है। इस कोश में शब्दों को निज़्नलिखित प्रकार से संकलित किया गया है–

'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका', 'एन्साइक्लोपीडिया इन्कार्टा' एवं 'एन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना' आदि ऐसे ही बहुचर्चित विश्वकोश हैं, जिनका कई खण्डों में प्रकाशन हुआ है। इनकी विशद लोकप्रियता एवं ज्ञानवर्धक उपयोगिता से बेहद प्रभावित होकर सबसे पहले भारतीय कोशकार डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु ने कई वर्षों के अथक प्रयास से पच्चीस खण्डों में विभाजित 'हिन्दी विश्वकोश' का निर्माण एवं प्रकाशन किया। तदन्तर डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, भगवतशरण उपाध्याय आदि विद्वानों के संयुक्त परिश्रम से बारह खण्डों में विभाजित एक अन्य 'हिन्दी विश्वकोश' का प्रकाशन भी हुआ। यहाँ चित्र में भारतीय दर्शन से जुड़े एक विश्वकोश 'Encyclopedia of Indian philosophies' को दर्शाया गया है, जिसमें भारतीय दर्शन से संबद्ध सभी उपलब्ध जानकारियों को संकलित किया गया है।

आपके मन में यह प्रश्न जरूर उठ रहा होगा कि शब्दकोश और विश्वकोश में क्या अंतर हैं? दरअसल सामान्य शब्दकोश के केन्द्र में शब्द होते हैं, किन्तु विश्वकोश के केन्द्र में विषय का पूर्ण–विवेचन निहित होता है। यही कारण है कि विश्वकोश में संसार के सभी मुख्य विषयों पर विस्तृत लेख, उनके ऐतिहासिक विवरण, प्रयोग गुण–दोष आदि का विशद्–विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त उस विषय से जुड़े दृष्टांत, उद्धरण, पृष्ठभूमि तथा चित्रादि भी प्रस्तुत किए जाते हैं, ताकि विषय को पूर्णतः स्पष्ट किया जा सके। इस प्रकार विश्वकोश में किसी विषय, वस्तु आदि की प्रकृति, निर्माण–प्रक्रिया, प्रयोग, विधि, शक्ति, स्वरूप आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। जबकि शब्दकोश में शब्दों के उच्चारण, वर्तनी, व्युत्पत्ति, व्याकरणिक–रूप, वर्ण–परिवर्तन, रूप–भेद, अर्थ, व्याख्या, पर्याय, प्रयोग आदि को स्पष्ट किया जाता है।

परिचय और उपयोग :

शब्दों के संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी, जैसे हिज्जे, अर्थ, उच्चारण, उत्पत्ति आदि के लिए प्रधान सूत्र और साधन शब्दकोश ही होते हैं। विश्वकोश से शब्दकोश इस अर्थ में भिन्न होता है कि विश्वकोश में किसी वस्तु के विषय में जानकारी दी होती है। आधुनिक बृहद शब्दकोशों की यह भी एक विशेषता मानी जाती है कि वे शब्द के बारे में तो सूचित करते ही हैं, अक्सर विश्वकोशों के समान संबंधित वस्तु के विषय में भी बताते हैं। इस प्रकार एक अच्छा शब्दकोश दो प्रकार के संदर्भ ग्रंथों यानी विश्वकोश और शब्दकोश का काम देता है।

विद्यार्थी अवस्था से लेकर अंत काल तक शब्दकोश ही एक मात्र ऐसा ग्रंथ है जो कभी भी अनुपयोगी नहीं होता। इसलिए अब पाश्चात्य देशों में शब्दकोशों के 'विश्वकोश' रूप पर तरह–तरह के परिशिष्ट और चित्र आदि देकर निखार पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा है और उनके नाम में भी 'विश्वकोश' या 'विश्वकोश संबंधी' शब्द। जैसे एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी जोड़े जाने लगे हैं। यही कारण है कि विदेशों में प्रकाशित शब्दकोश शब्दों के अर्थ जानने के अलावा अन्य प्रकार की सूचनाओं के लिए भी उपयोगी बन जाते हैं। जिन शब्दकोशों में शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने और उनकी प्राचीनता का प्रमाण देने के लिए उद्धधरण भी दिए जाते हैं, उनका उपयोग किसी उद्धधरण का सूत्र मालूम करने के लिए भी किया जा सकता है। कुछ शब्दकोशों में प्रसिद्ध विद्वानों, लेखकों, राजनीतिज्ञों आदि के उद्धरण भी शब्दों के अर्थ के साथ दिए रहते हैं। इस प्रकार किसी स्वतंत्र उद्धधरण कोश के अभाव में इस प्रकार के शब्दकोश बहुत उपयोगी बन जाते हैं। मगर शब्दकोश तैयार करने और उसके मुद्रण में प्रकाशक और लेखक से जिस सावधानी की अपेक्षा की जाती है, वह भारत में प्रकाशित किसी भी भाषा के शब्दकोश में शायद ही देखने को मिलती है। कभी–कभी प्रकाशक योग्य व्यक्तियों को थोड़ा–सा पारिश्रमिक देकर शब्दकोश तैयार करा लेते हैं और फिर बिना परीक्षण कराए उसे ज्यों का त्यों छाप देते हैं। यह भी देखा गया है कि प्रकाशक नए संस्करण के नाम पर पुराना संस्करण ही बिना किसी संशोधन या परिवर्द्धन के छाप देते हैं। इस कारण पिछले संस्करण में रह गई भूलो का संशोधन तथाकथित नए संस्करण में नहीं हो पाता और न ही उनमें भाषा में प्रचलित हो चुके नए शब्दों का समावेश हो पाता है।

किसी भी शब्दकोश की उपयोगिता जानने के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि उसमें प्रयुक्त भाषा को

परखा जाए। कुछ ऐसे भी शब्दकोश प्रकाशित हुए हैं, जिनका उद्देश्य किसी एक काल या युग के शब्दों के अर्थ देना है। इसलिए वर्तमान काल की भाषा के शब्दों के लिए मध्यकालीन या वैदिक काल की भाषा का कोश उपयोगी नहीं होगा। इसी प्रकार कोई व्यक्ति अगर प्राचीन ऐतिहासिक काल के शब्दों के अर्थ जानने के लिए अधुनातन भाषा का शब्दकोश देखे तो यह उसकी भूल होगी और उसे अपेक्षित सूचना नहीं मिल सकेगी।

कुछ प्रकाशक अपने शब्दकोश के प्रचार के लिए शब्द संज़्या की घोषणा भी करते हैं। पर यह बहुत भ्रामक है। इससे यह पता नहीं चलता कि शब्दों की संख्या किस प्रकार आंकी गई है। घोषित या प्रचारित शब्द संज़्या में केवल मुख्य शब्दों को शामिल किया गया है या मुख्य शब्दों के अन्य रूपों को भी गिना गया है, मसलन एक आदर्श शब्दकोश में 'पिछ', 'पिछलगा', 'पिछलगी' और 'पिछलग्गू' - को केवल एक शब्द गिना जाएगा । पर कुछ प्रकाशक 'पिछ' जैसे कुछ अन्य शब्दों से निकले रूपों को भी शब्दों की संख्या में शामिल करके शब्द संज़्या भ्रमात्मक रूप से बढ़ा कर प्रचारित करते हैं। शब्दों के संबंध में यह भी देखना चाहिए कि कोश में किस प्रकार के शब्द लिए गए हैं। उसमें बोली और उपभाषा के शब्दों के साथ ही प्रचलित और वैज्ञानिक शब्द भी शामिल किए गए हैं या नहीं।

यह भी देखना चाहिए कि कोश में हर शब्द का विवेचन/निरूपण किस प्रकार किया गया है, मसलन शब्द के हिज्जे शुद्ध हैं या अशुद्ध हिज्जे के चयन में किन सिद्धांतों को अपनाया गया है, शब्द के बहुवचन, क्रिया रूप, कृदंत आदि भी दिए गए हैं या नहीं। शब्दों का उच्चारण दिया गया है या नहीं और उच्चारण देने के लिए जो नियम अपनाया गया है वह यथातथ्य और स्पष्ट है या नहीं।

शब्द का इतिहास दिया गया है या नहीं, किसी शब्द के अर्थ में समय-समय पर जो परिवर्तन हुए हैं या होते रहे हैं, उनका उल्लेख है या नहीं, शब्द की परिभाषा स्पष्ट, सही और उपयुक्त है या नहीं, कठिन शब्दों का अर्थ और परिभाषा स्पष्ट करने के लिए उदाहरण और उद्धरण भी दिए गए हैं या नहीं, उद्धरण किस रूप में दिए गए हैं और उद्धरणों का सही-सही संदर्भ दिया गया है या नहीं, क्या संदर्भ कालक्रम से रखे गए हैं और हरेक के साथ समय दिया गया है, ताकि शब्द विशेष का इतिहास भी मालूम हो सके? क्या शब्द के साथ उसका परिचय, जैसे-स्तरीय, अप्रचलित, बोलचाल संबंधी आदि दिया गया है? शब्द के पर्यायवाची और विलोम भी दिए गए हैं या नहीं? शब्द के साथ विश्वकोश के समान सूचना दी गई है या नहीं?

यूरोपीय भाषाओं के अच्छे शब्दकोशों में आमतौर पर शब्दों की परिभाषा या समानार्थी शब्दों के अलावा कुछ और महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सूचनाएँ भी दी रहती है। इस प्रकार के बड़े शब्दकोशों में कुछ सूचनाए विश्वकोश की शैली में होती है। कुछ शब्दकोशों में उद्धरण भी खूब दिए रहते हैं, जिनका उपयोग विदेशी उद्धरण कोश के पूरक के रूप में किया जा सकता है। कुछ शब्दकोशों में अप्रचलित शब्द और स्थानीय प्रयोग में आने वाले शब्द अलग से दिए रहते हैं। इसलिए स्थानीय इतिहास, आचार-विचार, लोक-व्यवहार आदि की थोड़ी-बहुत जानकारी के लिए भी ये उपयोगी होते हैं।

हिन्दी का विश्वकोष :

इंटरनेट पर हिन्दी का विश्वकोश (इन्साइक्लोपेडिया) भी उपलब्ध है, ये विश्वकोष हिन्दी की सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक नागरी प्रचारिणी सभा ने तैयार किया था। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने इसे इंटरनेट पर स्थापित किया है । यदी आप कार्य शब्द तालाश रहे है तो भारत-कोश नामक पोर्टल को जरूर देखे। इसका उद्देश्य भारत के संबंध में हिन्दी में एक समग्र ज्ञानकोश उपलब्ध कराना है।

इंटरनेट पर हिन्दी का विश्वकोश (इन्साइक्लोपेडिया) भी उपलब्ध है। ये विश्वकोष हिन्दी की सबसे पुरानी संस्थाओं में से एक नागरी प्रचारिणी सभा ने तैयार किया था। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान। आगरा ने इसे इंटरनेट पर स्थापित कराने में सहायता की है।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :**
   (1) शब्दकोश किसे कहते हैं ?
   (2) शब्दकोश में किस तरह की जानकारी होती है ?
   (3) शब्दकोश को उपयोग क्यों किया जाता है ?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :**
   (1) विश्वकोश किसे कहते हैं ?
   (2) ज्ञात कोश किसे कहते हैं ?
   (3) विश्वकोश का उपयोग बताइए ?

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी प्रवृत्ति

उपलब्ध किसी शब्दकोश या विश्वकोश या ज्ञानकोश के अपनी पसंद से कुछ शब्द चुनकर उनकी सूची अर्थ सहित तैयार कीजिए।

शिक्षक प्रवृत्ति

किसी उपलब्ध शब्दकोश या विश्वकोश या ज्ञानकोश को विद्यार्थियों को दिखाकर उसकी उपयोगिता समझाइए।

⦿

7 बादल को घिरते देखा है

नागार्जुन

(जन्म : सन् 1917 ई. : निधन : सन् 1998 ई.)

हिन्दी के जनवादी नागार्जुन का जन्म ननिहाल (सतलखा, जिला मधुबनी, बिहार) में हुआ था। उनका पैतृक गाँव तरौनी, दरभंगा बिहार में पड़ता है। उनका मूलनाम वैधनाथ मिश्र था। उनकी शिक्षा गाँव की संस्कृत पाठशाला में तथा उच्चशिक्षा बनारस में हुई।

नागार्जुन ने हिन्दी में 'रतिनाथ की चाची', 'नयी पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'कुम्भीपाक', 'हीरक जयंती', 'उग्रतारा', 'जमनिया का बाबा', 'पारो', 'गरीबदास' आदि उपन्यास लिखे हैं। 'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी पथराई आँखें', 'तुमने कहा था', 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'हजार-हजार बाँहोंवाली', 'रत्नगर्भा', 'ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या !', 'आखिर क्या कह दिया हमने', 'इस गुब्बारे की छाया में' आदि उनके कविता-संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त निबंध, कहानियाँ, संस्मरण और अन्य विधाओं में भी उन्होंने लेखन किया है। नागार्जुन को मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी सेवा विशिष्ट सम्मान, भारत-भारती, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया है।

तिब्बत -यात्रा के क्रम में हिमालय-दर्शन से, प्रकृति के निर्मल-निच्छल रूप को देखने से कवि के मन में सौंदर्य का जो उफान आया, उसे इस कविता में ढाला है। इसमें कहीं मानसरोवर में कमलों के ऊपर वर्षाबूँदों के गिरने के चित्र हैं तो कहीं झीलों में हंसों द्वारा कमलनाभ खोजने के दृश्य हैं। चिरविरह के बाद चकवा-चकई का मिलना और शैवालों की हरी-दरी पर प्रणय-कटाक्ष करना आदि रोमानी वातावरण की सृष्टि हमारी प्रणय-चेतना को मुखर करता है।

अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है,
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।
तुंग हिमालय के कंधों पर

छोटी-बड़ी कई झीलें हैं
उनके श्यामल-नील सलिल में
समतल देशों सें आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिसतंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु वसंत का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा
बालारुण की मृदु किरणें थीं
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशाकाल के चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान् सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर

प्रणय कलह छिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अमल-धवल निर्मल और उज्ज्वल **शिखर** चोटी **तुहिन** बर्फ **तुंग** ऊँचा **सलिल** पानी, जल **समतल देश** मैदानी भाग **अमस** गरमी **बिसतंतु** कमलनाल, कमलदंड, जिन पर कमल का फूल खड़ा रहता है **तिरना** तैरना **अनिल** पवन **बालारुण** बाल सूर्य, सुबह का लाल सूर्य, **स्वर्णाभि** सोने जैसी चमक **विरहित होना** बिछड़ना अलग होना **चिर अभिशापित** जो सदा के लिए शाप-ग्रस्त हो, **क्रंदन** करुणापूर्ण रुदन **शैवाल** जल में उत्पन्न होनेवाली घास **दरी** बिछौना, बिस्तर, **प्रणय कलह** प्रेमपूर्ण कलह (झगड़ा)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(1) कवि ने अमल-धवल गिरि के शिखरों पर किसको घिरते देखा है?
(क) सूर्य को (ख) बादल को (ग) चंद्र को (घ) बारिश को

(2) कवि ने छोटे-छोटे मोती जैसे कणों को मानसरोवर में कहाँ पर गिरते देखा है?
(क) स्वर्ण कमल पर (ख) बादलों पर (ग) फूलों पर (घ) हरी घास पर

(3) जब बादल को घिरते देखा, तब किस ऋतु का प्रभाव था?
(क) वर्षा (ख) हेमंत (ग) वसंत (घ) शिशिर

(4) कवि ने मानसरोवर के श्याम नील सलिल में किसको तैरते देखा है?
(क) मछलियाँ को (ख) हंसों को (ग) बगुलों को (घ) भैंसों को

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:

(1) प्रस्तुत कविता किस दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है?
(2) इस कविता का रचनाकाल क्या है?
(3) कवि ने कमल को किस रंग का बताया है?
(4) प्रस्तुत कविता में कवि ने किसका परिवेश प्रस्तुत किया है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए ।

(1) कविता के प्रथम चरण में क्या दृश्य है?
(2) हंस किससे ऊबकर शीतलता प्राप्त करने हिमालय पर आते हैं?
(3) बासंती सुबह में सरोवर के किनारे शैवालों की हरी दरी पर किसके प्रणय-कलह का दृश्य है?
(4) कवि ने किरणों और शिखर को कैसा बताया है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए:

(1) प्रस्तुत कविता में कवि की सौंदर्य की नैसर्गिता का वर्णन कीजिए ?
(2) कवि ने किन रंगों के संयोजन से इन्द्रधनुषी प्रभाव पैदा किया है?
(3) कविता में कवि की कल्पना और भावुकता का वर्णन कीजिए ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

बालारुण की मृदु किरणें थीं । अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : 'युगधारा' कविता-संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : सुमित्रानंदन पंत की कविता 'नये पत्ते' पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

8	# चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग

मोहनदास करमचन्द गांधी

(जन्म : सन् 1869 ई. : निधन : सन् 1948 ई.)

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर शहर में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में हुई। बैरिस्ट्री की पढ़ाई उन्होंने इंग्लैण्ड में की तथा दक्षिण अफ्रीका में वकालत के लिए गये। वहाँ हिन्दुस्तानियाँ के अधिकार एवं स्वाभिमान के लिए लड़े। बाद में भारत आकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की जंग छेड़ी और उनकी अगुवाई में भारत ने आज़ादी प्राप्त की। वे राष्ट्रपिता कहलाए।

'सत्यना प्रयोगो' गुजराती में लिखित उनकी आत्मकथा एक श्रेष्ठ कृति है, जो विश्व की अधिकतर भाषाओं में अनूदित हुई है। मेरा धर्म, सत्याग्रह, आश्रम का इतिहास, सर्वोदय, मेरे सपनों का भारत, मोहनमाला, हिन्दी स्वराज्य, अनासक्तियोग, दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह का इतिहास, मंगल प्रभात आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत कृति उनकी आत्मकथा का अंश है, इसमें चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग की यात्रा में गाँधीजी पर एक गोरे के द्वारा किए गए अमानुषिक व्यवहार का वर्णन है। उसका अपमानजनक पीड़ादायक वर्ताव तत्कालीन भारतीयों की हीन दशा का परिचायक है क्योंकि उस समय विदेशों में साधारण भारतीयों की स्थिति एक कुली के समान थी।

ट्रेन सुबह चार्ल्सटाउन पहुँचती थी। उन दिनों चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए ट्रेन नहीं थी। घोड़ों की सिकरम थी और बीच में एक रात स्टैण्डस्टन में रुकना पड़ता था। मेरे पास सिकरम का टिकट था। मेरे एक दिन देर से पहुँचने के कारण वह टिकट रद नहीं होता था। इसके सिवा अब्दुल्ला सेठ ने सिकरमवाले के नाम चार्ल्सटाउन के पते पर तार भी कर दिया था। पर उसे तो बहाना ही खोजना था, इसलिए मुझे निरा अजनबी समझकर उसने कहा, ''आपका टिकट तो रद हो चुका है।'' मैंने उचित उत्तर दिया। पर टिकट रद होने की बात तो मुझे दूसरे ही कारण से कही गयी थी। यात्री सब सिकरम के अन्दर ही बैठते थे। लेकिन मैं तो 'कुली' की गिनती में था। अजनबी दिखाई पड़ता था। इसलिए सिकरमवाले की नीयत यह थी कि मुझे गोरे यात्रियों के पास न बैठाना पड़े तो अच्छा हो। सिकरम के बाहर, अर्थात् कोचवान की बगल में दायें-बायें दो सीटें थीं। उनमें से एक पर सिकरम कंपनी का एक गोरा मुखिया बैठता था। वह अन्दर बैठा और मुझे कोचवान की बगल में बैठाया। मैं समझ गया कि यह निरा अन्याय है - अपमान है। पर मैंने इस अपमान को पी जाना उचित समझा। मैं जोर-जबरदस्ती से अन्दर बैठ सकूँ, ऐसी स्थिति थी ही नहीं। अगर तकरार में पड़ूँ, तो सिकरम चली जाये और मेरा एक दिन और टूट जाये; और फिर दूसरे दिन क्या हो, सो देव ही जानें! इसलिए मैं समझदारी से काम लेकर बाहर बैठ गया। पर मन में बहुत झुँझलाया।

लगभग तीन बजे सिकरम पारडीकोप पहुँची। अब उस गोरे मुखिया ने चाहा कि जहाँ मैं बैठा था, वहाँ वह बैठे। उसे सिगरेट पीनी थी। थोड़ी हवा भी खानी थी। इसलिए उसने एक मैला सा बोरा, जो वहीं कोचवान के पास पड़ा था, उठा लिया और पैर रखने के पटिये पर बिछाकर मुझसे कहा, ''सामी, तू यहाँ बैठ।'' मुझे कोचवान के पास बैठना है। मैं इस अपमान को सहने में असमर्थ था। इसलिए मैंने डरते-डरते उससे कहा, ''तुमने मुझे यहाँ बैठाया और मैंने वह अपमान सह लिया। मेरी जगह तो अन्दर थी, पर तुम अन्दर बैठ गये और मुझे यहाँ बैठाया। अब तुम्हें बाहर बैठने की इच्छा हुई है और सिगरेट पीनी है; इसलिए तुम मुझे अपने पैरों के पास बैठाना चाहते हो। मैं अन्दर जाने को तैयार हूँ, पर तुम्हारे पैरों के पास बैठने को तैयार नहीं।''

मैं मुश्किल से इतना कह पाया था कि मुझ पर तमाचों की वर्षा होने लगी; और वह गोरा मेरी बाँह पकड़कर मुझे नीचे खींचने लगा। बैठक के पास ही पीतल के सींखचे थे। मैंने भूत की तरह उन्हें पकड़ लिया और निश्चय किया कि कलाई चाहे उखड़ जाये, पर सींखचे न छोड़ूँगा। मुझ पर जो बीत रही थी, उसे अन्दर बैठे हुए यात्री देख रहे थे। वह गोरा मुझे गालियाँ दे रहा था; खींच रहा था; मार भी रहा था। पर मैं चुप था। वह बलवान था और मैं बलहीन। यात्रियों में कइयों को दया आयी और उनमें से कुछ बोल उठे : ''अरे भाई, उस बेचारे को वहाँ बैठा रहने दो। उसे नाहक मारो मत। उसकी बात सच है। वहाँ नहीं, तो उसे हमारे पास अन्दर बैठने दो'' गोरे ने कहा, ''हरगिज नहीं।'' पर थोड़ा शर्मिन्दा वह जरूर हुआ। अतएव उसने मुझे मारना बन्द कर दिया और मेरी बाँह छोड़ दी। दो-चार गालियाँ तो ज्यादा दीं। पर एक होटेण्टाट नौकर दूसरी तरफ बैठा था, उसे अपने पैरों

के सामने बैठाकर खुद बाहर बैठा। यात्री अन्दर बैठ गए। सीटी बजी। सिकरम चली। मेरी छाती तो धड़क ही रही थी। मुझे शक हो रहा था कि मैं जिन्दा मुकाम पर पहुँच सकूँगा या नहीं। वह गोरा मेरी ओर बराबर घूरता ही रहा। उँगुली दिखाकर बड़बड़ाता रहा, ''याद रख, स्टैण्डरस्टन पहुँचने दे, फिर तुझे मजा चखाऊँगा।'' मैं तो गूँगा ही बैठा रहा; और भगवान से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करता रहा।

रात हुई। स्टैण्डस्टन पहुँचे। कई हिन्दुस्तानी चेहरे दिखाई दिये। मुझे कुछ तसल्ली हुई। नीचे उतरते ही हिन्दुस्तानी भाइयों ने कहा, ''हम आपको ईसा सेठ की दुकान पर ले जाने के लिए ही खड़े हैं। हमें दादा अब्दुला का तार मिला है।'' मैं बहुत खुश हुआ। उनके साथ सेठ ईसा हाजी सुमार की दुकान पर पहुँचा। सेठ और उनके मुनीम - गुमाश्तों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। मैंने अपनी बीती सुनायी। वे बहुत दुखी हुए और अपने कड़वे अनुभवों का वर्णन करके उन्होंने मुझे आश्वस्त किया। मैं सिकरम कम्पनी के एजेण्ट को अपने साथ हुए व्यवहार की जानकारी देना चाहता था। मैंने एजेण्ट के नाम चिट्ठी लिखी। उस गोरे ने जो धमकी दी थी, उसकी चर्चा की; और यह आश्वासन चाहा कि सुबह आगे की यात्रा शुरू होने पर मुझे दूसरे यात्रियों के पास अन्दर ही जगह दी जाए। चिट्ठी एजेण्ट को भेज दी। एजेण्ट ने मुझे सन्देशा भेजा - स्टैण्डस्टन से बड़ी सिकरम आती है और कोचवान वगैरह बदल जाते हैं। 'जिस आदमी के खिलाफ आपने शिकायत की है, वह कल नहीं रहेगा। आपको दूसरे यात्रियों के पास ही जगह मिलेगी।' इस संदेशे से मुझे थोड़ी बेफिकरी हुई। मुझे मारनेवाले उस गोरे पर किसी तरह का कोई मुकदमा चलाने का तो मैंने विचार ही नहीं किया था। इसलिए मार का यह प्रकरण यहीं समाप्त हो गया। सवेरे ईसा सेठ के लोग मुझे सिकरम पर ले गये। मुझे मुनासिब जगह मिली, और बिना किसी हैरानी मैं उस रात जोहनिसबर्ग पहुँच गया।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कोचवान गाड़ीवान, गाड़ी चलाने वाला, **सींखचा** पकड़ने का कड़ा, हेंडल **तसल्ली** राहत **शिकायत** फरियाद **बेफिकरी** लापरवाही **सिकरम** घोड़ो से चलनेवाली एक प्रकार की बग्घी (घोड़ागाड़ी), **निरा अजनबी** बिल्कुल अपरिचित, अनजान **नीयत** इरादा **झुंझलाना** परेशान होना, बेचैन होना **बोरा** टाट की बंनी अनाज भरने की थैली **नाहक** व्यर्थ, बेवजह **तसल्ली** राहत **होटेण्टाट नौकर** होटेण्टाट दक्षिण अफ्रीका की एक भाषा, होटेण्टाट भाषा बोलनेवाला नौकर **मुनीम** हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी **गुमाश्ता** किसी के लिए माल खरीदने और बेचनेवाला आदमी **मुनासिब** उचित, ठीक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) सिकरम किससे चलती थी?
(क) बैलों से (ख) घोड़ों से (ग) ऊँटों से (घ) गुलामों से

(2) गांधीजी को सिकरम में कहाँ बैठाया गया?
(क) यात्रियों के पास (ख) गोरे के पैरों में
(ग) कोचवान की बगल में (घ) सबके पीछे

(3) गोरा मुखिया बाहर निकल कर क्या करना चाहता था?
(क) पानी पीना चाहता था। (ख) कोफी पीना चाहता।
(ग) गांधीजी से झगड़ना चाहता था। (घ) सिगरेट पीना चाहता था।

(4) गाँधीजी भगवान से क्या प्रार्थना करते रहे?
(क) रक्षा के लिए (ख) देशवासियों के हक के लिए
(ग) जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए (घ) स्वतंत्रता के लिए

(5) दूसरे दिन गांधीजी को सिकरम में कहाँ जगह मिली?

(क) गाड़ीवान के पास (ख) यात्रियों के पास

(ग) गोरे मुखिया के पास (घ) एजेण्ट के पास

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए एक रात कहाँ रुकना पड़ता था?

(2) अब्दुल्ला सेठ ने किसे तार किया था?

(3) गांधीजी ने किसे अन्याय माना?

(4) गोरा अंगुली दिखाकर क्या बड़बड़ाता था?

(5) गांधीजी को क्या देखकर तसल्ली हुई?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग कैसे पहुँचा जाता था?

(2) गोरा मुखिया कहाँ बैठता था?

(3) सिकरम पारडीकोप पहुँची तो गोरे मुखिया ने गांधीजी से क्या कहा?

(4) सहयात्रियों ने गांधीजी का पक्ष लेते हुए क्या कहा?

(5) हिन्दुस्तानी भाइयों ने गांधीजी से क्या कहा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सिकरम का टिकट रद्द होने का क्या रहस्य था?

(2) गोरे मुखिया और गांधीजी के बीच झगड़ा क्यों हुआ?

(3) गांधीजी ने सिकरम कम्पनी के एजेन्ट को चिट्ठी क्यों लिखी? उसका क्या उत्तर प्राप्त हुआ?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : गाँधीजी के जीवन-दर्शन विषयक चित्रों की प्रदर्शनी लगाइए तथा छात्रों को बताइए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : गाँधीजी की आत्मकथा 'सत्यना प्रयोगो' तथा दक्षिण अफ्रिका सत्याग्रह का इतिहास पढ़िए।

⊙

डाकघर से संबंधति प्रपत्र

डाक विभाग संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत है। विभाग के शीर्षस्थ प्रबंधन निकाय डाक सेवा बोर्ड में एक अध्यक्ष एवं छह सदस्यों हैं । बोर्ड के छह सदस्यों के कार्यक्षेत्र क्रमशः कार्मिक, प्रचालन, प्रौद्योगिकी, डाक जीवन बीमा, मानव संसाधन विकास योजना है। विभाग के संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार बोर्ड के स्थायी आमंत्रित हैं। निदेशालय के एक वरिष्ठ स्टाफ अधिकारी बोर्ड के सचिव के रूप में बोर्ड की सहायता करते हैं। उप महानिदेशकगण, निदेशकगण एवं सहायक महानिदेशक मुख्यालय में बोर्ड को आवश्यक प्रकार्यात्मक सहायता उपलब्ध कराते हैं।

*** डाकघर नेटवर्क**

भारत विश्व में 1,55,015 डाकघरों के साथ सबसे बड़ा डाक नेटवर्क है (31.03.2009 की स्थिति के अनुसार) जिसमें से 1,39,144 (89.76) डाकघर ग्रामीण क्षेत्रों में है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय 23,344 डाकघर थे जो मुख्यातः शहरी क्षेत्रों में थे। इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात् से इस नेटवर्क में 7 गुना वृद्धि हुई है और यह विस्तार मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ है। औसतन एक डाकघर 21.21 वर्ग किमी के क्षेत्र तथा 7.175 की जनसंख्या को सेवाप्रदान करता है।

*** हमारा लक्ष्य**

देश के प्रत्येक नागरिक के जीवन को महसूस करते हुए दुनिया में अपनी सबसे बड़ी डाक नेटवर्क की स्थिति को बनाये रखना।

मेल, पार्सल, धन-हस्तांतरण, बैकिंग, बीमा और खुदरा सेवाओं को तेजी और विश्वसनीयता के साथ मुहैया कराना ।

धन के मूल्य के आधार पर ग्राहकों को सेवा मुहैया कराना।

यह सुनिश्चित करना की कर्मचारियों को हमारी मुख्य शक्ति होने पर गर्व महसूस हो और ग्राहकों की सेवा मानव स्पर्शता के साथ कर सकें।

सामाजिक सेवा सुरक्षा को जारी रखना और भारत सरकार के मंच के रूप में अपने आपको अंतिम मील के रूप मे सक्षम रखना।

*** डाकघर बचत योजनाएँ :**

डाकघर बचत खाता

5-वर्षीय डाकघर आवर्ती जमा खाता

डाकघर सावधि जमा खाते

डाकघर मासिक आय खाता योजना

15 वर्षीय लोक भविष्य निधि खाता

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना

*** मूल्य देय डाक :**

मूल्या देय प्रणाली का डिजाइन उन व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया है जो उनको भेजे सामान या बिलों या उनसे संबंधित रेलवे रसीदों का भुगतान उनके प्राप्त होने पर करना चाहते हैं तथा यह उन व्यावसायियों तथा अन्य व्यक्तियों की आवश्यकता को भी पूरा करती है जो उनके द्वारा आपूर्ति

की गई वस्तुओं के मूल्य को डाकघर की एजेंसी माध्यम से वसूल करना चाहते हैं।

*** मूल्यदेय मदें :**

रजिस्टर्ड पार्सल, रजिस्ट्रड पत्र, रजिस्टार्ड बुक पैकेट तथा रजिस्ट्रेशन शुल्कके साथ, समाचार पत्रों के लिए निर्धारित डाक व्यसय का पूर्व भुगतान हुए समाचार पत्रों को मूल्य देय डाक के रूप में अन्तर्देशीय डाक से परिक्षण किया जा सकता है बशर्ते कि प्रेषित होने वाली ऐसी किसी भी डाक सामग्री पर प्रेषक का प्रेषित धन 5000/- रु. से अधिक नहीं होना चाहिए तथा बशर्ते कि ऐसे पार्सल, पत्र तथा पैकेटों में कूपन, टिकटें, माल की बिक्री के लिए तैयार किए गए परिचय पत्र जिन्हें कि 'स्त्रो बाल प्रणाली' कहा जाता है, नहीं होना चाहिए।

*** घोषणा :**

ऊपर बताई गई ऐसी कोई डाक सामग्री मूल्य देय डाक सामग्री के रूप में प्रेषण के लिए किसी भी डाकघर में स्वीकृत नहीं की जाएगी, जब तक कि भेजने वाला यह घोषित नहीं करता कि ऐसा वह उसें प्राप्त प्रामाणिक आदेशों के निष्पादन के अनुसार भेज रहा है। इसके अतिरिक्त भेजने वाले को, महानिर्दशक द्वारा इस ओर से समय-समय पर अधिसूचित डाकघरों में, यह घोषणा देनी होगी कि भेजी जानेवाली सामग्री की प्रवृत्ति इस प्रकार की है जिसे मूल्य देय सामग्री के रूप में डाक द्वारा प्रेषित करना अनुमेय है। ऊपर बताई गई कोई भी डाक सामग्री ऐसे कार्यालय में इस प्रकार की घोषणा के बिना स्वीकृत नहीं की जाएगी।

स्पष्टीकरण : कोई भी सामग्री मूल्य देय डाक द्वारा भेजी जा सकती है, भले ही उसका कोई तात्विक मूल्य न हो। अत: वैधानिक दस्तावेज, बांड, बीमा की पालिसिया, वचनपत्र, रेलवे के सामान तथा पार्सल की रसीदें, लीडिंग बिल या वसूली के साधारण बिलों को मूल्य, देय डाक सामग्री के रूप में भेजा जा सकता है। मूल्य देय डाक सामग्री के रूप में प्रेषित रेलवे लीडिंग बिल की रसीद के मामले में इस नियम के प्रयोजनार्थ यह पर्याप्त होगा यदि वह सामग्री जिससे कि रेलवे लीडिंगबिल की रसीद संबंधित है, उसे वास्तविक आदेशों के निष्पादन के अंतर्गत भेजा गया है। अन्य उल्लिखित दस्तावेजों के संबंध में, दस्तावेज को भेजने के वास्तविक आदेशों का निष्पादन करते हुए भेजा जाए।

डाकघर जिनसे और जिनको मूल्य देय डाक भेजी जा सकती है:

मूल्य देय डाक सामग्री किसी भी डाकघर से जो कि मनीओर्डर कार्यालय हो, (कुछ अपवादों को छोड़कर) से ऐसे किसी भी डाकघर को प्रेषित की जा सकती है जो कि मनीआर्डर कार्यालय हो।

*** स्पीड पोस्ट :**

भारत में स्पीड पोस्ट नेटवर्क 315 राष्ट्रीय स्पीड पोस्ट केन्द्र (एनएसपीसी) से निर्मित है। प्रत्येक राष्ट्रीय स्पीड पोस्ट केन्द्र 1 से जुड़े हुए कई वितरण डाकघर (पिनकोड) है जिनसे संबंधित एनएसपीसी शहर को स्पीड पोस्ट वस्तुओं का वितरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त समूचे भारत में 986 स्पीड पोस्ट केन्द्र विद्यमान है। प्रत्येक राज्य स्पीड पोस्ट केन्द्र (एसएसपीसी) मूल राष्ट्रीय स्पीड पोस्ट केन्द्र से जुड़ा हुआ है। जिसको यह एसएसपीसी अपना सभी बाहरी डाक आगे की छंटाई और प्रेषण के लिए भेज देता है। इसी प्रकार किसी राज्यु स्पीड पोस्ट केन्द्र से जुड़े वितरण डाकघरों के माध्यम से भेजी जानेवाली स्पीड पोस्ट की सभी वस्तुएँ इसके मूल्य राष्ट्रीय स्पीड पोस्ट केन्द्र के माध्यम से भेजी जाती है । एसएसपीसी शहर में स्पीड पोस्ट व वस्तुओं का वितरण उक्त एसएसपीसी से जुड़े हुए विभिन्न वितरण डाकघरों (पिनकोड) के माध्यम से किया जाता है।

*** पंजीकरण**

उद्देश्य : ग्राहकों की डाक वस्तुओं का सुरक्षित प्रेषण करना। उन सभी चरणों पर एक रेकार्ड रखा जाता है जहां-जहां से डाक वस्तु होकर जाती है। इस इसके अलावा पंजीकृत डाक वस्तुओं को विशेष सावधानी के साथ प्रेषित किया जाता है।

डाक वस्तुएँ जिन्हें पंजीकृत किया जा सकता है	निम्नलिखित के लिए पंजीकरण अनिवार्य है
1. पत्र	1. कोई भी पार्सल जिसका भार 4 किलोग्राम से अधिक है।
2. पत्र कार्ड	2. कोई भी बीमित डाक वस्तुर
3. पोस्टक कार्ड	3. ऐसा कोई भी पार्सल जिस पर ऐसे स्थान का पता लिखा हुआ है जिसके लिए सीमा-शुल्क घोषणा अपेक्षित है।
4. पुस्तक एवं पैटर्न पैकेट	4. ऐसी कोई डाक वस्तु जिसमें निज़्नलिखित स्टेज़्पे लेबल, चैक हुंडी, बैंक नोट, पैक पोस्ट बिल, बिल-आफ-एक्स चेंज शामिल हो।
5. अंध साहित्य पैकेट 6. समाचार पत्र की दरों से पूर्व प्रदत्तर संदाय के पार्सलों और समाचार पत्रों को किसी भी डाकघर में पंजीकृत किया जा सकता है।	5. कोई भी डाक वस्तु जिसके आवरण पर पंजीकृत शब्द लिखा हुआ हो। 6. ऐसी कोई पंजीकृत डाक वस्तु। जिसको वितरित किए जाने के उपरांत दुबारा डाक से प्रेषित किया जाता है।
	7. कोई भी मूल्य देय डाक वस्तु

*** भारतीय डाक - धन-प्रेषण सेवाएँ :**

मनी ऑर्डर : यह डाकघर के माध्यम से प्रदान की जाने वाली घरेलू धन अंतरण सेवा है। मनीऑर्डर के माध्यम से भेजा गए धन की सुपुर्दगी, प्राप्तकर्ता के द्वार पर की जाती है और यह सेवा सभी डाकघरों में उपलब्ध है। एकल मनीऑर्डर के माध्यम से भेजी जा सकनेवाली अधिकतम राशि 5,000/- रु. है। प्रेषक इस धनराशि का भुगतान नकद अथवा चेक के माध्यम से कर सकता है और सेवा प्रभार प्रेषित की जानेवाली धनराशि के 5 प्रतिशत की दर से प्रभारित किया जाएगा। धन-प्रेषक को प्राप्तकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित रसीद प्राप्त होती है। मनीऑर्डर के साथ/लघु संदेश भेजने का भी प्रावधान है।

इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर (ईएमओ) : इसका प्रारंभ 10-10-2008 को हुआ। ईएमओ प्रणाली का उद्देश्य त्वकरित और सुरक्षित इलेक्ट्रोनिक प्रेषण सुनिश्चित करके मनीऑर्डरों के पारेषण की प्रक्रिया को सरल बनाना है। इस प्रणाली के माध्यम से पेषण में लगने वाला समय काफी कम हो जाता है और धन का भुगतान बुकिंग के दिन ही कर दिया जाता है। मनीऑर्डर को और अनेक व्यक्तियों द्वारा एक व्यक्ति को धन प्रेषण की सुविधा उपलब्ध है। ईएमओ की बुकिंग प्राधिकृत डाकघरों में की जा सकती है, परंतु इसका भुगतान देश के सभी वितरण डाकघरों के माध्यम से किया जाता है। ईएमओ हेतु कमीशन की दर मनीऑर्डर के मामले में लागू कमीशन दर के समान ही है। भारतीय डाक की वेबसाईट के माध्यम से ईएमओ को ट्रैक किया जा सकता है।

तत्काल मनीओर्डर (आईएमओ) : भारतीय डाक, तत्काल मनीऑर्डर से सेवा प्रदान करता है जो बिल सुरक्षित, विश्वसनीय तता सुविधाजनक है। विनिर्दिष्ट आईएमओ डाकघरों के माध्यम से 1000/- रु. से 50,000/- रु. तक की राशि प्रेषित की जा सकती है। यह एक वेद-आधारित त्वरित धन अंतरण सेवा है। धन प्रेषक को एक निर्धारित फॉर्म भरना होता है और वह एक वैध पहचान-पत्र प्रस्तुत करता है। मनीऑर्डर का कमीशन अंतरित की जानेवाली राशि पर आधारित होता है। प्रेषक को 33 मानक संदेशों में से एक के वचन का विकल्प भी उपलब्ध करवाया जाता है। धन प्राप्त करने के लिए प्राप्तकर्ता को डाकघर जाकर निर्धारित फार्म भरकर अपना पहचान-पत्र प्रस्तुत मत करना होता है। प्राप्त धनराशि को प्राप्तकर्ता के बचत बैंक खाते में भी जमा करवाया जा सकता है।

एम ओ विदेश : यह भारतीय डाक द्वारा अधिकतर विदेशी गंतव्य स्थूलों तक भेजी जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय धन-प्रेषण सेवा है। जावक धन-प्रेषण का भुगतान लाभार्थियों को गंतव्यध देशों में उनके बैंक खाते में किया जाता

है। एक धन-प्रेषण 5000 अमेरिकी डॉलर से अधिक का नहीं होगा और एक वर्ष में अधिकतम 12 जावक धन-प्रेषण भेजे जा सकते हैं। यह सुविधा सभी कंम्प्यूटरीकृत डाकघरों में उपलब्ध है। एमओ विदेश के लिए कमीशन की मात्रा अंतरित की जाने वाली राशि पर निर्भर करेगी।

अंतर्राष्ट्रीय धन अंतरण सेवा : भारतीय डाक, वेस्टर्न यूनियन और मनीग्राम के सहयोग से आवक अंतर्राष्ट्रीय धन अंतरण सेवा भी प्रदान करता है। यह सेवा सुरक्षित, त्वनरित और विश्वसनीय है। यह विदेशों से भारत में लाभार्थियों को निजी धन-प्रेषण अंतरित करने का त्वेरित और सरल माध्यम है। चुनिंदा डाकघरों के माध्यम से 195 देशों से धन प्राप्त किया जा सकता है। प्रेषक द्वारा धन प्रेषित करने के उपरांत प्राप्तकर्ता मिनटों में धन प्राप्त कर सकता है। एक बार में अधिकतम 2500 अमेरिकी डालर प्राप्त किए जा सकता हैं। किसी एक लाभार्थी द्वारा एक वर्ष में 12 धन-प्रेषण (ट्रांजेक्शन धन) प्राप्त किए जा सकते हैं। 50,000/- रु. तक की राशि नकद में और उससे अधिक धन राशि चेक के माध्यम से डाकघर से डकघर में बचत खातों में जमा की जा सकती है। प्राप्तकर्ता अपनी पहचान तथा आवास का पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करेगा। वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर (डब्यूकी यूएमटी) की प्राप्ति की सुविधा 7212 डाकघरों में तथा मनीग्राम की सुविधा 500 डाकघरों में उपलब्ध है।

इलेक्ट्रोनिक क्लियरेंस स्कीम (ईसीएस) : ईसीएस योजना योक भुगतान, ब्याज/वेतन/पेंशन/लाभांश के भुगतान का विकल्पन प्रदान करती है। इस स्कीम की शुरुआत 9 अगस्त, 2003 को हुई । भारतीय डाक द्वारा ईसीएस का प्रयोग मासिक आय योजना के अंतर्गत ब्याज के भुगतान के लिए किया जाता है। ईसीएस के अंतर्गत एमआईएस खातों के जमाकर्ताओं का मासिक ब्याज का भुगतान निर्धारित तिथि को उनकी पसंद के बैंक के खाते में जमा कर दिया जाता है। फिलहाल यह सेवा डाक विभाग, आरबीआई के 15 कार्यालयों और एसबीआई के 21 कार्यालयों में उपलब्ध है।

⊙

संयुक्त धनादेश

प्रेषक बुकिंग डाकघर का नाम : ....

नाम :

उपनाम :

घर नं. / गली :

गाँव / जिला / शहर :

राज्य :

पिन कोड :

मोबाइल नं. :

प्राप्तकर्ता :

नाम :

उपनाम :

घर नं. / गली :

गाँव / जिला / शहेर :

राज्य :

पिन कोड :

मोबाइल नं. :

राशि रु. में रु. .... शब्दो में ....

धनादेश प्रकार पर टिक कीजिए ।

1. ई–एम.ओ. (दिए गए पत्ते पर डाकिया द्वारा राशि दे दी जाएगी)

   संदेश कोड

2. मनी बोर्डर की राशि एम.ओ. कार्यालय से प्राप्त की जाएगी ।

   खाता नं.

   खाता धारक का नाम :

   डाकघर का नाम :

   संदेश कोड

3. मोबाइल के मोबाइल धनादेश

पहचान पत्र की फोटो प्रति संलग्न कीजिए ।

पहचान पत्र सं. ....

समाप्ति तारीख : ....

जारीकर्ता अधिकारी : ....

मुझे ज्ञात है कि प्रेषक को मोबाईल से मोबाईल मनी अंतरण कार्यालय में राशि प्राप्त करनी है तथा मैं उन्हें तद्नुसार सूचित दूँगा ।

यदि भुगतान 21 दिन के अंदर प्राप्त कर्ता को मोबाईल से मोबाइल मनी ट्रांसफर नहीं हुआ तो विशेष प्रक्रिया के तहत भुगतान होगा ।

प्रेषक के हस्ताक्षर तिथि सहित

केवल कार्यालय के उपयोग हेतु

प्राप्त राशि

सेवा प्रभार

धनादेश सं.

इ.एम.ओ.

आई.एम.ओ.

एम टू एम एम ओ

बैंकिंग का समय और तारीख

द्वारा प्राधिकृत काउंटर लिपिक

सीपीएस/एसपीएम/डीपीएम/एपीएम

अब्लांग मुहर

ग्रीटिंग पोस्ट :

नया उत्पाद : ग्रीटिंग पोस्ट अर्थात् भारतीय डाक की ओर से प्रस्तुंत मनभावन ग्रीटिंग कार्डों की दुनिया में आपका स्वागत है। ये कार्ड आपको पूर्व भुगतान वाले लिफाफों के साथ ही प्राप्त होते हैं और इस प्रकार आपको डाक-टिकट चिपकाने की जरूरत नहीं रहती। यह एक अनूठा प्रयोग है, जो भारत में पहली बार हो रहा है। सबसे आकर्षक बात यह है कि लिफाफों पर चिपकाए गए डाक-टिकट, अंदर मौजूद कार्ड की हूबहू प्रतिकृति होते हैं।

ग्रीटिंग पोस्ट के फायदे : ये कार्ड आपको केवल सहूलियत ही प्रदान नहीं करते, बल्कि इनके कई और लाभ भी है। ग्रीटिंग पोस्ट के माध्यतम से आप हर अवसर, पर्व तथा उपलक्ष्य में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकते हैं। इनके सुंदर डिजाइनों और मनभावन रंगों में प्रतिबिंबित भावनात्मक गरमाहट हरेक के मन को छू जाती है। इन कार्डों को पाकर निसंदेह हरेक वैयक्तिक प्रफुल्लित हो जाता है।

कहां से प्राप्त करें : इन कार्डों का विक्रय ग्रीटिंग कार्डों के निजी वितरकों और स्टेशनरी की दुकानों

के माध्यम से किया जा रहा है। इन कार्डों और उत्कीकर्ण/(एम्बोस्ड) डाक-टिकटों से युक्तलिफाफों को एक साथ ही बेचा जाएगा। ग्रीटिंग कार्ड सभी प्रमुख डाकघरों में उपलब्ध हैं।

विशेषताएँ : ग्रीटिंग पोस्ट, भारतीय डाक और नवीन उत्पादक है। इसके अंतर्गत एक लिफाफा और एक कार्ड शामिल है। इस लिफाफे पर 5 से.मी. ... 4 से.मी. ..... 3 से.मी. आकार तथा 5/- रु. के मूल्यवर्ग के अंकन के साथ एक बहुरंगा एम्बोंस्डे डाक-टिकट (जो एक कार्ड पर अंकित डिजाइन का लघु रूप है) लगा होगा। इसलिए आपको इस तिफाफे पर डाक-टिकट चिपकाने की आवश्यकता नहीं है और इस प्रकार डाकघर जाने और लाइन में खड़े रहने में लगने वाले आपके समय की बचत होगी। ग्रीटिंग कार्ड पर ठीक पिछली तरफ ज़्लैप पर धूसर नीले रंग में एक गोलाकार डाक-टिकट मुद्रित है। डाक प्रशुल्क के बारे में सभी नियम ग्रीटिंग पोस्ट पर लागू होंगे। मौजूदा नियमों के अनुसार 5/- रु. मूल्य के डाक प्रशुल्क के आधार पर प्रेषक 20 ग्राम वजन तक की डाक-वस्तु को देशभर में कही भी भेज सकता है। यही नियम ग्रीटिंग पोस्टर के लिए भी लागू होगा।

पिनकोड :

डाक इंडेक्सर संज़्या (पिन) अथवा पिनकोड डाकघर का 6 अंकों का कोड है जिसका प्रयोग भारतीय डाक द्वारा किया जाता है। पिन को 15 अगस्त 1972 में लागू किया गया था। समूचे देश में 9 पिन क्षेत्र है। शुरु के 8 भौगोलिक क्षेत्र हैं तता 9वां अंक सेना डाक सेवा के लिए आरक्षित है। प्रथम अंक किसी एक क्षेत्र को प्रदर्शित करता है। प्रथम 2 अंक साथ-साथ उपक्षेत्र अथवा उनमें से एक डाक सर्विस को दिखाता है। प्रथम 3 अंक साथ-साथ छटाई/राजस्व जिला को प्रदर्शित करता है। अंतिम 3 अंक वितरण डाकघर को प्रदर्शित करता है।

पिन का प्रथम निर्धानुसार प्रदर्शित करता है:

प्रथम अंक		क्षेत्र कवर किए गए राज्य
1	उत्तरी	दिल्लीए, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू व एवं कश्मीर
2.	उत्तरी	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड
3.	पश्चिमी	राजस्थान तथा गुजरात
4.	पश्चिमी	महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़
5.	दक्षिणी	आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक
6.	दक्षिणी	केरल तथा तमिलनाडु
7.	पूर्व	पश्चिम बंगाल ओड़िशा तथा पूर्वोत्तर
8.	पूर्व	बिहार तथा झारखण्ड
9.	सेना डाक सेवा (एपीएस)	सेना डाक सेवा

पिन कोड के प्रथम 2 अंक निज़्नानुसार दर्शाते हैं :

पिन कोड के प्रथम 2 अंक	सर्किल
11	दिल्ली

12 एवं 13	हरियाणा
14 से 16	पंजाब
17	हिमालय प्रदेश
18 से 19	जम्मू एवं कश्मीर
20 से 28	उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल
30 से 34	राजस्थान
36 से 39	गुजरात
40 से 44	महाराष्ट्र
45 से 49	मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) डाकघर किसे कहते हैं ?

(2) पोस्टकार्ड क्या होता हैं ?

(3) अंतर्देशीय पत्र किसे कहते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) स्पीड पोस्ट क्या होती है ?

(2) मनीओर्डर किसे कहते हैं ?

(3) भारतीय पोस्टल आर्डर क्या होता है ?

विद्यार्थी-प्रवृत्तिः पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, लिफाफा, टिकटें आदि का एक संकलनपत्र तैयार करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को डाकघर के विविध कार्यों की जानकारी दे तता डाकघर से संबंधित विभिन्न सेवाओं के बारे में बताएँ।

9 बाढ़ की संभावनाएँ

दुष्यन्तकुमार

(जन्म : सन् 1933 ई. : निधन : सन् 1975 ई.)

दुष्यंतकुमार का जन्म राजापुर नवादा जिला - बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। सरकारी नौकरी तथा कृषि उनका मुख्य व्यवसाय रहा। रूढ़िवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों से संघर्ष की चेतना उनकी कृतियों का प्राण तत्त्व है। गीतकार गज़लकार और प्रबंधकार के रूप में उन्होंने नये-नये प्रयोग किए; किन्तु हिन्दी संसार में वे गज़लकार के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने गज़ल को परम्परागत ढाँचे से अलग कर सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ का सफल संवाहक बनाया।

'साये में धूप' उनका प्रसिद्ध गज़ल-संग्रह है। 'एक कंठ विषयायी', 'जलते हुए वन का वसन्त' और 'सूर्य का स्वागत' उनकी अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। 'छोटे-छोटे सवाल' तथा 'आंगन में एक वृक्ष' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

प्रस्तुत गज़ल मुसल्स (एक ही भावबोधवाली) गज़ल नहीं है। प्रत्येक शेर की भाव-भूमि भिन्न-भिन्न है। समसामयिक जीवन में मानव की स्थिति विसंगतियों से परिपूर्ण है। इससे कवि चिंतित अवश्य है; पर निराश नहीं। तमाम विषम परिस्थितियों की उपस्थिति के बावजूद उम्मीद की एक हल्की-सी किरण अभी भी उसके यहाँ बरकरार दिखाई देती है।

बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं,
और नदियों के किनारे घर बने हैं।

चीड़-वन में आँधियों की बात मत कर,
इन दरख़्तों के बहुत नाजुक तने हैं।

इस तरह टूटे हुए चेहरे नहीं हैं,
जिस तरह टूटे हुए ये आइने हैं।

आपके कालीन देखेंगे किसी दिन,
इस समय तो पाँव कीचड़ में सने हैं।

जिस तरह चाहो बजाओ इस सभा में,
हम नहीं हैं आदमी, हम झुनझुने हैं।

अब तड़पती-सी ग़ज़ल कोई सुनाए,
हमसफ़र ऊँघे हुए हैं, अनमने हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

दरख्त पेड़ **कालीन** बड़ा गलीचा **चीड़** पर्वतीय प्रदेश में उगनेवाला एक बहुत ऊँचा पेड़, जिससे लीसा नामक गोंद जैसा पदार्थ निकलता है। लीसे से टर्पेन्टाइन तेल बनता है। **आइना** दर्पण **झुनझुना** एक खिलौना **नाजुक** मुलायम, कोमल, **तना** पेड़ का जमीन के ऊपर का मोटा हिस्सा **तड़पती-सी** बेचैन करनेवाली, **हमसफर** साथ में सफर करनेवाला, सह-यात्री, साथी **अनमना** उदास, शिथिल

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) कौन-सी संभावनाएँ सामने हैं?

(क) आँधी की (ख) बाढ़ की (ग) कीचड़ की (घ) पानी की

(2) कवि ने किस वन का जिक्र किया है?

(क) सुन्दरवन का (ख) मधुवन का (ग) तपोवन का (घ) चीड़ वन का

(3) हमसफर क्या कर रहे हैं?

(अ) ऊँधे हुए हैं (ख) गज़ल सुना रहे हैं।

(ग) तड़प रहे हैं (घ) बाजा बजा रहे हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) घर कहाँ बने हुए हैं?

(2) दरख्तों के तने कैसे हैं?

(3) कवि ने झुनझुना किसे कहा है?

(4) कवि कालीन क्यों नहीं देखना चाहता?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) कवि को इसकी क्यों चिंता है कि घर नदियों के किनारे बने हैं?

(2) चीड़ वन में आँधियों की बात करने से क्या होगा?

(3) आदमी को झुनझुना कहने का क्या तात्पर्य है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :

(1) कवि सोये हुए साथियों को तड़पती हुई गज़ल क्यों सुनाना चाहता है?

(2) इस गज़ल का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्ति :** अपने शिक्षक की सहायता से गज़ल विद्या की जानकारी प्राप्त कीजिए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्ति :** 'साये में धूप' गज़ल - संग्रह प्राप्त कर अन्य गज़ल कक्षा में सुनाइए।

⊙

10	# कारतूस

हबीब तनवीर
(जन्म : सन् 1923 ई. : निधन : सन् 2009 ई.)

हबीब तनवीर का जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर में हुआ था। नागपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद ब्रिटेन में नाट्य-लेखन का अध्ययन किया। दिल्ली लौटकर नाट्यमंच की स्थापना की। वे नाटककार, कवि, पत्रकार, निर्देशक और अभिनेता जैसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे; किन्तु लोकनाट्य उनका मनपसंद क्षेत्र रहा। उनको कई पुरस्कारों, फलोशिप और पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

'आगरा बाजार', 'चरनदास चोर', 'देख रहे हैं नैन', 'हिरमा की कहानी' आदि उनके प्रमुख नाटक हैं तथा 'वसंतऋतु का सपना', 'शाजापुरकी शान्तिबाई', 'मिट्टी की गाड़ी' और 'मुद्राराक्षस' अनूदित नाटक हैं।

यहाँ 'कारतूस' एकांकी में वजीर अली नामक एक जाँबाज़ के कारनामों का वर्णन है, जिसका एक मात्र लक्ष्य अंग्रेजों को इस देश से निकालना है। उसने अंग्रेजी हुकूमत की नींद हराम कर रखी थी। वह इतना निडर और दिलेर था कि बटालियन के खेमे में पहुँचकर वह कर्नल पर ऐसा रोष जमाता है कि खुद कर्नल हक्का-बक्का रह जाता है और उसके मुँह से शत्रु की तारीफ निकल पड़ती है।

पात्र : कर्नल, लेफ़्टीनेंट, सिपाही, सवार

अवधि : 5 मिनट

जमाना : सन् 1799

समय : रात्रि का

स्थान : गोरखपुर के जंगल में कर्नल कालिंज के खेमे का अंदरूनी हिस्सा।
(दो अंग्रेज बैठे बातें कर रहे हैं। कर्नल कालिंज और एक लेफ्टीनेंट खेमे के बाहर हैं। चाँदनी छिटकी हुई है। अंदर लैंप जल रहा है।)

कर्नल : जंगल की जिंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

लेफ़्टीनेंट : हफ़्तों हो गए यहाँ खेमा डाले हुए। सिपाही भी तंग आ गए हैं। ये वज़ीर अली आदमी है या भूत, हाथ ही नहीं लगता।

कर्नल : उसके अफ़साने सुन के रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ़ उसके दिल में किस कदर नफ़रत है। कोई पाँच महीने हुकूमत की होगी। मगर इस पाँच महीने में वो अवध के दरबार को अंग्रेजी असर से बिलकुल पाक कर देने में तकरीबन कामयाब हो गया था।

लेफ़्टीनेंट : कर्नल कालिंज; ये सआदत अली कौन है?

कर्नल : आसिफउद्दौला का भाई है। वज़ीर अली का और उसका दुश्मन। असल में नवाब आसिफउद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी। वज़ीर अली की पैदाइश को सआदत अली ने अपनी मौत खयाल किया।

लेफ़्टीनेंट : मगर सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने में क्या मस्लेहत थी?

कर्नल : सआदत अली हमारा दोस्त है और बहुत ऐश पसंद आदमी है इसलिए हमें अपनी आधी मुमलिकत (जायदाद, दौलत) दे दी और दस लाख रुपये नगद। अब वो भी मज़े करता है और हम भी।

लेफ़्टीनेंट : सुना है ये वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिन्दुस्तान पर हमला करने की दावत (आमंत्रण) दे रहा है।

कर्नल : अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सबसे पहले असल में टीपू सुल्तान ने दी; फिर वज़ीर अली ने भी उसे दिल्ली बुलाया और फिर शमसुद्दौला ने भी।

लेफ़्टीनेंट : कौन शमसुद्दौला?

कर्नल : नवाब बंगाल का निस्बती (रिश्ते) भाई। बहुत ही खतरनाक आदमी है।

लेफ़्टीनेंट : इसका तो मतलब ये हुआ कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई है।

कर्नल : जी हाँ, और अगर ये कामयाब हो गई तो बक्सर और प्लासी के कारनामे धरे रह जाएँगे और कंपनी जो कुछ लॉर्ड क्लाइव के हाथों हासिल कर चुकी है, लॉर्ड वेल्ज़ली के हाथों सब खो बैठेगी।

लेफ़्टीनेंट : वज़ीर अली की आज़ादी बहुत खतरनाक है। हमें किसी न किसी तरह इस शख़्स को गिरफ़्तार कर ही लेना चाहिए।

कर्नल : पूरी एक फ़ौज लिए उसका पीछा कर रहा हूँ और बरसों से वो हमारी आँखों में धूल झोंक रहा है और इन्हीं जंगलों में फिर रहा है और हाथ नहीं आता। उसके साथ चंद जाँबाज़ हैं। मुट्ठी भर आदमी! मगर ये दमखम है।

लेफ़्टीनेंट : सुना है वज़ीर अली जाती तौर से भी बहुत बहादुर आदमी है।

कर्नल : बहादुर न होता तो यूँ कंपनी के वकील का कत्ल कर देता?

लेफ़्टीनेंट : ये कत्ल का क्या किस्सा हुआ था कर्नल?

कर्नल : किस्सा क्या हुआ था; उसको उसके पद से हटाने के बाद हमने वज़ीर अली को बनारस पहुँचा दिया और तीन लाख रुपया सालाना वज़ीफा मुकर्रर कर दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता (कोलकाता) तलब किया। वज़ीर अली कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में रहता था और उससे शिकायत कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता में क्यूँ तलब करता है। वकील ने शिकायत की परवाह नहीं की। उलटा उसे बुरा-भला सुना दिया। वज़ीर अली के तो दिल में यूँ भी अंग्रेजों के खिलाफ़ नफ़रत कूट-कूटकर भरी है, उसने खंजर से वकील का काम तमाम कर दिया।

लेफ़्टीनेंट : और भाग गया?

कर्नल : अपने जानिसारों समेत आज़मगढ़ की तरफ़ भाग गया। आज़मगढ़ के हुक्मरानों ने उन लोगों को अपनी हिफ़ाज़त में घाघरा तक पहुँचा दिया। अब ये कारवाँ इन जंगलों में कई साल से भटक रहा है।

लेफ़्टीनेंट : मगर वज़ीर अली की स्कीम क्या है?

कर्नल : स्कीम ये है कि किसी तरह नेपाल पहुँच जाए। अफ़गानी हमले का इंतज़ार करे, अपनी ताकत बढ़ाए, सआदत अली को उसके पद से हटाकर खुद अवध पर कब्ज़ा करे और अंग्रेजों को हिंदुस्तान से निकाल दे।

लेफ़्टीनेंट : नेपाल पहुँचना तो कोई ऐसा मुश्किल नहीं, मुमकिन है कि पहुँच गया हो।

कर्नल : हमारी फ़ौजें और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बड़ी सख्ती से उसका पीछा कर रहे हैं। हमें अच्छी तरह मालूम है कि वो इन्हीं जंगलों में है। (एक सिपाही तेज़ी से दाखिल होता है।)

कर्नल : (उठकर) क्या बात है?

लेफ़्टीनेंट : दूर से गर्द उठती दिखाई दे रही है।

कर्नल : सिपाहियों से कह दो कि तैयार रहें। (सिपाही सलाम करके चला जाता है।)

लेफ़्टीनेंट : (जो खिड़की से बाहर देखने में मसरूफ़ था) गर्द तो ऐसी उड़ रही है जैसे कि पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो; मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

कर्नल : (खिड़की के पास जाकर) हाँ एक ही सवार है। सरपट घोड़ा दौड़ाए चला आ रहा है।

लेफ़्टीनेंट : और सीधा हमारी तरफ़ आता मालूम होता है। (कर्नल ताली बजाकर सिपाही को बुलाता है।)

कर्नल : (सिपाही से) सिपाहियों से कहो, इस सवार पर नज़र रखें कि ये किस तरफ़ जा रहा है (सिपाही सलाम करके चला जाता है।)

लेफ़्टीनेंट : शुब्हे की तो कोई गुंजाइश ही नहीं। तेज़ी से इसी तरफ़ आ रहा है। (टापों की आवाज़ बहुत करीब आकर रुक जाती है।)

सवार : (बाहर से) मुझे कर्नल से मिलना है।

कर्नल : (चिल्लाकर) बहुत खूब।

सवार : (बाहर से) सी।

सिपाही : (अंदर आकर) हुज़ूर सवार आपसे मिलना चाहता है।

कर्नल : भेज दो।

लेफ़्टीनेंट : वज़ीर अली का कोई आदमी होगा। हमसे मिलकर उसे गिरफ्तार करवाना चाहता होगा।

कर्नल : खामोश रहो। (सवार सिपाही के साथ अंदर आता है।)

सवार : (आते ही पुकार उठता है) तन्हाई! तन्हाई!

कर्नल : साहब यहाँ कोई गैर आदमी नहीं है। आप राज़ेदिल कह दें।

सवार : दीवार हमगोश दारद, तन्हाई।

(कर्नल लेफ़्टीनेंट और सिपाही को इशारा करता है। दोनों बाहर चले जाते हैं। जब कर्नल और सवार खेमे में तन्हा रह जाते हैं, तो ज़रा वक़्फ़े के बाद चारों तरफ़ देखकर सवार कहता है)

सवार : आपने इस मुकाम पर क्यों खेमा डाला है?

कर्नल : कंपनी का हुक्म है कि वज़ीर अली को गिरफ्तार किया जाए।

सवार : लेकिन इतना लावलश्कर क्या मायने?

कर्नल : गिरफ्तारी में मदद देने के लिए।

सवार : वज़ीर अली की गिरफ्तारी बहुत मुश्किल है साहब।

कर्नल : क्यों?

सवार : वो एक जाँबाज़ सिपाही है।

कर्नल : मैंने भी यह सुन रखा है। आप क्या चाहते हैं?

सवार : चंद कारतूस।

कर्नल : किसलिए?

सवार : वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए।

कर्नल : ये लो दस कारतूस

सवार : (मुसकराते हुए) शुक्रिया।

कर्नल : आपका नाम?

सवार : वज़ीर अली। आपने मुझे कारतूस दिए इसलिए आपकी जान बख़्शी करता हूँ। (ये कहकर बाहर चला जाता है, टापों का शोर सुनाई देता है। कर्नल एक सन्नाटे में है। हक्का-बक्का खड़ा है कि लेफ़्टीनेंट अंदर आता है)

लेफ़्टीनेंट : कौन था?

कर्नल : (दबी ज़बान से अपने आप से कहता है) एक जाँबाज़ सिपाही।

शब्दार्थ और टिप्पणी

खेमा अस्थायी पड़ाव **अफसाना** कहानी, किस्सा **हुकूमत** सत्ता, शासन **मसलेहत** गुप्त सलाह **दमख़म** ताकत, दृढ़ता **वज़ीफा** पुरस्कार, भेट **काम तमाम कर देना** मार डालना **जानिसार** स्नेहीजन, आत्मीयजन **गर्द** धूल **सरपट** पुरजोश, तेज **शुब्हा** शक **तन्हाई** एकांत **वक्का** आराम, विराम **अंदरुनी** भीतरी **पाक करना** मुक्त करना, **तकरीबन** लगभग, **ऐश** सुख-भोग, आराम, **जाँबाज** बहादुर, जान की बाजी लगा देनेवाला, **जाती तौर पर** व्यकितगत रुप से **मुकर्रर** तप, **तलब करना** आदेश देकर बुलाना **हकमरान** शासक, सत्ताधारी **घाघरा** एक नदी **मुमकीन** संभव **मसरुफ** तल्लीन, व्यस्त **गैर** पराया **राजे दिल** मन की बात **नफफा** देर, समय **मुकाम** स्थान, जगह **लाव लश्कर** साधन-सामग्री, सशस्त्र सिपाही, **हक्का-बक्का** चकित, भौंचकका

मुहावरे तथा कहावतें

तंग आना परेशान होना **हाथ न लगना** पकड़ में न आना **धरा रह जाना** व्यर्थ हो जाना, काम न आना **आँखों**

में धूल झोंकना चकमा देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) ''वजीरअली आदमी है या भूत'' यह वाक्य कौन बोलता है?

(क) सिपाही (ख) लेफ़्टीनेंट (ग) कर्नल (घ) असादत अली

(2) असादत अली ने अपनी आधी जायदाद किसे दे दी?

(क) कर्नल को (ख) रामसुद्दौला को (ग) आसिफ़उदौला को (घ) वजीरअली को

(3) वजीर अली वकील का कत्ल करके कहाँ भाग गया?

(क) अफ़गानिस्तान (ख) नेपाल (ग) आजमगढ़ (घ) दिल्ली

(4) सवार किससे मिलना चाहता था?

(क) लेफ़्टिनेंट से (ख) कर्नल से (ग) सिपाही से (घ) वजीर अली से

(5) कर्नल ने सवार को कितने कारतूस दिए?

(क) पाँच (ख) बहुत (ग) दस (घ) थोड़े

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कर्नल कालिंज ने खेमा जंगल में क्यों लगाया था?

(2) सिपाही, वजीर अली से क्यों तंग आ गये थे?

(3) कर्नल ने सिपाही को सवार पर नज़र रखने के लिए क्यों कहा?

(4) कंपनी का क्या हुकम था?

(5) वजीर अली की गिरफ्तारी बहुत मुश्किल है ऐसा सवार ने क्यों कहा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) वजीर अली के अफसाने सुनकर कर्नल को राबिनहुड की याद क्यों आती थी?

(2) असादत अली कौन था? वह वजीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझाता था?

(3) असादत अली को कर्नल ने तख्त पर किस मकसद से बिठाया था?

(4) वकील के कत्ल के बाद वजीर अली ने अपनी सुरक्षा कैसे की?

(5) कर्नल हक्का-बक्का क्यों रह गया?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) हिन्दुस्तान में कंपनी के खिलाफ लहर है ऐसा लेफ़्टिनेंट को क्यों लगता था?

(2) वजीर अली ने कंपनी के वकील की हत्या क्यों की?

(3) सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए?

(4) 'वजीर अली एक जाँबाज सिपाही था।' - इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्ति:** रॉबिनहुड की साहस कथाएँ पढ़िए तथा जानकारी प्राप्त कीजिए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्ति:**

- हबीब तनवीर के नाटकों के बारे में छात्रों को विशेष जानकारी दीजिए।
- एकांकी तथा नाटक का अंतर बताइए।
- इस एकांकी का अपने विद्यालय में मंचन करवाइए।

⊙

उपभोक्ता न्यायालय में शिकायत करना

प्रत्येक वर्ष 15 मार्च को विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस और 24 दिसंबर को राष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया जाता है।

उपभोक्ता शिकायत निवारण :

उपभोक्ता शिकायतों को सरल, शीघ्र और कम खर्चीला और निवारण प्रदान करने के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम में राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरों पर एक तीन स्तरीय अर्थ न्यायायिक मशीनरी की संकल्पना की गई है। यह एक सिविल न्यायालय के समक्ष कार्रवाइयों की साधारण प्रक्रिया का एक विकल्प है। ये मंच उपभोक्ता की शिकायतों के लिए सरल, शीघ्र तथा कम खर्चीला निवारण प्रदान करने के लिए अधिवेशित हैं। शिकायत निवारण की तीन एजेंसियां हैं राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी), राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग और जिला फोरम।

शिकायत कौन दायर कर सकता है?

- किसी वस्तु या सेवा के संदर्भ में एक ग्राहक द्वारा एक शिकायत दर्ज कराई जा सकती है या
- कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) या उस समय लागू किसी अन्य कानून के तहत पंजीकृत किसी स्वयंसेवी उपभोक्ता संगठन द्वारा या
- केन्द्र सरकार और कोई राज्य सरकार, या
- एक या अधिक उपभोक्ता, जहां अनेक उपभोक्ताओं की एक समान शिकायत है या एक उपभोक्ता की मौत हो जाने पर उसके कानूनी वारिस या प्रतिनिधि
- अधिनियम के तहत पावर ऑफ एटॉर्नी (मुज़्तारनामा) धारक शिकायत दायर नहीं कर सकता है।

एक शिकायत कैसे दायर करें?

शिकायत कहां दायर करें?

देश में उपभोक्ता मंचों का कम्प्यूटरीकरण और कम्प्यूटर नेटवर्किंग (कंफोनेट), होने के बाद से प्रयोक्ता अब ऑनलाइन अपने मामले पर नजर रख सकते हैं। यह इंटरनेट आधारित प्रकरण निगरानी प्रणाली है जिसे उपभोक्ता मंचों पर कार्य प्रवाह को बढ़ाने के लिए विकसित किया गया है, जो मामला पंजीकरण से आरंभ हो कर निर्णय की घोषणा तक चलता है। प्रयोक्ता वाद सूचियां, निर्णय और मामले की स्थिति की खोज कर सकते हैं।

वैकल्पिक विवाद-निवारण :

शीघ्रतापूर्वक उपभोक्ता संसाधन और शिकायत निवारण सेवा प्रदान करने के लिए उपभोक्ता कार्य, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा ऑनलाइन उपभोक्ता शिकायत, फोन और एसएमएस आधारित शिकायत आदि जैसी अन्य अनेक प्रणालियों की सुविधा दी जाती है।

उपभोक्ता ऑनलाइन संसाधन और अधिकारिता केन्द्र (कोर)

उपभोक्ता ओनलाइन संसाधन और अधिकारिता केन्द्र (कोर) से उपभोक्ता की शिकायतों का ऑनलाइन निवारण तथा उपभोक्ता समर्थन में सहायता मिलती है। प्रयोक्ता लिंक पर क्लिंक द्वारा ऑनलाइन शिकायत दायर कर सकते हैं। आप टोल फ्री नंबर-180-180-4566 पर कॉल भी कर सकते हैं।

राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन (एनसीएच)

राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन (एनसीएच) में अनेक प्रकार की समस्याओं से निपटने के लिए उपभोक्ताओं की जरूरतों को पहचाना गया है जो व्यापार और सेवा प्रदाताओं के साथ प्रतिदिन के लेनदेन से उत्पन्न होती हैं। एनसीएच द्वारा एक राष्ट्रीय टोल फ्री नं. 1800-11-4000 (बीएसएनएल / एमटीएनएल प्रयोक्ताओं के लिए) प्रदान किया गया है, अन्य प्रयोक्ता 011-27006500 डायल कर सकते हैं (सामान्य कॉल प्रभार लागू)। नाम

और शहर का उल्लेख करते हुए 8800939717 पर एसएमएस भी भेजा जा सकता है। प्रयोक्ता इसकी वेबसाइट के उपयोग द्वारा ओनलाइन शिकायत भी दायर कर सकते हैं।

आप राज्य उपभोक्ता हेल्पलाइन का उपयोग कर सकते हैं।

उपभोक्ता जागरूकता :

एक जागरूक उपभोक्ता एक सशक्त उपभोक्ता है। एक जागरूकता उपभोक्ता न केवल स्वयं को शोषण से सुरक्षित रखा है बल्कि यह संपूर्ण निर्माण और सेवा क्षेत्रों में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देता है। उपभोक्ता सशक्तीकरण के महत्त्व को पहचानते हुए उपभोक्ता कार्य, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा उपभोक्ता शिक्षा, उपभोक्ता संरक्षण और उपभोक्ता जागरूकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

जागो ग्राहक जागो :

जागो ग्राहक जागो का नारा अब घर – में पहचाना जाता है जो पिछले 5 वर्षों में किए गए प्रचार अभियान का परिणाम है। उपभोक्ता जागरूकता पर लगातार बल देकर 11वीं पंचवर्षीय योजना में सरकार ने आम आदमी को उपभोक्ता के रूप में उसके अधिकारों की जानकारी देने के लिए यह प्रयास आरंभ किया। उपभोक्ता जागरूकता योजना के भाग के रूप में, ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। सरकार ने जागरूकता पैदा करने के लिए अनेक चैनलों का इस्तेमाल किया जिसमें शामिल हैं : प्रिंट मीडिया विज्ञापन, ऑडियो अभियान, वीडियो अभियान आदि।

मानकों का उन्नयन :

उपभोक्ता को अपने अधिकारों का उपयोग करने में सहायता देने के लिए गुणवत्ता और मानकों की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मानक उपभोक्ताओं को गुणवत्ता के विश्वसनीय बैंच मार्क प्रदान करते हैं। विभाग गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए एक आर्थिक रूपरेखा के रूप में अपना एक स्थान बनाने में सफल रहा है। भारतीय मानक ब्यूरो ने आईएसओ मानक के अनुसार विदेशी विनिर्माताओं के लिए प्रमाणन योजना और आयातित वस्तुओं, खाद्य सुरक्षा प्रमाणन को आरंभ किया है। स्वर्ण आभूषणों और रजत से बनी वस्तुओं की हॉलमार्किंग के लिए प्रमाणन की योजना उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा में बीआईएस का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इन प्रयासों के अलावा मानक मुहर जैसे आईएसआई मुहर के लिए उत्पादन प्रमाणपत्र की योजना, एगमार्क, फल उत्पादन आदेश (एफपीओ), शाकाहारी और मांसाहारी मुहर, हथकरघा मुहर (208 केबी), रेशम मुहर, ऊन मुहर आदि भी उत्पाद मानकीकरण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

कैसे करें आवेदन :

उपभोक्ता अदालत में आप सादे कागज़ पर लिखकर भी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। अपनी शिकायत आवेदन पत्र में विस्तृत रूप से लिख दें। उपभोक्ता मामले की शिकायत या सुनवाई के लिए वकील करना जरूरी नहीं है, आप खुद ही अपना पक्ष रख सकते हैं। इसके अलावा व्यस्तता अथवा किसी अन्य कारण से सुनवाई में नहीं जा पा रहे हैं, तो कोई परिचित या रिश्तेदार भी आपका प्रतिनिधित्व कर सकता है। इसके लिए न्यायालय में एक प्राधिकार पत्र प्रस्तुत करना होता है। वैसे, अपना पक्ष रखने के लिए वकील भी किया जा सकता है।

आवश्यक दस्तावेज :

आवेदन के साथ सभी जरूरी दस्तावेजों (बिल, वाउचर, गारंटी पत्र, सेल डीड आदि) की फोटोकॉपी संलग्न करनी होती है। इसके साथ एक शपथ पत्र भी बनवाना होता है, जिसमें इस बात का ज़िक्र होता है कि मुक़दमा किसी दुर्भावना से दायर नहीं किया गया है और यह पूर्णत: सत्य साक्ष्यों पर आधारित है। इसके साथ ही जिसके ख़िलाफ़ शिकायत कर रहे हैं, उस पार्टी को भी एक नोटिस भेजना होता है, ताकि वह भी अदालत में अपना पक्ष रख सके।

उपभोक्ता मामलों की शिकायत के लिए देश में ज़िला स्तर पर उपभोक्ता अदालतें बनी हैं, जहाँ 20

लाख रुपए तक के मामलों की सुनवाई होती है। एक करोड़ तक के मामले राज्य उपभोक्ता फोरम में आते हैं और इससे ज़्यादा राशि के मामलों की सुनवाई राष्ट्रीय आयोग में होती है। उपभोक्ता मामलों में धोखाधड़ी या उत्पाद की गारंटी अवधि से पहले ख़राब होने के दो साल के भीतर शिकायत दर्ज करवाना जरूरी है। इसके साथ ही आपको मामला दर्ज करवाने में हुए विलम्ब और उसकी वजह का भी ज़िक्र करना होगा।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :**
   (1) उपभोक्ता शिकायत निवारण की क्या व्यवस्था है?
   (2) शिकायत कौन दायर कर सकता है?
   (3) शिकायत कहाँ दायर की जा सकती है?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :**
   (1) उपभोक्ता जागरूकता क्या है?
   (2) उपभोक्ता शिकायत हेतु आवेदन कैसे करें ?
   (3) उपभोक्ता शिकायत करने के आवेदन के साथ कौन-से दस्तावेज जोड़ना जरूरी होता हैं?

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी प्रवृत्ति : उपभोक्ता न्यायालय में शिकायत करते हेतु एक आवेदन तैयार करें।

शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को 'जागो ग्राहक जागो' के संबंध में जानकारी दें तथा उनमें इस हेतु जागरूकता फैलाएँ।

⊙

11 जो बीत गई सो बात गई

हरिवंशराय बच्चन
(जन्म : सन् 1907, मृत्यु : सन् 2003 ई.)

हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इलाहाबाद में ही वे अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। तब उनकी ख़्याति भारत भर में फैल चुकी थी। उन्होंने आकाशवाणी में हिन्दी प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के विशेषाधिकारी पद को भी उन्होंने शोभान्वित किया। बच्चनजी ने अभ्युदय पत्रिका के सम्पादक के रूप में भी कार्य किया।

हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तन का श्रेय बच्चनजी को जाता है। हरिवंशराय जीवन के राग-विरागी, मस्ती और विषाद के कवि हैं। उन्होंने विश्व साहित्य के कुछ अमर ग्रंथों के प्रामाणिक अनुवाद का कार्य भी किया है। उनके प्रमुख काव्यसंग्रहों में 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशानिमंत्रण', एकांत संगीत 'आकुल अन्तर', मिलन यामिनी और 'सतरंगिणी' प्रमुख हैं।

प्रस्तुत कविता 'सतरंगिणी' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने जो बीत गया उसके पीछे व्यर्थ में शोक न करने की बात को महत्त्व दिया है।

जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अम्बर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(2)

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया,
मधुवन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुर्झाईं कितनी बल्लरियाँ,
जो मुर्झाईं फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर;
कब मधुवन शोर मचाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(3)

जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन-मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया;
मदिरालय का आँगन देखो,
कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,

जो गिरते हैं, कब उठते हैं,
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है!
जो बीत गई सो बात गई!

(4)

मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधुघट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं,
फिर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधुप्याले हैं,
जो मादकता के मारे हैं,
वे मधु लूटा ही करते हैं;
वह कच्चा पीनेवाला है
जिसकी ममता घट-प्यालों पर,
जो सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है, चिल्लाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

शब्दार्थ और टिप्पणी

मदिरालय शराबखाना **बेहद** अत्यधिक, बेहिसाब, **अंबर** आकाश, आसमान, **निछावर (होना)** किसी के लिए खुद को मिटा देना, किसी को बहुत अधिक चाहना, **बल्लरियाँ** लताएँ, **मधु** अमृत, मदिरा, शराब **मदु** कोमल, यहाँ कमजोर **मधुघट** शराब से भरी मटकी, **लधु** थोड़ा **मादकता** मतवालापन, मस्ती, **कच्चा** अनाड़ी

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पंक्ति पूर्ण कीजिए :**
   (1) जीवन में एक सितारा था, ...।
   (अ) वह डूब गया तो डूब गया (क) अम्बर के आनन को देखो
   (ग) माना वह बेहद प्यारा था (घ) कितने इसके प्यारे छूटे
   (2) जीवन में मधु का प्याला था, ...।
   (अ) तुमने तन मन दे डाला था (क) कितने प्याले हिल जाते हैं
   (ग) जो गिरते हैं कब उठते हैं (घ) कब मदिरालय पछताता है
   (3) लघु जीवन लेकर आये हैं, ...।
   (अ) वह टूट गया तो टूट गया (क) प्याले टूटा ही करते हैं
   (ग) वह कच्चा पीनेवाला है (घ) कब रोता है चिल्लाता है
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) तारों के टूटने पर अम्बर क्या नहीं करता?
   (2) कलियाँ और वल्लरियाँ किसका हिस्सा हैं?
   (3) मधुघट किसका प्रतीक है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) सितारे के रूपक से कवि क्या समझाना चाहता है ?

(2) मुर्झाई कली पर मधुवन की क्या प्रतिक्रिया होगी ?

(3) कवि सच्चे 'मधु से जला हुआ' का प्रयोग किसके लिए करता हैं ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए :

(1) कवि कुसुम के प्रतीक द्वारा क्या संदेश देना चाहता है ?

(2) मधुघट और मनुष्य जीवन में क्या समानता पायी जाती है? स्पष्ट करें।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः प्रस्तुत कविता को कष्ठस्थ कर प्रार्थना सभा में इसका गान कीजिए।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः

- हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के चार खंडों में से प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि की चर्चा करें।
- जीवन की क्षणभंगुरता संबंधी कबीर के दोहों की तुलना प्रस्तुत कविता से करें।

⊙

12 रेडियम की आत्मकथा

महावीरप्रसाद द्विवेदी
(जन्म : सन् 1864 ई. : निधन : सन् 1938 ई.)

युग प्रवर्तक महावीरप्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम रामसहाय दुबे था। वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण शिक्षा का क्रम अधिक समय तक न चल सका। उन्हें जी.आई.पी. रेल्वे में नौकरी मिल गई। कुछ समय बाद टेलीग्राफ का काम सीखकर इंडियन मिडलैंड रेल्वे में तार बाबू के रूप में नियुक्त हुए। नौकरी के साथ-साथ हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि का गहन अध्ययन किया।

सन् 1903 से 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक रहे। वे भाषाशास्त्री, रचनाकार, अनुवादक, वैयाकरण, इतिहासज्ञ, अर्थशास्त्री होने के साथ-साथ विज्ञान में भी गहरी रुचि रखनेवाले थे । 'काव्य मंजूषा', 'द्विवेदी काव्यमाला', 'कविता कलाप' उनकी काव्य रचनाएँ हैं। अनूदित काव्य में 'गंगालहरी', 'ऋतुरंगिणी', 'कुमार संभव' आदि है। अनूदित गद्य रचनाओं में 'भामिनी विलास', 'अमृत लहरी', 'शिक्षा' 'स्वाधीनता', 'जलचिकित्सा' हिन्दी महाभारत आदि अनुदित गद्य रचनाएँ तथा 'हिन्दी शिक्षावली तृतीय भाग की समीक्षा', 'वैज्ञानिक कोश', 'नाट्यशास्त्र', 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति', 'सम्पतिशास्त्र', 'विज्ञानवार्ता', 'वाणीविलास', 'विचार विमर्श' आदि हैं।'

द्विवेदीजी प्रथम साहित्यकार हैं, जिनको हिन्दी साहित्य सृजन के लिए 'आचार्य' की उपाधि प्राप्त हुई।

प्रस्तुत गद्य रचना 'विज्ञान वार्ता' से ली गई है, जिसमें 'रेडियम' नामक पदार्थ के आविष्कार और उनकी यात्रा का आत्मकथनात्मक शैली में वर्णन हुआ है। संस्कृत तत्सम और अरबी, फारसी भाषा के शब्दों की अधिकता है।

मैं कहाँ जन्मा? यह कहना मेरे सामर्थ्य के बाहर और तुम्हारी कल्पना से परे है। ब्रह्मांड के अनंत तथा कल्पनातीत गेह में और काल से अपरिचित तथा अपरिच्छिन्न गर्भ में मेरी उत्पत्ति हुई थी।

मैं अकेला निराधार उस अनंत शून्य में बहुत वर्षों तक, इधर-उधर घूमता रहा। इसी बीच अद्‌भुत घटना घटी। परमाणुओं की एक ज्योतिर्मय धारा ने मुझे चारों ओर से घेर लिया और मैं वायव्य सागर का एक अंश बन गया। इस दशा में मैं कई युगों तक था और तमाशा देखता जाता था कि कैसे एक परमाणु दूसरे, तीसरे आदि परमाणुओं से मिलकर आकार तथा रूप धारण कर रहा है। अब गर्मी बढ़ने लगी और असह्य हो उठी, बिजली चमकने लगी, हलचल मच गई। परमाणु धक्के पर धक्के खाने लगे और उनकी गति वेगवती होती गई। इस अवस्था में कई अरब वर्षों तक रहकर मैंने देखा कि मैं अत्यंत जलती हुई और उत्तम वस्तु का एक अंश हूँ। इस जलती हुई अवस्था में मैं युगों तक पड़ा रहा।

निदान दसों दिशाओं में बड़ा गर्जन होने लगा और मेरे पहले संसार की रचना हुई। मैं इस संसार में कैसे प्रविष्ट हुआ, कैसे धीरे-धीरे एक सुंदर ग्रह बना, जो जीवित प्राणियों से भरापूरा और बड़े-बड़े नगरों से सुशोभित था- इन विषयों का विस्तार कर मैं तुमको थकाना नहीं चाहता। यह नवीन संसार निर्जल मरुभूमि में परिणत हो गया और अंत में फटकर मिट गया तथा ज्योतिर्मय वायव्य पदार्थों के रूप में परिणत हो गया। इस महाप्रलय काल में मैं इस संसार से बड़े वेग से फेंका गया और दूसरे संसार में जा पहुँचा। यह दूसरा संसार भी कालांतर में नष्ट हो गया।

इसी प्रकार मैं एक से दूसरा, दूसरे से तीसरा, तीसरे से चौथा आदि अनेक ब्रह्मांडों की यात्रा करता हुआ और अनेक देशों का चक्कर लगाता हुआ उस अग्निकुंड में गिरा, जो सिकुड़ते-सिकुड़ते तुम्हारी पृथ्वी बन गया।

मैं पृथ्वी के ऊपरी भाग पर रहना नहीं चाहता था, क्योंकि यात्रा करते-करते मैं बहुत थक गया था और मुझे आराम करना आवश्यक था। इसी से मैं पृथ्वी के नीचे की तह पर अपने सहचर अन्यान्य धातुओं के साथ लेटा रहा। घोर निद्रा ने आकर घेरा और मैं कुम्भकर्णी नींद में निमग्न हो गया। निद्रा पूरी भी न हुई थी कि मुझे यात्रा करने के लिए फिर उठना पड़ा।

मैं इस हिरण्यगर्भ के पेट में कई करोड़ - कई पद्म वर्षों से विद्यमान था; किन्तु कुछ दिन पहले तक कोई मेरा पता न पा सका था। धरती का ऊपरी भाग आँधी-पानी से कट-कटकर समुद्र में डूबता गया और मैं प्रबल शक्तियों द्वारा हजारों वर्षों में ऊपर की ओर निकलता गया। बहुत-सी खनिज धातुओं के साथ मेरी बड़ी गाढ़ी मित्रता हो गई थी। मैं बराबर उनके साथ रहता था और उनके सुख-दुख में बराबर सहानुभूति रखता था। अंत में वैज्ञानिकों ने मुझे, मेरे चिरसंगियों से अलग कर, मनुष्यों के सामने उपस्थित किया।

वियोग का फल कड़वा होता है। यदि मैं चाहता तो इस वियोग का फल पहले वैज्ञानिकों को और फिर मनुष्यों को चखा देता; किन्तु ऐसा करना मुझे मंजूर न था; क्योंकि पशुओं में सिंह की जैसी धाक जमी रहती है, देवताओं में इंद्र जैसा मान पाते हैं, कंकड़ों में रत्न जैसा सम्मानित होता है, वैसे ही मैं मौलिकों का राजा बन बैठा और इस स्थान पर मनुष्यों ने मुझे बैठाया। उन पर मेरे प्रसन्न रहने का यही कारण है।

मेरी उत्पत्ति 'पिच ब्लेंडी' नामक एक खनिज पदार्थ से हुई है। 'इउरानियम' मेरे पितामह और 'आयोनियम' मेरे पिता हैं, अर्थात् यदि तुम इउरानियम को कुछ देर यों ही रख दो तो उससे आप-ही-आप आयोनियम और आयोनियम से मैं बन जाऊँगा।

अच्छा, तुमने कभी पारस पत्थर का भी नाम सुना है? यह वह पत्थर है, जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है और जस्ता चाँदी का रूपांतरण ग्रहण करता है। यह पत्थर पहले भारतवासियों के पास था अथवा यों कहो कि वे एक निम्न श्रेणी की धातु को उच्च श्रेणी की धातु में परिणत करने की रीति जानते थे; किन्तु पश्चिमीय वैज्ञानिकों ने इसे एक कपोल-कल्पित वस्तु बतलाया और इसकी हँसी उड़ाई। अब मेरे आविष्कार से उनकी आँखें खुली हैं। वे समझने लगे हैं कि जैसे इउरानियम से मैं (रेडियम) और मुझसे 'हिलियम' धातु बनती है, उसी प्रकार और धातुएँ भी एक दूसरे का रूपांतरण ग्रहण कर सकती हैं। अब उनका ध्यान पारस पत्थर की सत्यता की ओर गया है। उनमें कितने तो ऐसे हैं, जो यह कहते हैं कि पारस पत्थर की समस्या हल हो गई; किन्तु वे नहीं जानते कि पारस पत्थर बनाने में उन्हें अभी वर्षों लगेंगे।

मेरा मूल्य इतना अधिक है कि मैं संसार की सभी वस्तुओं में बहुमूल्य हूँ। मेरे एक कण का जितना दाम है, उतने में सोना और प्लैटिनम ढेर-के-ढेर मिल सकते हैं। मेरी बहुमूल्यता का अनुमान तुम इतने से ही कर सकते हो कि आलपीन के सिरे के बराबर मेरे एक छोटे-से टुकड़े का दाम पचहत्तर हज़ार रुपये होता है! लंदन के मिडल सेक्स हास्पिटल में मेरे दो कण हैं। ये इतने छोटे हैं कि बिना खुर्दबीन के देखे नहीं जा सकते; पर इतने ही छोटे कणों की क़ीमत तीस हज़ार रुपये है! वे काँच की नली में भली-भाँति सुरक्षित रखे रहते हैं।

मुझसे तीन प्रकार की किरणें बराबर निकला करती हैं। उन्हें तुम खाली आँख नहीं देख सकते। मैं अपनी किरणों के साथ परमाणुओं को भी विकीर्ण करता रहता हूँ। यदि मेरे किसी मिश्रण को पानी में कुछ देर रख दो तो तुम देखोगे कि मैं अपना रंग गिरगिट-सा बदलता हूँ; पहले तो मैं पीले रंग का रहूँगा; किन्तु धीरे-धीरे रंग बदलते-बदलते अंत में गुलाबी रंग का हो जाऊँगा। मुझे पानी में मिलाकर रख दो। मैं बड़ा गुल खिला दूँगा। पानी से जितना चाहो, उतना उज्जन और ओषजन जमा कर लो। एक बात और याद रखो कि मेरे पास का तापक्रम आस-पास के स्थानों के तापक्रम से अधिक रहता है।

अब मेरी कुछ उपयोगिताओं को सुन लो। नासूर के रोगियों की चिकित्सा मेरे द्वारा की जाती है। हज़ारों रोगियों की जान मेरी बदौलत बच गई है। मैं हज़ारों-लाखों वर्षों तक अपना प्रकाश नहीं खोता। मैं एक धातु की छड़ के सिरे पर बैठकर प्रतिदिन किसी रोगी के घाव को कुछ देर तक देखता हूँ। घाव के निकट जाते ही मेरी प्रकाश-किरण घाव पर पड़कर उसके विष को दूर कर देती है। मेरा यह किरण-विकिरण एक अद्‌भुत दृश्य है। एक विशेष प्रकार के पर्दे पर डॉक्टर लोग उसे दिखाते हैं। मेरी किरण तथा परमाणु जिस समय पर्दे पर पड़ते हैं, उस समय ऐसा मालूम होता है कि अँधेरी रात में करोड़ों तारे आसमान में चमक रहे हैं। इस किरण तथा परमाणु-वितरण से मैं कम अवश्य होता जाता हूँ; किन्तु इसकी मात्रा इतनी थोड़ी होती है कि मेरे किसी कण से वर्षों काम लेने पर भी वज़न कम नहीं होता।

एक बात मैंने अब तक छिपा रखी है। मैं देख रहा था कि तुम मुझे हाथ से छूते हो या नहीं। ख़ूब बचे, यदि एक बार भी तुम मुझे अपने हाथ से स्पर्श करते तो मैं उसका मज़ा तत्काल चखा देता! मुझे छूने से तुम्हारे हाथ में घाव हो जावेंगे, बड़े-बड़े फोड़े उठ आवेंगे जो शीघ्र आराम न हो सकेंगे; इतना कष्ट बहुत असह्य होता है।

इतने से तुम यह न समझ लेना कि मेरी उपयोगिता का अंत हो गया। भविष्य में मैं बड़ी-बड़ी करामातें कर दिखाऊँगा। मेरी विलक्षण चालों को सुन तुम्हें दाँतों तले उँगली दबानी पड़ेगी। जैसे-जैसे मेरे विषय में तुम्हारी

जानकारी बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे तुम मेरी क़द्र करना सीखोगे। दिन-दिन विज्ञान-वेत्ताओं की दृष्टि मुझ पर अधिक रहेगी। मैं उनकी खोज का कारण अभी बहुत दिनों तक बना रहूँगा।

मेरा ही नाम धारण कर एक कृत्रिम वस्तु चल निकली है, जो घड़ियों में लगा देने से अँधेरे में स्वयं चमकने लगती है। देखो तो सही, मैं सारे ब्रह्मांड का चक्कर लगाकर तुम्हारी कलाई की घड़ी में मौजूद हूँ। इतनी यात्रा करने पर भी तुम भूलकर यह न समझ लेना कि यहाँ आकर मेरी यात्रा पूरी हो गई। मैं अभी और यात्रा करूँगा और करता जाऊँगा।

बस, एक बात और। मैं भारतवासियों पर प्रसन्न नहीं हूँ; क्योंकि वे मेरी क़द्र करना नहीं जानते। देखो, भारत में कितनी खानें हैं, जहाँ मैं विद्यमान हूँ; किन्तु उनमें इतनी शक्ति नहीं, इतना अधिकार नहीं कि वे मुझे खोदकर निकालें और मेरी उपयोगिता को समझें। तुम मुझे आदर की दृष्टि से देखो, तुम मेरी उपयोगिता को समझो, मेरी क़द्र करना सीखो। फिर देखो, मैं तुम्हारा दास बनने को तैयार हूँ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिरण्यगर्भा प्राणात्मा **पद्म** वैदिक काल गणना का एक नाम (क्रमशः करोड़, अरब, खर्व, नील और पद्म) **तापक्रम** उष्णतामान **गेह** घर **अपरिच्छिम** असीम, जिसका आरपार न हो, **वायव्य** उत्तर-पश्चिम की दिशा **वेगवती** तीव्र, **निदान** आखिरकार, आखिर में **निर्जल** जलहीन **भरुभूमि** रेगिस्तान **परिणत होना** बदल जाना **धाक** प्रभाव, दबदबा **जस्ता** एक धातु **कपोलकल्पित** बिल्कुल कल्पित, मनगढ़त **खुर्दबीन** सूक्ष्मदर्शक यंत्र **बराबर** लगातार **विकीर्ण करना** बिखेरना, फैलना **नासूर** पुराना वाव, जिस में छेद हो जाता है और जिस में से हमेशा मवाद बहता रहता है **करामात** आश्चर्यजनक कार्य **विघमान** मौजूद **क़द्र करना** इज्जत करना

मुहावरे तथा कहावतें

दाँतों तले उँगली दबाना आश्चर्य में पड़ जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) अग्निकुंड सिकुड़कर क्या बन गया?
(क) रेडियम (ख) युरेनियम (ग) पृथ्वी (घ) कुछ भी नहीं

(2) रेडियम की मित्रता किससे होती है?
(क) खनिज धातुओं से (ख) पानी से
(ग) हवा से (घ) पृथ्वी के जीवों से

(3) आयोनियम रेडियम के बीच क्या रिश्ता है?
(क) भाई-भाई का (ख) मित्र-मित्र का (ग) पिता पुत्र का (घ) पुत्र - पिता

(4) रेडियम किस प्रजा से दुखी है?
(क) अमरीकी (ख) भारतवासी (ग) जापानी (घ) चीनी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'रेडियम' कहाँ रहना नहीं चाहता था?
(2) वैज्ञानिकों ने रेडियम के साथ कैसा व्यवहार किया?
(3) रेडियम की उत्पत्ति किस पदार्थ से हुई?
(4) रेडियम का सहोदर कौन है?
(5) रेडियम के एक कण के बदले किस धातु के ढेर मिलते हैं?
(6) रेडियम के दो कण कहाँ संग्रहीत हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) अनंत शून्य में रेडियम की स्थिति क्या थी ?

(2) खनिज तत्त्वों के वियोग पर रेडियम की क्या प्रतिक्रिया थी ?

(3) रेडियम अपने सम्मान की समानता किससे बताता है ?

(4) पारस पत्थर का कार्य क्या है ?

(5) रेडियम से कितने प्रकार की किरणें निकलती हैं ? कौन सी ?

(6) घाव पर रेडियम किस प्रकार उपयोगी होता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) कल्पनातीत रेडियम की उत्पत्ति का सविस्तार वर्णन करें।

(2) भारत के पास कौन-सी अमूल्य विरासत थी ? वह अन्यों के पास कैसे चली गयी ?

(3) रेडियम की उपयोगिता के बारे में अपने विचार लिखिए।

(4) खुद की कृत्रिम रचना के बारे में रेडियम के उद्‌गार को स्पष्ट करें।

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) वियोग का फल कड़वा होता है।

(2) देवताओं में इन्द्र और कंकड़ में रत्न समान होना ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः

- रेडियम की तरह अन्य खनिज के आविष्करण की घटना ढूँढ़कर पढ़ें।
- किसी वैज्ञानिक आविष्कार की घटना को संवाद के रूप में लिखें।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः

- महावीरप्रसाद द्विवेदी के विज्ञान संबंधी अन्य कहानी और निबंध को महावीरप्रसाद ग्रंथावली में से ढूँढ़कर छात्रों को स्व-अध्यायन के लिए दें।
- गुजराती साहित्यकार कुमारपाल देसाई के वैज्ञानिक लेखों का हिन्दी अनुवाद छात्रों से करवाइए।
- अहमदाबाद की भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) की शैक्षिक यात्रा करवाइए ।

आधुनिक मुद्रण तकनीक

मुद्रण कला का स्वरूप :

मुद्रित माध्यमों के विकास में मुद्रणकला का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। मुद्रित होने की वजह से समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ सजे धजे रूप में मनमोहक छवि धारण करके अत्यधिक प्रसार पा जाती हैं। मुद्रण कला के विभिन्न अंगों का ज्ञान संपादक या प्रिन्ट मीडिया से जुड़े व्यक्ति को होना आवश्यक होता है।

मुद्रणकला के आविष्कार का श्रेय चीन को प्राप्त है। चीन में 650 ई. में भगवान बुद्ध की मूर्ति छापने के लिए सर्वप्रथम मुद्रण कला का उपयोग किया गया था। चीन में सहस्त्र बुद्ध गुफाओं में हीरकसूत्र नामक पुस्तक मिली है। इसे ही संसार की सर्वप्रथम मुद्रित पुस्तक माना जाता है। इसमें ढाई फुट लम्बे और एक फुट चौड़े छह पृष्ठ हैं जो सारे के सारे सोलह फुट लम्बे कागज पर चिपके हुए हैं।

चीनी मिट्टी से पकाए हुए अलग-अलग हो सकनेवाले टाइप चीन के पी शेंग नामक व्यक्ति ने 1041 ई. में बनाए। ये टाइप आग में पकाए जाते थे तथा इनसे छपाई भी बढ़िया नहीं होती थी क्योंकि स्याही लगने से मिट्टी गीली हो जाती थी और टाइप अच्छा काम नहीं करते थे। इसलिए उसने टीन के टाइप भी बनाए। 1314 ई. में वांग चांग ने लकड़ी के टाइप बनाए। चीनी भाषा में लकड़ी के टाइप बनाना आसान था अत: ऐसे टाइप खूब चले। ऐसे टाइप चीन की तुंग हुआंग गुफाओं में मिलते हैं। इनकी लिपि उइगुर थी जो मध्य एशिया में प्रचलित थी। ये टाइप शब्दों के हैं, वर्णों के नहीं। वर्णों के टाइप बनाने का श्रेय चीन को न होकर जर्मनी के गुटनवर्ग को मिला।

चीन से यह मुद्रण कला जापान एवं कोरिया गई। कोरिया के सम्राट ने धातु के टाइपों की बाउंड्री बनवाई थी। बौद्ध भिक्षुओं के प्रयासों से वर्णमाला वाली लिपि का प्रयोग आरंभ हुआ तथा इसके लिए टाइप भी बने और पुस्तक भी छपी। फिर टाइप कला यूरोप में पहुँची और वहाँ उसका स्वतंत्र रूप से विकास हुआ।

टाइपों का आविष्कार :

प्रत्येक वर्ण के अलग टाइप का आविष्कार करने का श्रेय जर्मनी के स्ट्रासवर्ग निवासी जॉन गुटनवर्ग को ही है। गुटनवर्ग सुनार का बेटा था तथा उसने बाइबल छापने के उद्देश्य से टाइपों का निर्माण किया। 42 लाइनोंवाली बाइबल 1456 ई. में छपी थी। गुटनबर्ग के प्रेस में तथा संपूर्ण यूरोप में यह मुद्रित रूप में पहली पुस्तक है। 1440 तथा 1450 ई. के बीच मेंज ने परिवर्तनीय टाइपों से छपाई करने का आविष्कार किया। हालाँकि इसका मूल रूप से श्रेय गुटनवर्ग को ही है। टाइपों के निर्माताओं में अन्य नाम हारलेम (हालेंड) केकास्टर, ब्रूगेज (बेल्जियम) के जोनीज वाइटो तथा फस्टर (इटली) के पामकीलो कास्टेल्डे आदि के आते हैं।

यूरोप में मुद्रणकला का प्रसार पंद्रहवीं शताब्दी में निज्नानुसार रूप में हुआ : इटली (1465 ई.), फ्रांस (1470 ई.), स्पेन (1474 ई.), इंग्लैंड (1477 ई.), डेनमार्क (1482 ई.), पुर्तगाल (1494 ई.) तथा रूस (1553 ई.) ।

भारत में मुद्रणकला का आरंभ :

भारत में मुद्रणकला का आरंभ सोलहवीं शताब्दी में ईसाई मिशनरियों ने किया। ईसाई धर्म की प्रचारात्मक पुस्तकें छापने के लिए उन्होंने अपने देशों से टाइप एवं प्रेस मँगवाए। कागज भी वे वहीं से मँगाते थे। भारत में पहला प्रेस 6 सितंबर, 1556 ई. को संयोगवश ही आ गया। यह प्रेस पुर्तगाल से अवीसीनिया के लिए भेजा गया था। उन दिनों स्वेज नहर नहीं बनी थी तथा अवीसीनिया के लिए समुद्रमार्ग से भारत के समुद्रतट के पास से होकर जाना होता था। पेट्रियार्क प्रेस के साथ थे तथा वे मार्ग में गोवा रुके। जनवरी, 1557 में जब वे अबीसीनिया जाने की तैयारी कर रहे थे तभी राजनीतिक कारणों से गोवा के गवर्नर ने उन्हें वहाँ रोक लिया। और इस प्रकार प्रेस गोवा में ही रह गया। यहीं से 'दोकत्रीना क्रिरस्टाओ' पुस्तक 1557 ई. में छपी। दूसरा प्रेस बम्बई में 1974-75 ई. में स्थापित किया गया। भारत में तीसरा प्रेस डेनिश मिशनरी वर्थालेम्यो जीगेनवल्ग ने प्रोस्टेट ईसाईधर्म के प्रचार

करने के लिए 1712 ई. में ट्राकूबर (चेन्नउई) में स्थापित किया। इसी प्रकार श्रीरामपुर में भी ईसाई मिशनरियों ने मुद्रण की व्यवस्था की। बम्बई में मुद्रण की व्यापक व्यवसाय अमेरिकी ईसाई मिशनरियों ने 1816 ई. में की। बंगाल में मुद्रण का विकास राजनीतिक कारणों से हुआ। अंग्रेजी शासकों ने भारतीयों की भाषा सीखने के लिए बंगला भाषा का व्याकरण 1778 ई. में हुगली (कोलकाता) में छपवाया।

भारतीय भाषाओं में मुद्रण :

भारतीय भाषाओं में मुद्रण हेतु सर्वप्रथम टाइप तमिल में बनाए गए। त्रिचूर के पास जोन्नेस गोन्साल्वेज नामक स्पेनवासी ने 1577 ई. में मलावरी टाइप तैयार किए जो आरंभ में तमिल पुस्तकें छापने में काम आते थे। वैसे तमिल भाषा में टाइप बनाने का सबसे के कारण टाइपों के रूप में नहीं आ सके।

देवनागरी लिपि में मुद्रण :

नागरी के टाइप सबसे पहले यूरोप में बने। 'चाइना इलैस्ट्रैटा' 1767 ई. में प्रकाशित पहली पुस्तक है जो नागरी लिपि में छपी। 1771 ई. में रोम में प्रकाशित 'एल्फाबेटम ब्राह्मणीकम सिउ इंदोस्तानम उपवर्सिटाटिस काशी' नामक पुस्तक खड़ी बोली की परिवर्तनीय नागरी टाइपों में प्रकाशित प्रथम व्याकरणिक या वर्णमाला पुस्तक है। भारतीय मुद्रण कला का स्थायी आरंभ कोलकाता में बाद में हुआ। बंगला और नागरी टाइप के जनक चार्ल्स विल्किंस और पंचानन कर्मकार ने मुद्रणकला को नई दिशा दी। विल्किंस ने बंगला का पहला व्याकरण 1778 ई. में छापा। इन्होंने संस्कृत व्याकरण 1779 ई. में छापा लेकिन संस्कृत में देवनागरी लिपि के टाइपों का प्रयोग 1800 ई. में किया।

चार्ल्स विल्केंस ने 1795 ई. में इस्पात से देवनागरी के टाइप बनाए, उनसे मैट्रिक्स बनाए और फिर साँचे बनाए। उन साँचों से टाइपों का एक फोंट अपने हाथ से ढाला। इस टाइप को प्रयोग करके सोलह पृष्ठों के प्रूफ भी तैयार किए गए। लेकिन आग लग जाने के कारण सारे टाइप बेकार हो गए। फोर्ट विलियम कॉलेज बनने पर उसने पुन: अपने काम को गति दी। इस प्रकार चार्ल्स विल्किंस ने देवनागरी के टाइप तो 1795 ई. में ही तैयार कर लिए थे किंतु उनका उपयोग करके संस्कृत व्याकरण 1808 ई. में लंदन में छपा। इससे पूर्व विलियम कैरी ने मराठी का व्याकरण 1805 ई. में तथा संस्कृत व्याकरण 1806 ई. में देवनागरी टाइपों का प्रयोग करके प्रकाशित किए। गिलक्रिस्ट की लिखी एक पुस्तक हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण 1796 ई. में कोलकाता के कोनिकल प्रेस से छपी।

पंचानन कर्मकार विलियम कैरी के प्रयास और प्रेरणा से श्रीरामपुर मिशन में आ गया तथा उसके बाद नागरी टाइप निर्माण के कार्य को गति मिली। आगे चलकर पंचानन कर्मकार के भतीजे मनोहर ने भी इस कला में इतनी दक्षता हाँसिल की कि वह प्रत्येक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लिपियों के टाइप बनाने लगा। उसके द्वारा बनाए गए भारतीय भाषाओं के टाइप चालीस वर्षों से भी अधिक समय तक बाजार में छाए रहे। आगे मुद्रण कला क्रमश: विकसित होती गई।

मुद्रण एक प्रक्रिया है जिसमें कंपोजिंग, प्रूफ संशोधन, पेज मेकअप आदि सभी कुछ आ जाता है। मुद्रण की अनेकानेक प्रक्रियाएँ समय गुजरते विकसित होती रही हैं तथा यह प्रक्रिया आधुनिक काल में कम्प्यूटर प्रक्रिया के रूप में विकसित होकर अत्यंत सरल सहज एवं रोचक हो गई है।

टाइप के दस अंग-काउंटर, बाड़ी, सेरिफ, केस बिअर्ड, शोल्डर, पिन, निक, ग्रूव और फुट होते हैं। प्वाइंट की प्रणाली में एक इंच में 72 प्वाइंट होते हैं। इसे दूसरे शब्दों में कहा जाए तो एक प्वाइंट एक इंच का बहत्तरवाँ भाग होता है। वारह प्वाइंट का पाइका प्वाइंट अर्थात्, 166044 इंच होता है। वारह प्वाइंट का एक एम तथा छह प्वाइंट का एम एन होता है।

हिंदी में 8 प्वाइंट से लेकर 72 प्वाइंट के टाइप होते है। इससे बड़े टाइप भी बनाए जा सकते है। पहले हैंड कज़्पोजिंग था तथा प्रत्येक वांछित आकारवाले टाइप को चिपटी से उठाकर गैली में रखा जाता था तथा इस तरह से क्रमश: पूरा काम करक पेज बाँधा जाता था और उससे प्रूफ लिया जाता था लेकिन अब यह सब बीते

जमाने की बातें हैं। अब सब कुछ कम्प्यूटर की सहायता से होने लगा है तथा हिंदी में कई तरह के टाइप प्रचलित है – जैसे 'श्री लिपि' आदि। कम्प्यूटर से टाइप करने, प्रूफ लेने, प्रूफ शोधन के आधार पर सुधार करने तथा बटर निकालने में प्रिंटर की सहायता से अत्यंत सुविधा रहती है। एक छोटी सी मेज पर बटर तक का कार्य सम्पन्न हो जाता है।

किसी भी उपकरण से, कहीं प्रिंट करें :

Google मेघ मुद्रण एक नई तकनीक है जो आपके प्रिंटर को वेब से कनेक्ट करती है, Google मेघ मुद्रण का उपयोग करके, आप अपने घर और कार्यालय के प्रिंटर को अपने द्वारा प्रतिदिन उपयोग किए जाने वाले एप्लिकेशन द्वारा अपने लिए और अपने द्वारा चुने गए किसी व्यक्ति के लिए उपलब्ध करा सकते हैं, Google मेघ मुद्रण आपके फोन टेबलेट, Chrome बुक, PC और वेब से कनेक्ट किसी अन्य डिवाइस पर कार्य करता है, जिनसे आप प्रिंट करना चाहते है।

इस प्रकार से आजकल आधुनिक मुद्रण तकनीक कम्प्यूटर एवं तकनीकी प्रयोग के साथ इतनी विकसित हो चुकी है कि त्वरित, आकर्षक, मनोहारी एवं यथा आवश्यकता अनुरूप में मुद्रण किया जा सकता है तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता को बरकरार रखा जा सकता। आजकल तरह-तरह के विभिन्न आकार के प्रत्येक भाषा के फोंट कम्प्यूटर की सहायता से उपलब्ध हैं जिन्हें यूनीकोड के माध्यम से परिवर्तित भी किया जा सकता है।

मीडिया में समाचार पत्रों आदि के मुद्रण का कार्य स्वचालित मशीनों की सहायता से अत्यंत त्वरित गति से किया जाता है तथा एक स्थान से मुद्रण की कमांड देने के बाद मुद्रण, फोल्डिंग, पैंकिंग तक का कार्य मशीन स्वत: करती है तथा थप्पी सीधे ट्रकों में मशीनों की सहायता से गंतव्य तक पहुँचाने के लिए लाद दी जाती है।

आजकल मुद्रण की संकल्पना मात्र कागज पर छपाई तक सीमित नहीं हैं बल्कि प्रत्येक वस्तु, पैकेट, दवा की शीशी, पोस्टर आदि प्रत्येक क्षेत्र इसकी परिधि में समाहित है तथा कम्प्यूटर की सहायता के अत्यंत त्वरित गति से उच्च कोटि का मुद्रण कार्य अत्यंत कम खर्च में अपने नजदीक के मुद्रणालय में कराया जा सकता है।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :**
   (1) मुद्रण का आविष्कार कहाँ हुआ?
   (2) टाइप का आविष्कार किसने किया?
   (3) भारत में मुद्रण कला का आरंभ कब हुआ?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :**
   (1) भारतीय भाषाओं में मुद्रण हेतु सर्वप्रथम टाइप किस भाषा में बनाए गए?
   (2) देवनागरी लिपि में मुद्रण की शुरुआत कब हुई?

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्ति :** देवनागरी के विभिन्न प्रकारों एवं आकारों के फोंटों के नमूने एकत्रित करें।

(2) **शिक्षक प्रवृत्ति:** कम्प्यूटर की सहायता से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के फोंटों का परिचय कराएँ तथा प्रिंटर की सहायता से प्रिंट करके बताएँ।

⊙

13	# महाप्रस्थान

नरेश मेहता

(जन्मः सन् 1922 ई. : निधन : सन् 2000 ई.)

आधुनिक हिन्दी कवि नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर में हुआ था। उनकी माता सुंदरबाई और पिता का नाम बिहारीलाल था। उनका मूल नाम पूर्णशंकर था। नरसिंहगढ़ में सन् 1940 में सातवीं कक्षा की पढ़ाई के समय वहाँ की राजमाता ने सुंदर काव्य पढ़ने पर पूर्णशंकर को 'नरेश' उपनाम दिया। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कुछ वर्षों तक ऑल इंडिया रेडियो में सेवाएँ दीं।

नरेश मेहता के कविता संग्रहों में 'बनपाखी! सुनों!', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत', 'उत्सवा', 'तुम मेरा मौन हो', 'अरण्या', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'पिछले दिनों नंगे पैरों, 'देखना एक दिन', 'चैत्या', आदि है। खण्डकाव्य 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'प्रवादपर्व', 'शबरी' और 'प्रार्थना पुरुष' प्रमुख हैं। उपन्यास, निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, यात्रावृत्तांत और अनुवाद जैसी गद्य विद्याओं पर भी कवि ने कलम चलायी है। कवि को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (1992) साहित्य अकादमी पुरस्कार, मंगलाप्रसाद पारितोषिक, भारत भारती सम्मान से सम्मानित किया गया है।

'महाप्रस्थान' खण्डकाव्य का विषय पाण्डवों का स्वर्गारोहण है, जिसमें युधिष्ठिर के माध्यम से कवि ने राज्य-व्यवस्था की अकूट शक्ति से उत्पन्न संकट और उसके व्यक्तित्व की रक्षा, जैसे प्रश्न उठाए हैं, जो चिरंतन प्रश्न हैं।

युधिष्ठिरः प्रश्न और जिज्ञासा में
अन्तर समझते हो पार्थ?
सत्य की प्राप्ति
दूसरे से प्रश्न करके नहीं होती,
स्वयं से ही जिज्ञासा करनी होती है।
सुख या दुख के स्थान पर
मुझे सदा जिज्ञासा हुई पार्थ!
मेरे राज्य-परित्याग से
अवश्य ही तुम लोगों को बुरा लगा होगा।
मैंने मात्र शास्त्र-व्यवस्था के कारण ही
वानप्रस्थ नहीं स्वीकारा
परन्तु
यह मेरी वैचारिकता का निष्कर्ष था बन्धु!

अर्जुन : कैसा निष्कर्ष!

युधिष्ठिरः वस्तुओं से हीन होते जाने का अर्थ है
व्यक्तित्व से सम्पन्न होते जाना।
युद्ध, राज्य, साम्राज्य, सम्पदा, सम्बन्ध
इन सबकी सीमाएँ हैं पार्थ!
ये ही
वे कुचक्र हैं

जिन्हें व्यक्ति
अपने चारों ओर बुन लेता है
और फिर कभी
इस सफलता की सुगन्ध के परिवृत्त से
बाहर आना नहीं चाहता।
ये वस्तुएँ
ये सफलताएँ
एक दिन उसका पर्याय बन जाती हैं।
वस्तुओं और सफलताओं के माध्यम से
अमरता प्राप्त करने को ही तो
तुम पुरुषार्थ और संकल्प कहते हो??

ये दुर्ग, प्रासाद, स्मृति-भवन
चारण-प्रशस्तियाँ
ये झूठे इतिहास वाले शिलालेख
व्यक्ति को अमरता देंगे?
पार्थ!
जड़, जड़ का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है
चेतन का नहीं।
तुम्हें बारम्बार कचोटती है
अपनी विवशता कि -
तुम अपमानित किये गये
तुम्हारे स्वत्व का हनन किया गया
न्याय-प्राप्ति के लिए
तुम्हें संघर्ष करना पड़ा,
पर पार्थ!

कभी उन
विचारहारा साधारण जनों के बारे में सोचो -
जो सदा अपमानित होते रहे हैं।
जिनके स्वत्व का अपहरण ही
हमारे ये दीप्तित साम्राज्य हैं।
अन्याय के अभ्यस्त वे
नहीं जानते कि
न्याय भी कुछ होता है।
प्रत्येक युद्ध -

जिसमें से एक राज्य जन्म लेता है,
कितनी स्त्रियों को विधवा
और बच्चों को अनाथ कर जाता है।
और वे जीवन-संघर्ष में
दिशाहीन खो जाने के लिए
बाध्य हो जाते हैं,
सव्यसाची!
तुम्हारे कृष्ण ने ही तो कहा था -
युद्ध के उपरान्त
समाज में वर्णसंकरता बढ़ जाती है।
कर सकते हो
उस दिन की कल्पना
जब इस पृथ्वी पर
कुलगोत्र-हीन वर्ण-संकरता ही विचरण करेगी?
उस दिन
इस ऐतिहासिक कुष्ठता का
कौन उत्तरदायी होगा अर्जुन!
कौन उत्तरदायी होगा??

आज, नहीं तो कल
राजा से अधिक कठोर हो जाएँगे
ये राज्य -
और सुदूर भविष्य में
राज्य से भी अधिक अमानवीय हो जाएँगी
ये राज्य-व्यवस्थाएँ।
इनके दो आधार-स्तम्भों-
युद्ध और आतंक
जिनका शिलान्यास
मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियाँ
बारम्बार करती आयी हैं
एक दिन
युद्ध और आतंक ही
सामाजिकता के पर्याय बन जाएँगे
युद्ध में हमने कौरवों को हराया
और आतंक के बल पर
तुमने

पाण्डव-साम्राज्य का राजकोष बढ़ाया।
पार्थ!
हमारे इन अमानवीय कृत्यों के
ये ही तो ऐतिहासिक निष्कर्ष निकले कि -
अर्जुन से श्रेष्ठ कोई योद्धा नहीं
और युधिष्ठिर ही
एक मात्र चक्रवर्ती सम्राट हैं!!
मानवता का यह रथ
किस अंधे मार्ग पर बढ़ रहा है
तुम नहीं जानते पार्थ!
तुम नहीं जानते कि
संकट कहीं अधिक गहरा है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वानप्रस्थ मनुष्य जीवन के चार आश्रमों (विद्यार्थी, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास) में से एक **कुचक्र** षडयंत्र, छल-प्रपंच, चाल, साजिश **परिवृत्त** घेरा **दुर्ग** किला **प्रासाद** राजभवन, विशाल भवन **स्मृति-भवन** किसी की स्मृति में बनवाया गया भवन **चारण-प्रशास्तियाँ** चारणों (भाटों) द्वारा की गई प्रशंसाएँ **कचोटता** चुभाना, अंदर-अंदर दुख देना **विचारहारा** जिनकी विचार-शकित छीन ली गई हो, जिसे विचार करने के लायक न छोड़ा गया हो **सव्यसाची** अर्जुन का एक नाम, अर्जुन दोनो हाथों से बाण चला सकते थे, इसलिए यह नाम पड़ा, **वर्ण-संकरता** दो भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष द्वारा संतानों के पैदा होने की स्थिति **शिलान्यास** नींव डालना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) युधिष्ठिर ने मात्र शास्त्र-व्यवस्था के कारण ही क्या नहीं स्वीकारा?
(क) वानप्रस्थ (ख) गृहस्थ (ग) संन्यास (घ) वृद्धत्व

(2) निज़्न में से किसकी सीमाएँ निश्चित हैं?
(क) युद्ध की (ख) साम्राज्य की (ग) सम्बन्ध की (घ) सभी की

(3) दुर्ग, प्रासाद, और स्मृतिभवन में किसकी प्रशस्तियाँ गूँजती रहती हैं?
(क) विचारहारा की (ख) चारण की (ग) सज्जन की (घ) एक भी नहीं

(4) युद्ध और आतंक किसके पर्याय हैं?
(क) वितृष्णा के (ख) आंतक के (ग) सामाजिकता के (घ) मानसकिता के

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) आर्य शास्त्रव्यवस्था में मनुष्य जीवन के कितने आश्रम बताये गए हैं?
(2) शिलालेख पर क्या लिखा जाता है?
(3) जड़ किसका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता?
(4) श्रेष्ठ योद्धा के रूप में कौन जाना जाता है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) सत्य की प्राप्ति के बारे में युधिष्ठिर के विचार बताइए।

(2) युधिष्ठिर ने वस्तुओं से हीन होने का क्या अर्थ बताया है?

(3) युधिष्ठिर के मतानुसार अमानवीय कृत्यों का ऐतिहासिक निष्कर्ष क्या निकलेगा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ पंक्तियों में लिखिए :

(1) सफलता और अमरत्व के बारे में युधिष्ठिर के विचार सविस्तार बताइए।

(2) युद्ध के परिणाम से जन्म लेनेवाली स्थिति पर अपने विचार स्पष्ट करें।

(3) ''जड़, जड़ का ही प्रतिनिधित्व कर सकता है चेतन का नहीं'' - विमर्श समझाइए ।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः नरेश मेहता रचित 'संशय की एक रात' नाटक को पढ़ें।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः महाभारत की कथा छात्रों को सुनाइए।

14 सुभाष मानव : सुभाष महामानव

माखनलाल चतुर्वेदी

(जन्म : 1887 ई. : निधन : सन् 1968 ई.)

राष्ट्रीय भावधारा के ओजस्वी कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म बावई (होशंगाबाद) में हुआ था। उन्होंने केवल नार्मल तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। सागर विश्वविद्यालय से डी.लिट् की मानद् उपाधि मिली थी। 'वे एक भारतीय आत्मा के नाम से हिन्दी जगत् में सुपरिचित हैं।

'हिमतरंगिनी', 'हिमकिरीटिनी', 'माता', 'युगचरण', 'समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा', 'बिजली काजर आँज रही', 'मरण ज्वार', 'कृष्णाज्वार', 'कृष्णार्जुन-युद्ध', 'बनवासी', 'कला का अनुवाद', 'समय के पाँव', 'साहित्य देवता', 'अमीर इरादे : गरीब इरादे', 'चिंतक की लाचारी' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य संमेलन की अध्यक्षता की और उन्हें तुलादान प्राप्त हुआ तथा मध्यप्रदेश द्वारा राजकीय अभिनंदन किया गया। उन्हें भारत सरकार की अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'सुभाष मानव : सुभाष महामानव' चतुर्वेदी की सुभाष बाबू के प्रति श्रद्धांजलि है जिसमें सुभाष बाबू का चरित्र-विश्लेषण करते हुए उन्होंने उनके संघर्षमय जीवन के चित्र उकेरे हैं।

जब तुम भारत से गये, लोग कहते थे, तुम बीमार हो घर से बाहर नहीं निकल सकते और तुम थे कि घर से क्या देश से भी बाहर चले गए। गरज यह कि रहस्य सोचा अरविन्द ने, रहस्य काव्य बनाकर लिखा रवीन्द्र ने और रहस्य अवतरित हुआ तुज़्हारे रूप में।

तुम जब युद्ध से लौटे, लोगों ने सोचा, तुम अमरीका और इग्लैण्ड से घिर जाओगे; बन्दी होंगे; तुम पर मुकदमा चलेगा; दण्ड दिया जायेगा। हिरोहितो, हिटलर, पेताँ और तुम डबल मार्च में एक साथ थे। सर्वनाश में, मित्र राष्ट्रों की सूलियों पर, अलग-अलग तिथियों में भले होओ, किन्तु भाग्य, परिणाम, दण्ड और यात्रा, ये एक ही होंगे।

किन्तु फिर तुम्हारा विमान चला, अपने सिपाहियों से बिदा लेकर, किसी अज्ञात लोक को। लोगों ने कहा कि वह विमान गिर पड़ा, विमान टूट गया। तुम गिर गये, तुम अज्ञात लोक के यात्री अनन्त लोक के यात्रा-पथी हो गये। तुम्हारी मृत्यु पर कुछ के जी में काँटा चुभ गया; कुछ के जी से काँटा निकल गया; किन्तु तुम्हारी मौत पर देशवासियों ने विश्वास नहीं किया; वे सोचते रहे और सोचते रहते हैं कि 'किसी दिन, किसी देश में, किसी वेश में, तुम जरूर मिलोगे।' किन्तु तुम तो 'रहस्य' हो न, जीवन में, मरण में। तुज़्हारा स्वभाव कैसे बदलेगा? एक बात सच है, भारत का भाग्य बने, भारत का भाग्य बिगड़े, तुम अब उस निर्माण के हिस्सेदार नहीं हो सकते।

तुम दुनिया से हटे या न हटे, विश्वगति के परदे से हट गये। कैसे कठोर निर्णय हो रहे हैं, आँसुओं को हँसते, मृत्यु को मुस्कराते और निर्माणों में भूकम्प आते जगत् देख रहा है।

तुम लोगों के मन पर हो, जीवन पर छाये हो, क्योंकि तुमने भारतीय जीवन को युद्ध के बीचो-बीच 'जीवित' किया है। तुम भारतीय विश्वासों पर हरिया रहे हो, क्योंकि स्वतंत्रता मिलने के दिन, वे तुम्हारे प्रयत्नों का मूल्य चुकाना चाहते थे; किन्तु तुम न थे, तुम पास न थे। 'रहस्य' पर भी क्या किसी का कहना होता है? तुम भारतीयों की कल्पनाओं पर छाये हुए हो। अब सहगल, ढ़िल्लन, अबुलरहमान, शाहनवाज़, शिन्दे के होते हुए भी यादें आकाश में तुम्हें खोजती हैं; पुकार की वाणी मानो कहीं से टकराकर लौट आती है; आँखों में कोई दीखता है; किन्तु बाँहे खींचकर उसे हृदय से नहीं लगा पातीं। 'श्रद्धा' सँजोने की नियति आज्ञा नहीं देती। वह तुम्हें सामने लाकर खड़ा नहीं कर देती है। श्राद्ध करने को भारतीय मन राजी नहीं होता। वह मानता है कि तुम जहाँ कहीं हो, हो अवश्य।

तुम 'रहस्य' हो गये। इस देश के सामन्त, वीर, योद्धा और बलिदानी प्राय: रहस्य होते आये हैं, वे अपमानों के अनन्त सामर्थ्य से अपनाते हैं और वरदानों के समय रहस्य हो जाते हैं।

तुम बलिपन्थी, तुम रक्त-क्रान्ति के होता, तुम सेनानी, तुम सिपहसालार! क्या सौन्दर्य था तुज़्हारी बालमूर्ति में! तरुणाई की तो मानो।

'अनब्याही हुलसी फिरै; ब्याही मीड़ें हाथ'

की दशा थी, तलवार लेकर तबीयत पर आनेवालों की अथवा तलवार वालों की तबीयत पर बाग़ बाग़ होनेवालों की।

तुम्हारे आसपास, नहीं, तुम्हारे पास बेदाग़ बहादुरी मानो अनदेखा-सा अनहोना बनकर देखनेवालों को अचज़्भे कें जादू-भरे उल्लास बाँटती रहती। और बंगाल, वह तो मानो, -

नैनाँ के बँगले में तुम्हें, सैनों से बुला लेंगे;
पलकों की चिक डाल, पिया को, पुतली पर सुला लेंगे।

...बिना कहे कहती रहती है। अपनी क़ीमत अमरों से भी अधिक कूतनेवाला प्रेम, बोलता नहीं है न! बड़े मँहगे मोलों की थी, तुम्हारी यह मनमोहनी मरण - न्योतती मस्ती!

बंगाल के लाड़ले तुम, अपने-आप क्रान्ति-पथ पर नहीं आये। तुम्हें खोजा था, प्रबुद्ध लोगों में देशबन्धुदास ने। प्यार करनेवाला और खोजनेवाला, मानो सब निहाल हो उठे, जब उन्होंने देखा, कष्ट सामने आने पर तुम अधिक कष्ट माँगते; और त्याग करने पर तुम और अधिक त्याग के लिए बेचैन हो उठते। तुम कष्ट को जोड़ते, त्याग को गुणित करते। रहस्य मानो तुज़्हारा स्वरूप ही नहीं, स्वभाव भी था।

तुम्हारी जीवन-यात्राएँ सदा विचित्र रहीं। तुम चले थे 'आई. सी. एस.' का इन्तहान देने, अपने ही भाइयों को गुलाम मानकर, गुलाम बनाकर विदेशी हुकूमत करनेवालों की 'बदजात' में मिलने और पहुँच गए 'सी.आर.दास' के क्रान्तिवादियों में, जहाँ अपने ही भाइयों को जन-देवता मानकर उनकी पूजा की जाती; मानो रक्त का टिकट लेकर, देश-सेवा के अग्नि-पथ में स्वर्ग पहुँच गये। इसी तरह तुम प्रस्तुत थे देश-भक्तों के साथ किसी ब्रिटिश जेल में युद्धकाल बिताने के लिए; और पहुँच गये युद्ध के बीचो-बीच ब्रिटेन के शत्रुओं को मित्र बना, युद्ध की सेना के सिपहसालार और भारतीय स्वातंत्र्य के 'प्रथम वाइसरॉय' कहलाने। फिर मित्र राष्ट्रों के जीतने पर, अपने सिपाहियों से बिदा लेकर तुम चले थे, किसी सुरक्षित स्थान की ओर, जहाँ से तुम वज्र की शक्ति बनकर, भारतीय राष्ट्र के शत्रुओं को मज़ा चखा सको । और विमान टूटने से तुम पहुँच गये अनन्त के लोक में, जहाँ देवता तुम पर पुष्प-वर्षा करें। गरज यह कि जीवन के यात्रा-पथ में तुम्हें 'मनचीते' से बड़ा 'प्रभुचीता' मिलता रहा।

जीवन-पथ भी तुम्हारा संघर्षमय रहा। देशबन्धु देवलोकवासी हुए, तब बंगाल का नेतृत्व तुम्हें प्राप्त न था। देश - प्रिय सेनगुप्ता से संघर्ष हुआ। ऐसा संघर्ष जिसमें तुम्हें पछाड़ मिली।

कांग्रेस के अखिल भारतीय पथ में तुज़्हारे सामने जवाहरलाल थे। क्रान्तिवादियों का दल, बंगाल का टल और भारी हलचल के बाद भी गाँधीजी और मोतीलालजी के सम्मिलित बल के सामने तुम छोटे पड़ गये। तुम्हें पुनः कलकत्ता कांग्रेस में (1928) ठोकर मिली।

जब तुम स्विट्जरलैण्ड की रोग-शय्या पर पड़े स्वतंत्रता का स्वप्न-चित्र बना रहे थे, तब तुमने देशवासियों को चेतावनी दी थी कि गाँधी के नेतृत्व से दूर हट जायें; किन्तु जब तुम लौटकर भारत आए, तब देशभक्त नरीमान, डॉक्टर खरे और न जाने कौन-कौन गांधी-विरोधी तुम्हें स्वयं नष्ट करने पड़े, और गांधी के आशीर्वादों से भरी हरिपुरा कांग्रेस के सभापतित्व की गादी - वह राष्ट्रपतित्व तुमने, स्वयं गांधी और वल्लभभाई और गांधीवादियों के हाथों ग्रहण किया! इसमें भी कौन हारा तुम या गांधी?

फिर डॉक्टर पट्टाभि से लोहा लेकर, गांधी को पीछे ठेलकर तुमने त्रिपुरा कांग्रेस की गद्दी जीती। कितना कटुता, कितनी भर्त्सना, कितने इलज़ामों के बीच। एक-सौ तीन ज्वर में भी कौन इलजाम तुम पर नहीं लगा, किन्तु तुम्हारी जीती हुई गद्दी पर राज किसने किया? यहाँ भी तुम्हारे सामने कठोर संघर्ष था। तुम्हें हारना पड़ा। कलकत्ता तुमने कांग्रेस की गादी छोड़ दी।

वह भी एक दिन था। तुमने सोचा, तुमने ठाना, तुमने शुरू किया कि कांग्रेस जैसी एक समानान्तर बलशालिनी संस्था का निर्माण करोगे और मेल किया श्री फजलुलहक़ से, जो तुम्हारे बाद लीग के ज़हर से बंगाल को भूखा मारने और दंगों में भून डालने में ही सफल हुए।

किन्तु तुम, तुम गांधी के साथ जेल में बैठकर माला जपने को तैयार न थे। तुम युद्ध को प्रभु द्वारा प्राप्त स्वर्ण-सन्धि समझते थे; और भारतीय आज़ादी के लिए उसका उपयोग करने के लिए इतने निश्चिंत थे कि 'प्राण

जाये' तो भी तुम उस अवसर को छोड़ने के लिए तैयार न थे। ऐसे निश्चय के लोगों के भाग्य में फूलों की शय्या कभी नहीं रही होती। उनके गले में पड़े फूलों के हार, विश्व के सुगन्धायमान अस्तित्व की क्षणिकता के सिवा और क्या व्यक्त करते हैं?

तुमने अपनी दृढ़ता को, कभी भी अवसरवादिता की गन्दी चादर से नहीं ढाँका। बड़े तुम्हारी पूजा के पात्र थे। तुम्हारा पथ-भंग करने के हक़दार नहीं। तरुण तुम्हारी सेना के सिपाही थे; माता पर कुरबान करने की हवन-सामग्री! तुम्हारे प्यार, दुलार, रोमांस और चुम्बन में से कुरबानी के यज्ञधूप की सुगन्ध आती थी और सिर उतारने के रक्त-बिन्दु उनमें से चू उठते थे।

पुलिस का कितना पहरा था! कलकत्ते में उस समय स्कॉटलैण्ड-यार्ड के शिक्षा प्राप्त कितने पुलिस खिलाड़ी तुम्हारे दायें-बायें तुम पर निगरानी करते हुए। फिर, तुम बीमार; तुम्हें दाढ़ी उग आयी। और एकाएक तुम गायब!

हिटलर का तुम्हें भारत का प्रथम वाइसराय बनाना; महीनों कोई खबर न पाकर भारतीयों को तुम्हारी मृत्यु की दु:शंका, और एक दिन तुम्हारा सेगाँव रेडियो पर भारतीयों से बोलना; और वह आज़ाद हिन्द सेना, वह युद्ध, वह तैयारी मानों युग के महान् और मरण माँगते तूफान के हाथों तुमने अपने-आपको हँसते-हँसते सौंप दिया।

और एक ब्रिटिश-युद्ध को जन-युद्ध कहनेवाली देशघातकता देश में कहने लगी, 'वह जापान का एजेण्ट हो गया'। वह देशघातकता, जो खुद जापान के महान् पड़ोसी के हाथों रोटियों और नारों पर बिक चुकी थी, किन्तु तुम थे कि जमाने की छाती पर लिखे अपने सुनहले नाम को, अपने हाथों मसल कर मिटा देने के मूल्य तक पर, अपने को संकटों में फेंक चुके थे कि 'भारत तू आज़ाद हो जा!'

और आज! आज तो सब तुम्हारा गुण गाते हैं। तुम्हारे सिपाही भारतीय सेना में ले लिये गये हैं। तुम्हारा 'जय-हिन्द' का नारा भारतवर्ष और भारतीय सरकार का नारा हो गया है और स्वर्गीय शरत् बोस से स्वर्गीय सरदार-श्री गले मिले थे, और उन्हें भारतीय मन्त्रिमण्डल में जगह भी मिली थी। किन्तु तुम? भारतीय तरुणाई अपने में जब-जब बल खोलेगी, तो तुम्हें पुकार उठेगी!

एक भारतवासी, सिर्फ एक भारतवासी ने अपनी सब संपत्ति तुम्हारे नाम कर दी थी। वे थे सरदार पटेल के ज्येष्ठ भ्राता; श्री विट्ठलभाई पटेल।

इतनी शक्ति कौन अपने में संचय करेगा? यदि भारत को आज़ाद रहना है तो सुभाष की ताक़त अपने में रखनेवाला सिपाही, सिपहसालार सेनानी ही उसे आज़ाद रख सकता है।

और यदि आज सुभाष किसी ओर से आ जायें? तो वह अपनी स्त्री और पुत्री के साथ महान् गर्व की वस्तु होगा, किन्तु वह पूजा पाएगा, प्रलय का चार्ज तो उसे किसी नवजवान ही को सौंपना होगा।

उसकी अनन्त असफलताएँ और मोद-भरी अगणित सफलताएँ भारत को संपूर्ण सफल बनाकर गौरवमयी हो गयी हैं। क्रियाशील, स्वप्नदर्शी, भक्त और साधक जब अपने संकल्पों पर समर्पित हो संघर्षों पर उतरता है, तब उस व्यक्ति की असफलताएँ समाज और समूह की सफलता बनकर, देशों के रक्त में लौटती हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

डबल मार्च शीघ्र अभियान **होता** यज्ञ में आहुति देनेवाला **बदजात** नीच **मनचीता** इच्छानुसार **प्रभुचीता** ईश्वरेच्छानुसार **भर्त्सना** कड़ी निंदा **बलशालिनी** शक्तिशाली **तरुणाई** युवावस्था, यौवन **सैन** इशारा, संकेत **हरियाना** हरा-भरा होना **चिक** बाँस की तीलियों से बना परदा, जिसे खिड़की-दरवाजों पर लटकाते हैं बदजात एक गाली, नीच **गादी** गद्दी **सिपहसालार** सेनापति, सेनाध्यक्ष, **कूतना** कीमत लगाना **गरज** मतलब **बलिपंथी** बलिदान के पंथ पर चलनेवाला **टल** विहवलता, बेचैनी **यज्ञधूप** यज्ञ में डाली जानेवाली हवन सामग्री **देशधातकता** देशद्रोही भावना **सेनानी** सेनानायक

मुहावरे

जी में काँटा चुभना खटकना **काँटा निकालना** संकट दूर होना **बाग-बाग होना** प्रसन्न होना **मजा चखाना** किए हुए अपराध का दंड देना **पछाड़ मिलना** पराजित होना **पीछे ठेलना** हराना **जी में काँटा चुभना** मन में पीड़ा उत्पन्न होना **जी से काँटा निकलना** राहत महसूस करना या होना **हाथ मींड़ना** पछताना, **लोहा लेना** मुकाबला

करना **कुरबान करना** किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए अपनी प्रिय वस्तु या व्यक्ति को मिटा देना, **बाग-बाग होना** बहुत प्रसन्त होना, **मजा चखाना** किए का फल देना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) सुभाष बाबू का जीवन-पथ कैसा रहा?

(क) सुखमय (ख) संघर्षमय (ग) आनंदमय (घ) भावमय

(2) किस साल में सुभाष बाबू को कलकत्ता कांग्रेस में ठोकर मिली?

(क) 1918 (ख) 1928 (ग) 1914 (घ) 1938

(3) सुभाष बाबू ने किसको लोहा देकर त्रिपुरा कांग्रेस की गद्दी जीती?

(क) सरदार पटेल को (ख) गांधीजी को (ग) डॉ. पट्टाभि को (घ) जवाहरलाल नेहरु को

(4) सुभाष बाबू ने कौन-सा नारा दिया?

(क) जय गोपाल (ख) जय हिन्द

(ग) वंदे मातरम् (घ) जय जवान जय किसान

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) सुभाष बाबू अज्ञात लोक के यात्री में से किस लोक के यात्री हो गये?

(2) सुभाष बाबू किसकी कल्पनाओं पर खोए हुए थे?

(3) सुभाष बाबू किन क्रान्तिवादियों के दल में पहुँच गये थे?

(4) सुभाष बाबू को किससे संघर्ष हुआ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) सुभाष बाबू युद्ध को कौन-सी संधि समझते थे?

(2) सुभाष बाबू ने अपनी दृढ़ता को किस चादर से नहीं ढँका?

(3) इस देश में कौन-कौन रहस्य होते आये हैं?

(4) सुभाष बाबू के लिए रहस्य क्या था?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः क्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सुभाष बाबू की मृत्यु का समाचार सुनकर भारतवासियों के मन पर कैसा प्रभाव पड़ा?

(2) सुभाष बाबू ने कांग्रेस के सभापतित्व की गद्दी एवं राष्ट्रपतित्व का पद किसके हाथों से ग्रहण किया था?

(3) सुभाष बाबू ने सेगाँव रेडियो पर से भारतवासियों के लिए क्या संदेश दिया?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) भारत तू आज़ाद हो जा।

(2) तुम लोगों के मन पर हो, जीवन पर छाये हो, क्योंकि तुमने भारतीय जीवन को युद्ध के बीचो-बीच जीवित किया है।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः सुभाष बाबू की जीवनी प्राप्त कर पढ़ें।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः

- राष्ट्रीय भावना से प्रेरित किसी एक महामानव पर रेखाचित्र तैयार करवाइए।
- महात्मा गांधी, सरदारभाई पटेल जैसे महामानव के रेखाचित्रों पर कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए।

भारत के पर्यटन स्थल एवं टूरिस्ट गाइड

पर्यावरण पर्यटन, मानव, प्रकृति और संस्कृति के बीच एक रचनात्मक संपर्क स्थापित करता है और पूर्वांतर क्षेत्र के पर्यटन स्थलों तक लोगों को आकर्षित करने की इनमें अपार क्षमता है। पर्यावरण पर्यटन का विचार सन् 2001 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने शुरू किया और इस उद्देश्य से उसने 26 जिओपार्क चिन्हित किए।

जिओपार्कों को उन राष्ट्रीय संरक्षित क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ अनेक भौगोलिक दाय वाले स्थल मौजूद है। इन स्थलों में विशेष महत्त्व वाले दुर्लभ और सौन्दर्य की दृष्टि से विशेष अपील वाली वस्तुएँ और जीव-जंतु होते हैं।

पर्यटकों के लिए भारतीय बाजार विविधताओं भरा स्थान है। इन विविधताओं के आर्थिक पहलुओं को देखते हुए शिल्प आदि क्षेत्रों के संवर्धन हेतु ठोस सरकारी प्रयासों परिणाम एक नई आर्थिक संभावना के रूप में देखा जा सकता है तथा नए चिन्हित पर्यटन स्थलों पर ढांचागत सुविधाओं का विकास करने केवल शहरी नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

पर्यटकों के लिए कैम्पिंग स्थलों का संचालन करने से भी स्थानीय युवकों को काम मिल सकता है। इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित जनशक्ति की जरूरत पड़ेगी। खान-पान के लिए भी कुछ विशेषज्ञों की सहायता लेनी पड़ेगी। खान-पान की सूची में स्थानीय पकवान, स्थानीय फल और सब्जियाँ, मीट, दूध, पोल्ट्री, अंडे तथा मछलिया स्थानीय रूप से प्राप्त की जा सकती हैं। कुछ ग्रामवासी प्रयास करके इन चीजों की आपूर्ति कर सकते हैं।

कुछ स्थानीय युवकों को गाइड के रूप में काम करने के अवसर मिल सकते हैं। ये आने वाले पर्यटकों को अडोस-पड़ोस की पहाड़ियों और जंगलों की सैर करा सकते हैं और स्थानीय वनस्पतियों और जीव-जंतुओं तता ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों की तरह अपने समुदाय और लोक-जीवन का परिचय दे सकते हैं।

स्थानीय पर्यटन स्थलों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करके ये नाम कमा सकते हैं। स्थानीय बुनकर और कारीगर अपने उत्पाद प्रदर्शित करके प्रयटकों को आकर्षित कर सकते हैं। इन कारीगरों को अपने हस्तशिल्प और बनाए गए परिधानों को पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करने के अवसर दिए जा सकते हैं।

पर्यटन गरीबी दूर करने, रौजगार-सृजन और सामाजिक सद्भाव बढ़ाने का सशक्त साधन है। 27 सितंबर 2003 को दुनियाभर में विश्व पर्यटन दिवस मनाया गया जिसका मुख्य विषय यहीं था। इस विषय से ही पता चल जाता है कि पर्यटन विकासशील देशों के लिए कितना सार्थक और महत्त्वपूर्ण है।

हालांकि पर्यटकों को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है लेकिन संयुक्त राष्ट्र की रोम में सन् 1963 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय यात्रा एवं पर्यटन सम्मेलन में बहुत सरल शब्दों में इसका वर्णन किया गया है। अधिक कमाई के चलते पर्यटन क्षेत्र एक फलता-फूलता उद्योग बन गया है। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है और इसमें स्थानीय पर्यावरण में सुधार लाने तथा परिवहन, होटल, खान-पान और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में सेवाओं और माल की गुणवत्ता बेहतर करने की शक्ति निहित है।

पर्यटन से स्थानीय युवकों को नए-नए क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं। पर्यटन से सांस्कृतिक गतिविधियों में तेजी आती है और पर्यटकों तथा उनके मेजबानों के बीच बेहतर और समझदारीपूर्ण संबंध विकसित होते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इससे विदेशी मुद्रा की मोटी कमाई होती है, जो किसी भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण है। सच्चाई यह है कि दुनिया के 83 प्रतिशत विकासशील देशों में पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का प्रमुख साधन है। पर्यटन सेवा क्षेत्र का एक ऐसा उभरता हुआ उद्योग है जिसमें अपार संभावनाएँ निहित हैं।

पर्यटन, रोजगार एवं वैश्विक संबंधों की आधारशिला है...

पर्यटकों के लिए भारतीय बाजार विविधताओं भरा स्थान है। इन विविधताओं के आर्थिक पहलुओं को देखते हुए शिल्प आदि क्षेत्रों के संवर्धन हेतु ठोस सरकारी प्रयासों का परिणाम एक नई आर्थिक संभावना के

रूप में देखा जा सकता है तथा नए चिन्हित पर्यटन स्थलों पर ढांचागत सुविधाओं का विकास कर न केवल शहरी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

पर्यटन संसाधनों, सुविधाओं और सेवाओं आदि प्राथमिकताओं को बढ़ाकर पर्यटन क्षेत्र सामने आ रहीं प्रतिस्पर्धात्मक बाधाओं को दूर कर इस उद्योग में विकास की और आर्थिक संभावनाओं की तलाश की जा सकती है।

जम्मू मंडल के सबसे रमणीक और खूबसूरत पर्यटन स्थल पटनीटोप में आने वाली की भीड़ देख यह आभास अवश्य होता है कि आखिर कुछ ऐसा तो है इसमें जो विश्वभर से पर्यटकों को आकर्षित कर पाने की शक्ति यह रखता है। हो भी क्यों न सब कुछ तो है इस स्थल में जिसे पाने के लिए पर्यटक कश्मीर में जाते हैं। उस कश्मीर में, जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है ।

सीमावर्ती राज्य जम्मू कश्मीर के जम्मू मंडल में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर जम्मू से 108 किमी की दूरी पर स्थित यह रमणीय और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर स्थल समुद्र तल से 6400 फुट की ऊँचाई पर हैं जहां लंबे-लंबे चीड़ और देवदार के पेड़ हर उस शख्स को अपनी और आकर्षित करते हैं जो प्रकृति प्रेमी हो। इसके अतिरिक्त सालभर इसकी खूबसूरत ढलानों पर जमी रहने वाली बर्फ भी पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेने की शक्ति रखती है।

मंदिरों की नगरी जम्मू से 108 किमी की दूरी पर स्थित इस पर्यटन स्थल तक पहुंचने के लिए जम्मू से आम यात्री बस और टैक्सी का प्रयोग किया जा सकता है। हालांकि अब तो विश्व प्रसिद्ध तीर्थस्थल वैष्णोदेवी के आधार शिबिर कटरा से भी यात्री बसें मिल जाती हैं जो आने वालों को पटनीटॉप तक घुमाकर लाती हैं। जम्मू से पटनीटॉप की यात्रा साढ़े तीन घंटों की है मगर इसे अपनी इच्छानुसार बढ़ाया भी जा सकता है।

उधमपुर जिले में आने वाले इस पर्यटनस्थल को और खूबसूरत बनाने तथा अधिक से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पटनीटॉप विकास प्राधिकरण का गठन भी किया गया है जो सिर्फ पटनीटॉप का ही नहीं बल्कि उसके आसपास पड़ने वाले और भी रममीय तथा धार्मिक स्थलों-सुद्धमहादेव, मानतलाई, चिनैनी, सनासर आदि का विकास करने में भी लगी हुई है क्योंकि अवसर ऐसा होता है कि आने वाले पर्यटकों में से अधिकतर, जिन्होंने बर्फ कई बार देखी हो, बर्फ को देखकर उकता जाते हैं तो उनके मन को बहलाने के लिए आसपास के पर्यटनस्थलों को भी अब विकसित कर लिया गया है।

हालांकि पटनीटॉप में गर्मियों में बहुत भीड़ होती है, लेकिन यहां आने वाले वर्षभर ही आते हैं। सर्दियों में कई फुट जमी और गिरने वाली बर्फ का आनंद उठाने के लिए भी लोगों का तांता लगा रहता है। सर्दियों में आने वाले तो स्कीइंग का आनंद भी उठाते है, जिन्हें एक सप्ताह में स्कीइंग सिखाने का प्रबंध भी अब जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग तथा जम्मू कश्मीर पर्यटन विकास निगम की ओर से किया गया है नाममात्र के खर्चे पर राज्य में कश्मीर के पहलगाम के क्षेत्र के उपरांत पटनीटॉप को स्कीइंग स्थल के रूप में याति प्राप्त करवाने में पर्यटन विभाग के जम्मू विंग का अच्छा खासा सहयोग रहा है। विभाग की मेहनत ही है कि आज पटनीटॉप में स्कीइंग और पैराग्लाइडिंग करने वालों की भीड़ भी लगी रहती है। हालांकि स्कीइंग के लिए तो पटनीटॉप की सबसे ऊँची पहाड़ी पर बनी छोटी और बड़ी स्लोपी का प्रयोग किया जा रहा है तो पैराग्लाइडिंग के लिए पटनीटॉप के साथ लगते नथाटॉप और सनासर क्षेत्र का। जो आप भी खूबसूरती की एक मिसाल है । पर्यटन विभाग की ओर से अन्य स्लोपी की तलाश तथा उनका विकास किया जा रहा है ताकि स्कीइंग तथा पैराग्लाइडिंग करनेके लिए आने वालों की भीड़ से निपटा जा सके।

पर्यटन विभाग की ओर से स्कीइंग तथा पैराग्लाइडिंग के साल में तीन से चार कोर्स करवाए जा रहे हैं और वह भी नाममात्र खर्चे पर, लेकिन इतना अवश्य है कि स्कीइंग के लिए जनवरी-फरवरी तो पैराग्लाइडिंग के लिए अक्टूबर की प्रतीक्षा करनी पड़ती है क्योंकि इसी समय के दौरान अधिक आनंदित हुआ जा सकता है। स्कीइंग और पैराग्लाइडिंग के साथ ट्रेकिंग तथा रॉक क्लाइंबिंग करने की इच्छा रखने वाले भी पटनीटॉप में अपनी इच्छा की पूर्ति करते हैं जिनके लिए भी सप्ताह सप्ताहभर के कई कोर्स करवाए जाते हैं।

पिछले कई सालों से इस पर्यटनस्थल के विकास में जुटे जम्मू पर्यटन विभाग की ओर से आसपास के क्षेत्रों के कई स्कूली छात्रों और अन्य बेरोजगारों को इन सभी रोमांचक खेलों का प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षक के रूप में तैयार किया गया है। पर्यटन विभाग की योजना के अनुसार इससे स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा और वे आने वाले पर्यटकों को इन पटनीटॉप में आकर पर्यटक अपने आप को कश्मीर में पाता है क्योंकि पटनीटॉप की समुद्रतल से ऊँचाई श्रीनगर से भी अधिक है और जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग के बीच पटनीटॉप ही एक ऐसा स्थान है तो सबसे ऊँचा है और सुबह -सवेरे पड़ने वाली धुंध व कोहरे के बीच सुबह की सैर का अपना ही आनंद होता है। लेकिन इतना अवश्य है कि आने वालों को अपने साथ गर्म कपड़ों का इंतजाम करके आना चाहिए चाहे वे गर्मियों में ही क्यों न आएँ। पटनीटॉप में दिन का प्रत्येक पहर अपने आप में मनोहरी छटा से लिपटा होता है जिसका आनंद लोग अपने अपने तरीके से उठाते हैं।

यहां पर ठहरने के लिए वैसे कई प्रायवेट होटल है और सरकारी व्यवस्था भी है। राज्य पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास निगम के कई बंगले, हटें आदि है जहाँ पर्यटक रात गुजार सकता है। हालांकि अधिकतर पर्यटक दिनभर सैर सपाटा करने के उपरांत वापस लौट जाते हैं। यहां पर आने वालों की भीड़ कितनी है यह इसी से स्पष्ट है कि गत वर्ष दिन में जाकर शाम को वापस लौटने वालों का आंकड़ा छह लाख को भी पार कर गया है। और ऐसा भी नहीं है कि सिर्फ स्वदेशी पर्यटक ही पटनीटॉप में आते हों बल्कि विदेशों से भी लोग इसकी सुरज़्य पहाड़ियों और मनोहारी छटा का आनंद उठाने के लिए आ रहे हैं।

नागालैंड पर्यटन - प्रकृति का अद्‌भुत चमत्कार :

डेस्टिनेशन आकर्षण होटल फोटो नक्शा

खूबसूरत वादियों के बीच, भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में बसा एक छोटा सा राज्य है नागालैंड। यह भूमि है विनम्र लोगों की, किसानों की, प्राकृतिक सौन्दर्य की, रोचक इतिहास और अद्‌भुत संस्कृति की। यहँ का वन्य जीवन तथा समृद्ध वनस्पति और मनमोहक प्रकृति आपको मोहित करने के लिए पर्याप्त है। यह सब और भी बहुत सारे रहस्य छुपे हैं इस छोटे से प्रदेश में जो नागालैंड कहलाता है। अगर आपको सुन्दरता से प्यार है तो यह रहस्यमय भूमि आपको चकित करने में पूरी तरह से सक्षम है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण नागालैंड को पूरब का स्विटजरलैंड भी कहा गया है। सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण, नागालैंड पर्यटकों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं। अगर साफ़ शब्दों में कहा जाये तो नागालैंड की यात्रा आपको वास्तव में माँ प्रकृति की गोद में ले जाएगी।

माँ प्रकृति और जीवंत नागालैंड

अगर आप नागालैंड की यात्रा करने की सोच रहे हैं तो यह जान लीजिये की यह नागाओं की भूमि प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण है। यहाँ की हरियाली, खूबसूरत वादियाँ, मनमोहक सूर्योदय और सूर्यास्त आपकी यात्रा को यादगार बना देता है और आप खूबसूरत यादें लेकर अपने घर वापस जा सकते हैं। अगर आप प्रकृति में रूचि रखते हैं तो नागालैंड से अच्छी जगह और क्या होगी ।

नागालैंड का भूगोल एवं जलवायु

नागालैंड अधिकांश पहाड़ी इलाका है। यह पश्चिम में असम, दक्षिण में मणिपुर और उत्तर में अरुणाचल प्रदेश से घिरा हुआ है। इस खूबसूरत राज्य में कुल सात प्रशासनिक जिलें हैं जिनमें 16 प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। और इस हर भर राज्य के जलवायु के बारे में क्या कहा जाए। यह मनमोहक भूमि यह दावा करता है कि यहाँ का जलवायु इतनी अच्छी है कि साल के किसी भी समय या मौसम में आप नागालैंड की यात्रा कर सकते हैं।

भोजन, लोग और संस्कृति

नागालैंड में अधिकतर मछली और मांस खाया जाता है। यह विभिन्न जनजातियों द्वारा अलग-अलग तरीके से बनाया और खाया जाता है। नागाओं के लोकप्रिय व्यंजनों में उबली सब्जियाँ, मांस से बने व्यंजन और चावल

शामिल है।

बात यह है कि स्थानीय लोगों का आतिथ्य सत्कार नागालैंड की यात्रा में चार चाँद लगा देता है। इनकी संस्कृति एक अंतहीन चर्चा का विषय है। नृत्य और लयबद्ध गीत इनकी दैनिक गतिविधि का हिस्सा है। यह कहा जा सकता है कि नागाओं के लिए जीवन एक उत्सव से कम नहीं।

नागालैंड में पर्यटक स्थल :

नागालैंड के कुछ आकर्षक और लोकप्रिय स्थानों में से हैं कोहिमा, दीमापुर, मोन, दोखा, फेंक, पेरेन, इत्यादि। तो ये सब कुछ जानने के बाद आपको किसका इंतजार हैं? तैयार हो जाइये अपनी अगली छुट्टियों में नागालैंड की यात्रा के लिए।

उत्तर प्रदेश - धर्मपरायणता और तीर्थस्थानों का पालना

अवलोकन डेस्टिनेशन आकर्षण होटल फोटो नक्शा

अगर घूमना आपका पेशा ही नहीं शौक है तो उत्तर प्रदेश पर्यटन के पास आपके लिए काफी कुछ मनोरम है और इसी वजह से मशहूर इस अद्‌भुत जगह को देखने देश विदेश से काफी लोग आते हैं। ताज की धरती, कथक नृत्य का उत्पत्ति स्थान, बनारस की पावन हिन्दू धरती, भगवान कृष्ण का जन्म स्थान, वह जगह जहाँ बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था, यह सब उत्तर प्रदेश के अन्दर ही आता है।

उत्तर प्रदेश की सीमा पर उत्तराखंड, हिमाचल और नेपाल उत्तर दिशा में पड़ते हैं, मध्य प्रदेश दक्षिण दिशा में पड़ता है, बिहार पूर्व में और हरियाणा पश्चिम में पड़ता है।

उत्तर प्रदेश के मशहूर तीर्थस्थान

भारत में भक्ति पर्यटन के लिए अगर उत्तर प्रदेश को शुमार न किया जाए तो कुछ अधूरा रहेगा। उत्तर प्रदेश पर्यटन श्रद्धालुओं को इसलिए भी अपनी ओर आकर्षित करती है क्योंकि यहाँ काफी मशहूर तीर्थस्थल हैं। बनारस एक ऐसी जगह है जिसको हिन्दुओं द्वारा मुक्ति या मोक्ष स्थल भी कहते हैं और यह देश विदेश में पर्यटकों के बीच मशहूर है।

उत्तर प्रदेश एक बेहद पवित्र जगह है और वैष्णवों के लिए महत्वपूर्ण जगह भी। भगवान कृष्ण और राम की जन्मभूमि क्रमशः मथुरा और अयोध्या भी उत्तर प्रदेश में ही है। कृष्ण से जुड़े अन्य स्थल जैसे वृन्दावन और गोवर्धन हैं जहाँ लोग पूरे साल उत्सव और उल्लास के लिए आ सकते हैं।

राम के बेटे लव और कुश का जन्म स्थान बिठूर भी यहीं है। महान संत जैसे कबीर, तुलसीदास और सूरदास भी इसी धरती पर हुए जिनका धर्मपरायणता से ओतप्रोत गीतों के प्रति लगाव मशहूर है। इलाहाबाद सबसे पुराने शहरों में गिना जाता है और यहीं पर तीन महत्वपूर्ण और पावन नदियाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इस जगह पर मशहूर कुम्भ मेला लगता है जो देश और विदेश से भक्तों, यात्रियों और तस्वीर प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

यह बौद्ध धर्म के लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण जगह है क्योंकि सारनाथ में ही बुद्ध ने अपना पहला धमीपदेश दिया था, कौशम्बी में अशोक स्तंभ है और यहाँ पर बुद्ध ने कई धर्मोपदेश दिए हैं, श्रावस्ती में बुद्ध ने कई साल गुजारे और कुशीनगर में उन्होंने नश्वर धूंधर गिराया। प्रभासगिरी हिन्दू और जैन दोनों धर्म के लोगों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। उत्तर प्रदेश के जगहों का पौराणिक कथाओं में काफी उल्लेख है और यह रामायण और महाभारत जैसे भारत के महाकाव्य के विकास के लिए जिम्मेदार है।

उत्तर प्रदेश का वन जीवन

रायबरेली का समसपुर बर्ड सैंक्चुअरी, चम्बल वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी, दुधवा राष्ट्रीय उद्यान कुछ ऐसी जगहें हैं जो पशु प्रेमियों को बरबस ही अपनी ओर खींचती है और यह उत्तर प्रदेश पर्यटन को सम्पूर्ण बनाता है।

ऐतिहासिक चित्रांकित

उत्तर प्रदेश अपने सुन्दर और श्रेष्ठ ऐतिहासिक स्मारकों की बदौलत देश और विदेश से पर्यटकों को अपनी तरफ खींचता है। आगरा के ताजमहल के अलावा, झाँसी, लखनऊ, मेरठ और अकबर द्वारा बनाया गया फतेहपुर सिकरी, प्रताबगढ़, बाराबंकी, जौनपुर, महोबा और एक छोटा खेती प्रधान गाँव देवगढ़, उत्तर प्रदेश के कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो इतिहास और संस्कृति के बारे में काफी कुछ बयां कर जाते हैं।

उत्तर प्रदेश की जगहें जैसे अलीगढ़ जो अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी की वजह से एक महत्वपूर्ण ज्ञानपीठ है, बनारस, लखनऊ, मेरठ, झाँसी, गाज़ियाबाद, कानपुर, गोरखपुर, नोएडा उत्तर प्रदेश पर्यटन के लिए मशहूर शहर हैं।

उत्तर प्रदेश की संस्कृति, खाना और पंथ

भारत के महत्त्वपूर्ण नृत्य कलाओं में से एक, कथक की शुरुआत यहीं से हुई थी। भारत के दूसरे क्षेत्रों की तरह उत्तर प्रदेश की अपनी संस्कृति है और यहाँ गीत और नाच का प्रचलन ज्यादा है । उत्तर प्रदेश कई उल्लेखनीय हस्तशिल्प जैसे हाथों से छपाई, कालीन बनाना, धातु पर तामचीनी चढ़ाना, ब्रोकेड का काम, ब्रास और एबोनी के काम मशहूर है। कशीदाकारी का अनूठा नमूना, लखनवी चिकन ने देश तो क्या विदेश में भी प्रशंसा पायी है।

उत्तर प्रदेश की संस्कृति में भी हिन्दू और मुगल संस्कृति का सम्मिश्रण है जो प्रदेश के कई स्मारकों और व्यंजन में साफ झलकता है। अवधी खाना, कबाब, दम बिरयानी और कई मांसाहारी व्यंजन कुछ ऐसे व्यंजन हैं जो पर्यटकों के मुंह में पानी ला सकते हैं। स्वादिष्ट नमकीन जैसे चाट, समोसा, पकोड़ा आदि ने देश भर में लोगों के दिलों में अपनी अलग जगह बना ली है और इसकी शुरुआत उत्तर प्रदेश से ही हुई थी।

उत्तर प्रदेश के बारे में इतना कुछ जानने के बाद ऐसा कोई कारण नहीं है जो एक उत्सुक यात्री को यहाँ की खोज करने से रोक सकता है। इसके पास आपको देने के लिए काफी कुछ है और काफी कुछ है जो प्रतिबिंबित होना है।

भारत के दस मुख्य पर्यटन केन्द्र

कश्मीर

अपनी जीवन सुंदरता के लिए कश्मीर दुनिया भर में प्रसिद्ध है। कश्मीर के दर्शनीय स्थलों में से श्रीनगर, गुलमर्ग, डलझील, नागिन झील, परी महल और पहलगाम है। अपनी सुरम्य वादियाँ और पहाड़ों पर बसे गाँवों के लिए यह पर्यटकों के बीच अलग ही स्थान रखता है।

गोवा

गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है जो कि समुद्री बीच के लिए जाना जाता है। यहाँ का सी-फूड, जल में खेले जाने वाले खेल इसे एक आनंद के स्थान के रूप में पहचान देते हैं। यहाँ स्थित अलोना का किला, गोवा ज़्यूजियम, चापोरा का किला अन्य पर्यटन आकर्षण हैं।

कन्याकुमारी

कन्याकुमारी को केप कोमोरिन के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पर हिंद माहासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के जल का मिलन होता है। यहाँ से दिखने वाला सूर्यास्त का दृश्य मनोरम होता है।

जयपुर और उदयपुर

राजस्थान में स्थित जयपुर और उदयपुर अपनी कलात्मक और वास्तु सुंदरता के लिए जाने जाते हैं। उदयपुर में स्थित लेक पैलेस दुनिया के सबसे सुंदर स्थानों में से एक हैं। जयपुर में ही हवामंडल भी है जो वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

केरल

भारत के सर्वाधिक सम्पन्न और शिक्षित राज्यों में से एक केरल मंत्रमुग्ध कर देनेवाली सुंदरता के लिए

भी आना जाता है। यहाँ फैली हरी भरी सुंदरता और नदियों में बोटिंग का अपना अलग ही आनंद है।

दिल्ली

दिल्ली भारत का आर्थिक केन्द्र होने के साथ ही देश की राजधानी भी है। यहाँ पर स्थित इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, जामा मस्जिद और कुतुब मीनार को देखने के लिए पर्यटक वर्ष भर आते रहते हैं।

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग को पहाड़ों की राजधानी कहा जाता है जो कि समुद्र तल से 2134 मीटर ऊपर स्थित है। यहाँ पर स्थित चाय के बागानों के लिए यह दुनिया भर में जाना जाता है।

मैसूर :

मैसूर कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी है जो अपने महलों के लिए जाना जाता है। यहाँ पर स्थित मैसूर का महल विश्व प्रसिद्ध है, इस महल को अंबा विला के नाम से भी जाना जाता है। इस पहल को देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 2.7 मिलियन पर्यटक आते हैं।

अंजता एलोरा

महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित, चट्टानों को काटकेर बनाई गई ये मूर्तिया बौद्ध धार्मिक कला का अद्भुत उदाहरण है। यहाँ पर पत्थरों की गुफाओं में बने मंदिर पर्यटकों को अपनी खूबसूरती से आश्चर्य चकित कर देते हैं।

बैंग्लोर

भारत अपनी संस्कृति में विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए हमेशा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ गोवा जैसे राज्य है। इसकी समुद्रतट दर्शनीय हैं। केरल और कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा कन्याकुमारी अध्यात्मिक आकर्षण है।

राजस्थान भारत की ऐतिहासिक धरोहर से परिपूर्ण राज्य है तो ताज महल अगरा में है। पूरे भारत में फैली विविधता, सौंदर्य और आकर्षण बरबस ही दुनिया भर वे पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेता है।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :**
   (1) पर्यटन का क्या अर्थ है?
   (2) दिल्ली के पर्यटन स्थलों के नाम बताइए?
   (3) कश्मीर के पर्यटन स्थलों के नाम बताइए ?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :**
   (1) उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल (2) कन्याकुमारी (3) गोवा

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने प्रवास के किसी भी एक पर्यटन स्थल के बारे में लिखिए।

शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को गुजरात के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी दें तथा मानचित्र में उन स्थलों का स्थान चिह्न कर बताएँ।

⊙

15 बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ

रामदरश मिश्र

(जन्म : सन् 1924 ई.)

रामदरश मिश्र का जन्म गाँव डुमरी, जनपद गोरखपुर में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा पास के गाँव बिशनपुर में हुई। उन्होंने मैट्रिक, इन्टर और उच्च शिक्षा बनारस से प्राप्त की। वे दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर दिल्ली में बसे हुए हैं।

'पथ के गीत', 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'दिन एक नदी बन गया', 'बाजार को निकले हैं लोग', 'जुलूस कहाँ जा रहा है', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'बारिश में भीगते बच्चे', 'आग की हँसी' आदि उनके कविता-संग्रह हैं। 'हँसी ओठ पर', 'आँख नम है', 'ऐ ऐसे में जब कभी', 'आम के पत्ते', 'तू ही बताए जिन्दगी', 'हवाएँ साथ है' आदि उनके गज़ल संग्रह हैं। 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'सूखता हुआ तालाब', 'अपने लोग', 'रात का सफर', 'आकाश की छत', 'आदिम राग', 'बिना दरवाजे का मकान', 'दूसरा घर', 'थकी हुई सुबह', 'बीस बरस', 'परिवार', 'बचपन भास्कर का' आदि उनके उपन्यास हैं। 'खाली घर', 'एक वह दिनचर्या', 'सर्पदंश', 'वसंत का एक दिन' आदि उनके कहानी-संग्रह हैं। उन्होंने ललित निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, डायरी, संस्मरण जैसी विधाओं में रचना की हैं। मिश्रजी कवि शेखर सम्मान, शलाका सम्मान, साहित्यकार, सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, साहित्य विद्यावाचस्पति सम्मान, व्यास सम्मान, दिल्ली साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

इस कविता में डाकिया के माध्यम से कवि ने एक ऐसे किरदार की रचना की है जो दु:ख दर्द और अकेलेपन से पीड़ित लोगों तक मानवीय संवेदनाएँ और उम्मीद बाँटता फिरता है। डाकिया एक ऐसा बिम्ब है, जो उन लोगों तक सहानुभूति और करुणा पहुँचाने का काम करता है, जिनका अपना कोई नहीं है। कवि कहता है कि बिना नाम और पते की चिट्ठियाँ जिन पर भेजनेवालों ने जरूरी डाक टिकट भी नहीं लगाया है ऐसी चिट्ठियों को किसी एक व्यक्ति तक पहुँचाने के बजाय डाकिया समाज के संपूर्ण पीड़ित समुदाय को पहुँचाकर आश्वत करना चाहता है।

कब से,
यह बैरंग बेनाम चिट्ठी लिये हुए
यह डाकिया दर-दर घूम रहा है!
कोई नहीं वारिस इस चिट्ठी का।
कौन जाने
किसका अनकहा दर्द किसके नाम
इस बन्द लिफाफे में
पत्ते की तरह काँप रहा है?
मैं ने भी तो एक बैरंग चिट्ठी छोड़ी है
पता नहीं किसके नाम?
शायद वह भी इसी तरह
सतरों के ओठों में अपने दर्द कसे
यहाँ वहाँ घूम रही होगी।
मित्रो!
हमारी तुम्हारी ये बैरंग लावारिस चिट्ठियाँ
किसी दिन लावारिस जगहों पर
परकटे पंछी की तरह
पड़ी-पड़ी फड़फड़ायेंगी
और कभी-किसी दिन कोई अजनबी
इन्हें कौतूहलवश उठाकर पढ़ेगा
तो तड़प उठेगा :
ओह!

बहुत दिन पहले किसी ने
ये चिट्ठियाँ
शायद मेरे ही नाम लिखी थीं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बौरंग बेनाम चिट्ठियाँ बिना टिकट की तथा बिना पते की चिट्ठियाँ **अनकहा** जो कहा न गया हो **सतर** लिखी हुई पंक्ति **लावारिस** जिसका अपना कोई न हो **परकटे** जिसके पंख कट गए हों **वारिस** उत्तराधिकारी (यहाँ मालिक)

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :**
   (1) डाकिया दर-दर क्या लेकर घूम रहा है?
   (क) कागज़ (ख) बैरंग बेनाम चिट्ठी
   (ग) कार्ड (घ) तार
   (2) बैरंग बेनाम चिट्ठियों का कौन नहीं है?
   (क) वारिस (ख) नौकर (ग) मालिक (घ) सद्भाव
   (3) बंद लिफाफे में अनकहा दर्द किस तरह काँप रहा है?
   (क) वृक्ष की तरह (ख) पत्ते की तरह (ग) कागज की तरह (घ) शैवाल की तरह
   (4) बैरंग बेनाम चिट्ठी में कैसा दर्द है?
   (क) अनकहा (ख) सच कहा (ग) झूठ कहा (घ) सुना गया
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) कवि ने कैसी चिट्ठी छोड़ी है?
   (2) बैरंग चिट्ठी किसे कहते हैं?
   (3) कवि ने चिट्ठी की तुलना किससे की है?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :**
   (1) डाकिया चिट्ठी लेकर कहाँ - कहाँ घूम रहा है?
   (2) चिट्ठियों में कया काँप रहा है?
   (3) कवि को इन चिट्ठियों से किस तरह की उम्मीद है?
4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ पंक्तियों में लिखिए :**
   (1) बैरंग चिट्ठी में लिखे दुख-दर्द का वर्णन कीजिए?
   (2) कवि बैरंग चिट्ठी को परकटा पंछी क्यों कहता है?
5. **आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) हमारी तुम्हारी ये बैरंग लावारिस चिट्ठियाँ, किसी दिन लावारिस जगहों पर परकटे पंछी की तरह, पड़ी-पड़ी फड़फड़ाएँगी।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः 'आग की हँसी' कविता-संग्रह प्राप्त करके पढ़ें।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः रामदरश मिश्र की कुछ अन्य कविताएँ विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ ।

⊙

16 एक और जन्मदिन

हरिशंकर परसाई

(जन्म : सन् 1924 ई. : निधन : सन् 1995 ई.)

हरिशंकर परसाई का जन्म जमानी, होशंगाबाद, मध्यप्रदेश में हुआ था। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 18 वर्ष की उम्र में जंगल विभाग में नौकरी की। 1942 से मोडल हाईस्कूल में अध्यापन किया। 1952 में सरकारी नौकरी छोड़कर 1957 तक प्राईवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 से स्वतंत्र लेखन की शुरुआत की। जबलपुर से 'वसुधा' साहित्यिक मासिक पत्रिका का संपादन किया। उन्होंने कहानी, उपन्यास और निबंध भी लिखे, परंतु मुख्य रुप से कहानियाँ, उपन्यास, निबंधलेखन, मुख्यत्वे व्यंग्यकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने व्यंग्य मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज की कमजोरियों और विसंगतियों पर चोट करने के लिए लिखें साहित्य-अकादमी एवोर्ड-1995, भी उन्हें प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत व्यंग्य रचना उनकी 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' संग्रह से ली गई हैं। 'एक और जन्मदिन' कहानी में जन्मदिन के बहाने उन्होंने अपने विचार व्यंग्य के साथ हमारे सम्मुख रखे हैं। इसमें उन्होंने समाज में व्याप्त दंभ की मानसिकता उजागर करते हुए जीवन के प्रति अपने अभिगम को उजागर करने का स्तुत्य प्रयास किया है। हमारा पाश्चात्य अंधापन अनुकरण हमारी भारतीय वास्तविकता को दंभ का आँचल ओढ़ाकर जीवन की, समाज की सच्चाइयों से विमुख कर देता है। जन्मदिन किसे और कैसे मनाना चाहिए, उसे व्यंग्य, हास्य-कटाक्ष के माध्यम से उजागर किया है।

मैं जन्मदिन छिपाता हूँ। पर गलती से एक किताब के फ्लैप पर मेरी जन्म-तारीख छप गई थी। कुछ लोगों को यह भेद मालूम हो गया। उस दिन सुबह एक प्रोफेसर साहब आए। वह गुलदस्ता लिए थे। उन्होंने मेरे हाथ में गुलदस्ता दिया और बोले, ''आज आपका जन्मदिन है!'' मैं सचमुच भूल गया था। भूल जाना भी चाहता हूँ। मैंने ऐसा कौन-सा पराक्रम कर दिया कि एक साल और जिंदा रहा। मैं तो अपने गुजर-बसर लायक कमा लेता हूँ, बस! कालाबाजार से भी सामान खरीद कर जिंदा रह लेता हूँ। मैंने कौन-सी जीवनी-शक्ति एक साल में बताई कि मुझे बधाई दी जाए। जन्मदिन की बधाई देना हो तो मेरे सामने के इन झोंपड़े वालों को दो, जो एक टपरी बनाकर रहते हैं। जमीन गीली है। साँप-बिच्छू निकलते हैं। इन्हें भरपेट खाने को नहीं मिलता। ये रोज मरने को होते हैं, पर मौत को जीत लेते हैं। ये एक साल और खींच ले गए, मरे नहीं, तो जन्मदिन की बधाई इन्हें देनी चाहिए। ये जीने की इच्छा को खाकर जीवित हैं। उसी में से प्रोटीन निकालते हैं। पराक्रम ये करते हैं कि साल पर साल निकलते जाते हैं, पर मरते नहीं।

तो एक ही आदमी गुलदस्ता लेकर आया। मैं दुखी हुआ। यह याद दिलाना क्या अच्छी बात है कि तुम्हारी उम्र एक साल और बढ़ गई। कोई यह बताए कि उम्र एक साल कम हो गई, तो बड़ा अच्छा लगे।

सोचा कि अखबार में छपवा दूँ कि परसाई जी ने अपना जन्मदिन बड़ी सादगी से मनाया। कंबख्त कोई आया ही नहीं, तो सादगी से मनाना तो मजबूरी ही हो गई! वह अध्यापक सुबह याद दिला गया तो दिन भर दिल विचलित रहा - अब कोई आया, अब आया! थोड़ा-सा खटका दरवाजे पर होता, तो मैं फौरन दरवाजा खोलता कि कोई माला-वाला लेकर आया होगा। पर देखता कि कुत्ते ने दरवाजे पर धक्का मारा था। कुत्ता खड़ा था। मैंने संतोष किया कि कुत्ते ने तो मेरे जन्मदिन का ख्याल रखा। यों जन्मदिन पर बधाई देने वालों में से आधों से ज्यादा कुत्ता ही अच्छा होता है। आदमी के मन में नफरत है कि साला अभी भी जिंदा है, मरा नहीं। पर ऊपर से हँसकर माला पहना रहे हैं। कहते हैं, 'सौ साल जियो!' सौ साल जी गया तो तुम्हारी खटिया खड़ी हो जाएगी। नहीं, मुझे ऐसों के हाथ से माला नहीं पहनना!'

एक मेरे बुजुर्ग मित्र हैं। दो महीने से कह रहे हैं, ''याद है हमें तुम्हारा जन्मदिन! बड़े ठाठ से मनाएँगे। कहीं बाहर मत चले जाना।'' पर उन्होंने भी कुछ नहीं किया। बात यह है कि वह पहली अप्रैल को पैदा हुए थे। जो 'अप्रैल फूल' के दिन पैदा हो, उससे यही उम्मीद की जा सकती है।

इनका जन्मदिन मनाने में हमें बड़ी तकलीफ हुई। हम अखबारों में सूचना छपाते, कार्ड बाँटते कि इनका जन्मदिन पहली अप्रैल को मनाया जाएगा। पर लोग आते ही नहीं। वे समझते कि अप्रैल-फूल बनाए जा रहे हैं। आखिर एक साल हम लोग लगभग सौ लोगों के पास गए और कहा, ''हम भगवान की कसम खाकर कहते हैं कि इनका जन्मदिन पहली अप्रैल को ही है। हम आप लोगों को बेवकूफ नहीं बना रहे। देखिए, बेचारे का क्या दुर्भाग्य है कि दुर्घटनावश

पहली अप्रैल को पैदा हो गया तो उसका जन्मदिन भी नहीं मनाया जा सकता। माना कि उसने जल्दी की। एक दिन बाद भी पैदा हो सकता था पर जो हो गया; सो हो गया। आप लोग इस बार जरूर आइए।''

लोग आए और उनका जन्मदिन मनाया गया।

एक नेता 29 फरवरी को पैदा हो गए। उनका जन्मदिन चार साल में एक बार आता है। वह हर साल 28 फरवरी को उदास रहते हैं, हाय-हाय करते हैं, ''क्या दुर्भाग्य है! एक दिन पहले पैदा हो जाता या एक दिन बाद! लोग हर साल वर्षगाँठ मनाते हैं और मैं देखता रह जाता हूँ।''

इधर पिछले साल से मेरे अभिनंदन की बात चल रही है। लोग कहते हैं, ''काफी साल लिखते हो गए, अब आपका अभिनंदन जरूर करेंगे।'' ये पेशेवर अभिनंदनकर्ता होते हैं। अभिनंदन करना एक धंधा भी होता है। चंदा जमा होता है। खाया जाता है। पास के एक शहर की घटना है। एक वयोवृद्ध समाजसेवी के अभिनंदन का आयोजन हुआ। कमेटी बनी। चंदा हुआ। अभिनंदन के समय देखा कि कमेटी के सदस्य चंदे की शराब पीकर बेहोश पड़े हैं। लोगों ने कहा, ''भई उठो, उनके अभिनंदन का समय हो गया।'' तो शराब में डूबे अभिनंदनकर्ता बोले, ''किस कंबख्त का अभिनंदन! वह नंबर एक का चोर है। भारत सेवक समाज का पैसा खा गया। उसका अभिनंदन हम करेंगे भला! अरे, हम तो खुद उसके नाम के चंदे से अपना अभिनंदन कर रहे हैं!''

यह अभिनंदन मुझे पसंद आया। श्रद्धेय समाजसेवी की उम्र इन लोगों की शुभकामनाओं से बहुत लंबी होगी। पर मैं बात कर रहा था अपने अभिनंदन की। अभिनंदन के उत्साहियों से मैंने पूछा, ''सिर्फ अभिनंदन-पत्र और प्रशंसा दोगे या और कुछ?''

वे बोले, ''क्यों नहीं? हम लोग द्रव्य-संग्रह करेंगे और आपको थैली भेंट करेंगे!''

मैंने कहा, ''ठीक है, अपना अभिनंदन-पत्र मैं खुद लिख लूँगा और छपवा लूँगा! इस झंझट में आप मत पड़िए। आप तो अधिक से अधिक मेरे नाम से पैसा एकत्र कीजिए। इसमें से 25 प्रतिशत आपका, बाकी मेरा।''

वे लोग परेशान हो गए। कहने लगे, ''आप कैसी बात करते हैं? हम आपका अभिनंदन करना चाहते हैं और आप हमारा ही अपमान कर रहे हैं। हम क्या पैसा खा जाएँगे?''

मैंने कहा, ''नहीं, मैं अपमान नहीं कर रहा हूँ। पर आप इतनी मेहनत करेंगे तो मेरा कर्तव्य है कि आपको मेहनताना दूँ। मैं मुफ़्त में अभिनंदन नहीं कराना चाहता।''

नतीजा बुरा हुआ। मेरे अभिनंदन की योजना अभी भी अधर में लटकी है। मेरी जबान ने मेरी थैली काट दी। कुछ लोग 'फिरकापरस्त' होते हैं, मैं 'फिकरापरस्त' हूँ। फिकरा जबान पर आ गया, तो निकल जाता है और उसके नुकसान मैं भुगतता हूँ।

मैं देखता हूँ, देश के भाग्यविधाता जन्मदिन पर गले मिलते हैं, गुलदस्ते भेंट करते हैं, माला पहनाते हैं। इन नेताओं की फोटो छपती है। ये भाग्यविधाता हैं। मैं भी इन लोगों के जन्मदिन पर शुभकानाएँ भेजना चाहता हूँ। पर वह इस तरह की होगी -

''आप एक साल और जीवित रहे। बड़ा कमाल किया। इस एक साल में आपने देश की अर्थ व्यवस्था को और गिरा दिया। बधाई! भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, जमाखोरी को बढ़ने का मौका दिया। बधाई! आप चिरायु हों।''

पर 'मीसा' के डर के मारे मैंने अभी यह शुभकामना नहीं भेजी है। इनसे क्या कहा जाए कि देशवासी रो रहे हैं और तुम गले मिलकर हँस रहे हो!

पर अब मुझे अपना भी ख़्याल करना चाहिए। अगले साल दो महीने पहले से अखबारों के जरिये वातावरण बनाऊँगा कि फलाँ तारीख को परसाई जी का जन्मदिन है और पूरे देश में हलचल मची है।

तब कुछ ढंग का जन्मदिन मनेगा। वरना वही एक गुलदस्ता!

शब्दार्थ और टिप्पणी

फलैप किताब के पुट्ढे पर अलग से लगाया हुआ मोटा रंगीन पन्ना **भेद मालूम होना** रहस्य उजागर हो जाना, सच्चाई मालूम हो जाना **गुजर बसर लायक** गुजारा हो सके उतना **बधाई** अभिनंदन **टपरी** कुटिया, **पराक्रम** बहादुरी (यहाँ बहुत बड़ा काम), **कालाबाजार** मनमानी कीमत पर समानों के खरीदने-बेचने का कारोबार **टपरी** कच्चा छोटा घर, झोंपड़ी **विचलित** बेचैन, परेशान **बुजुर्ग** अधिक उम्रवाला, बूढ़ा **अभिनंदन** सम्मान **फिरकापरस्त** बोलने में चतुर-कुशलन **गुलदस्ता** फुलों का गुच्छा, **मीसा** अपराध नियंत्रण का एक कानून

मुहावरे

मौत को जीत लेना विघ्नों को पार करना **इच्छा को खाकर जाना** मजबूरन जाना **प्रोटीन निकालना** जरूरी ताकत इकट्ठा करना **विचलित रहना** दु:खी होना **दिल विचलित होना** दु:खी होना, चिंतित होना **खटिया खड़ी होना** मुसीबत में पड़ना, संकट में पड़ना **अभिनंदन करना** स्वागत, सम्मान करना **श्रद्धेय** श्रद्धा, आदर से युक्त **अधर में लटकना** कार्य अधूरा होना, बातों में ही रहना **थैली काटना** आर्थिक नुकसान सहन करना **फिरकापरस्त होना** चिंतित होना, दगाबाज होना **पराक्रम करना** कोई बहुत बडा काम करना, **जीने की इच्छा को खाकर जीना** जीने की इच्छा न रहते हुए भी जीना **अप्रैल फूल बनाना** मूर्ख बनाना, **थैली भैट देना** धन देकर सम्मानित करना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) लेखक के जन्मदिन का भेद इस प्रकार मालूम हुआ कि...
(क) बातों-बातों में ही मुँह से निकल गया था।
(ख) गलती से एक किताब के फ्लैप पर उसकी जन्म तारीख छप गई थी।
(ग) उसके माता-पिता ने सबको बता दिया था।

(2) खटका होने पर दरवाजा खोला तो...
(क) प्रकाशक खड़ा था । (ख) मित्र खड़ा था ।
(ग) कुत्ता खड़ा था ।

(3) बुजुर्ग मित्र का जन्मदिन मनाने में तकलीफ हुई, क्योंकि...
(क) मित्र विदेश गया था । (ख) वह अचानक बीमार हो गया ।
(ग) उनका जन्म पहली अप्रैल को हुआ था ।

(4) एक नेता 28 फरवरी को उदास रहते हैं; क्योंकि...
(क) उनके संबंधी की मृत्यु हो गई थी। (ख) वह उसी दिन बीमार हुए थे ।
(ग) उनका जन्मदिन चार साल में एक बार आता है ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) लेखक क्या भूलना चाहता है?
(2) बुजुर्ग मित्र ने लेखक से क्या कहा?
(3) अभिनंदन के समय कमीटी सदस्य किस स्थिति में थे?
(4) लेखक अगले साल कितने समय पहले जन्मदिन का वातावरण बनाने की सोचता है?
(5) लेखक ने पैसा एकत्र करनेवालों को कितने प्रतिशत देने की बात कही?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लेखक अपना जन्मदिन क्यों छिपाता हैं?

(2) लेखक किसे बधाई देने को कहता है?

(3) बुजुर्ग मित्र को जन्मदिन मनाने में तकलीफ क्यों हुई?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) जन्मदिन के बारे में लेखक के विचार स्पष्ट करें

(2) लेखक के जन्मदिन की योजना अधूरी क्यों रह गई?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ये जीने की इच्छा को खाकर जीवित हैं।

(2) अभिनंदन करना एक धंधा भी होता है।

(3) कुछ लोग 'फिरकापरस्त' होते हैं, मैं 'फिकरापरस्त' हूँ।

6. निम्नलिखित कथनों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) लेखक दुखी हुआ; क्योंकि ...

(क) एक ही आदमी गुलदस्ता लेकर आया।

(ख) दरवाजे पर बहुत भीड़ थी।

(ग) गुलदस्ता लेकर कोई नहीं आया।

(2) हम भगवान की कसम खाकर कहते हैं कि ...

(क) आज हमारा जन्मदिन है।

(ख) इनका जन्म पहली अप्रैल को ही है।

(ग) आज इनका जन्मदिन नहीं है।

(3) अगले साल दो महीने पहले से अखबारों के जरिए ..

(क) जन्मदिन का वातावरण बनाऊँगा।

(ख) सगे-संबंधियों को सूचित करुँगा।

(ग) मित्रों की याद दिलाऊँगा

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने मित्र को जन्मदिन की बधाई देने के कार्यक्रम का आयोजन करें और उसका विवरण लिखें ।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः हरिशंकर परसाई की अन्य हास्य-व्यंग्य रचनाएँ कक्षा में पढ़ें।

⊙

व्याकरण : शब्द भंडार

*** शब्द :**

अक्षरों के सार्थक गठन को शब्द कहते हैं, जब एक या एक से अधिक अक्षरों का संयोजन किसी विशेष अर्थ को इंगित करता है, तब उसे शब्द कहा जाता है। वैसे शब्दों की रचना ध्वनि एवं अर्थ के मेले से होती है, इस प्रकार एक अथवा अधिक वर्णों से बनी स्वतन्त्र एवं सार्थक ध्वनि को शब्द कहा जाता है जैसे-कमला, आम, अमरूद, आलू, आ, घर जा, धीरे, परन्तु, कछुआ आदि। शब्द मूलतः ध्वन्यात्मक होंगे अथवा वर्णात्मक। व्याकरण में वर्णात्मक शब्दों को महत्त्व दिया जाता है।

प्रत्येक शब्द अपने प्रतीक अर्थों को ग्रहण करता है, जो प्रचलित रूढ़ प्रयोगों पर आश्रित रहते हैं। शब्द के पृथक्-पृथक् अक्षर का, शब्द के अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं रहता लेकिन उसके यौगिक रूप का प्रतीकार्थ एक निश्चित अर्थ को ग्रहण कर लेता है, जैसे- 'कमल' शब्द का अर्थ है एक फूल विशेष, किन्तु क + म + ल शब्दों के अलग-अलग रूपों का कमल से कोई सम्बन्ध नहीं है। स्पष्ट है कि- अक्षरों का गठन किसी विशिष्ट और निश्चित अर्थ को सूचित करने के लिए शब्दरूप में होता है।

भाषा स्वाभाविक रूप से परिवर्तनशील है, समयानुसार विश्वजनीन समस्त भाषाओं के रूप परिवर्तित होते रहते हैं। संस्कृत के अनेक शब्द पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश से मार्ग तय करते हुए हिन्दी में आए। इनमें कुछ शब्द यथावत् हैं तथा कुछ देशकाल के प्रभाव के कारण विकृत हो गए हैं, बदल गए हैं। जो शब्द पूर्णरूपेण अपरिवर्तित रहे हैं, वे तत्सम कहलाते हैं। परिवर्तित शब्द तद्भव कहलाते हैं, कुछ देशज होते हैं तथा कुछ विदेशी शब्दों को भाषा में ग्रहण कर लिया जाता है आदि। इस प्रकार भाषा के शब्दों का संयोजन अनेक प्रकार से होता है।

भाषा के शब्द-कोश नित्य प्रति समृद्धता की ओर विकसित होता है। जैसे-जैसे भाषा का व्यवहार-परिवेश विस्तृत बनता जाता है, वैसे-वैसे ही भाषा नवीन शब्दों को अपनाती जाती है। हिन्दी में भी आज सीमित-क्षेत्र में आबद्ध होकर रह जाए। जिन भाषाओं में नए-नए शब्दों का संयोजन रुक जाता है, वह भाषा धीरे-धीरे मृत प्राय हो जाती है। ब्रजभाषा इसी प्रकार की एक पूर्ण समृद्ध भाषा थी, जो अपने सीमित-क्षेत्रीय शब्दों की प्राचीरों में ही बँधी रही, संस्कृत भाषा भी कालान्तर में अपने चरम विकास-बिन्दु पर आकर रुक गई फिर धीरे-धीरे विघटित होने लगी और फिर मृत प्राय मानी जाने लगी जबकि इसमें आज भी गतिशीलता बनी हुई है। मैथिली और भोजपुरी आज की जीवन्त-भाषाएँ हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है-

(क) मूल स्त्रोत एवं विकास के आधार पर

(ख) अर्थ के आधार पर

(ग) रचना (व्युत्पत्ति) के आधार पर

(घ) व्याकरण में प्रयोग के आधार पर

(क) मूल स्त्रोत एवं विकास के आधार पर शब्द भेद : मूल स्त्रोत अथवा उद्गम के आधार पर, इस दृष्टि से हिन्दी के शब्दों को छः भेदों में विभाजित किया गया है-

1. तत्सम 2. अर्द्धतत्सम 3. तद्भव 4. अनुकरण वाचक 5. देशज 6. विदेशज

तत्सम का शाब्दिक अर्थ है - उसके समान। यह शब्द संस्कृत भाषा से निस्सृत शब्दों के लिए ही विशेष रूप से प्रचलित हैं, संस्कृत शब्दों का मूल रूप जो हिन्दी ने अपना लिया, उसे तत्सम कहा जाता है। तत्सम का अर्थ है- 'उसके समान', तत् (तस्य) उसके, संस्कृत के, सम = समान।

इन संस्कृत के आगत अविकृत शब्दों की संख्या हिन्दी में विद्वान लगभग 45 प्रतिशत मानते हैं। जब से

हिन्दी को भारत वर्ष की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया है, तब से इसमें संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग कुछ अधिक बढ़ गया है। भारतवर्ष के संविधान में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि हिन्दी का मूलस्त्रोत संस्कृत है। अरबी अथवा फारसी नहीं। परिणामस्वरूप भारतवर्ष में सरकारी अधिष्ठानों के नाम, यातायात-सम्बन्धी सुचिकाएँ, यान्त्रिक-नामकरण, भूगोल, प्राणिशास्त्र आदि नामाभिधान में हमको संस्कृत के शब्दकोश की ही शरण लेनी पड़ती है। इस प्रकार संस्कृत/तत्सम शब्दों का आधिक्य भाषा को समृद्ध करता रहा है। हिन्दी में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द इस प्रकार हैं- अधीन, अध्यक्ष, अज्ञान, आक्रमण, आश्रम, दधि, दुग्ध, देवता, दान, धूम्र, धातु, नगर, नवयुवक, प्राप्त, पिता, बन्धु, बुद्धि, भक्ति, भ्राता, आम्र, उष्ट्र, शलाका, सपली, रक्तकमल आदि।

भाषा में कुछ विदेशी शब्द इतने प्रचलित हो जाते हैं कि उनके स्थान पर अपनी भाषा के पारिभाषिक शब्दों का आरोपण भाषा को जटिल और अस्वाभाविक बना देता है। जैसे-माचिस, रेल, लालटेन, कैमरा, बल्ब, साइकिल, सिगनल, बालपैन, टिकिट, पैन, पेंसिल, आलपिन, निव आदि। शब्दों के लिए यदि संस्कृत के कोश को खोलकर, नए-नए शब्द लादे जाएँगे, तो वे भाषा के सरल प्रवाह में पच नहीं पाएँगे। इसके अतिरिक्त वे शब्द इतर भाषा-भाषियों के लिए भी अभिव्यक्ति की दुरूहता उत्पन्न कर देंगे। इस प्रकार भाषा प्रेम के बलात्-आरोपण की संकीर्णता को कभी पनपने नहीं देना चाहिए, इससे भाषा का जन-प्रसारण की दृष्टि से बड़ा अनिष्ट सिद्ध होता है।

*** तद्भव :**

जो शब्द मूलरूप से संस्कृत के हैं, किन्तु किंचित् रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है। जिन शब्दों को प्रयोग की सुविधा और उच्चारण के सरलीकरण हेतु, हम जो स्वरूप प्रदान करते हैं, वे ही तद्भव शब्द कहे जाते हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त बहुत-से ऐसे तद्भव शब्द हैं, जो संस्कृत और प्राकृत से आए हैं, इन्हें तद्भव कहा जाता है, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

अँधेरा, आधा, ऊँचा, खीरा, खेत, ग्राहक, दही, सावन, धीरज, धान, कान, मौंह, नाक, हाथी, आठ, साँ, बहू, दूध, ईख, सात, आज माथा, साँस, उँगली, अँगूठा।

*** अर्द्धतत्सम :**

जो शब्द संस्कृत अथवा प्राकृत से निस्सृत होकर कुछ ही परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उर्द्धतत्सम शब्द कहते हैं। इनका परिवर्तित रूप तत्सम शब्द की अपेक्षा कुछ कम होता है, तस्सम शब्दों की तुलना में उर्द्धतत्सम शब्द अपने मूल शब्द से अधिक निकट जान पड़ते हैं तथा पूर्ण रूपेण तत्सम नहीं होते।

तत्सम, अर्द्धतत्सम तथा तद्भव शब्द में अन्तर इस प्रकार है-

तत्सम	**अर्द्धतत्सम**	**तद्भव**
कर्म	करम	काम
अक्षर	अच्छर	अखर
अग्नि	अगिन	आग
कार्य	कारज	काम

*** अनुकरण-वाचक :**

कल्पित ध्वनि के आधार पर जिन शब्दों का गठन होता है, उन्हें अनुकरण वाचक शब्द कहते हैं। जैसे-फड़फड़ाना, चहचहाना, भनभनाहट, धमाका, गड़गड़ाहट, कैं-कैं, चैं-चैं, पैं-पैं, भैं-भैं, कू, कू, काँव-काँव, पटाका, चिल्लाना आदि। कुछ शब्द मूलशब्द के साथ भी किंचित् परिवर्तन से उसके समीपार्थ को प्रकट करते हैं, यथा-अंग्रेज = अँग्रेजी, हिन्दी = हिन्दी, फारस = फारसी, रूस = रसिया, रूसी आदि। कुछ अनुकरणात्मक शब्द निरर्थक होते हुए भी सहशब्द की सार्थकता में सहायक होते हैं, उन्हें भी अनुकरणवाची शब्द कहते हैं। जिस प्रकार छेड़-

छाड़, फटफटिया, चमचम, टर्राना, खट-खटाना, भीड़-भाड़, धक्कम-धक्का, धमाधम आदि।

*** देशज :**

जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का कुछ भी पता नहीं चलता और जो बहुत समय से भाषा में प्रयुक्त होते रहे हैं, ऐसे शब्दों को देशज शब्द कहते हैं। प्रायः ऐसे शब्दों का उद्गम जन-प्रांगण से होता रहता है, जिनका निश्चित स्त्रोत ज्ञात नहीं हो पाता, व्यवहृत-भाषा के क्षेत्र में पैदा होने से ही उन्हें देशज कहा जाता है इन शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत की किसी धातु अथवा व्याकरण के नियमों से नहीं हुई है, इन्हें लोकभाषा की उपज कहा जा सकता है क्योंकि ऐसे शब्दों की अधिकता लोकभाषा में ही पाई जाती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

रोटी, रसिया, धोबी, भंगी, कंजर, धोती, जूता, लँगोटी, खिचड़ी, पगड़ी, लोटा, घपला, कबड्डी, टट्टू, टटिया, चज़्पत, भुर्ता, टीस, पेड़, डोर, सोटा, डिबिया, भेड़िया, साफा, साफी, गागर, रस्सा, तेन्दुआ, चिड़या, बजरबट्टू, कलाई, बियान, कटोरा-कटोरी, डोंगा, ढेंचा, गाढ़, परपटी, सिली, बूकना, ऐंठा-ठाकुर, मैंढा, डाब, बाबाजी, ढेंगुली, छोरा, छोरी, बाजरा, घाघरा, तरकारी, अढ़ैया, पौंचा आदि।

*** विदेशज :**

जो शब्द विदेशी भाषा के होते हुए भी हिन्दी में समाहित होकर हिन्दी के ही होकर रह जाते हैं, उन्हें विदेशज शब्द कहते हैं इन्हें आगत अथवा गृहीत शब्द भी कहा जाता है। ये शब्द अन्य देश की भाषा से आए हुए विदेशी मूल के शब्द हैं। हिन्दी में ऐसे बहुत से शब्द हैं, जो दैनिक बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं, किन्तु वे विदेशी भाषा के होने पर भी स्वदेशी- जैसे ज्ञात होते हैं। इनमें निम्नलिखित विदेशी भाषाओं के सार्वाधिक भिन्न-भिन्न शब्द समाविष्ट हैं, जैसे-अरबी, फारसी, पश्तो, तुर्की, अँग्रेजी आदि।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) शब्द किसे कहते हैं?

(2) शब्दों का वर्गीकरण किस तरह किया जाता है?

(3) अर्थ तत्सम शब्द क्या होते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) शब्द भंडार से क्या आशय है?

(2) हिंदी का शब्द भंडार किस तरह निर्मित है?

(3) देशज शब्द किन शब्दों को कहा जाता है?

योग्यता-विस्तार

(1) **विद्यार्थी प्रवृत्तिः** कुछ चुने हुए शब्दों की सूची बनाकर उनके अर्थ लिखिए।

(2) **शिक्षक प्रवृत्तिः** अपने विद्यालय के आस-पास की वस्तुओं, सरकारी मकानों, पेड़ों आदि के नामवाचक शब्दों की सूची विद्यार्थियों को बनाने को प्रेरित कीजिए।

⊙

व्याकरण : शब्द निर्माण

ध्वनियों के मेल से बने सार्थक वर्णसमुदाय को 'शब्द' कहते हैं। शब्द अकेले और कभी दूसरे शब्दों के साथ मिलकर अपना अर्थ प्रकट करते हैं। इन्हें हम दो रूपों में पाते हैं- एक तो इनका अपना बिना मिलावट का रूप है, जिसे संस्कृत में प्रकृति या प्रातिपदिक कहते हैं और दूसरा वह, जो कारक, लिंग, वचन, पुरुष और काल बतानेवाले अंश को आगे-पीछे लगाकर बनाया जाता है, जिसे पद कहते हैं। यह वाक्य में दूसरे शब्दों से मिलकर अपना रूप झट सँवार लेता है। शब्दों की रचना (1) ध्वनि और (2) अर्थ के मेल से होती है। एक या अधिक वर्णों से बनी स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं, जैसे- लड़की, आ, मैं, धीरे, परन्तु इत्यादि। अतः, शब्द मूलतः ध्वन्यात्मक होंगे या वर्णात्मक। किन्तु, व्याकरण में ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का अधिक महत्त्व है। वर्णात्मक शब्दों में भी उन्हीं शब्दों की अपेक्षा मूलतः ध्वन्यात्मक होंगे या वर्णात्मक। किन्तु, व्याकरण में ध्वनत्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों का अधिक महत्त्व है। वर्णात्मक शब्दों में भी उन्हीं शब्दों का महत्त्व है, जो सार्थक हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट और सुनिश्चित है। व्याकरण में निरर्थक शब्दों पर विचार नहीं होता।

सामान्यतः शब्द दो प्रकार के होते हैं- सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्दों के अर्थ होते है और निरर्थक शब्द, क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

भाषा की परिवर्तनशीलता उसकी स्वाभाविक क्रिया है। समय के साथ संसार की सभी भाषाओं के रूप बदलते हैं। हिन्दी इस नियम का अपवाद नहीं है। संस्कृत के अनेक शब्द पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आये हैं। इनमें कुछ शब्द तो ज्यों-के-त्यों अपने मूलरूप में हैं और कुछ देश-काल के प्रभाव के कारण विकृत हो गये हैं।

उद्गम की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण

उद्गम की दृष्टि से शब्दों के चार भेद हैं-

1. तत्सम, 2. तद्भव, 3. देशज एवं, 4. विदेशी शब्द

तत्सम :

किसी भाषा के मूलशब्द को तत्सम कहते हैं। 'तत्सम' का अर्थ ही है- 'उसके समान' या 'ज्यों-का-त्यों' (तत्, तस्य = उसके - संस्कृत के, सम = समान)। यहाँ संस्कृत के उन तत्समों की सूची है, जो अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आये हैं।

तत्सम	**हिन्दी**	**तत्सम**	**हिन्दी**
आम्र	आम	गोमल, गोमय	गोबर
उष्ट्र	ऊँट	घोटक	घोड़ा
चुल्लिः	चूल्हा	शत	सौ
चतुष्पादिका	चौकी	सपत्नी	सौत
शलाका	सलाई	हरिद्रा	हल्दी, हरदी
चंचु	चोंच	पर्यक	पलंग
त्वरित	तुरत, तुरन्त	भक्त	भात
उद्धर्तन	उबटन	सूचि	सुई
खर्पर	खपरा, खप्पर	सक्तु	सत्तू
तिक्त	तीता	क्षीर	खीर

तद्भव :

ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आये हैं, 'तद्भव' कहलाते हैं। तत् + भव का अर्थ है- उससे (संस्कृत से) उत्पन्न। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आये हैं। इसके लिए इन्हें एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी है। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आये हैं, परन्तु कुछ शब्द देश-काल के प्रभाव से ऐसे विकृत हो गये हैं कि उनके मूलरूप का पता नहीं चलता। फलतः तद्भव शब्द दो प्रकार के हैं- (1) संस्कृत से आनेवाले और (2) सीधे प्राकृत से आनेवाले। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले बहुसंख्य शब्द ऐसे तद्भव हैं, जो संस्कृत-प्राकृत से होते हुए हिन्दी में आये हैं। हिन्दी में शब्दों के सरलतम रूप बनाये रखने का पुराना अभ्यास है। निम्नलिखित उदाहरणों से तद्भव शब्दों के रूप स्पष्ट हो जाएँगे -

संस्कृत	**प्राकृत**	**तद्भव हिन्दी**
अग्नि	अग्गि	आग
मया	मई	मैं
वत्स	वच्छ	बच्चा, बाछा
चतुर्दश	चोद्दश, चउद्दह	चौदह
पुष्प	पुष्फ	फूल
चतुर्थ	चउट्ठ, चउत्थ	चौथा

* **देशज :**

'देशज' वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिए इन्हें देशज कहते हैं। हेमचन्द्र ने उन शब्दों को 'देशी' कहा है, जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमों से अनुसार न हो। लोकभाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता है। जैसे- तेंदुआ, चिड़िया, कटरा, अण्टा, ठेठ, कटोरा, खिड़की, ठुमरी, खखरा, चसक, जूता, कलाई, फुनगीं, खिचड़ी, पगड़ी, बियाना, लोटा, डिबिया, डोंगा, डाब इत्यादि। विदेशी विद्वान जॉन बोक्स ने देशज शब्दों को मुख्यरूप से अनार्यस्त्रोत से सम्बद्ध माना है।

* **विदेशी शब्द :**

विदेशी भाषाओं से हिन्दी-भाषा में आए शब्दों को 'विदेशी शब्द' कहते हैं। इनमें फारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषाएँ मुख्य हैं। अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों को हिन्दी ने अपने उच्चारण के अनुरूप या अपभ्रंश रूप में ढाल लिया है। हिन्दी में उनके कुछ हेर-फेर इस प्रकार हुए हैं-

1. क़, ख़, ग़, फ़ जैसे नुक्तेदार उच्चारण और लिखावट को हिन्दी में साधारणतया बेनुक्तेदार उच्चरित किया और लिखा जाता है। जैसे-क़ीमत (अरबी) - कीमत (हिन्दी), ख़ूब (फारसी) - खूब (हिन्दी, आग़ा (तुर्की) - आगा (हिन्दी), फ़ैसला (अरबी) - फैसला (हिन्दी)।

2. शब्दों के अन्तिम विसर्ग की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा लगाकर लिखा या बोला जाता है। जैसे- आईन, और कमीनः (फारसी) - आईना और कमीना (हिन्दी), हैज़ः (अरबी) - हैजा (हिन्दी), चम्चः (तुर्की) - चमचा (हिन्दी)।

3. शब्दों के अन्तिम हकार की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा कर दी जाती है। जैसे - अल्लाह (अरब) - अल्ला (हिन्दी)।

4. शब्दों के अन्तिम आकार की मात्रा को हिन्दी में हकार कर दिया जाता है। जैसे - परवा (फारसी) - परवाह (हिन्दी)।

5. शब्दों के अन्तिम अनुसासिक आकार को 'आन' कर दिया जाता है। जैसे- दुकाँ (फारसी) - दुकान (हिन्दी), ईमाँ (अरबी) - ईमान (हिन्दी)।

6. बीच के 'इ' को 'य' कर दिया जाता है। जैसे- काइदः (अरबी) - कायदा (हिन्दी)।

7. बीच के आधे अक्षर को लुप्त कर दिया जाता है। जैसे-नश्शः (अरबी) - नशा (हिन्दी)।

अँगरेजी शब्द

(अँगरेजी) तत्सम	**तद्‌भव**	**(अँगरेजी) तत्सम**	**तद्‌भव**
ऑफीसर	अफसर	थियेटर	थेटर, ठेठर
एंजिन	इंजन	टरपेण्टाइन	तारपीन
डॉक्टर	डाक्टर	माइल	मील
लैनटर्न	लालटेन	बॉटल	बोतल
स्लेट	सिलेट	कैप्टेन	कप्तान
हॉस्पिटल	अस्पताल	टिकट	टिकस

इनके अतिरिक्त, हिन्दी में अंगरेजी के कुछ तत्सम शब्द ज्यों-के-त्यों प्रयुक्त होते हैं। इनके उच्चारण में प्रायः कोई भेद नहीं रह गया है। जैसे- अपील, आर्डर, इंच, इण्टर, इयरिंग, एजेन्सी, कम्पनी, कमीशन, कमिश्नर, कैम्प, ग्लास, क्वार्टर, क्रिकेट, काउन्सिल, गार्ड, गजट, जेल, चेयरमैन, ट्यूशन, डायरी, डिप्टी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ड्राइवर, पेन्सिल, फाउण्टेन पेन, नम्बर, नोटिस, नर्स, थर्मामीटर, दिसम्बर, पार्टी, प्लेट, पार्सल, पेट्रोल, पाउडर, प्रेस, फ्रेम, मीटिंग, कोर्ट, होल्डर, कॉलर इत्यादि।

पुर्तगाली शब्द

हिन्दी	**पुर्तगाली**
अलकतरा	Acatrao
अनन्नास	Annanas
आलपीन	Alfinete
आलमारी	Almario
बाल्टी	Balde
किरानी	Carrane
चाबी	Chave
फीता	Fita
तम्बाकू	Tobacco

इस तरह, आया, इस्पात, इस्तिरी, कमीज, कनस्टर, कमरा, काजू, क्रिस्तान, गमला, गोदाम, गोभी, तौलिया, नीलाम, परात, पादरी, पिस्तौल, फर्मा, बुताम, मस्तूल, मेज, लबादा, साया, सागू आदि पुर्तगामी तत्सम के तद्‌भव रूप भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

ऊपर जिन शब्दों की सूची दी गयी है उनसे यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा में विदेशी शब्दों की कमी नहीं है। ये शब्द हमारी भाषा में दूध-पानी की तरह मिले हैं। निस्सन्देह, इनसे हमारी भाषा समृद्ध हुई है।

शब्दों अथवा वर्णों के मेल से नये शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'व्युत्पत्ति' कहते हैं। कई वर्णों को मिलाने से शब्द बनता है और शब्द के खण्ड को 'शब्दांश' कहते हैं। जैसे- 'राम' में शब्द के दो खण्ड हैं- 'रा' और 'म'। इन अलग-अलग अर्थ है। इस प्रकार, व्युत्पत्ति अथवा बनावट के विचार से शब्द के तीन प्रकार हैं- 1. रूढ़, 2. यौगिक और 3. योगरूढ़।

रूढ़ शब्द :

जिन शब्दों के खण्ड सार्थक न हों, उन्हें रूढ़ कहते हैं, जैसे- नाक, कान, पीला, झट, पर। यहाँ प्रत्येक शब्द के खण्ड - जैसे, 'ना' और 'क', 'का' और 'न'- अर्थहीन हैं।

यौगिक शब्द :

ऐसे शब्द, जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं और जिनके खण्ड सार्थक होते हैं, यौगिक कहलाते हैं। दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के योग से यौगिक शब्द बनते हैं, जैसे- आग-बबूला, पीला-पन, दूध-वाला, छल-छन्द, घुड़-सवार इत्यादि। यहाँ प्रत्येक शब्द के दो खण्ड हैं और दोनों खण्ड सार्थक हैं।

योगरूढ़ शब्द :

ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते हैं, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। मतलब यह कि यौगिक शब्द जब अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगें, तब वे 'योगरूढ़' कहलाते हैं, जैसे- लम्बोदर, पंकज, चक्रपाणि, जलज इत्यादि। पंक+ज अर्थ हैं 'कीचड़' से (में) उत्पन्न, पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जायेगा, अत: 'पंकज' योगरूढ़ है। इसी तरह, अन्य शब्दों को भी समझना चाहिए।

यौगिक शब्दों की रचना दो प्रकार से होती हैं- शब्दांश के मेल से और शब्दों के मेल से। शब्दांश दो प्रकार के होते हैं- उपसर्ग और प्रत्यय। उपसर्ग वह शब्दांश है, जो किसी शब्द के पूर्व जोड़ा जाता है, जैसे- प्रसिद्ध, अभिमान, विनाश, उपकार। इनमें क्रमश: 'प्र', 'अभि', 'वि' और 'उप' उपसर्ग हैं।

प्रत्यय वह शब्दांश है, जो किसी शब्द के अन्त में जोड़ा जाता है, जैसे- उठान, बनावट, टिकाऊ आदि में 'आन', 'आवट', 'ऊ' प्रत्यय लगे हैं।

इसके अतिरिक्त शब्द-रचना तीन प्रकार से होती है- (क) सन्धि, (ख) समास और (ग) द्विरुक्ति।

मूलशब्द, उपसर्ग और प्रत्यय :

रूढ़ शब्द दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, जैसे- नाक, कान, मुँह, पेट इत्यादि। इन शब्दों के खण्ड सार्थक नहीं होते। अत: ये मूल हैं।

(ख) अर्थ के आधार पर शब्द-भेद- अर्थ के आधार पर शब्दों के तीन भेद किए गए हैं-

1. वाचक - अभिधार्थ
2. लक्षक - लक्ष्यार्थ
3. व्यंजक - व्यंग्यार्थ

वाचक-शब्द : जिन शब्दों का अर्थ सीधे एवं साधरण रूप से ग्रहण किया जाता है, उन्हें वाचक या अभिधार्थ कहा जाता है, किसी, भाव, विचार, वस्तु, स्थान, व्यक्ति आदि के लिए प्रत्येक भाषा-भाषी समान संकेत निहित कर देता है, जो शब्द जिस संकेत का बोध कराता है, वह उसी का वाचक कहा जाता है, वाचक शब्द, जो अर्थ देगा वह वाच्यार्थ, मुख्यार्थ, संकेतार्थ अथवा अभिधार्थ कहलाएगा, जैसे-फूल, पेड़, बन्दर, आदमी।

लक्षक-शब्द-जिन शब्दों का अर्थ मुख्यार्थ के समानार्थ सम्बन्धित अर्थ को ग्रहण किया जाता है, वहाँ लाक्षणिक अर्थ कहा जाता है, जैसे अन्धे व्यक्ति के लिए धृतराष्ट्र अथवा सूरदास कहना, उल्लू, गधा आदि का प्रयोग मूर्खता के लिए करना तथा अष्टावक्र, अनेकांग भंग विद्वान हेतु।

व्यंजक-शब्द - जिन शब्दों का अर्थ न तो मुख्य शब्द ही ग्रहण किया जाता है और न ही सम्बन्धित लाक्षणिक अर्थ, बल्कि जिनसे किसी अन्य ही सांकेतिक अर्थ का आभास मात्र मिलता हो, उन्हें व्यंग्यार्थ कहते हैं। अधिकतर व्यंग्यार्थ का प्रयोग काव्य-भाषा में होता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति की मूर्खता के लिए उससे- 'आप बहुत समझदार हैं', कहकर मूर्ख कहें।

(ग) व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दभेद - एक शब्द से अन्य शब्द बनाने की प्रक्रिया व्युत्पत्ति कहलाती है। व्युत्पत्ति के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(1) रूढ़ (2) यौगिक तथा (3) योगरूढ़

रूढ़-शब्द-जिन शब्दों के खण्ड करने पर कोई भी खण्ड सार्थक न हो, किन्तु उसका यौगिक रूप ही अर्थयुक्त हो, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं, जैसे-आम, केला, दाना आदि, इसमें आ +म खण्ड करने पर आ तथा म का पृथक्-पृथक् कोई अर्थ नहीं है, बल्कि इनका यौगिक रूप आम निश्चित-फल के लिए प्रतीकार्थ में रूढ़

हो गया है। इसलिए आम शब्द रूढ़ है। इसी प्रकारअन्य शब्दों को भी देखा जा सकता है।

यौगिक-शब्द-यौगिक शब्द वे होते हैं, जो दूसरे शब्दों के योग से बनकर अपना पृथक् अर्थ प्रतिपादित करते हैं, उन्हें विभाजित करके अर्थ करने पर भी वे वही अर्थ देते हैं। जैसे-गौशाला, विद्यालय, पाठशाला, धर्मशाला, प्रयोगशाला, विद्यार्थी, महादेव, बालहठ, नालायक, छलछन्द, आगबबूला, घोड़ागाड़ी आदि व्याकरण में यौगिक-शब्दों की रचना संधि, समास, उपसर्ग तथा प्रत्यय आदि से होती है।

योगरूढ़- जो शब्द यौगिक शब्दों के समान रहते हुए भी अपने निश्चित-अर्थ को ही ग्रहण करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहा जाता है, जैसे- पंकज का अर्थ पंक + ज - कमल, पंक में जन्म लेने वाला - पंकज। वैसे तर्क के लिए पंक में अनेक वस्तुएँ पैदा होती हैं, किन्तु पंकज शब्द कमल के लिए ही बोला जाता है। पंक+ज से उसका यौगिक रूप तो स्पष्ट ही है। इसी प्रकार जलज, नीरज, जलद, पीताम्बर, दिगम्बर, गोपाल, गणेश, गिरधारी, लम्बोदर, मृगया, पयोधर, आदि भी शब्द योगरूढ़ शब्द हैं।

(घ) व्याकरण में प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद- वैसे रूप के आधार पर 2 भेद हैं- विकारी, अविकारी।

विकारी-इस वर्ग में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण आदि शब्द आते हैं।

संज्ञा-कोई भी नाम संज्ञा होता हैं, संज्ञाएँ बहुरूपात्मक होती हैं, जो वचन एवं कारक से बदल जाती हैं। संज्ञाएँ प्राय: उद्देश्य एवं कर्म के रूप में वाक्य में प्रयुक्त होती हैं।

सर्वनाम-संज्ञा के स्थान प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जो विकारी, अविकारी दोनों ही रूपों में मिलते हैं, सर्वनामों के रूप भी बदलते हैं, जिनका आधार लिंग, वचन तथा कारक होते हैं।

विशेषण-संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण होते हैं, प्राय: विशेषण के उसके विशेष्य के अनुसार रूप बदलते हैं।

क्रिया-क्रिया शब्द करने अथवा होने को प्रकट करता है। पुरुष, वचन, लिंग, काल, प्रकार अथवा अवस्था वाच्य के अनुसार क्रियाएँ रूप बदलती हैं। क्रिया के पुरुष अनियत रूप में मिलते हैं।

इन भागों के अतिरिक्त अर्थों के अनुसार शब्दों को मूलरूप से अन्य खण्डों में भी विभाजित किया जा सकता है, यथा-

1. एकार्थी, 2. बहुअर्थी, 3. समानार्थी, 4. विलोमार्थी, 5. ध्वनिप्रधान, 6. युग्म तथा अन्य विविध।

एकार्थी- एकार्थी में शहर, मनुष्य, वस्तु के निश्चित नाम आते हैं, यथा-राम, घनश्याम, मथुरा, मुम्बई, पानी, दूध, शराब, भारत, अमरीका, हिमालय, गंगा आदि।

बहु-अर्थी (अनेकार्थी)- इसमें एक शब्द के अनेक अर्थ ही प्रकट नहीं होते किन्तु वाक्यानुसार वे अपने उपयुक्त अर्थ प्रकट करते हैं, यथा-कनक, हरि, हंस, मुफ्त, पयोधर, दण्ड, पद, हरि, वर, हल, पत्र, व्याज, मित्र, रस, फल, पानी, वारिस, सांरग आदि।

समानार्थी- इन शब्दों में एक जैसे अर्थों के अनेक शब्दों को ग्रहण किया जाता है, इन्हें पर्यायवाची शब्द भी कहते हैं। इनमें एक ही अर्थ के लिए जब एक से अनेक शब्द प्राप्त होते हैं, तो वे सभी समान अर्थ रखने के कारण पर्यायवाची कहे जाते हैं। एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग भी हो सकता है, किन्तु इस प्रकार के प्रयोग काव्यभाषा में सज़्भव नहीं। इससे छन्दभंग तथा अर्थभंग की सज़्भावना रहती है जैसे- नयन, नेत्र, आँख, चक्षु तथा कमल पंकज, जलज, नीरज आदि।

विलोमार्थी : जहाँ एक शब्द के विपरीत अर्थ में दूसरे शब्द का प्रयोग होता है, वहाँ विलोमार्थ कहा जाता है जैसे- अच्छा > बुरा, पाप > पुण्य, ऊँच > नीच आदि।

ध्वन्यार्थी : ध्वनि प्रधान शब्दों में ऐसे शब्द आते हैं, जिनका ध्वन्यात्मक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है, इसमें शब्द से निस्सृत ध्वनि में अर्थ संगति प्राप्त होती है। जैसा-भिनभिनाना, फाड़ना, सुरसुराना, थूकना, भोंकना, छीकना, खांसना, चिल्लाना, फटकारना, खटखटाना आदि।

शब्द-युग्म - इस प्रकार के शब्द सदैव दो शब्दों के योग से बनते हैं। इसमें एक शब्द के साथ लगा हुआ दूसरा शब्द प्रयोगाधिक्य के कारण इतना प्रचलित हो जाता है कि उसे उसके साथ वाले शब्द से पृथक्

नहीं किया जा सकता, यथा- 'झकझोर' इसमें न तो 'झक' का ही कुछ स्वतन्त्र अर्थ है और न ही 'झोर' का, किन्तु झकझोर का अर्थ है, किसी वस्तु को पकड़ कर जोर से हिला देना, इसी प्रकार बकवास, सरपट, गुमसुम आदि।

युग्म का दूसरा स्वरूप समान रूप वाले, किन्तु किंचित् भिन्न शब्दों के अर्थ में प्रयुक्त होता है, यथा- कोड़ी > कौड़ी, खोलना > खौलना, ओर > और, मुख > मुख्य, आचार > आचार्य, कर्म > क्रम, गृह > ग्रह आदि। इस प्रकार के कुछ समान-से शब्दों में थोड़े-से अन्तर से ही अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

कुछ इस प्रकार के शब्द आते हैं, जो अपने समूह को इंगित करते हैं, यथा-सेना, जुलूश, जत्था, भीड़, खनिज आदि।

कुछ शब्द पुनरुक्ति के साथ प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें पुनरुक्त शब्द कहा जाता है, यथा- बार-बार, घर-घर, द्वार-द्वार, बाल-बाल, बच्चा-बच्चा, ईंट-ईंट आदि।

संकर शब्द - हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जो ऊपर वर्णित किसी भी वर्ग में नहीं आते हैं तथा दो या दो से अधिक शब्दों एवं भाषाओं से निर्मित होते हैं, ये शब्द संकर/द्विज शब्द कहलाते हैं, जैसे-रेलगाड़ी (अँग्रेजी + हिन्दी), डाकखाना (हिन्दी + फारसी), राजमहल (हिन्दी + अरबी), दलबन्दी (संस्कृत + फारसी), तालाबन्दी (हिन्दी + फारसी), पाव रोटी (पुर्त. + हिन्दी), फूलदान (हिन्दी + फारसी) आदि।

रचना के आधार पर : पिछले पृष्ठों पर कहा जा चुका है कि शब्दों का गठन व्युत्पत्ति के आधार पर रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़, तीन आधारों पर किया जाता है। यहाँ यौगिक रूप पर विचार करना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

यौगिक शब्दों की रचना संधि, समास, उपसर्ग तथा प्रत्यय द्वारा होती है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) तत्सम शब्द किसे कहते हैं?

(2) तद्भव शब्द किसे कहते हैं?

(3) यौगिक शब्द किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) शब्द भेद का अर्थ बताइए?

(2) संज्ञा किसे कहते हैं?

(3) संकर शब्द किसे कहते हैं?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी और संकर शब्दों की सूची बनाकर उनके अर्थ लिखिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः शब्द भेद की जानकारी वाक्य-प्रयोग के साथ विद्यार्थियों को दें।

⊙

17	नींव की ईंट हो तुम दीदी

नींव की ईंट हो तुम दीदी

उदय प्रकाश

(जन्मः 1952 ई.)

आठवें दशक के कवि उदय प्रकाश का जन्म मध्यप्रदेश के शहडोल (अब अनूपपूर)जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। वे स्नातक कक्षा तक विज्ञान के छात्र रहे, किन्तु बाद में सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। उन्होंने जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में अध्यापन एवं शोध कार्य किया। कुछ वर्ष 'दिनमान' एवं 'पूर्वग्रह' पत्रिका में संपादक का भी काम किया।

समकालीन हिन्दी कविता को एक नई पहचान देनेवाले युवा कवियों में उदय प्रकाश का नाम प्रमुख है। जीवन और समाज के यथार्थ के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता की झलक उनकी कविताओं में साफ नज़र आती है। उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं- 'सुनो कारीगर', 'अबूतर-कबूतर' तथा 'रात में हारमोनियम' । उनके कहानी संग्रह हैं 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', तथा 'पॉल गोमरा का स्कूटर'। देश-विदेश की अनेक भाषाओं से अनुवाद किए, पटकथा लिखी; सीरियल तथा डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का निर्माण आदि।

उन्हें भारतभूषण पुरस्कार, ओमप्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान तथा गजानन मुक्तिबोध सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत कविता में होनहार बच्चों के जीवन निर्माण की कथा है, जिनके बचपन को दीदी ने संस्कारित किया है और ज्ञान-दान किया है, बच्चों को दीदी के व्यक्तित्व में अनेक संभावनाएँ दिखाई देती हैं। उन्हें दीदी कभी पीपल की छाँह-सी, कभी ढिबरी के आलोक सी, कभी तरलता-सी तो कभी चट्टान के विश्वास-सी प्रतीत होती हैं। उन्हें दीदी की नई दुनिया में हारिल बनकर जीना भी मंजूर है।

यही कविता की सार्थकता है।

पीपल होती तुम
पीपल, दीदी
पिछवाड़े का, तो
तुम्हारी खूब घनी-हरी टहनियों में
हारिल हम
बसेरा लेते।
हारिल होते हैं हमारी तरह ही
घोंसले नहीं बनाते कहीं
बसते नहीं कभी
दूर पहाड़ों से आते हैं
दूर जंगलों को उड़ जाते हैं।

पीपल की छाँह
तुम्हारी तरह ही
ठंडी होती है दोपहर।

ढिबरी थीं दीदी तुम
हमारे बचपन की
अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बाती में सोखकर
जलती रहीं।
हमने सीखे थे पहले पहल अक्षर
और अनुभवों से भरे किस्से
तुम्हारी उजली साँस के स्पर्श में।

जलती रहीं तुम
तुम्हारा धुआँ सोखती रहीं
घर की गूँगी दीवारें
छप्पर के तिनके-तिनके
धुँधले होते गये

और तुम्हारी
थोड़ी-सी कठिन रोशनी में
हम बड़े होते रहे।

नदी होतीं, तो
हम मछलियाँ होकर
किसी चमकदार लहर की
उछाह में छुपते
कभी-कभी बूँदें लेते
सीपी बन
किनारों पर चमकते।

चट्टान थीं दीदी तुम
सालों पुरानी।
तुम्हारे भीतर के ठोस पत्थर में
जहाँ कोई सोता नहीं निझरता,
हमीं पैदा करते थे हलचल
हमीं उड़ाते थे पतंग।

चट्टान थीं तुम और
तुम्हारी चढ़ती उम्र के ठोस सन्नाटे में
हमीं थे छोटे-छोटे पक्षी
उड़ते तुम्हारे भीतर

वहाँ झूले पड़े थे हमारी खातिर
गुड्डे रखे थे हमारी खातिर
मालदह पकता था हमारी खातिर
हमारी गेंदें वहाँ
गुम हो गयी थीं।

दीदी, अब
अपने दूसरे घर की
नींव की ईंट हुईं तुम तो
तुम्हारी नयी दुनिया में भी
होगी कहीं हमारी खोयी हुई गेंदें
होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने

अब तो ढिबरी हुईं तुम
नये आँगन की
कोई और बचपन
चीन्हता होगा पहले-पहल अक्षर
सुनता होगा किस्से
और यों
दुनिया को समझता होगा।

हमारा क्या है, दिदिया री!
हारिल हैं हम तो
आयेंगे बरस-दो बरस में कभी
दो-चार दिन
मेहमान-सा ठहरकर
फिर उड़ लेंगे कहीं और।

घोंसले नहीं बनाये हमने
बसे नहीं आज तक।
कठिन है
हमारा जीवन भी
तुम्हारी तरह ही।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हारिल एक हरे रंग की चिड़ियाँ जो प्राय: अपने चंगुल में तिनका लिए रहती है **उछाह** उत्साह **मालदह** पेड़ पर पका हुआ आम **चीन्हता** पहचानता **हारिल** एक पक्षी जो अपने पंजे मे एक लकड़ी या तिनका पकड़े रहता है, **ढिबरी** मिट्टी के तेल (केरोसीन) से जलने वाला छोटा गोल मुंहवाला मिट्टि दीपक **तलछट तेल** आचार के बरतन मे नीचे जमा हुआ तेल **उजली साँस** निर्मल-निर्दोष सांस **गूँगी दीवारे** जिस घर में कोई आवाज न होती हो, उस घर की दीवारें

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) हारिल बनकर कवि कहाँ बसेरा करना चाहता है?

(क) वटवृक्ष पर (ख) पीपल के वृक्ष पर

(ग) नीम के पेड़ पर (घ) आम के पेड़ पर

(2 कवि पढ़ना-लिखना किसकी मदद से सीखता है?

(क) दीदी की (ख) माता की (ग) पिता की (घ) भाई की

(3) दीदी यदि नदी है, तो कवि क्या बनना चाहता है?

(क) लहर (ख) उछाह (ग) चट्टान (घ) मछली

(4) दीदी भाई के लिए क्या सामान रखती है?

(क) गुड्डे (ख) मालदह (ग) अमसूद (घ) कैला

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) हारिल कैसा पक्षी है?

(2) दोपहर में ठण्डी छाँह का अनुभव कवि कहाँ करता है?

(3) दीदी के किस्सों से कवि क्या प्राप्त करता था ।

(4) सीपी बनकर कवि क्या करना चाहता था ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) ढिबरी की तरह दीदी क्या कार्य करती हैं?

(2) कवि दीदी को चट्टान की उपमा क्यों देता हैं?

(3) कवि को अपनी दीदी घर की नींव की ईंट के समान क्यों लगती हैं?

(4) जीवन की सार्थकता कवि को कहाँ लगती है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए :

(1) दीदी को दिए गए एक-एक रूपक की क्या विशेषता है?

(2) कविता का केन्द्रीयभाव लिखिए।

(3) आशय स्पष्ट कीजिए -

घोंसले नहीं बनाये हमने, बसे नहीं आज तक, कठिन है, हमारा जीवन भी, तुम्हारी तरह ही।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः भाई-बहन के बचपन के संस्मरण लिखिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः उदय प्रकाश की अन्य कविताओं का आस्वादन कराएँ।

⊙

18 मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

विद्यानिवास मिश्र

(जन्मः सन् 1925 ई. : निधनः सन् 2005 ई.)

विद्यानिवास मिश्र का जन्म 28 जनवरी 1925 को उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले के पकड़डीहा गाँव में हुआ था। वाराणसी, गोरखपुर में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार ने अमेरिका, वोशिंग्टन में अध्येता रहे। म.प्र. प्रशासन में सूचनाविभाग में कार्यरत रहे, बाढ में अध्यापन के क्षेत्र में 1968 से 1977 तक वाराणसी में अध्यापक, कुलपति भी रहे।

भ्रमरानंद स्वयं को माननेवाले विद्यानिवास मिश्र हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक, ललित निबंधकार के रुप में जाने गये। मिश्रजी के निबंधो में प्रकृति, लोकतत्त्व, बौद्धिकता, सर्जनात्मकता, कल्पनाशीलता, काव्यात्मकता, भाषा की सृजनात्मकता एक साथ अन्तग्रंथित मिलती है। ''महाभारत का काव्यार्थ'', ''भारतीय भाषादर्शन की पीठिका'', ''स्वरूप-विमर्श'' निबंध संग्रह, ''गांधी का करुण रस'', ''हिन्दी और हम'', ''वाचिक कविता भोजपुरी'', ''साहित्य के सरोकार'' जैसी प्रसिद्ध रचनाएँ उन्होंने लिखी है।

मानवजीवन में अनेकानेक चिंताएँ व्याप्त हैं। प्रस्तुत निबंध में मिश्रजी ने पौराणिक मिथक के माध्यम से मानव चिंताओं की अत्यंत सुंदर एवं मार्मिक शब्दों में प्रस्तुति की है जो अत्यंत संवेदनापूर्ण जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है। कौशल्या माता का यह विचार सर्वथा युक्तियुक्त है कि इस मौसम में मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा अर्थात् वे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना कर रहे होंगे।

महीनों से मन बेहद-बेहद उदास है। उदासी की कोई खास वजह नहीं, कुछ तबीयत ढीली, कुछ आसपास के तनाव और कुछ उनसे टूटने का डर, खुले आकाश के नीचे भी खुलकर साँस लेने की जगह की कमी, जिस काम में लग कर मुक्ति पाना चाहता हूँ, उस काम में हजार बाधाएँ; कुल ले-देकर उदासी के लिए इतनी बड़ी चीज नहीं बनती। फिर भी रात-दिन नींद नहीं आती। दिन ऐसे बीतते हैं, जैसे भूतों के सपनों की एक रील पर दूसरी रील चढ़ा दी गयी हो और भूतों की आकृतियाँ और डरावनी हो गयी हों इसलिए कभी-कभी तो बड़ी-से-बड़ी परेशान करने वाली बात हो जाती है और कुछ भी परेशानी नहीं होती, उल्टे ऐसा लगता है, जो हुआ, एक सहज क्रम में हुआ, न होना ही कुछ अटपटा होता और कभी-कभी बहुत मामूली-सी बात भी भयंकर चिन्ता का कारण बन जाती है।

अभी दो-तीन रात पहले मेरे एक साथी संगीत का कार्यक्रम सुनने के लिए नौ बजे रात गये, साथ में जाने के लिए मेरे एक चिरंजीव ने और मेरी एक मेहमान, महानगरीय वातावरण में पली कन्या ने अनुमति माँगी। शहरों की, आजकल की असुरक्षित स्थिति का ध्यान करके इन दोनों को जाने तो नहीं देना चाहता था, पर लड़कों का मन भी तो रखना होता है, कह दिया, एक-डेढ़ घंटे सुनकर चले आना।

रात के बारह बजे। लोग नहीं लौटे। गृहिणी बहुत उद्विग्न हुई, झल्लायी; साथ में गये मित्र पर नाराज होने के लिए संकल्प बोलने लगीं। इतने में जोर की बारिश आ गयी। छत से बिस्तर समेटकर कमरे में आया। गृहिणी को समझाया, बारिश थमेगी, आ जायेंगे, संगीत में मन लग जाता है, तो उठने की तबियत नहीं होती, तुम सोओ, ऐसे बच्चे नहीं हैं। पत्नी किसी तरह शांत होकर सो गयीं, पर मैं अकेला उठा, बारिश निकल गयी, ये लोग नहीं आये। बरामदे में कुर्सी लगाकर राह जोहने लगा। दूर कोई भी आहट होती, तो उदग्र होकर फाटक की ओर देखने लगता। रह-रहकर बिजली चमक जाती थी और सड़क छिप जाती थी। पर सामने की सड़क पर कोई रिक्शा नहीं, कोई चिरई का पूत नहीं। एकाएक कई दिनों से मन में उमड़ती-घुमड़ती पंक्तियाँ गूँज गयीं-

''मोरे राम के भीजै मुकुटवा,
लछिमन के पटुकवा
मोरी सीता के भीजै सेनुरवा
त राम पर लौटहिं।''

(मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा, मेरे लखन का पटुका (दुपट्टा) भीग रहा होगा, मेरी सीता की माँग का सिंदूर भीग रहा होगा, मेरे राम घर लौट आते)

बचपन में दादी-नानी जाँते पर यह गीत गातीं, मेरे घर से बाहर जाने पर विदेश में रहने पर वे यही गीत विह्वल होकर गातीं और लौटने पर कहतीं- 'मेरे लाल को कैसा वनवास मिला था ।' जब मुझे दादी-नानी की इस आकुलता पर हँसी भी आती, गीत का स्वर बड़ा मीठा लगता। हाँ, तब उसका दर्द नहीं छूता था। पर इस प्रतीक्षा

में एकाएक उसका दर्द उस ढलती रात में उभर आया और सोचने लगा, आने वाली पीढ़ी पिछली पीढ़ी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान के संभावित संकट की कल्पना मात्र से अद्विग्न हो जाती है। मन में यह प्रतीति ही नहीं होती कि अब संतान समर्थ है, बड़ा-से-बड़ा संकट झेल लेगी। बार-बार मन को समझाने की कोशिश करता, लड़की दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में पढ़ाती है, लड़का संकटबोध की कविता लिखता है, पर लड़की का ख्याल आते ही दुश्चिंता होती, गली में जाने कैसे तत्त्व रहते हैं! लौटते समय कहीं कुछ हो न गया हो और अपने भीतर अनायास अपराधी होने का भाव जाग जाता, मुझे रोकना चाहिए था या कोई व्यवस्था करनी चाहिए थी, परायी लड़की (और लड़की तो हर एक परायी होती है, धोबी की मुटरी की तरह घाट पर खुले आकाश में कितने दिन फहरायेगी, अंत में उसे गृहिणी बनने जाना ही है) घर आयी, कहीं कुछ हो न जाए!

* *

मन फिर घूम गया कौसल्या की ओर, लाखों-करोड़ों, कौसल्याओं की ओर, और लाखों-करोड़ों कौसल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौसल्या की ओर, इन सबके राम वन में निर्वासित हैं, पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी उनके माथे पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिन्ता है? क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरम्भ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है? क्या बात है कि तुलसीदास ने 'कानन' को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें 'कलि की कुटिल कुचाल' दीख पड़ी? क्या बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं? कहीं-न-कहीं इन सबके बीच एक संगति होनी चाहिए।

अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें, मुकुट न भीगने पाये, इसकी चिन्ता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर बन्द दुपट्टा भी, (प्रहरी की जागरूकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की माँग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जायें। राम तो वन से लौट आये, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आये, पर लोकमानस में राम की वनयात्रा अभी नहीं रुकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भीगने की आशंका अभी भी साल रही है। कितनी अयोध्याएँ बसीं, उजड़ीं, पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों-कुशों, कंकड़ों-पत्थरों की वैसी ही ताजा चुभन लिए हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है, वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे और उनके राजपाट को सँभालने वाले भरत अयोध्या के समीप रहते हुए भी उनमें भी अधिक निर्वासित रहेंगे, निर्वासित ही नहीं, बल्कि एक कालकोठरी में बन्द जिलावतनी की तरह दिन बितायेंगे।

* * *

सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौसल्या है; जो हर बारिश में बिसूर रही है- 'मोरे राम के भीजै मुकुट' (मेरे राम का मुकुट भी रहा होगा)। मेरी संतान, ऐश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगे; मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पहरुए का कमरबन्द भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ? मनुष्य की इस सनातन नियति से एकदम आतंकित हो उठा, ऐश्वर्य और निर्वासन दोनों साथ-साथ चलते हैं। जिसे ऐश्वर्य सौंपा जाने को है। उसको निर्वासन पहले से बदा है। जिन लोगों के बीच रहता हूँ, वे सभी मंगल नाना के नाती हैं, वे 'मुद मंगल' में ही रहना चाहते हैं, मेरे जैसे आदमी को वे निराशावादी समझकर बिरादरी से बाहर ही रखते हैं, डर लगता रहता है कि कहीं उड़कर उन्हें भी दुख न लग जाए, पर मैं अशेष मंगलाकांक्षाओं के पीछे से झाँकती हुई दुर्निवार शंकाकुल आँखों में झाँकता हूँ, तो मंगल का सारा उत्साह फीका पड़ जाता है और बंदनवार, बंदनवार न दिखकर

बटोरी हुई रस्सी की शक्ल में कुंडली मारे नागिन दिखती है, मंगल घट औँधाई हुई अधफूटी गगरी दिखता है, उत्सव की रोशनी का तामझाम धुओं की गाँठों का अँबार दिखता है और मंगल-वाद्य डेरा उखाड़ने वाले अंतिम कारबरदार की उसाँस में बजकर एकबारगी बन्द हो जाता है।

लागति अवध भयावह भारी,
मानहुँ कालराति अँधियारी।
घोर जंतु सम पुर नरनारी,
डरपहिं एकहि एक निहारी।
घर मसान परिजन जनु भूता,
सुत हित मीत मनहुँ जमदूता।
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं,
सरित सरोवर देखि न जाहीं।

कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना थी और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गयी है? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है। घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गये हैं, पेड़ सूख गये हैं, लताएँ कुम्हला गयी हैं। नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है। केवल इसलिए कि जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया। उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातन काल से अदा की जाती रही है। इसीलिए जब कीमत अदा कर ही दी गयी, तो उत्कर्ष कम-से-कम सुरक्षित रहे, यह चिंता स्वाभाविक हो जाती है। राम भीगें तो भीगें, राम के उत्कर्ष की कल्पना न भीगे, वह हर, बारिश में हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे। नर के रूप में लीला करनेवाले नारायण निर्वासन की व्यवस्था झेलें, पर नर रूप में उनकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूँदों की झालर में उसकी दीप्ति छिपने न पाये। उस नारायण की सुख-सेज बने अनन्त के अवतार लक्ष्मण भले ही भीगते रहें, उनका दुपट्टा, उनका अहर्निश जागर न भीजे, शेषी नारायण के ऐश्वर्य का गौरव अनन्त शेष के जागर-संकल्प से ही सुरक्षित हो सकेगा और इन दोनों का गौरव जगज्जननी आद्याशक्ति के अखण्ड सौभाग्य, सीमंत सिंदूर से रक्षित हो सकेगा, उस शक्ति का एकनिष्ठ प्रेम पाकर राम का मुकुट है, क्योंकि राम का निर्वासन वस्तुतः सीता का दुहरा निर्वासन है। राम तो लौटकर राजा होते हैं, पर रानी होते ही सीता राम द्वारा वन में निर्वासित कर दी जाती हैं। राम के साथ लक्ष्मण हैं, सीता हैं, सीता वन्य पशुओं से घिरी हुई विजन में सोचती हैं- प्रसव की पीड़ा हो रही है, कौन इस बेला में सहारा देगा, कौन प्रसव के समय प्रकाश दिखलायेगा, कौन मुझे संभालेगा, कौन जन्म के गीत गायेगा?

कोई गीत नहीं गाता सीता जंगल की सूखी लकड़ी बीनती हैं, जलाकर अँजोर करती हैं और जुड़वाँ बच्चों का मुँह निहारती हैं। दूध की तरह अपमान की ज्वाला में चित्त कूद पड़ने के लिए उफनता है और बच्चों की प्यारी और मासूम सूरत देखते ही उस पर पानी के छाँटे पड़ जाते हैं, उफान दब जाता है। पर इस निर्वासन में भी सीता का सौभाग्य अखण्डित है, वह राम के मुकुट को तब भी प्रमाणित करता है, मुकुटधारी राम को निर्वासन से भी बड़ी व्यथा देता है और एक बार अयोध्या जंगल बन जाती है, स्नेह की रसधार रेत बन जाती है, सब कुछ उलट-पुलट जाता है, भवभूति के शब्दों में पहचान की बस एक निशानी बच रहती है, दूर ऊँचे खड़े तटस्थ पहाड़, राममुकुट में जड़े हीरों की चमक के सैकड़ों शिखर, एकदम कठोर, तीखे और निर्मम-

पुरा यत्र स्त्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां
विपर्यासं यातो घन विरलभावः क्षितिरुहाम्।
बहोः कालाद् दृष्टं ह्यपरमिव मन्ये बनमिदं
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति।

राम का मुकुट इतना भारी हो उठता है कि राम उस बोझ से कराह उठते हैं और इस वेदना के चीत्कार में सीता के माथे का सिंदूर और दमक उठता है, सीता का वर्चस्व और प्रखर हो उठता है।

* * *

कुर्सी पर पड़े-पड़े यह सब सोचते-सोचते चार बजने को आये, इतने में दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक पड़ी, चिरंजीव निचली मंजिल से ऊपर नहीं चढ़े, सहमी हुई कृष्णा (मेरी मेहमान लड़की) बोली- दरवाजा खोलिए। आँखों में इतनी कातरता कि कुछ कहते नहीं बना, सिर्फ इतना कहा कि तुम लोगों को इसका क्या अंदाज होगा कि हम कितने परेशान रहे हैं। भोजन-दूध धरा रह गया, किसी ने भी छुआ नहीं, मुँह ढाँपकर सोने का बहाना शुरू हुआ, मैं भी स्वस्ति की साँस लेकर बिस्तर पर पड़ा, पर अर्धचेतन अवस्था में फिर जहाँ खोया हुआ था, वहीं लौट गया। अपने लड़के घर लौट आये, बारिश से नहीं, संगीत से भीग कर, मेरी दादी-नानी के गीतों का राम, लखन और सीता अभी भी वन-वन भीग रहे हैं। तेज बारिश में पेड़ की छाया और दुखद हो जाती है, पेड़ की हर पत्ती से टप्-टप् बूँदें पड़ने लगती हैं, तने पर टिके, तो उसकी हर नस-नस से आप्लावित होकर पीठ गलाने लगती है। जाने कब से मेरे राम भीग रहे हैं और बादल हैं कि मूसलाधार ढरकाये चले जा रहे हैं, इतने में मन में एक चोर धीरे-से फुसफुसाता है, राम तुम्हारे कब से हुए तुम, जिसकी बुनाहट पहचान में नहीं आती, जिसके व्यक्तित्व के ताने-वाने तार-तार होकर अलग हो गये हैं, तुम्हारे कहे जानेवाले कोई हो भी सकते हैं कि वह तुम कह रहे हो, मेरे राम! और चोर की बात सच लगती है, मन कितना बँटा हुआ है, मनचाही और अनचाही दोनों तरह की हजार चीजों में। दूसरे कुछ पतियायें भी, पर अपने ही भीतर परतीति नहीं होती कि मैं किसी का हूँ या कोई मेरा है। पर दूसरी ओर यह भी सोचता हूँ कि क्या बार-बार विचित्र से अनमनेपन में अकारण चिंता किसी के लिए होती है, वह चिन्ता क्या पराये के लिए होती है, वह क्या कुछ भी अपनी नहीं है? फिर इस अनमनेपन में ही क्या राम अपनाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाते आये हैं, क्या न-कुछ होना और न-कुछ बनाना ही अपनाने की उनकी बढ़ी हुई शर्त नहीं है?

तार टूट जाता है, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, यह भीतर से कहाँ पाऊँ। अपनी उदासी से ऐसा चिपकाव अपने सँकरे-से दर्द से ऐसा रिश्ता, राम को अपना कहने के लिए केवल उनके लिए भरा हुआ हृदय कहाँ पाऊँ? मैं शब्दों में घने जंगलों में हिरा गया हूँ। जानता हूँ, इन्हीं जंगलों के आसपास किसी टेकड़ी पर राम की पर्णकुटी है, पर इन उलझानेवाले शब्दों के अलावा मेरे पास कोई राह नहीं। शायद सामने उपस्थित अपने ही मनोराज्य के युवराज, अपने बचे-खुचे स्नेह के पात्र, अपने भविष्यत् के संकट की चिन्ता में राम के निर्वासन का जो ध्यान आ जाता है, उनसे भी अधिक एक बिजली से जगमगाते शहर में एक पढ़ी-लिखी चंद दिनों की मेहमान लड़की के एक रात कुछ देर से लौटने पर अकारण चिन्ता हो जाती है। उसमें सीता का ख्याल आ जाता है, वह राम के मुकुट या सीता के सिंदूर के भीगने की आशंका से जोड़े न जोड़े, आज की दरिद्र अर्थहीन, उदासी को कुछ ऐसा अर्थ नहीं दे देता, जिससे जिन्दगी ऊब से कुछ उबर सके?

और इतने में पूरब से हल्की उजास आती है और शहर के इस शोरभरे बियावान में चक्की के स्वर के साथ चढ़ती-उतरती जँतसार गीति हल्की सी सिहरन पैदा कर जाती है। 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा' और अमचूर की तरह विश्वविद्यालयी जीवन की नीरसता में सूखा मन कुछ जरूर ऊपरी सतह पर ही सही भीगता नहीं, तो कुछ नम तो जरूर ही हो जाता है, और महीनों की उमड़ी-घुमड़ी उदासी बरसने-बरसने को आ जाती है। बरस न पाये, यह अलग बात है (कुछ भीतर भाप हो, तब न बरसे), पर बरसने का यह भाव जिस ओर से आ रहा है, उधर राह होनी चाहिए। इतनी असंख्य कौसल्याओं के कंठ में बसी हुई जो एक अरूप ध्वनिमयी कौसल्या है। अपनी सृष्टि के संकट में उसके सतत उत्कर्ष के लिए आकुल, उस कौसल्या की ओर, उस मानवीय संवेदना की ओर ही कहीं राह है, घास के नीचे दबी हुई। पर उस घास की महिमा अपरम्पार है, उसे तो आज वन्य पशुओं का राजकीय संरक्षित क्षेत्र बनाया जा रहा है, नीचे ढँकी हुई राह तो सैलानियों के घूमने के लिए, वन्य पशुओं के प्रदर्शन के लिए, फोटो खींचनेवालों की चमकती छबि-यात्राओं के लिए बहुत ही रमणीक स्थली बनायी जा रही है। उस राह पर तुलसी और उनके मानस के नाम पर बड़े-बड़े तमाशे होंगे, फुलझड़ियाँ दगेंगी, सैरसपाटे होंगे, पर वह राह ढकी ही रह जायेगी, केवल चक्की का स्वर, श्रम का स्वर ढलती रात में, भीगती रात में अनसोये वात्सल्य का स्वर राह तलाशता रहेगा- किस ओर राम मुड़े होंगे, बारिश से बचने के लिए? किस ओर? किस ओर? बता दो सखी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

खुलकर सांस लेना मुक्ति का अहसास करना, स्वतंत्रता का अहसास होना **रील पर रील चढ़ना** लगातार होना **सहज क्रम में होना** स्वाभाविक रूप में होना **उद्विग्न होना** विचलित होना, दु:खी होना **झल्लाना** गुस्सा होना, झुझलाहट होना **पटुका** दुपट्टा **दुश्चिंता** बुरे ख्याल, चिंता **मुखरित होना** सम्मुख होना **निर्वासित** देश से निकाला हुआ **धनुर्धर** धनुष को धारण करनेवाला **संगति होना** एकमत होना **परिहार** त्यागना, छोड़ना **सनातन** हमेशा **आतंकित हो उठना** भयभीत होना **सहचारिणी** जीवनसंगिनी, पत्नी **ऐश्वर्य** वैभव **शंकाकुल** शंका से मुक्त **दुर्दिन** बुरे दिन, बुरा समय **अहर्निश** रात-दिन, लगातार, हमेशा **धरा रह जाना** उपयोग में न आना **आप्लार्वित होना** डूबा हुआ होना, नहाया हुआ **मुसलधार ढरकाना** बहुत जोरो से

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) महीनों से मन उदास है क्योंकि...
  (क) घर में शौक का माहौल था।
  (ख) कुछ तबीयत ढीली, कुछ तनाव और टूटने का डर
  (ग) घर में हररोज झगड़े होते थे।

(2) लेखक अपने चिरंजीव और मेहमान को कार्यक्रम में नहीं जाने देना चाहते थे, क्योंकि...
  (क) शहरों की आजकल की असुरक्षित स्थिति ध्यान में थी।
  (ख) उन्हें उन पर भरोसा नहीं था।
  (ग) चिरंजीव और मेहमान बहुत मस्तीखोर थे।

(3) गृहिणी बहुत उद्विग्न थी, क्योंकि...
  (क) वह बीमार थी।
  (ख) शहर में कर्फ्यू लगा था।
  (ग) बारह बजे भी लोग लौटे नहीं थे।

(4) राम के साथ...
  (क) लक्ष्मण और सीता हैं।
  (ख) कोई नहीं है।
  (ग) कोई जाने को तैयार नहीं होता

(5) राम की झोंपड़ी...
  (क) जंगलों के आसपास किसी टेकरी पर है।
  (ख) टूटी - फूटी, विखरी हुई पड़ी है।
  (ग) कोई नहीं रहता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) लेखक के दिन कैसे बीतते हैं?
(2) संगीत का कार्यक्रम देखने कौन-कौन गया?
(3) नर के रूप में कौन लीला कर रहा है?
(4) सीता, वन्य पशुओं से घिरी क्या सोचती है?
(5) कुर्सी पर पड़े-पड़े सोचते-सोचते कितने बज गये?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लेखक को रात-दिन नींद क्यों नहीं आती?

(2) संगीत के कार्यक्रम में क्या सोचकर जाने दिया?

(3) लेखक के मन में एकाएक कौन-सी पंक्तियों गूंज गयी?

(4) संतान को लेकर लेखक को क्या प्रतीति नहीं होती?

(5) नदियों और सरोवरों को देखना क्यों दुस्सह हो गया?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) ''मेरे राम का मुकुट भीग रहा है'' ऐसा लेखक - क्यों कहते हैं?

(2) राम के मुकुट को लेकर उनके मन में कैसे - खयाल आते हैं?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौशल्या है।

(2) कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना की थी? और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गयी है?

6. निम्नलिखित विधानों की पूर्ति के लिए दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए:

(1) दूर कोई भी आहट होती तो....

(अ) उदग्र होकर फाटक की और देखने लगता।

(ब) एक डर मन में पैदा हो जाता।

(क) चिंता दूर होती नजर आती।

(2) सोचते-सोचते लगा कि...

(अ) इस देश का क्या होगा?

(ब) इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौशल्या है।

(क) घर में कोई आकर दस्तक दे रहा है।

(3) नदियाँ और सरोवरों को देखना दुस्सार हो गया है- क्योंकि...

(अ) उसमें बाढ़ आई है।

(ब) वह सूखे पड़े हैं।

(क) जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : प्रस्तुत निबंध रचना में से अपनी पसंद के कुछ वाक्य छाँटकर लिखो।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यानिवास मिश्र की अन्य रचनाएँ छात्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

व्याकरण : वाक्य विचार

विभिन्न शब्दों का सानुशासित ध्वनि समूह जिसमें विशेष अभिप्राय का बोध होता है, वाक्य कहलाता है। वाक्य में विभिन्न शब्दों का सार्थक प्रयोग होता है। कहीं-कहीं लम्बे-लम्बे वाक्यों से छोटे-छोटे अर्थ निकलते हैं तो कहीं-कहीं अति लघु वाक्यों से लम्बे अर्थों का बोध भी होता है, जैसे - 'रात के बाद सूर्योदय काल के प्राकश में सुगंधित फूलों के रंगों से वह वाटिका खिल उठी थी।' इस वाक्य से यही अर्थ निकला, सुबह रंगीन पुष्प वाटिका में खिले।

'बचाओं!' यह भी एक वाक्य है। इस वाक्य में कौतूहल रहस्य रोमांच आतुरता आह्वान प्रेरणा आर्तनाद जैसी स्थितियाँ गौण हैं।

शब्द भाषा की प्रारम्भिक अवस्था के प्रतीक हैं तो वाक्य उसकी विकासावस्था के सभ्यता के, विकास के साथ वाक्यों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। विभिन्न लोग विभिन्न प्रकार के वाक्य रचनाकार भावप्रकाशन करते हैं, शिक्षितों की वाक्य रचना व्याकरण सम्मत होती हैं, व्याकरण के सामाय नियम होते हैं। जिनसे वाक्य रचे जाते हैं। स्पष्टता वाक्य रचना की सबसे बड़ी विशेषता हैं। संक्षिप्तता, माधुर्य, सन्तुलन आदि भी वाक्यों के गुण हैं। वाक्य में आकांक्षा, योग्यता एवं क्रम-इनका होना अत्यावश्यक है। वाक्य के एक पद को सुनकर अन्य को सुनने की स्वाभाविक ललक ही आकांक्षा है, जैसे-दिनरात, परिश्रम करते हैं, वाक्य में अधूरापन है- 'सभी दिनरात परिश्रम करते हैं। में आकांक्षा की पूर्ति हुई। यहाँ 'सभी' की आकांक्षा थी। प्रत्येक वाक्य में शब्द, पद, अर्थ-बोधन में पूर्णसहायक होना चाहिए, जैसे-मजदूर लकड़ी से दूध दुहता है, इसमें 'योग्यता' का अभाव है क्योंकि लकड़ी से दूध नहीं दुहा जा सकता है, अत: 'मजदूर भैंस से दूध दुहता है। यह वाक्य योग्यता सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार क्रम का विधान भी वाक्यों में अत्यावश्यक यह है, जैसे - 'हलुआ मैंने खाया कब।' इसका क्रम मैंने हलुआ कब खाया? ही उचित होगा।

वाक्य विग्रह (Analysis)

वाक्य के शब्दों, पदों एवं वाक्यांशो को अलग-अलग करके उनका पारस्परिक सम्बन्ध बताना वाक्य विग्रह कहलाता है, इसे वाक्य विश्लेषण भी कहा जाता है।

प्रत्येक वाक्य से कोई न कोई अभिप्राय अवश्य निकलता है। इसी अभिप्राय को दो खण्डों में विभाजित कर दिया जाता है- 1. उद्देश्य 2. विधेय

वाक्य का वह खण्ड जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उद्देश्य कहते हैं।

वाक्य का वह खण्ड, जिसमें उद्देश्य के विषय में प्रकाश पड़ता है, विधेय कहते हैं।

मोहन दौड़ता है।

इस वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है तथा 'दौड़ता' है विधेय।

उद्देश्य (Subject)

उद्देश्य का प्रधान अंश कर्ता होता है, कर्ता विस्तार तक उद्देश्य की स्थिति रहती है जैसे- 'दशरथ पुत्र वीर राम ने रावण को मारा इसमें दशरथ के पुत्र वीर राम ने उद्देश्य है तथा रावण को मारा-विधेय।

विधेय में क्रिया तथा क्रिया का विस्तार (कर्मसहित) होता है।

उद्देश्य में कर्ता चार प्रकार से प्रयुक्त होते हैं-

संज्ञा से - राम घर जाता है।

सर्वनाम से - वह लौट आया होगा।

विशेषण से - बुद्धिमान सफलता प्राप्त करते हैं।

क्रियार्थक संज्ञा - दौड़ना एक अच्छा व्यायाम है।

इसी कर्ता का चार रूपों में विस्तार होता है, जिसे कर्ता विस्तार कहा जाता है,

जैसे-

विशेषण से	-	ईमानदार लड़का गया
सम्बन्धबोधक विशेषण से	-	जापान का सिपाही मारा गया।
सामाधिकरण से	-	बादशाह औरंगजेब क्रूर था।
पदबंध से	-	खाकी-खाकी नेकर वाले चपरासी ने कर्ता की ही भाँति कर्म का विस्तार होता है।

विधेय (Predicate)

विधेय की रचना प्रक्रिया निम्नलिखित प्रकार से होती है-

क्रिया से	- गाय आयी।
कर्म और क्रिया से	- गाय घास खा गई (सकर्मक क्रिया के होने पर)
कर्म के विस्तार और क्रिया से	- गाय थोड़ी सी कुछ घास खा गई
पूरक से और क्रिया से	- वह तेज भागा

वह बहुत धीरे चलता है। वह डरते-डरते चढ़-चढ़ कर गिरा। जो शब्द कर्ता का विस्तार करते हैं वे ही कर्म का विस्तार करते हैं। जैसे-बुद्धिमान् पुरुष ही यह भेद जानते हैं। इसमें बुद्धिमान् शब्द कर्म के काम का भी विस्तार करता है और कर्ता का भी।

क्रिया के विस्तार एवं क्रिया से - घोड़ी तेज दौड़ी। उसने बहुत अच्छा गाया।

विधेय में इसी प्रकार का विस्तार भी किया जाता है-

क्रिया विशेषण - तुम वहाँ क्यों जा रहे हो?

विशेषण - वह बहुत हकलाता है।

कृदन्त - वह रोता हुआ जा रहा था।

क्रिया की विशेषता सूचक वाक्यांश- वह बहुत ही घबड़ाहट में गया है। क्रिया विस्तार-करण, सम्प्रदान, अपादान, अपादान, अधिकरण कारक के अनुसार भी होता है-

करण - महेश ने कुल्हाड़ी से उसे मारा।

सम्प्रदान - नीरज के लिए साइकिल लाया हूँ।

अपादान - वर्मा जी मकान से गिर पड़े।

अधिकरण - वह रेल की छत पर बैठा था।

इन उपर्युक्त आधारों पर वाक्य का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है - **उस बहादुर लड़के ने** शेर की गर्दन पर जो का मुक्का मारकर उसे गिरा दिया?

उस कर्ता विस्तार। बहादुर कर्ता विस्तार। लड़के ने कर्ता प्रधान। शेर की कर्म प्रधान। गर्दन पर कर्म विस्तार। जोर का कर्म विस्तार। मुक्का मारकर पूरक विस्तार। उसे कर्म विस्तार। गिरा दिया क्रिया प्रधान।

वाक्य भेद

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के आठ भेद होते हैं-

विधि वाचक, निषेधवाचक, आज्ञार्थक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, सन्देह वाचक, इच्छा वाचक, संकेत वाचक।

1. विधिवाचक वाक्य (Affirmative sentence) - जिस वाक्य से किसी क्रिया के सम्पन्न होने का बोध हो, जैसे-

भाई साहब आज प्रयाग चले गए। राम ने खाना खाया। मेरे जाने के बाद ही वह आया था। नीरज को स्कूल गए दो घंटे हो गए। प्रेमदत्त मैथिल ने रामायण पढ़ी। गीता रसोईघर में काम कर रही है। सन् 1947 में हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

2. निषेधवाचक वाक्य (Negative Sentence) - जिस वाक्य में किसी पक्ष द्वारा आदेशात्मकता का

बोध हो, जैसे-

जवाहर लाल भार्गव की अदालत में उपस्थित हों। तुम आज ही वहाँ चले जाओ। हरीश को यह काम करना पड़ेगा। भाग जाओ। सीधे घर चले आओ, तुरन्त पत्र लिखना।

4. प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence) - इस प्रकार के वाक्यों में किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति से कुछ प्रश्न किया जाता है, जैसे-

इसका अर्थ बतलाइए? तुम घर कब जाओगे? तुम्हारी माताजी का क्या नाम है? तुम कब सोते हो? हरीश को अखिर क्या हो गया? तुम कॉलेज क्यों नहीं गए?

तुम अभी तक क्यों सो रहे हो? मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हें क्या रोग है? अन्दर कौन है? तुज्हारे पिताजी क्या करते हैं? क्या आज विद्यालय में अवकाश है?

5. विस्मयादिबोधक वाक्य (Exclamatory Sentence) - जिस वाक्य में कुछ अश्चर्य, शोक, हर्ष आदि के भाव व्यक्त होते हाँ, जैसे- अहा! कैसा सुहाना मौसम है।

वाह वाह! क्या लाजवाब चीज है। अरे! तुम कब आ गए? शाबाश! तुमने खूब अंक प्राप्त किए। हाय! यह क्या हुआ? अरे! तुम असफल हो गए। राम राम! बहुत अनर्थ हो गया। अहा। क्या सुहावना मौसम है। नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।

6. संदेह वाक्य (Sentence Indicating Doubt) - जिस वाक्य से संभावना, शंका, संदेह आदि अर्थों का बोध हो जैसे-

संभवत: वह आज आए। शायद आज सर्दी पड़े। शायद पिताजी लौट आएँ। शायद आज वर्षा हो। वह अभी पहुँचा भी होगा या नहीं। शायद आज वह आए। वह पढ़ता होगा, लेकिन मुझे क्या पता? रेल दुर्घटना में अपना तो कोई नहीं फँसा? शायक यह सोना शुद्ध हो। हो सकता है पं. मैथिल उनसे मिले हों। उसने बुलाया हो।

7. इच्छा वाचक वाक्य (Illative Sentence) - जिस वाक्य से शुभकामना, सहानुभूति, समर्थन, इच्छा आदि सूचित हों, जैसे-

मैं इसे डॉक्टर बनाऊँगा। भगवान् आपको चिरायु करे। आप प्रसन्न रहिये। प्रभु आपकी कामना पूरी करे। मैं भी वही जा जाऊँगा। तुम यहाँ होते हो क्या अच्छा होता। नीलम, को मैं संतुष्ट करूँगा। भगवान् भला करे। दूधों नहाओ पूतों फलो।

8. संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence) - इस प्रकार के वाक्य में शर्त या संकेत के भाव निहित रहते हैं, जैसे-

वर्षा होती तो मैं बाजरा बोता। तुम खाओ तो मैं संतरे लाऊँ।

यदि नौकरी मिल जाती तो विवाह हो जाता। यदि श्रम करते तो पेट भर लेते। यदि पढ़ते तो पास हो जाते। यदि तुम आ जाओ तो मैं चल सकूँगा। लॉटरी खुल जाती तो मजा आ जाता। यदि वह रूठ गया तो गजब हो जाएगा। मैं मुम्बई गया तो तमको साड़ी ले आऊँगा। यदि तुम कहो, तो जाऊँ।

वाक्य-भेद एवं विश्लेषण (Types of Sentence & Analysis)

वाक्य भेद : रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं- 1. साधारण व सरल वाक्य, 2. मिश्रवाक्य, 3. संयुक्त वाक्य।

1. साधारण व सरल वाक्य (Simple Sentence) - जिस वाक्य में एक ही क्रिया एवं एक ही कर्ता होता है उसे साधारण व सरल वाक्य कहते हैं इसमें एक ही उद्देश्य एवं एक ही विधेय होता है, जैसे-

राम घर गया। वह पुस्तक पढ़ता है। वह फल खाता है। वह है, रमेश फल खाता है। मैं दूध पीता हूं। मैं खाता हूँ। तुम हँसते हो। तुम घर जाते हो। मैं कल जाऊँगा। इनमें कर्ता उद्देश्य तथा क्रिया विधेय रहती है।

2. मिश्रित वाक्य (Complex Sentence) - जिस वाक्यमें कोई अन्य उपवाक्य अथवा अंगवाक्य मिला हो, उसे मिश्रवाक्य कहते हैं। जैसे-

मैं जानता हूँ कि वह अभी आया है। जब मैंने उसे मारा तुम वहाँ थे ही नहीं।

इनमें, मैं जानता हूँ, मैंने उसे मारा साधारण वाक्य है तथा कि वह अभी आया है तथा तुम वहाँ थे नहीं अंकवाक्य है, उस प्रकार दोनों के योग से बना यह वाक्य मिश्रवाक्य कहलाता है। मिश्रित वाक्य में संज्ञा उपवाक्य या विशेषण उपवाक्य या क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं।

3. संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) - साधारण तथा मिश्रवाक्यों का मेल जहाँ अव्ययों के माध्यम से होता हो वहाँ संयुक्त वाक्य कहा जाता है। जैसे-

जैसे ही तुम गए वह छत से कूदा और उसके पैर में चोट लग गई तभी मैं उसे लेकर अस्पताल गया फिर डॉक्टर वर्मा के पास ले गया लेकिन वह मिले नहीं। यदि गर्मी पड़ेगी तो हम नहीं आएँगे। छत पर पढ़ो अथवा नीचे जाओ। सत्य बोलो लेकिन कटु सत्य नहीं।

इस प्रकार के वाक्यों में एकाधिक उपवाक्यों का मिश्रण रहता है।

सरल वाक्य का विश्लेषण :

सरल वाक्य के विश्लेषण (वाक्य विग्रह) मैं निम्नलिखित बातें दिखाते हैं-

1. उद्देश्य, 2. उद्देश्य का विस्तार, 3. निधेय, 4. विधेय का विस्तार। इसके अन्तर्गत कर्म-कर्म का विस्तार, क्रिया तथा क्रिया का विस्तार आदि भाग। उदाहरण-

मिश्र वाक्य (Complex Sentence) - मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य होता है तथा अन्य आश्रित-उपवाक्य, आश्रित-उपवाक्य एकाधिक भी हो सकते हैं। आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. संज्ञा उपवाक्य (Nominal Clause) - मिश्र वाक्य में यह संज्ञा अथवा संज्ञा पदबन्ध के समान पर आता है। जैसे गणेश कब चाहता था कि उसका बेटा चोर बने।

इस मिश्रित वाक्य में 2 वाक्य हैं- 1. गणेश कब चाहता था- प्रधान उपवाक्य (Principal Clause) 2. कि उसका बेटा चोर बने- संज्ञा उपवाक्य।

2. विशेषण उपवाक्य (Adjective Clause) - जो आश्रित उपवाक्य ((Subordinate Clause) सीधे किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के माध्यम से किसी संज्ञा की विशेषता प्रकट करे। जैसे- वह व्यक्ति गाँव छोड़कर चला गया, जो व्यवहार में बहुत अच्छा था। इस मिश्रवाक्य में 2 वाक्य हैं- 1. वह व्यक्ति गाँव छोड़कर चला गया- प्रधान उपवाक्य। 2. जो व्यवहार में बहुत अच्छा था- विशेषण उपवाक्य जो सम्बन्धवाचक विशेषण द्वारा प्रधान उपवाक्य से जुड़ा है।

3. क्रिया विशेषण उपवाक्य (Adverb Clause) - जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता प्रकट करता है, जैसे जब भी उस बीमार औरत को देखता हूँ, मेरा हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो जाता है। जहाँ-जहाँ गाँधी जी गए, वहाँ उनका स्वागत हुआ।

मुख्य/प्रधान उपवाक्य (Principal Clause) : ऊपर दिए गए आश्रित उपवाक्यों के विपरीत कोई ऐसा उपवाक्य जो किसी अन्य के आश्रित नहीं होता प्रधान उपवाक्य कहलाता है। प्रधान उपवाक्य के पूरक के रूप में संज्ञा विशेषण तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं, जैसे- वह पुस्तक रामचरित मानस है, जिसकी तुम इतनी प्रशंसा कर रहे हो, मेरे परिश्रम का उद्देश्य है कि मैं प्रथम श्रेणी प्राप्त कर सकूँ।

मिश्रवाक्य : मिश्र वाक्य का विश्लेषण इस प्रकार किया जाता है-

1. उद्देश्य 2. उद्देश्य का विस्तार, 3. योजक 4. विधेय में क्रिया, 5. क्रिया का विस्तार, 6. पूरक 7. कर्म, 8 कर्म का विस्तार

उदाहरण-1. जो व्यक्ति ईमानदार होता है, उसका सभी आदर करते हैं। 2. उसने कहा कि मेरे चाचा को दो वर्ष का कारावास हो गया।

संयुक्त वाक्य का विश्लेषण :

इस विश्लेषण का रूप लगभग मिश्र वाक्य जैसा ही होता है, वही रीति होता है। इसमें पहले प्रधान तथा मिश्रित वाक्य अलग-अलग छाँट कर लिख लिए जाते हैं। योजक तथा समुच्चय बोधक अव्यय की निर्देश साथ-साथ कर लिया जाता है, इसके

अध्याहार :

कुछ वाक्यों में बहुत से ऐसे शब्दों को छोड़ दिया जाता है, जिनके प्रयुक्त न होने से वाक्यार्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती। इस प्रक्रिया को अध्याहार कहते हैं।

अध्याहार के प्रयोग से भाषा अधिक समर्थ हो उठती है। काव्यांश तथा मुहावरों में इसका अधिक प्रयोग होता है।

'वह हिरण हो गया' अर्थात् वह हिरण की तरह तेजी से भाग गया। इस वाक्य के 'की तरह तेजी से' वाक्यांश के लोप को ही अध्याहार कह सकते हैं।

इस प्रकार के वाक्य दो तरह के होते हैं-

1. संकुचित, 2. संक्षिप्त

1. जब वाक्य में प्रथम बन्द में जो अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है उसे साथ के उपवाक्य अथवा अंगवाक्य में दुहराया नहीं जाता। जैसे-

तुमने उसे मारा और भाग गए।

अन्तिम उपवाक्य 'और भाग गए' का अर्थ है 'और तुम उसे मारकर भाग' गए। इसमें अनेक उद्देश्य के लिए एक विधेय का जब प्रयोग होता है-

वह इतना बहादुर है जितना दारासिंह

वहाँ एक चाकू और एक चप्पल मिली।

कभी-कभी प्रश्नोत्तर में प्रश्नवाक्यार्थ को नहीं दुहराया जाता, क्या तुम बम्बई से आ रहे हो? नहीं। तुमने चित्रलेखा उपन्यास पढ़ा है? हाँ, पढ़ा है।

2. संक्षिप्त-ऐसे वाक्य में व्याकरणिक दृष्टि से आवश्यक शब्द छोड़ दिए जाते हैं। जैसे- 1. दुलत्ती मारी - गधे ने दुलत्ती मारी

वाक्य रचना के साधारण नियम

वाक्य को व्यवस्थित क्रम में रखने के लिए कुछ सामान्य नियम है। व्याकरण की दृष्टि से वाक्य के संयत रूप को पदक्रम कहा जाता है।

वाक्य को शुद्ध बनाने के लिए क्रम अन्वय तथा प्रयोग सम्बन्धी कुछ नियम ध्यातव्य हैं-

1. क्रम (Order) :

वाक्य का व्याकरण सम्मत क्रम इस प्रकार होना चाहिए-

(अ) आरम्भ में कर्ता, मध्य में कर्म तथा सबसे अन्त में क्रिया होती है।

जैसे- नीरज पुस्तक पढ़ता है। वह घर गया।

कर्ता - नीरज, वह,। कर्म-घर। क्रिया-पढ़ता है, गया।

(इ) कर्ता से पहले कर्ता का विस्तार आता है, इसमें विशेषण का कर्ता से पहले प्रयोग होता है। जैसे- सुन्दर लड़की नाच रही थी। श्वेत घोड़ा दौड़ रहा है।

क्रिया से पहले क्रिया-विस्तार अथवा विधेय रखा जाता है, जैसे-

वह रो-रो कर कह रहा था। वह खाकर सो गया।

(उ) कर्ता और कर्म के मध्य में कारक अपने क्रम से आते हैं, जैसे-

मोहन ने स्कूल में टेबिल से लिखने के लिए हाथ में नोटबुक उठाई।

(ए) विस्मयादिबोधक तथा सम्बोधन सबसे पहले आता है, जैसे-

अरे! यहाँ आओ। अरे! तुम इधर कैसे? अहा! क्या कहना? मोहन! तुम चले ही जाओ।

(च) क्रिया विशेषण कर्ता-विशेषण की भाँति क्रिया से पहले प्रयुक्त होता है- वह बहुत खाता है। नीरज कम पढ़ता है। तुम सुस्त रहते हो।

(छ) प्रश्नवाचक शब्द क्रिया से पहले प्रयुक्त होता है तथा 'हाँ, न' के उत्तर वाले प्रश्नवाचक वाक्य

के 'कदर' पहले जुड़ेगा।

तुम यहाँ कैसे आए? वह क्यों नहीं आया? क्या तुम खाओगे? तुम कौन हो? क्या तुम छात्र हो? क्या तुमने दूध पी लिया?

प्रश्नवाचक अथवा कोई सर्वनाम विशेषण रूप में प्रयुक्त हो तो वे संज्ञा से पूर्व ही आएँगे, जैसे- कौन बालक आया है? यहाँ कितनी पुस्तकें हैं?

प्रश्न पूछा जाता है, जैसे-क्या, हरी आ गया?

अन्वय (Co-Ordination) :

वाक्य की क्रम-संगति अथवा शब्दों के ताल-मेल को अनव्य कहते हैं।

इसमें लिंग, वचन, पुरुष और काल का एक-दूसरे से ताल-मेल ठीक बैठाया जाता है। स्त्रीलिंग कर्ता के लिए पुल्लिंग क्रिया रूप का प्रयोग नहीं हो सकता। इसी प्रकार बहुवचन संज्ञा के लिए एकवचन की क्रिया का प्रयोग असंगत है।

इसमें क्रिया और कर्ता का तालमेल विशेष रूप से संतुलित रखा जाता है। जैसे-

कर्ता यदि कारक रहति है तो क्रिया के वचन, लिंग, पुरुष कर्ता के अनुरूप ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे-

नीरज आ रहा है। वह खा रहा है। पंकज पानी पी रहा है। राम हँस रहा है। उमा रो रही है। गीता लिख रही है। वे चले जा रहे हैं। पवनकुमार आ रहा है।

यदि वाक्य में कारक रहित एकाधिक कर्ता हो तथा अन्तिम कर्ता से पहले और तथा एवं संयोजक लगा हो तो क्रिया उसी लिंग और वचन के अनुसार बहुवचन में प्रयुक्त होती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रयुक्त सभी कारक रहित कर्ता एक ही लिंग वचन तथा पुरुष के हों, यथा-

हरीश नीरज तथा पंकज आते हैं। पुष्पा, मधु, पप्पी और ज्योति आती हैं।

यदि वाक्य में प्रयुक्त दो कर्ता भिन्न लिंग के हों और द्वन्द्व समास के रूप में उनका प्रयोग होता हो तो उनकी क्रिया पुल्लिंग बहुवचन होंगी, जैसे-

शिव-पार्वती प्रसन्न हुए। माता-पिता खुश हो गए। कुत्ते-बिल्ली लड़ रहे थे। स्त्री-पुरुष जा रहे थे।

यदि भिन्न लिंगी एक वचन कर्ता एकाधिक हो तथा अन्तिम कर्ता से पहले 'और' संयोजक लग रहा हो तो क्रिया का रूप पुल्लिंग बहुवचन ही होगा, जैसे-

सीता और राम वन के लिए प्रस्थान करते हैं। गीता और रमेश दिल्ली जा रहे हैं। अंशु और रेखा अभी तक नहीं आए।

यदि अनेक कर्ता भिन्न लिंग वचन, भिन्न पुरुष के हों तो क्रिया बहुवचन होंगी किन्तु क्रिया का लिंग अन्तिम कर्ता के अनुरूप होगा, जैसे-

राम, मदन और लड़कियाँ आ रही हैं। एक लड़का दो सिपाही तथा चार स्त्रियाँ जा रही थीं।

कुछ अन्य ध्यातव्य बातें :

जब किसी बात पर अधिक जोर दिया जाता है तो उसे बार-बार दुहराया जाता है, जैसे-

मैं जाऊँगा, आऊँगा, आऊँगा। हों, हों, हों तुम्हें जाना होगा। नहीं, नहीं, नहीं। मैंने कह दिया मुझे नहीं करना है। झूँठ, झूँठ, बिल्कुल झूँठ।

किसी विशेष बात को स्पष्ट रूप से न कहना हो और मात्र संकेत करना हो तो हाईफन लगाकर वाक्य अधूरा छोड़ दिया जाता है, जैसे-

अगर तुम न आए तो...   या तो चीज मुझे दो अन्यथा...

अगर किसी बात पर विशेष ध्यान दिलाना हो और लेखन समाप्ति पर भी कुछ कहना शेष तो पुनश्च लिखकर आगे बात कही या दुहराई जा सकती है, जैसे-

पुनश्च, आप को यहाँ अवश्य आना है।

अप्रचलित तथा क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग त्याज्य है।

निरर्थक शब्दों का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।

वाक्य में पूर्वापर सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए।

शिष्ट और श्लील शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। आदेशात्मक निर्देश भी सभ्यतानुरूप दिए जाने चाहिए।

वाक्य परिवर्तन/वाक्यांतरण (Transforming of Sentences) :

वाक्य के प्रकार को दूसरे प्रकार में परिवर्तित करने को वाक्यान्तरण कहते हैं। वाक्य परिवर्तन के समय यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य का अर्थ न बदलने पाए।

विधिसूचक से निषेध वाचक वाक्य बनाना :

वह आदमी ईमानदार है- वह आदमी बेईमान नहीं है। वह बहुत खाता है- वह कम खाता है। कालू अशिक्षित है- कालू पढ़ा-लिखा नहीं है। राजू अकर्मण्य है- राजू कोई काम नहीं करता। गीता खाना बनाएगी- गीता खाना नहीं बनाएगी।

निश्चयवाची से प्रश्नवाची तथा प्रश्नवाची से निश्चयवाची :

उसे अब क्या करना है? उसे अब कुछ नहीं करना है। अब क्या मैं वहाँ जाए बिना रह सकता हूँ। गाँधी जी को कौन नहीं जानता? गाँधी जी को सब जानते हैं। चाचा 'जी कल आएँगे?' क्या चाचा जी कल आएँगे? वे मिलकर नहीं खेलेंगे-क्या वे मिलकर नहीं खेलेंगे?

विस्मयादि बोधक वाक्य से सामान्य वाक्य :

ओह! इतना काला!- वह बहुत काला है। अरे! यह क्या हुआ!- यह बहुत आश्चर्यजनक है। वाह! कितना सुन्दर विद्यालय है- बहुत सुन्दर विद्यालय है।

वाच्यान्तरण :

उससे यह किया नहीं जा सकता-वह यह नहीं कर सकता। तुमसे यह नहीं निभा? जा सकता-तुम इसे नहीं निभा पाए। तुमसे लड्डू खाए नहीं जा सकते-तुम लड्डू खा नहीं सकते। मैं आम नहीं खाता- मुझसे आम नहीं खाया जाता। हामिद ने पेन खरीदा-हामिद के द्वारा पेन खरीदा गया। मैं चाय नहीं पीता-मुझसे चाय नहीं पी जाती। वह नहीं दौड़ा-उससे दौड़ा नहीं गया। उसने अनेक आतंकवादियों को मारा-उसके द्वारा अनेक आतंकवादी मारे गये।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य :

जो व्यक्ति मेहनत से घबड़ाते हैं, सफल नहीं होते। मेहनत से घबड़ाने वाले व्यक्ति सफल नहीं होते। वह इसलिए पढ़ता है कि पास हो जाए। वह पास होने के लिए पढ़ता है। सोहन डॉक्टर साहब के यहाँ पढ़ने गया क्योंकि उसे अँग्रेजी पढ़नी है। सोहन अँग्रेजी पढ़ने के लिए डॉक्टर साहब के यहाँ गया है। मैंने एक छात्र को देखा जो बीमार था- मैंने एक बीमार छात्रा को देखा।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य :

(1) **संयुक्त :** रात हुई और गहरा अँधेरा छा गया।
सरल : रात होने पर अँधेरा छा गया।

(2) **संयुक्त :** लड़ाई हुई और वह मारा गया।
सरल : वह लड़ाई में मारा गया।

(3) **संयुक्त :** अध्यापक चला गया और लड़के कूदने लगे।
सरल : अध्यापक के चले जाने पर लड़के कूदने लगे।

(4) **संयुक्त :** वह घर आया और माता जी से मिला।
सरल : वह घर आकर माता-जी से मिला।
संयुक्त : उसने माँगा था और उसे मिल गया।
मिश्र : उसने जो माँगा था, उसे मिल गया
संयुक्त : रमेश ने मुझे देखा और घबरा गया

मिश्र : जब रमेश ने मुझे देखा तो वह घबरा गया।

वाक्य-संश्लेषण (Sythesis) :

वाक्य-संश्लेषण का अर्थ है कि दो या दो से अधिक वाक्यों का एक वाक्य बनाना। मूलवाक्य सरल वाक्य होते हैं, एक से अधिक सरल वाक्यों से सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्य बनाए जा सकते हैं, जैसे-

(क) सरल से सरल वाक्य :

राम आया। लक्ष्मण आया। भरत आया। राम, लक्ष्मण और भरत आए। सुरेश खेल रहा था, रमेश खेल रहा था, गणेश खेल रहा था। सुरेश, रमेश और गणेश खेल रहे थे। सुशील विद्यालय से घर आया, उसने बस्ता रखा, पानी पिया, सीटी बजाई, सुशील खेलने चला गया। सुशील विद्यालय से घर आते ही बस्ता रखकर, पानी पीकर सीटी बजाते हुए खेलने चला गया।

(ख) सरल से मिश्र वाक्य :

तुमने किया था। फल मिल गया है। जैसा जो तुमने किया था, फल मिल गया है। उसने शास्त्र पढ़ें हैं। वह विद्वान है। वह शास्त्रार्थ में हार गया। जो शास्त्रपणि विद्वान है, वह शास्त्रार्थ में हार गया। बिहार में एक गाँव था, गाँव बड़ा था वह चारों ओर से जंगल से घिरा था। जंगल घना था, उस गाँव में कुछ आदिवासी रहते थे। बिहार में चारों ओर से घने जंगल से घिरा एक बड़ा गाँव था, जिसमें कुछ आदिवासी रहते थे।

(ग) सरल से संयुक्त वाक्य :

घण्टी बजी। छुट्‌टी हुई। बच्चे घर गए। छुट्‌टी होने पर घण्टी बजी और बच्चे घर गए। घण्टी बजते ही छुट्‌टी हुई और बच्चे घर गए। हमारे विद्यालय में उत्सव था। उत्सव वार्षिक था, उत्सव में अनेक विद्वान पधारे, उत्सव में कुछ विद्वान धर्म पर बोले, कुछ ने विज्ञान पर भाषण दिया। विद्यालय के वार्षिकोत्सव में अनेक विद्वान पधारे और वे धर्म तथा विज्ञान पर बोले।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए।

(1) उद्देश्य किसे कहते हैं?

(2) विधेय किसे कहते हैं?

(3) निषेधवाचक वाक्य किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) प्रश्नवाचक वाक्य किसे कहते हैं?

(2) मिश्र वाक्य किसे कहते हैं?

(3) संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : वाक्य के प्रकारों के अनुसार वाक्य संकलित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को वाक्यों के प्रकारों के संबंध में एक चार्ट बनाने हेतु प्रेरित कीजिए।

⊙

व्याकरण : वाक्य अशुद्धि शोधन

वाक्य रचना हेतु हिन्दी व्याकरण में कुछ नियम हैं। उन नियमों पर ध्यान देने से वाक्य-रचना अशुद्ध होती है। वाक्य रचना विषयक अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैं-

1. पद-क्रम सम्बन्धी, अशुद्धियाँ
2. अन्विति या संगति सम्बन्धी अशुद्धियाँ
3. वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ
4. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ
5. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ
6. द्विरुक्ति सम्बन्धी, अशुद्धियाँ
7. वाच्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ
8. अनुपयुक्त शब्द प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1. पद क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ

वाक्य में शब्दों का एक निश्चित क्रम होता है। हिन्दी वाक्य रचना के अनुसार पदों का क्रम निम्न प्रकार होना चाहिए-

1. कर्ता, 2. कर्म, 3. क्रिया।

जैसे- 'वह खाना रहा है' वाक्य में 'वह' 'कर्ता', 'खाना' 'कर्म' तथा 'खा रहा है' 'क्रिया' है। इस पदक्रम को यदि हम 'खा' रहा है वह खाना।' इस प्रकार लिखें तो अशुद्ध होगा।

कर्ता, कर्म तथा क्रिया के विशेषणों का प्रयोग उनसे पूर्व ही किया जाता है, यथा- ''वह रुचिकर खाना धीरे-धीरे खा रहा है।''

पदक्रम-सम्बन्धी अशुद्धियों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित प्रकार हैं-

1.	पाठ तुमको अभी तक हुआ नहीं है याद क्या?	(अशुद्ध)
	क्या तुमको पाठ अभी तक याद नहीं हुआ है?	(शुद्ध)
2.	मैंने उत्तर दिया जब उसने पूछा तो मुझे।	(अशुद्ध)
	जब उसने मुझे पूछा तो मैंने उत्तर दिया।	(शुद्ध)
3.	उसने एक फूल की माला खरीदी।	(अशुद्ध)
	उसने फूलों की एक माला खरीदी।	(शुद्ध)
4.	बहुत से यूनान के विद्वान यहाँ आए हैं।(अशुद्ध)	
	यूनान के बहुत से विद्वान यहाँ आए हैं।(शुद्ध)	
5.	ज्ञात है तुम्हें मोहन का पता गाँव का क्या।	(अशुद्ध)
	क्या तुम्हें मोहन का गाँव का पता ज्ञात है।	(शुद्ध)
6.	चल रहा है धीरे-धीरे वह	(अशुद्ध)
	वह धीरे-धीरे चल रहा है।	(शुद्ध)

'अन्विति' संगति या सही मेल होता है। वाक्य में प्रयुक्त पदों की परस्पर संगति स्थापित करना ही अन्विति है। इस अन्विति के अनेक रूप होते हैं, यथा-

(क) कर्ता एवं क्रिया की अन्विति : जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार ही क्रिया का लिंग एवं वचन निश्चित होते हैं, जैसे-

राधा पढ़ती है। यहाँ राधा स्त्रीलिंग है, अत: क्रिया भी स्त्रीलिंग की प्रयुक्त हुई है। यथा–

1. घोड़ा दौड़ता है 2. गाय दौड़ती है। (लिंग सम्बन्धी अन्विति)

1. घोड़े दौड़ते हैं 2. गायें दौड़ती है। (वचन सम्बन्धी अन्विति)

विशेष–1. जब कर्ता के साथ 'ने' कारक चिह्न जुड़ा होता है, तो क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार निश्चित होता है, यथा– उसने पुस्तक पढ़ी। यहाँ पुस्तक में क्रिया का लिंग 'पुस्तक' के आधार पर स्त्रीलिंग रखा गया है। जैसे–

1. रघु ने पत्र पढ़ा। 2. रघु ने पुस्तकें पढ़ीं।

2. यदि दो कर्ताओं में से एक मध्यम पुरुष का हो तो मध्यम पुरुष, बहुवचन की ही क्रिया प्रयुक्त होगी, यथा–

1. तुम और मैं कल चलेंगे। 2. तुम और कल्याण कब जाओगे?

3. यदि दो कर्ता अथवा दो से जुड़े हों, तो अन्तिम कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष निश्चित होगा यथा–

1. लड़का या लड़की जाएगी। 2. स्त्रियाँ या लड़के बैठेंगे।

4. कर्ता के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए, एक वचन कर्ता के साथ ही बहुवचन की क्रिया का प्रयोग किया जाता है, जैसे– चाचाजी आ रहे हैं। (चाचाजी–एकवचन, आ रहे हैं–बहुवचन)

(ख) पुरुष के अनुसार कर्ताओं की अन्विति : यदि किसी वाक्य में विभिन्न पुरुषों के एक से अधिक कर्ताओं का प्रयोग हो, तो उनको निश्चित क्रम में रखा जाता है। पहले मध्यम पुरुष फिर अन्य पुरुष और अन्त में उत्तम पुरुष का प्रयोग होना चाहिए, जैसे–

1. तुम और गणेश कहाँ जा रहे हो? 2. तुम, श्याम और मैं घूमने जाएँगे।

(ग) विशेष्य तथा विशेषण की अन्वति : विशेषण का लिंग और वचन अपने विशेष्य के अनुसार होता है, यथा–

अच्छा लड़का (दोनों पुल्लिंग, एकवचन)

अच्छे लड़के (दोनों पुल्लिंग, बहुवचन)

अच्छी बालिका (दोनों स्त्रीलिंग, एकवचन)

अच्छी बालिकाएँ (दोनों स्त्रीलिंग, बहुवचन)

बोलचाल में अच्छी एक वचन ही बोलते हैं।

(घ) संज्ञा और सर्वनाम की अन्विति : वाक्य में किसी सर्वनाम का प्रयोग जिस संज्ञा के स्थान पर है, उसी के लिंगविषयक अशुद्धियों के आप उदाहरण अनुसार उसके लिए और वचन निश्चित होते हैं, यथा–

1. चोर भागा क्योंकि वह चोरी कर रहा था। (अशुद्ध)

2. बालिकाओं ने कहा कि वे घूमने जा रही हैं। (शुद्ध)

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

हिन्दी में दो वचन होते हैं, एकवचन तथा बहुवचन। एक संख्या का बोध करानेवाला शब्द एकवचन तथा एक सर्वनाम का सही वचन में प्रयोग न करना वचन सम्बन्धी अशुद्धि मानी जाती हैं, यथा–

1. तीन घटना घटित हुईं। (अशुद्ध)

तीन घटनाएँ घटित हुईं। (शुद्ध)

2. अच्छे लड़का झूठ नहीं बोलते। (अशुद्ध)

अच्छे लड़के झूठ नहीं बोलते। (शुद्ध)

3. लड़कियों ने कहा कि वह कमरे में बैठेंगी। (अशुद्ध)

लड़कियों ने कहा कि वे कमरे में बैठेंगी। (शुद्ध)

4. उसका प्राण निकल गया। (अशुद्ध)

उसके प्राण निकल गए। (शुद्ध)

5. आपका दर्शन हो गया। (अशुद्ध)

आपके दर्शन हो गए। (शुद्ध)

4. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार होता है, यथा–

1. लड़का जाता है। 2. लड़की जाती है।

कभी-कभी ईकरान्त संज्ञाओं को भ्रमवश स्त्रीलिंग समझ लिया जाता है और क्रियापद में अशुद्ध लिंग का प्रयोग किया जाता है, यथा–

1. उसने मीठी दही खाई। (अशुद्ध)

उसने मीठा दहीं खाया। (शुद्ध)

2. हाथी जाती है। (अशुद्ध)

हाथी जाता है। (शुद्ध)

3. मैंने तकिया लगाई। (अशुद्ध)

मैंने तकिया लगाया। (शुद्ध)

4. उसने गाजर काटा। (अशुद्ध)

उसने गाजर काटी। (शुद्ध)

5. लड़कों ने मैच देखी। (अशुद्ध)

लड़कों ने मैच देखा। (शुद्ध)

6. उसने करवट बदला। (अशुद्ध)

उसने करवट बदली। (शुद्ध)

सर्वनाम का लिंग उससे सम्बन्धित संज्ञा के अनुसार होता है, यथा–

1. मेरा घर।
2. मेरी पुस्तक।
3. उसकी छाती फूल गयी।
4. मेरा टखना टूट गया।

विशेषण विशेष्य :

1. वह विद्वान महिला है। (अशुद्ध)

वह विदूषी महिला है। (शुद्ध)

2. पुत्री पराया धन होता है। (अशुद्ध)

पुत्री पराया धन होती है। (शुद्ध)

3. साफी सूख गया। (अशुद्ध)

साफी खूब गई। (शुद्ध)

4. यह प्रणाली बदलता है। (अशुद्ध)

यह प्रणाली बदलती है। (शुद्ध)

5. कुएँ का पानी खारी है। (अशुद्ध)
कुएँ का पानी खारा है। (शुद्ध)

6. भोजन व्यवस्था गड़बड़ा गया। (अशुद्ध)
भोजन व्यवस्था गड़बड़ा गई। (शुद्ध)

5. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ

कारक चिह्नों के प्रयोग में भी अशुद्धियाँ देखी जाती हैं। कर्ता कारक के चिह्न 'ने' का प्रयोग पंजाबी भाषी लोग अशुद्ध रूप में करते हैं, यथा–

1. मैंने नहीं जाना हैं। (अशुद्ध)
मुझे नहीं जाना है। (शुद्ध)

2. लल्लू पपीता खाया। (अशुद्ध)
लल्लू ने पपीता खाया। (शुद्ध)

3. नरेश खाना खाया। (अशुद्ध)
नरेश ने खाया खाया। (शुद्ध)

अकर्मक क्रियाओं के साथ कर्ता कारक का चिह्न 'ने' प्रयुक्त नहीं होता, यथा–

1. बच्चों ने नहीं सोया। (अशुद्ध)
बच्चे नहीं सोए। (शुद्ध)

2. स्त्रियों ने नहीं हँसा। (अशुद्ध)
स्त्रियाँ नहीं हँसी। (शुद्ध)

3. मैंने नहाया। (अशुद्ध)
मैं नहाया। (शुद्ध)

कर्मकारक के चिह्न 'को' का प्रयोग सम्प्रदान कारक के लिए करना अशुद्ध है, यथा–

1. मैं ये पुस्तकें राम को लाया हूँ। (अशुद्ध)
मैं ये पुस्तकें राम के लिए लाया हूँ। (शुद्ध)

2. प्रशासन ने व्यवस्था सुधारने को कदम उठाया। (अशुद्ध)
प्रशासन ने व्यवस्था सुधारने के लिए कदम उठाया। (शुद्ध)

अन्य उदाहरण :

1. वह पेन के साथ लिखता है। (अशुद्ध)
वह पेन से लिखता है। (शुद्ध)

2. मुझे कहा गया है। (अशुद्ध)
मुझसे कहा गया है। (शुद्ध)

3. पुस्तक के अन्दर सौ पृष्ठ हैं। (अशुद्ध)
पुस्तक में सौ पृष्ठ हैं। (शुद्ध)

4. मैं भगवान् के सहारे पर जीवित हूँ। (अशुद्ध)
मैं भगवान् के सहारे जीवित हूँ। (शुद्ध)

5. उससे जाकर के कहना। (अशुद्ध)
उससे जाकर कहना। (शुद्ध)

6. हाथी की एक सूँड़ होती है। (अशुद्ध)

हाथी के एक सूँड़ होती है। (शुद्ध)

6. द्विरुक्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ

एक ही अर्थ वाले दो शब्दों का प्रयोग 'द्विरुक्त' कहा जाता है। जिसको वाक्य में आवश्यक रूप से प्रयोग कर दिया जाता है, द्विरुक्ति का प्रयोग अशुद्ध है, जैसे-

1. वह यहीं से वापस लौटकर आएगा। (अशुद्ध)
   वह यहीं से लौटकर आएगा। (शुद्ध)
   अथवा वह यही वापस आएगा। (शुद्ध)
2. स्थान केवल मात्र महिलाओं के लिए सुरक्षित है। (अशुद्ध)
   स्थान केवल महिलाओं के लिए सुरक्षित है। (शुद्ध)
   अथवा स्थान मात्र महिलाओं के लिए सुरक्षित है। (शुद्ध)
3. कामपाल सबसे श्रेष्ठतम छात्र है। (अशुद्ध)
   कामपाल श्रेष्ठतम छात्र है। (शुद्ध)
4. वह गाँधी कैप टोपी पहने है। (अशुद्ध)
   वह गाँधी टोपी पहने हैं। (शुद्ध)
5. सज्जन पुरुष सबका भला करते हैं। (अशुद्ध)
   सज्जन सबका भला करते हैं। (शुद्ध)
6. वह विलाप करता हुआ रोने लगा। (अशुद्ध)
   वह विलाप करने लगा। (शुद्ध)
7. मिस कुमारी मालती आई हैं। (अशुद्ध)
   मिस मालती आई हैं। (शुद्ध)
   अथवा कुमारी मालती आई हैं। (शुद्ध)
8. वह समय का अच्छा सदुपयोग करता है। (अशुद्ध)
   वह समय का सदुपयोग करता है। (शुद्ध)
9. लोकसभा के अधिकांश सदस्य अनुपस्थित थे। (अशुद्ध)
   लोकसभा के अधिकतर सदस्य अनुपस्थित थे। (शुद्ध)

वाक्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ

वाक्य कर्ता-प्रधान तथा कर्म-प्रधान दो प्रकार के होते हैं। कर्ता-प्रधान को कर्तवाच्य और कर्म-प्रधान को कर्मवाच्य कहते हैं। वाक्य को कर्तवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तित करते समय क्रिया सम्बन्धी अशुद्धि हो जाती है, यथा-

1. प्रस्तुत पद्यांश 'जयद्रथ वध' कविता से लिया है। (अशुद्ध)
   प्रस्तुत पद्यांश 'जयद्रथ वध' कविता से लिया गया है। (शुद्ध)
2. यह कार्य बच्चों से किया गया है। (अशुद्ध)
   यह कार्य बच्चों द्वारा किया गया है। (शुद्ध)

शब्द रचना से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

1. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ : किसी शब्द में स्वर एवं व्यंजन वर्णों के शुद्ध क्रम को वर्तनी कहते हैं, जैसे-

'नगर' शब्द में न, ग तता र वर्ण इसकी वर्तनी है। यदि इन वर्णों या इनके स्वर (मात्रा) में परिवर्तन

होगा, तो वह वर्तनी की अशुद्धि मानी जाएगी।

'नगर' को नग्र लिखना वर्तनी की अशुद्धि है। इसी प्रकार कारण को कारन, कविता को कबिता आदि लिखना वर्तनी की अशुद्धि होती है। यह पूर्व में लिखा जा चुका है।

वर्तनी सम्बन्धी प्रमुख नियम निम्न प्रकार हैं-

1. खड़ी पाई। वाले व्यंजनों से संयुक्त अक्षर बनाते समय उनके पाई हटाकर संयुक्त रूप बनाना चाहिए न कि हलंत का प्रयोग करके, जैसे-

कच्चा (शुद्ध)	कच्‌चा (अशुद्ध)
विघ्न (शुद्ध)	विघ्‌न (अशुद्ध)
कुत्ता (शुद्ध)	कुत्‌ता (अशुद्ध)
शय्या (शुद्ध)	शय्‌या (अशुद्ध)

2. 'क' तथा 'फ' से बनने वाले संयुक्त वर्ण 'पक्का' तथा 'रफ्तार' की भाँति बनाने चाहिए। न कि पक्‌का की तरह।

3. ट, ड, द तथा ड़ आदि से संयुक्त वर्ण इन पर हलंत लगाकर बनाए जाएँ, यथा - पट्‌टी, गट्‌ठर, गड्‌ढ़ा, गद्‌दा।

4. 'र' से बनने वाले संयुक्त रूप तीन प्रकार से लिखे जाते हैं-

प् + र = प्र (प्रकार)	र् + क = र्क (अर्क)
क् + र = क्र (क्रम)	ट् + र = ट्र (राष्ट्र)

श्र को श लिखना अशुद्ध माना गया है, यथा-

श्रीमान शुद्ध है न कि शीमान

5. ऋ से संयुक्ताक्षर बनाते समय ऋ को वर्ण के नीचे जोड़ना चाहिए, जैसे-

वृष्टि, सृष्टि कृष्ण (शुद्ध)

व्रिष्टि, स्त्रिष्टि, क्रिष्ण (अशुद्ध)

6. श, ष तता स के प्रयोग में अशुद्धि, जैसे-

शुद्ध	**अशुद्ध**
विशाल	विसाल
विषम	विशम या विराम
प्रसाद	प्रशाद

'ष' वर्ण के योग से बनने वाले शब्द हिन्दी में बहुत थोड़े हैं, उनको याद रखा जा सकता है, यथा- काषाय, कृषक, विषम, विष, कृषि, कृष्ण, ऋषि आदि।

ष वर्ण से प्रारम्भ होने वाले शब्द भी हिन्दी में गिने-चुने हैं, यथा-

षट्‌कोण, षडानन, षड्यन्त्र आदि।

अनुपयुक्त शब्द प्रयोग विषयक अशुद्धियाँ

प्रकरण प्रसंगादि की दृष्टि से अनुपयुक्त एवं अशुद्ध शब्द प्रयोग से इस प्रकार की अशुद्धियों निम्नस्तर होती है जैसे-

1.	पूज्यनीय पिताजी आ गए।	(अशुद्ध)
	पूज्य पिताजी आ गए।	(शुद्ध)
2.	सौभाग्यवती लता का विवाह हो गया।	(अशुद्ध)
	सौभाग्य कांक्षिणी लता का विवाह हो गया।	(शुद्ध)

3.	उसने बैठकर आसन ग्रहण किया।	(अशुद्ध)
	उसने आसन ग्रहण किया।	(शुद्ध)
4.	उसे उत्तीर्ण होने की आशंका है।	(अशुद्ध)
	उसे उत्तीर्ण होने की आशा है।	(शुद्ध)
5.	वह आप से श्रद्धा करता है।	(अशुद्ध)
	वह आपके प्रति श्रद्धा रखता है।	(शुद्ध)
6.	आज बेशुमार गर्मी है।	(अशुद्ध)
	आज बेहद गर्मी है।	(शुद्ध)
7.	उसकी आयु तिथि क्या है?	(अशुद्ध)
	उसकी जन्मतिथि क्या है?	(शुद्ध)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ बताइए?

(2) अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ बताइए?

(3) वचन संबंधी अशुद्धियाँ लिखिए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) लिंग संबंधी अशुद्धियाँ बताइए?

(2) कारक संबंधी अशुद्धियाँ बताइए?

(3) द्विरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ बताइए?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः अपने साथी विद्यार्थियों की भाषागत अशुद्धियों की सूची बनाइए तथा सही वाक्य प्रस्तावित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्तिः विद्यार्थियों को अशुद्धि रहित भाषा प्रयोग की ओर प्रेरित करने के लिए कुछ नमूने उनके सामने रखिए।

⊙

व्याकरण : विराम चिह्न

विराम चिह्न प्रयोग : जिन चिह्नों का वाक्यों में रुकने, ठहरने के लिए प्रयोग होता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं। विराम चिह्न एक प्रकार का शब्दानुशासन ही है। विराम चिह्नों के द्वारा वाक्य अपने सुष्ठु और परिष्कृत रूप में प्रस्तुत होते हैं।

विराम शब्द का अर्थ है ठहरना, रुकना। उच्चारण की दृष्टि से वाक्य को अनेक उपखण्डों में विभाजित किया जाता है। इन उपखण्डों के विराम चिह्नों को ही विराम कहते हैं। ये पाठकों के भाव बोध को सरल बनाते हैं, इनसे भाव एवं विचार की स्पष्टता बढ़ती है, वाक्य गठन सौन्दर्य बढ़ता है तता भावाभिव्यक्ति सुचारु होती है, ये एक प्रकार के विशेष ठहरावस्थल हैं।

विराम चिह्नों की जरा-सी त्रुटि से ही वाक्यार्थ में अन्तर पड़ जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी से पहले हिन्दी में विराम चिह्नों का प्रयोग नहीं होता था। अठारहवीं शताब्दी के बाद तक तो शब्द को भी पृथक-पृथक रूप से नहीं लिखा जाता था, इसमें शब्दों के खण्ड करने में दुरूहता उत्पन्न हो जाती थी। अठारहवीं शताब्दी के बाद तक इस प्रकार की लेखन शैली प्रयुक्त होती थी, यथा-

''या प्रकार भगवान् भास्कर को नमस्कार करके सब श्रद्धालु भक्तों ने परसाद ग्रहण किया और मन्दिर की ओर सीधा दर्शन कर उसी प्रकार नीचे चले गए।''

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब खड़ी बोली ने ऐतिहासिक परिवर्तित युग में प्रवेश किया तो संसार की अन्य समृद्ध भाषाओं की तरह इसमें भी शब्दानुशासन की सीमाएँ और मर्यादाएँ निश्चित की गईं। विराम चिह्नों के प्रयोग से भाषा अधिक संपृक्त तथा सुगम्य बन जाती है।

वस्तुतः लेखन मनुष्य की वैचारिकी-अभिव्यक्ति का प्रकाशन है। जैसा कि हम देखते ही हैं कि बोलते समय मनुष्य कहीं-कहीं रुकता है, कहीं कुछ विचार करता है। कहीं किसी शब्द विशेष पर अधिक बल देता है, तो किसी बात को कहकर चुप हो जाता है। पुनः दूसरे विषय पर बोलने लगता है।

लेखन में भी मनुष्य की इस मानसिक-अवस्था के अनुसार विचारांकन की व्यवस्था की गई है। इसी व्यवस्था को विराम-चिह्न कहा जा सकता है।

कभी-कभी विराम चिह्नों के गलत प्रयोगों से अर्थ ही बदल जाता है, जैसे-

1. गाओ-नाचो मत।
2. गाओ, नाचो मत।

प्रथम वाक्य में गाना-नाचना निषेध है किन्तु दूसरे वाक्य में केवल एक विराम-चिह्न के कारण अर्थ व्यंजित होता है कि गाओ लेकिन नाचो मत।

इसी प्रकार-

1. रोको, मत जाने दो।
2. रोको मत, जाने दो।

लेखन में प्रयुक्त होने वाले अनेक विरामचिह्नों के कुछ संकेत द्रष्टव्य हैं-

पूर्ण विराम (Full Stop)	।
अल्प विराम (Comma)	,
अर्ध विराम (Semi Colon)	;
प्रश्न सूचक (Sign of Interrogation)	?
विस्मयादिबोधक (Sign of Exclamation)	!
संक्षेपक चिह्न (Sign of Precis)	.
उद्धरण चिह्न (Inverted Comma)	''

कोष्ठक (Brackets)	( ), [ ], { }
योजक चिह्न (Hyphen)	-
निर्देशक (Desh)	–
विवरण चिह्न (Colon Desh)	:
अर्द्धवाक्य सूचक...	,
शब्दबल सूचक	ऽ ऽ ऽ!

पूर्ण-विराम (।) : पूर्ण-विराम वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होते हैं। जब किसी बात का एक अंश पूर्ण होता है तो उसे पूरा वाक्य कहते हैं और इसी पूर्ण वाक्य के सूचकाकं '।' चिह्न को पूर्ण-विराम कहते हैं, जैसे-

बिल्ली रास्ता काट गई। पण्डित जी ने पत्रा देखा। बुढ़िया मर गई। राम और हरी नीरज के साथ जा रहे हैं। महेन्द्र कोटा में काम करता है। राम के लड़के का यज्ञोपवीत है। गौतम शैतान लड़का है।

इन वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम विश्राम की स्थिति प्रदान करता है कुछ विशिष्ट पत्रिकाओं में अँग्रेजी भाषा की तरह (फुलस्टाप की भाँति) 'डॉट' का भी प्रयोग होता है।

अल्पविराम (,) : जब एक ही वाक्य में अनेक पदबन्ध अथवा उपवाक्य एकत्र हो जाते हैं तो उन्हें पृथक करने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है उसे अल्प विराम कहा जाता है। वाक्य वचन की प्रक्रिया में यह चिह्न क्षणिक विश्राम का सूचक है, जैसे-

हरीश मोना के साथ गया, शत्रुघ्न मथुरा से राम के साथ गया और शिवसिंह वहीं रह गया। नीरज, पंकज, राजीव, संजीव, गौतम, प्रवेश और दामोदर आज आ रहे हैं। तम वहाँ आओ, कुछ देर बैठो, तब, जा सकोगे।

अल्पविराम प्रयोग के कुछ नियम द्रष्टव्य हैं-

1. वाक्यांश में वाक्य के साथ जुड़े रहने का संकेत अल्पविराम कहलाता है, जैसे-
   वह आया, बैठा और चला गया।
2. अथवा, और, तथा, लेकिन जैसे यौगिक शब्दों से पहले अल्पविराम का प्रयोग नहीं होता, जैसे-
   जनार्दन, लछमन, और शाम चले गए। मां, वह अथवा ज्ञान वहाँ जाएँगे। तुम जाओ लेकिन जल्दी आ जाना। कन्हैया, शंकर तथा गिरधर बात कर रहे हैं।
3. वहाँ शब्दों का पुनरावृत्ति हो, वहाँ अल्प विराम प्रयुक्त होता है, जैसे-
   वह ऊँचे से, और ऊँचे से, और अधिक ऊँचे से कूद सकता है। देखो, देखो! वह आ रहा।
4. वाक्य के वाक्य खण्ड को पृथक् रखने के लिए अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   वह मकान, जो कल तक चमचमा रहा था, आज धूल में मिल गया। सुकेतु, दशरथ का भतीजा, आज मर गया। वही राकेश, जो कल छूट गया था, निश्चय ही, वह पकड़ा जाएगा। वस्तुतः, मैंने यह कार्य नहीं किया।
5. जब सम्बोधन कारक से युक्त शब्द वाक्य के प्रारम्भ में हो तो अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   हरीमोहन तुम जा नहीं रहे। अरे, मोहन, यह तुमने क्या कर दिया। हे राम, अब मैं क्या कर सकता हूँ।
6. वाक्यांश में अनेक क्रिया विशेषणों के प्रयुक्त होने पर अल्पविराम का प्रयोग होता है, जैसे-
   रमन, कपड़े उतारकर, तेल लगाकर, ऊपर की बुर्जी से यमुना में कूद पड़ा।

अर्धविराम (;) : अर्धविराम का प्रयोग अल्पविराम की ही भाँति होता है किन्तु इस विराम का प्रयोग अल्पविराम से कहीं अधिक देर रुकने के लिए किया जाता है। अर्धविराम वाक्य को पृथक-पथक खण्डों में विभाजित करता है, अथवा कहा जा सकता है कि अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक समय तक रुकने के लिए अर्धविराम का प्रयोग होता है, जैसे-

तुमने उसे पकड़ लिया; लेकिन वह भाग निकला।

जब वाक्य और वाक्यांश में एक-दूसरे का सम्बन्ध स्पष्ट करना हो और उस वाक्यांश को मुख्यवाक्य से जुड़े रखने के लिए अर्धविराम का प्रयोग होता है, जैसे-

वह पहुँचा हुआ सिद्ध है; यह सभी मान गए हैं। वह मर गया; घर गिर पड़ा; कर्जा सिर पर है; उसका तो अब राम ही मालिक है।

प्रश्न सूचक चिह्न (?) : प्रश्नात्मक वाक्यों के अन्त में प्रश्नसूचक चिह्न लगाया जाता है। किसी भी वाक्य में जब इस प्रकार का चिह्न लगाता है तो समझ लेना चाहिए कि वाक्य बोलने वाला सुनने वाले से प्रश्न कर रहा है। कभी-कभी इस प्रश्नचिह्न के न लगने से वाक्यांश को अर्थ भी बदल जाता है। जैसे-

तुम क्यों जा रहे हो? मैं इसे कैसे करूँ? वह कहाँ है? तुम कब आओगे? वह कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? मैं इस कार्य को क्यों करूँ? वह किसका है? यह किसे देना है? और वह कब आया?

संदेहात्मक अथवा व्यंग्यात्मक वाक्यों में, जिस शब्द विशेष पर सन्देह व्यक्त किया जाता हो वहाँ प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

सुनिता फासिज्म (?) थी। उसने देश का उद्धार (?) कर दिया।

जब प्रश्नवाचक शब्दों का अर्थ सम्बन्धवाचक शब्दों से जुड़ा रहता है तो वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न नहीं लगता; जैसे-

मैं जानता हूँ कि वह क्या करेगा? शास्त्री जी कैसे मरे, इसे कौन नहीं जानता?

विस्मयादिबोधक चिह्न (!) : जिस वाक्य में हर्ष विषाद, आश्चर्य, भय, करुणा, घृणा, दया आदि के भाव व्यक्त होते हों तो वहाँ वाक्यान्त में इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

हाय ! मैं मरा! अरे! यह क्या हो रहा है! वाह! क्या आनन्द आ रहा है! हाय! वह चलबसा! अरे! यह सब क्या है? छिः!चलें यहाँ से। ओह! वह डूब रहा है। हे भगवान्। बचाओ! छिः तुम्हें धिक्कार है। हे प्रभो! रक्षा करो। ओहो! तुम आ गए।

आदरणीय सम्बोधन व्यक्त करने हेतु भी यह चिह्न प्रयुक्त होता है। जैसे-

हे प्रभु! मेरा उद्धार करो। गुरु जी! मुझ बचाओ। हे माँ! आशीष प्रदान करो। हे माँ! तेरा ही सहारा है।

संक्षेप चिह्न (.) : इस प्रकार के संक्षेप चिह्न तब प्रयुक्त होते हैं जब हम किसी शब्द को पूर्ण न लिखकर अपूर्ण कर लिख देते हैं तथा उसके आगे (.) यह चिह्न लगा देते हैं तो उस अपूर्ण शब्द का पूर्ण अर्थ ग्रहण किया जाता है; यथा-

एम. ए., पी. एच. डी., म. स. विश्वविद्यालय म.ला. गुप्ता, मा. चतुर्वेदी, ग. चौबे। एस. एस. शर्मा, स्वर्गीय के लिए स्व., पण्डित के लिए- पं., डॉक्टर के लिए- डॉ. आदि

उद्धरण चिह्न (''....'') : जब किसी वाक्यांश अथवा शब्द के विशेष अभिप्राय से अथवा किसी दूसरे ग्रन्थ से उद्धरित करके, जैसे का तैसा लिखा जाता है, तब उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। प्रायः कवि का उपनाम, कविता शीर्षक, लेख का शीर्षक, इकहरे उद्धरण चिह्न में रखा जाता है।

जब किसी अन्य पुस्तक के शब्दों को जैसे का तैसा लिखना हो तो दुहरे उद्धरण चिह्न '' '' का प्रयोग होता है, जब किसी नाम विशेष को इंगित करना हो तो '...' इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे-

''यह साहित्य के जटिलतम प्रश्न कहे जा सकते हैं।'' (पुस्तक का उद्धरण)

'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त की सशक्त रचना है।

यह गोस्वामी तुलसीदास विरचित 'रामचरित मानस' में लिखा है।

जब किसी अन्य भाषा या उपभाषा के शब्द का प्रयोग नागरीलिपि में ही किया जाता है तो उस शब्द को इकहरे उद्धरण चिह्न में प्रयुक्त होता है-

ज्ञानचन्द्र (हरीश-गिरीश के पिता) आए थे।

उसकी समझ (Knowledge) बहुत कमजोर है।

गणित में इस प्रकार के कोष्ठकों का प्रयोग होता है-

4 + 5 – (8 + 2 - 3) ग 3

कभी–कभी लेखक अपना अभिप्राय व्यक्त करने के लिए भी कोष्ठक का प्रयोग करता है–

नेताजी हवाई दुर्घटना में मारे गए, (हालाँकि श्री सेन इसे नहीं मानते।)

नेहरू जी ने परोक्षरूप से साज़्यवादी व्यवस्था (चीन की तरह नहीं) को स्वीकार नहीं किया था।

योजक चिह्न (-) : सामासिक अथवा पुनरुक्त शब्दों के बीच योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

रात–दिन, हानि–लाभ, जीवन–मरण, राम–लक्ष्मण। दिन–रात वह सोता ही रहता है। दीवार–घड़ी बन्द हो गई है। वह पढ़ते–पढ़ते सो गया। वह पढ़ते–पढ़ते रुक गया। वह दौड़ते–दौड़ते गिर पड़ा। वह रुकते–रुकते चला गया।

निर्देशक चिह्न (-) : यह चिह्न योजक चिह्न से कहीं बड़ा होता है। जब किसी विशेष शब्द को बल देकर प्रस्तुत किया जाता है, अथवा उस विशिष्ट शब्द के विषय में कुछ कहा जाता है तब निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है–

उसने कहा था– मैं जबरदस्ती कर रहा हूँ!

उर्वशी में मुख्य पक्ष दो हैं– भाव तथा कला।

शब्दालंकार :

यह प्रयोग ठीक नहीं है, जैसे–

विवरण चिह्न (:-) : इस प्रकार के विवरण चिह्नों का प्रयोग तभी होता है जब किसी अर्थाभिप्राय से कुछ विवरण अथवा सूचना व्यक्त की जाती है। जैसे– निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

निम्नलिखित ढंग से इसे स्पष्ट किया जाएगा–

अर्धवाक्य सूचक चिह्न (.....) : जब किसी वाक्य अथवा शब्द को कौतूहल आश्चर्य अथवा अनावश्यक समझकर पूरा नहीं लिखा जाता तो अर्धवाक्य सूचकांक (......) लगाकर उसे छोड़ दिया जाता है; जैसे–

तुम चले आना, नहीं तो...,

उस दिन मुझे ऐसे ही..., जाना पड़ा।

उसने कहा, तुम निरुपमा...;

शब्दबल सूचकांक (ड ड ड) : जब किसी शब्द विशेष पर अधिक जोर दिया जाता है तब इसका प्रयोग किया जाता है–

गणेश। आगे मत जाना डडड

राम! तुम कहाँ हो डडड

अन्य संकेत चिह्न!

जब एक ही पृष्ठ पर एक विषय को दूसरे सन्दर्भ में प्रारम्भ से लिखना होता है, तो विषय के अन्त में क--ख--ग का चिह्न लगाकर पृष्ठ पर उस विषय को अन्तिम रूप दे दिया जाता है। जैसे–

(क) रामायण, (ख) महाभारत, और (ग) भावगत में प्राचीन पौराणिक।

तुलना सूचक चिह्न : (=)

यह चिह्न बराबरी समानता अथवा तुलना के लिए प्रयुक्त होता है। प्राय: इसका प्रयोग गणित में देखा जाता है। हिन्दी में भी शब्दार्थ प्रकट करने में इसका प्रयोग मिलता है; जैसे–

रवि = सूर्य,

राकेश = चन्द्रमा,

जलज = कमल,

पंकज = कमल

2 + 1 = 3,

4 + 6 = 10

समाप्ति सूचक-चिह्न (-----´-----´-----´-----) यह चिह्न रचना, लेख, समीक्षा एवं कथन की समाप्ति पर लगाया जाता है जैसे- (-----´-----´-----)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पूर्ण विराम किसे कहते हैं?

(2) अर्ध विराम किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में दीजिए :

(1) कोष्ठक किसे कहते हैं?

(2) उद्धरण चिह्न किसे कहते हैं?

(3) प्रश्नसूचक चिह्न किसे कहते हैं?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : विराम चिह्नों की सूची बनाकर उनके प्रयोग से संबंधित वाक्य संकलित कीजिए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : विद्यार्थियों को उच्चारण में विराम लेने के अनुरूप विराम चिह्नों का प्रयोग समझाते हुए उन्हें प्रत्यक्ष रूप में विरामचिह्नों का सही प्रयोग करने हेतु प्रेरित कीजिए।

⊙

19	# कैलेंडर

सूरज बडत्या
(जन्म : सन् 1974)

सूरज बड़त्या का जन्म दिल्ली के पास सिलमपुर नामक स्थान पर हुआ । उन्होंने 12वीं तक की शिक्षा नांगलोई में पाई। उच्च शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से पूर्ण की। वर्तमान में वे दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। सन् 1997 से कविता लेखन कर रहे हैं। राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में समीक्षा, कहानियाँ, कविताएँ, लेख आदि प्रकाशित होते हैं। इसके अतिरिक्त 'संघर्ष', 'युद्धरत आम आदमी', 'दलित आस्मिता' आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया है।

सूरज बड़त्या मूल रूप से दलित साहित्यकार हैं। अनके कहानी संग्रह 'कॉमरेड का बक्सा' का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी मुख्य कृतियाँ हैं 'दलित साहित्य पक्ष-प्रतिपक्ष', 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र', 'बाबू मंगूराम' और आदि धर्मपरिवर्तन बंजारा समुदाय पर लिखित उपन्यास शीघ्र प्रकाश्य। उनकी रचनाओं में मुख्य रूप से आदिवासी महिला, दलित महिला, किन्नर समुदाय और अल्पसंज़्यकों से जुड़ी समस्याओं का वर्णन है।

प्रस्तुत कविता कैलेंडर में एकविध कार्य से ऊबे हुए नौकरीपेशा व्यक्ति के जीवन में व्याप्त नीरसता का वर्णन है। कैलेंडर की तरह रोज अपने आप को बदलनेवाले कवि के जीवन में कहीं कोई नयापन नहीं लगता।

घर और दफ्तर में
कैलेंडर टँगा है
उसे देखकर
मुझे रोज की दिनचर्या याद आती है
रोज घर से निकलकर
ऑफिस जाता हूँ
और ऑफिस से घर
दिन, महीना बदलता जाता है
और बदलता जाता है
कैलेंडर का पन्ना
मैं भी कैलेंडर के पन्ने की तरह
रोज बदलता हूँ
पर कुछ भी नया नहीं
उसी पुराने एहसास के साथ
रोज दिन छिपने पर
सुबह की आस में
इंतजार करता हूँ
पर क्या करूँ
सूर्योदय के साथ
फिर वही काम
और फिर से इंतजार तुम्हारा
यह जानते हुए कि
सुबह की रोशनी की तरह
तुम कभी भी नहीं आओगे
सूखे बरगद को
हरीतिमा देने।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कैलेंडर तिथिपत्रक **हरीतिमा** हरियाली

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गये विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए :**
   (1) कैलेंडर कहाँ लगा है?
   (क) घर और दफ़्तर में (ख) घर और दुकान में
   (ग) घर और विद्यालय में (घ) विद्यालय और दुकान में
   (2) कैलेंडर को देखकर कवि को क्या याद आता है?
   (क) मीठी यादें (ख) बुरे दिन (ग) रोज की दिनचर्या (घ) पुराने मित्र
   (3) कवि घर से निकल कर कहाँ जाता है?
   (क) दफ़्तर (ख) दुकान (ग) कॉलेज (घ) विद्यालय
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) घर और दफ्तर में क्या टँगा है?
   (2) कवि रोज किसे बदलता है?
   (3) कवि ने किस पेड़ का जिक्र किया है?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए ।**
   (1) दिन छिपने पर कवि किसका इंतजार करता है? क्यों?
   (2) कवि की दिनचर्या क्या है?
   (3) कवि के जीवन में नयेपन का एहसास क्यों नहीं है?
4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए :**
   (1) 'कैलेंडर' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
   (2) 'तुम कभी भी नहीं आओगे सूखे बरगद को हरीतिमा देने' का भावार्थ समझाइए।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्तिः 'दलित साहित्य' के विषय में अपने शिक्षक से विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

(2) शिक्षण प्रवृत्तिः गुजरात के किसी दलित साहित्यकार के विषय में अपने छात्रों को जानकारी दीजिए ।

20 मनोहरपुरी की सीमा पर

गोवर्धनराम त्रिपाठी

(जन्म : सन् 1855 ई. : निधन : सन् 1907 ई.)

गोवर्धनराम त्रिपाठी का जन्म गुजरात के नडियाद शहर में हुआ था। वे मुंबई युनिवर्सिटी के प्रारंभिक स्नातकों में से एक थे। एल.एल.बी करने के बाद मुंबई में वकालत आरंभ किया और एक सफल वकील के रुप में ख्याति पाई। साहित्य सर्जन के प्रति उनका गहरा लगाव था।

'सरस्वती चन्द्र' उपन्यास गुजराती भाषा की उत्तम रचना है, जो चार खण्डों में विभाजित है और सभी भारतीय भाषाओं में अनूदित है। इसके अलावा 'स्नेहमुद्रा', 'लीलावती जीवन कला', 'दयाराम का अक्षर देह', 'नवलराम की जीवनकथा' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनकी निजी डायरियाँ मरणोपरांत 'स्क्रैप बुक्स नाम' से प्रकाशित हुई हैं।

प्रस्तुत उपन्यास अंश 'मनोहरपुरी की सीमा पर' 'सरस्वती चंद्र' के दूसरे खण्ड से लिया गया है। यहाँ ऐतिहासिक नगरी मनोहरपुरी की सीमाओं का प्राकृतिक, आलंकारिक एवं मनोहारी वर्णन के साथ आगे बढ़ती कथा वाचक को अपनी ओर आकर्षित करती है।

मनोहरपुरी सुवर्णपुर से लगभग दस कोस दूर है। प्राचीन काल में वह एक महान नगरी थी। विद्वान, स्वतंत्र और प्रतापी राजाओं की राजधानी थी। काल के प्रताप से उन राजाओं को ज़्म्लेच्छों ने जीत लिया और मनोहरपुरी की अवनति होने से वहाँ पर अब मात्र एक गाँव रह गया और मनोहरियु, मनोरियु आदि क्षुद्र नामों से जाना जाने लगा। आज यह गाँव रत्ननगरी राज्य के प्रदेश में है, और इतिहासपूजक बुद्धिवाले विद्याचतुर को वह प्रिय होने से उसकी सविशेष देखभाल की जाती है। विद्याचतुर का जन्म भी इसी गाँव में हुआ था। दूसरे अन्य बहुत से कारणों से भी यह गाँव उसे प्रिय लगता था। विद्याचतुर का मौसियान और गुणसुंदरी का मायका इसी गाँव में होने से तथा बाल्यावस्था और युवावस्था का प्रारंभिक काल इस दंपति द्वारा इसी गाँव में व्यतीत करने से, मनोहरपुरी दोनों को मनोहर लगती और 'मनोहरपुरी' नाम का उन्होंने जीर्णोद्धार किया था।

सर्व कृत्रिम वैभव नष्ट होने पर भी ईश्वर-प्रदत्त सुंदरता इस गाँव को छोड़कर नहीं गई थी और इस तथा दूसरे कई कारणों से बहुत से लोगों को यह स्थल परिचित और प्रिय था। सुवर्णपुर, रत्ननगरी और अंग्रेजी राज्य-इन तीनों के अधिकार क्षेत्र का यह केन्द्रबिंदु था और तीनों राज्यों के सीवान मनोहरपुरी के सीवान के साथ मिलते थे। इन राज्यों तथा ईश्वर रचना के सीवान का भी वह केन्द्रबिंदु था। पश्चिम में आधे कोस की दूरी पर समुद्र था, इसलिए पश्चिमी पवन की लहरें शीतल तथा रमणीय होकर गर्मी की दु:सहता को मनोहरपुरी से दूर रखती थीं। उत्तर में सुंदरगिरि नामक छोटे किंतु सुंदर पर्वत का आरंभ होता। दूसरे दोनों ओर बड़े वन थे। पूर्व में आम का वन, अतिविस्तृत असंख्य बरगदों की घटाएँ, गन्ने के खेत आदि से इस छोटे गाँव की दृष्टिसीमा रुंध गई थी। ऊँचे और सूखे-हरे ताड़ के जंगल दक्षिण दिशा में सुंदरता की ध्वजाओं की तरह फहराते थे और उनके लंबे और कटे-फटे पत्ते, पट्टीवाले ध्वजपट से अलग न थे। भद्रा नदी की सुभद्रा नामक शाखा पूर्व से दक्षिण में आकर टेढ़ी-मेढ़ी गति से चलती हुई सारे वनों के पत्तों तथा फल-फूलों को अपनी छाती पर बहाते-बहाते, मंद किंतु स्थिर मंद-मधुर स्वर करती-करती मूल के पास आकर समुद्र में मिलती थी। इस नदी के कारण ताड़ वन में दूसरी वनस्पतियाँ भी गुँथ गई थीं। चैत्र के इस शुक्ल पक्ष के समय में उतरते वसंत तथा आनेवाले ग्रीष्म की संधि होती थी, उस समय सुरंगित बौर तथा सुवासित टिकोरों से भरा आम्रवन और ज्वारीय समुद्र मनोहरपुरी के पूर्व-पश्चिम की सुंदरता को तराजू में तौल जाते थे।

सुवर्णपुर से निकलनेवाला रास्ता नदी की तरह आम और ताड़ के वनों को अलग कर दोनों के बीच से गुज़रता था और मनोहरपुरी की ओर मुड़ता था।

चारों ओर के वनों में छिपी संध्या जब भयमात्र त्यागकर बाहर निकल पड़ी, गोलाकार सूर्य को ताड़ के वन के पीछे लुढ़का दिया और उस ज्योति का तेज अस्त होते-होते भी ऊँचे ताड़ पर टिका हुआ दिखाई दिया, तब संध्या के कारण शीतल बनी सड़क पर एक बैलगाड़ी घिसटती चल रही थी और विश्राम-स्थल पास आया जानकर थके हुए बैलों को जोश आ रहा था। यह वही बैलगाड़ी थी जिसमें बैठकर सरस्वतीचंद्र निकला था।

बैलगाड़ीवाला भी वही था, किंतु भीतर सरस्वतीचंद्र अथवा उसके साथ का कोई भी आदमी नहीं था। मात्र बैलगाड़ी के साथ चल रहा दंडी संन्यासी अंदर चढ़ बैठा था। घटित घटना को न समझने वाले बैलों के सिर पर मात्र इन दोनों का बोझ था।

बैलगाड़ीवाला और संन्यासी हँसी-मज़ाक करते हुए गप्पें मार रहे थे और बैलगाड़ी चरमराती-चरमराती दो वनों के बीच के खाईं जैसे रास्ते पर दौड़ती-सी चल रही थी। संन्यासी के हाथ का दण्ड निर्भय स्थिति में बैलगाड़ी के पांजर पर औंधा पड़ा था और आकाश की ओर उसकी ताकती नोक रक्तरंजित थी। बैलगाड़ीवाला स्वस्थ था किंतु संन्यासी के मन में कोई शंका हो, इस तरह उसकी आँखें सावधान रहने का प्रयत्न करती हुई चारों ओर पुतलियाँ घुमा रही थीं।

सुवर्णपुर से जो तीन सवार बैलगाड़ी के पीछे चल रहे थे, वे इस समय दिखाई नहीं दे रहे थे। सरस्वतीचंद्र को जाता हुआ देख कुमुदसुंदरी ने बुलाने आए हुए सवारों में से तीन जनों को कुछ सूचना देकर सरस्वतीचंद्र के पीछे भेजा था। अब्दुल्ला, फतेहसंग और हरभमजी उन तीन सवारों के नाम थे।

बैलगाड़ी चली तब उसके आगे जो आवाज़ तथा हुँकारी आ रही थी, वह अब शांत हो गई थी और वह स्थल बैलगाड़ी कभी की पार कर चुकी थी। आम्र-वन अंग्रेजी राज्य में था। ताड़-वन सुवर्णपुर के राज्य में था, और दोनों के बीच के रास्ते का मुख मनोहरपुरी के क्षेत्र में था। उस सीवान में, एक रास्ता पूर्व-पश्चिम की ओर जाता था और वहाँ दक्षिण ओर का बंद रास्ता मिल जाता था। तीन दिशाओं के मार्ग मिलते थे, वहाँ पर यों तिराहा बनता था। गाड़ी तिराहे के पास आकर रुकी, उस समय अंधकार आकाश से उतर पड़ा और रात्रि भी विश्व से भेंट पड़ी। चंद्रमा झाँककर चला गया।

तिराहे के बीच में बरगद का एक वृक्ष था। उसके नीचे बैलगाड़ीवाले ने संन्यासी की इच्छा से बैलों को खोला और दोनों जन अंधकार में गुपचुप बातें करने लगे।

बैलगाड़ीवाला, ''ठाकुर! अब मुझे जाने दो। इस तिराहे में तिगुना भय, तुम तो मुक्त हो, पर मेरा तो घर-बार जाएगा!''

संन्यासी, ''अबे चुप, चुप! उस हरभम की मार से मेरे दाहिने पैर की हड्डी दुख रही है, मुझसे चला नहीं जाएगा और मुझे आम्रवन के उस पार वीरपुर जाना है; तेरी गाड़ी के बिना वहाँ नहीं पहुँचा जा सकता है।''

बैलगाड़ीवाला, ''तो वीरपुर में कौन बाप तुम्हें रखनेवाला है? खाचर राणा तुम्हें और मुझे दोनों को बंदी बनाकर सौंप देगा।''

संन्यासी, ''भैया! देखा नहीं अभी सुरसंग का हाथ। ये हाथ आज भूपसिंह की गद्दी को हचमचा रहे हैं और बुद्धिधन को रतजगा करवाते हैं। दो दिन में देखा नहीं जो उथल-पुथल की है उसने?''

बैलगाड़ीवाला, ''तब वीरपुर जाकर क्या करोगे?''

सुरसंग, ''राणा खाचर की हम पर बड़ी कृपा है। तुझे उनकी ओर से डर नहीं रखना है। सरकार से वह चाहे जो बोलेगा, काग़ज़ में चाहे जो लिखेगा, किंतु सुरसंग का बाल बाँका नहीं होने देगा।''

बैलगाड़ीवाला, ''तब बनिया-ब्राह्मण जो गाड़ी में बैठे थे, उनका क्या करोगे?''

सुरसंग ने इस प्रश्न का उत्तर टाल दिया, इतने में दूर अंधकार में बिगुल बजा। उत्तर में सुरसंग ने सियार जैसा विचित्र स्वर निकाला। थोड़ी देर में कुछ पद-चाप सुनाई दी। सुरसंग बरोह के मुँह के सामने खड़ा रहकर चिलम फूँककर उसमें से लपट निकालने लगा, कुछ और आदमी आए उन्हें साथ लेकर वृक्ष के नीचे मूल जगह पर आकर पुनः बैठ गया। आगंतुकों में से एक आदमी बैलगाड़ी को लेकर आने-जानेवाले आदमियों की निगरानी करने के निमित्त बरोह के पास जा बैठा। तब बाग़ी अंत:करण की बात कहने लगे।

उनके पास अब कोई पराया आदमी नहीं रहा। मात्र सबके सिर पर डालियों की पत्तियों में कोई बैठा हो, ऐसी खड़खड़ाहट हुई। सुरसंग ने चिलम सुलगाकर ऊपर देखा, कान लगाया किंतु तुरंत ही पुनः बातों में लीन हो गया।

चिलम में जब आग जली तब ऊपर की डालों में उस तेज का प्रतिबिंब पड़ता हो यों जुगनू के पंखों की तरह प्रकाश स्पष्ट होता था, किंतु उस पर किसी का ध्यान नहीं गया, और चारों ओर के अंधकार की तरह निष्कंटक परंतु हवा से हिलते ऊपर के पत्तों की आवाज़ की तरह धीमे स्वर से बाग़ियों की कहानी का रस चुपचाप कर्णोपकर्ण जमने लगा।

अनुवाद : डॉ. वीरेन्द्र नारायणसिंह

शब्दार्थ और टिप्पणी

अवनति अधोगति **मौसियान** मौसी का घर **जीर्णोधार** भरम्मत कार्य **सीवान** सीमा **टिकरों** मंजरी, आम के फूल **श्वार** भरती, उबाल **दंडी संन्यासी** हाथ में दंड लेकर भ्रमण करनेवाला साधु **चरमराती** चरमर शब्द होना **पुतलियाँ** आँखे, कीकी **तिरहा** जहाँ तीन रास्ते मिलते हो वह स्थान **रतजगा** जागरण **बिगुल** रणभेरी **लपट** ज्वाला **बरोह** वडवाई, बरगद पेड़ की ऊपर से नीचे तक फैली लड़ियाँ **बाग़ी** विद्रोही, अपने अधिकार के लिए बग़ावत करने वाला

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) मनोहरपुरी को किसने जीत लिया?
(क) हूणो ने (ख) द्रविडों ने
(ग) ज़्लेच्छो ने (घ) आर्यों ने

(2) बैलगाड़ी दो वनों के बीच से कैसे चल रही थी?
(क) धीरे-धीरे (ख) लडखड़ाती
(ग) तेजगति से (घ) चरमराती

(3) सरस्वती चन्द्र के पीछे सवारों को किसने भेजा था?
(क) कुमुदसुन्दरी (ख) गुणसुन्दरी
(ग) विद्याचतुर (घ) बुद्धिधन

(4) ''तिराहे में तिगुना भय है'' यह वाक्य कौन बोलता है?
(क) संन्यासी (ख) सुरसंग
(ग) सरस्वतीचंद्र (घ) बैलगाड़ीवाला

(5) अंधकार में बिगुल बजने पर सुरसंग ने कैसा विचित्र स्वर निकाला?
(क) सियार (ख) भालू
(ग) शेर (घ) कुत्ते

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) मनोहरपुरी सुवर्णपुर से कितनी दूर है?
(2) मनोहरपुरी के सीवान किन तीन राज्यों के सिवान से मिलते थे?
(3) बैलगाड़ी के पीछे भेजे गए तीन सवारों के क्या नाम थे?
(4) बैलगाड़ीवाले ने बैलों को कहाँ खोला?
(5) भूपसिंह की गद्दी कौन हचमचा रहा था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) किन कारणों से मनोहरपुरी लोगों को प्रिय थी?

(2) मनोहरपुरी गाँव की दृष्टिसीमा कैसे रूँध गई थी?

(3) सुवर्णपुर का रास्ता मनोहरपुरी की ओर कैसे मुड़ता था?

(4) सुरसंग ने राजा खाचर के प्रति श्रद्धा किन शब्दों में प्रगट की?

(5) चिलम की आग का प्रकाश कैसा स्पष्ट होता था?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) विद्याचतुर ने मनोहरपुरी का जिर्णोद्धार क्यों किया?

(2) भद्रानदी की सुभद्रा शाखा समुद्र में कैसे मिलती है?

(3) बैलगाड़ी कहाँ से गुजरी और तिराहे पर क्यों रुकी?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

तुम तो मुक्त हो, पर मेरा तो घर-बार जाएगा।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : सरस्वतीचन्द्र उपन्यास के चारों खण्डों को पढ़िए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : छात्रों को सरस्वतीचन्द्र फिल्म दिखाइए।

⊙

पूरक वाचन

1 वापसी

उषा प्रियंवदा
(जन्म : सन् 1930 ई.)

उषाजी का जन्म कानपुर में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पी.एच.डी. की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। वहीं से उन्हें फूलब्राईट स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। उन्होंने अमरीका के ब्लूमिंगटन इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन किया। सन् 1964 में विस्कांसिन विश्वविद्यालय मैडिसन के दक्षिण एशियाई विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर काम किया। सेवा-निवृत्त होकर वे स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

उनके पाँच उपन्यास एवं सात कहानीसंग्रह प्रकाशित हैं। उन्हें वर्ष 2008 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। अभी वे यू. एस. ए. में रहती हैं।

'वापसी' कहानी दो पीढ़ियों के अन्तराल को स्पष्ट करती है। रिटायरमेंट के बाद गजाधर बाबू बड़ी आत्मीयता के साथ परिवार के संग रहने घर लौटे थे। बीबी-बच्चों के साथ रहने की जिजीविषा लेकर आये थे। मध्यवर्गीय परिवार ने गजाधर बाबू के सारे सपने तहस-नहस कर दिए। वे बुरी तरह आहत हुए। 'वापसी' में अपनों के असह्य व्यवहार का बड़ा मार्मिक चित्रण लेखिका ने किया है।

गजाधर बाबू ने कमरे में जमे सामान पर एक नज़र दौड़ाई दो बक्स, डोलची, बालटी – ''यह डिब्बा कैसा है गनेशी ?'' उन्होंने पूछा। गनेशी बिस्तर बाँधता हुआ; कुछ गर्व, कुछ दुख, कुछ लज्जा से बोला, ''घरवाली ने साथ को कुछ बेसन के लड्डू रख दिए हैं। कहा, बाबूजी को पसन्द थे, अब कहाँ हम गरीब लोग आपकी कुछ खातिर कर पाएँगे।'' घर जाने की खुशी में भी गजाधर बाबू ने एक विषाद का अनुभव किया; जैसे एक परिचित, स्नेही, आदरमय, सहज संसार से उनका नाता टूट रहा था।

''कभी-कभी हम लोगों की भी खबर लेते रहिएगा।'' गनेशी बिस्तर में रस्सी बाँधता हुआ बोला।

''कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी। इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।''

गनेशी ने अँगोछे के छोर से आँखें पोंछी, ''अब आप लोग सहारा न देंगे, तो कौन देगा! आप यहाँ रहते तो शादी में कुछ हौसला रहता।''

गजाधर बाबू चलने को तैयार बैठे थे। रेलवे क्वार्टर का वह कमरा, जिसमें उन्होंने कितने वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न लग रहा था। आँगन में रोपे पौधे भी जान-पहचान के लोग ले गए थे और जगह-जगह मिट्टी बिखरी थी। पर पत्नी, बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठकर विलीन हो गया।

गजाधर बाबू खुश थे – बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था; बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर दी थीं; दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्राय: छोटे स्टेशनों पर रहे; और उनके बच्चे और पत्नी शहर में; जिससे पढ़ाई में बाधा न हो। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी। जब परिवार साथ था, ड्यूटी से लौटकर बच्चों से हँसते-बोलते, पत्नी से कुछ मनोविनोद करते। उन सबके चले जाने से उनके जीवन में गहन सूनापन भर उठा। खाली क्षणों में उनसे घर में टिका न जाता। कवि प्रकृति के न होने पर भी उन्हें पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें याद रहतीं। दोपहर में, गरमी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकती। उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा-सा कुछ और थाली में परोस देती; और बड़े प्यार से आग्रह करती। जब वह थके-हारे बाहर से आते, तो उनकी आहट पा वह रसोई के द्वार पर निकल आतीं; और उनकी सलज्ज आँखें मुस्करा उठतीं। गजाधर बाबू को तब, हर छोटी बात भी याद आती और वह उदास

हो उठते... अब कितने वर्षों बाद वह अवसर आया था, जब वह फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे।

टोपी उतारकर गजाधर बाबू ने चारपाई पर रख दी । जूते खोलकर नीचे खिसका दिए। अन्दर से रह-रहकर कहकहों की आवाज़ आ रही थी, इतवार का दिन था और उनके सब बच्चे इकट्ठे होकर नाश्ता कर रहे थे। गजाधर बाबू के सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई। उसी तरह मुस्कराते हुए, वह बिना खाँसे अन्दर चले आए। उन्होंने देखा कि नरेन्द्र कमर पर हाथ रखे शायद गत रात्रि की फिल्म में देखे गए किसी नृत्य की नकल कर रहा था; और बसंती हँस-हँसकर दुहरी हो रही थी। अमर की बहू को अपने तन-बदन, आँचल या घूँघट का कोई होश न था और वह उन्मुक्त रूप से हँस रही थी। गजाधर बाबू को देखते ही नरेन्द्र धप्-से बैठ गया और चाय का प्याला उठाकर मुँह से लगा लिया। बहू को होश आया और उसने झट से माथा ढँक लिया, केवल बसंती का शरीर रह-रहकर हँसी दबाने के प्रयत्न में हिलता रहा।

गजाधर बाबू ने मुस्कराते हुए उन लोगों को देखा। फिर कहा, ''क्यों नरेन्द्र, क्या नकल हो रही थी?'' ''कुछ नहीं बाबूजी।'' नरेन्द्र ने सिटपिटाकर कहा। गजाधर बाबू ने चाहा था कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जैसे सब कुण्ठित हो चुप हो गए। उससे उनके मन में थोड़ी-सी खिन्नता उपज आई। बैठते हुए बोले, ''बसंती, चाय मुझे भी देना। तुम्हारी अम्मा की पूजा अभी चल रही है क्या?''

बसंती ने माँ की कोठरी की ओर देखा, ''अभी आती ही होंगी,'' और प्याले में उनके लिए चाय छानने लगी। बहू चुपचाप पहले ही चली गई थी। अब नरेन्द्र भी चाय का आखिरी घूँट पीकर उठ खड़ा हुआ। केवल बसंती, पिता के लिहाज में, चौके में बैठी माँ की राह देखने लगी। गजाधर बाबू ने एक घूँट चाय पी; फिर कहा, ''बिट्टी - चाय तो फीकी है।''

''लाइए, चीनी और डाल दूँ।'' बसंती बोली।

''रहने दो, तुम्हारी अम्मा जब आएँगी, तभी पी लूँगा।''

थोड़ी देर में उनकी पत्नी हाथ में अर्घ्य का लोटा लिये निकलीं और अशुद्ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया। उन्हें देखते ही बसंती भी उठ गई। पत्नी ने आकर गजाधर बाबू को देखा और कहा, ''अरे, आप अकेले बैठे हैं- यह सब कहाँ गए?'' गजाधर बाबू के मन में फाँस-सी करक उठी, ''अपने-अपने काम में लग गए हैं- आखिर बच्चे ही हैं।''

पत्नी आकर चौके में बैठ गई। उन्होंने नाक-भौं चढ़ाकर चारों ओर जूठे बर्तनों को देखा। फिर कहा, ''सारे धर में जूठे बर्तन पड़े हैं। इस घर में धरम-करम कुछ नहीं। पूजा करके सीधे चौके में घुसो।'' फिर उन्होंने नौकर को पुकारा, जब उत्तर न मिला तो एक बार और उच्च स्वर में, फिर पति की ओर देखकर बोलीं, ''बहू ने भेजा होगा बाज़ार।'' और एक लम्बी साँस लेकर चुप हो रहीं।

गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इन्तज़ार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज़ सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गर्म-गर्म पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुँचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।

पत्नी का शिकायत-भरा स्वर सुन उनके विचारों में व्याघात पहुँचा। वह कह रही थीं, ''सारा दिन इसी खिच-खिच में निकल जाता है। इसी गिरस्थी का धन्धा पीटते-पीटते उमर बीत गई। कोई ज़रा हाथ भी नहीं बँटाता।''

''बहू क्या किया करती है?'' गजाधर बाबू ने पूछा।

''पड़ी रहती है। बसंती को तो, फिर कहो कि कॉलेज जाना होता है।''

गजाधर बाबू ने जोश में आकर बसंती को आवाज़ दी। बसंती भाभी के कमरे से निकली तो गजाधर बाबू ने कहा, ''बसंती, आज से शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी तुम पर है। सुबह का भोजन तुम्हारी भाभी बनाएँगी।''

बसंती मुँह लटकाकर बोली, ''बाबूजी, पढ़ना भी तो होता है।''

गजाधर बाबू ने बड़े प्यार से समझाया, ''तुम सवेरे पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुईं, उनके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची है। तुम हो, तुम्हारी भाभी हैं; दोनों को मिलकर काम में हाथ बँटाना चाहिए।''

बसंती चुप रह गई। उसके जाने के बाद, उसकी माँ ने धीरे से कहा, ''पढ़ने का तो बहाना है। कभी जी ही नहीं लगता। लगे कैसे? शीला से ही फुरसत नहीं। बड़े-बड़े लड़के हैं उस घर में, हर वक्त वहाँ घुसा रहना मुझे नहीं सुहाता। मना करूँ तो सुनती नहीं।''

नाश्ता कर गज़ाधर बाबू बैठक में चले गए। घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली-सी चारपाई डाल दी गई थी। गजाधर बाबू उस कमरे में पड़े-पड़े, कभी-कभी अनायास ही, इस अस्थायित्व का अनुभव करने लगते। उन्हें याद हो आती उन रेलगाड़ियों की, जो आतीं और थोड़ी देर रुककर किसी और लक्ष्य की ओर चली जातीं।

घर छोटा होने के कारण बैठक में ही अब अपना प्रबन्ध किया था। उनकी पत्नी के पास अन्दर एक छोटा कमरा अवश्य था। पर उसमें एक ओर अचारों के मर्तबान, दाल, चावल के कनस्टर और घी के डिब्बा से घिरा था – दूसरी ओर पुरानी रज़ाइयाँ, दरियों में लिपटीं और रस्सी से बँधीं रखी थीं, उसके पास एक बड़े-से टिन के बक्स में घर भर के गरम कपड़े लापरवाही से पड़े रहते थे। वह भरसक उस कमरे में नहीं जाते थे। घर का दूसरा कमरा अमर और उसकी बहू के पास था तीसरा कमरा, जो सामने की ओर था, बैठक था। गजाधर बाबू के आने से पहले उसमें अमर की ससुराल से आया बेंत की तीन कुर्सियों का सेट पड़ा था, कुर्सियों पर नीली गद्दियाँ और बहू के हाथों के कढ़े कुशन थे।

जब कभी उनकी पत्नी को कोई लम्बी शिकायत करनी होती, तो अपनी चटाई बैठक में डाल पड़ जाती थीं। तो वह एक दिन चटाई लेकर आ गई। गजाधर बाबू ने घर-गृहस्थी की बातें छेड़ीं। वह घर का रवैया देख रहे थे। बहुत हलके-से उन्होंने कहा कि अब हाथ में पैसा कम रहेगा, कुछ खर्च कम होना चाहिए।

''सभी खर्च तो वाजिब-वाजिब हैं, किसका पेट काटूँ? यही जोड़-गाँठ करते-करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना, न ओढ़ा।''

गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करतीं, यह स्वाभाविक था, लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात की जाती कि प्रबन्ध कैसे हो, तो उन्हें चिन्ता कम, संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे।

''तुम्हें किसी बात की कमी है अमर की माँ घर में बहू है, लड़के-बच्चे हैं, सिर्फ रुपये से ही आदमी अमीर नहीं होता।'' गजाधर बाबू ने कहा और कहने के साथ ही अनुभव किया। यह उनकी आंतरिक अभिव्यक्ति थी ऐसी कि उनकी पत्नी नहीं समझ सकतीं। ''हाँ, बड़ा सुख है न बहू से। आज रसोई करने गई है। देखो क्या होता है'' कहकर पत्नी ने आँखें मूँदीं और सो गईं। गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने सम्पूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था। चेहरा श्रीहीन और रूखा था। गजाधर बाबू देर तक निस्संग दृष्टि से पत्नी को देखते रहे और फिर लेटकर छत की ओर ताकने लगे।

अन्दर कुछ गिरा और उनकी पत्नी हड़बड़ाकर उठ बैठीं, ''लो बिल्ली ने कुछ गिरा दिया शायद!'' और वह अंदर भागीं थोड़ी देर में लौटकर आईं तो उनका मुँह फूला हुआ था – ''देखो बहू को, चौका खुला छोड़ आई, बिल्ली ने दाल की पतीली गिरा दी। सभी तो खाने को हैं, अब क्या खिलाऊँगी?'' वह साँस लेने को रुकीं और बोलीं, ''एक तरकारी और चार पराँठे बनाने में सारा डिब्बा घी उँड़ेलकर रख दिया। जरा-सा दर्द नहीं है, कमाने वाला हाड़ तोड़े और यहाँ चीजें लुटें। मुझे तो मालूम था कि यह सब काम, किसी के बस का नहीं है?''

गजाधर बाबू को लगा कि पत्नी कुछ और बोलेंगी तो उनके कान झनझना उठेंगे। ओठ भींच, करवट लेकर उन्होंने पत्नी की ओर पीठ कर ली।

रात का भोजन बसंती ने जान-बूझकर ऐसा बनाया था कि कौर तक निगला न जा सके। गजाधर बाबू चुपचाप खाकर उठ गए। पर नरेन्द्र थाली सरकाकर उठ खड़ा हुआ और बोला, ''मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता''। बसंती तुनककर बोली, ''तो न खाओ, कौन तुम्हारी खुशामद करता है।''

''तुमसे खाना बनाने को कहा किसने था?'' नरेन्द्र चिल्लाया।

''बाबूजी ने।''

''बाबूजी को बैठे-बैठे यही सूझता है।''

बसंती को उठाकर माँ ने नरेन्द्र को मनाया और अपने हाथ से कुछ बनाकर खिलाया। गजाधर बाबू ने बाद में पत्नी से कहा, ''इतनी बड़ी लड़की हो गई और उसे खाना बनाने तक का शऊर नहीं आया।''

''अरे आता सब कुछ है, करना नहीं चाहती,'' पत्नी ने उत्तर दिया। अगली शाम माँ को रसोई में देख, कपड़े बदलकर बसंती बाहर आई तो बैठक से गजाधर बाबू ने टोक दिया, ''कहाँ जा रही हो?''

''पड़ोस में, शीला के घर।'' बसंती ने कहा।

''कोई ज़रूरत नहीं है, अन्दर जाकर पढ़ो।'' गजाधर बाबू ने कड़े स्वर में कहा। कुछ देर अनिश्चित खड़े रहकर बसंती अन्दर चली गई। गजाधर बाबू शाम को रोज़ टहलने चले जाते थे। लौटकर आए तो पत्नी ने कहा, ''क्या कह दिया बसंती से? शाम से मुँह लपेटे पड़ी है। खाना भी नहीं खाया।''

गजाधर बाबू खिन्न हो आए। पत्नी की बात का उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। उन्होंने मन में निश्चय कर लिया कि बसंती की शादी जल्दी ही कर देनी है। उस दिन के बाद बसंती पिता से बची-बची रहने लगी। जाना होता तो पिछवाड़े से जाती। गजाधर बाबू ने दो-एक बार पत्नी से पूछा तो उत्तर मिला, ''रूठी हुई है।'' गजाधर बाबू को और रोष हुआ। लड़की के इतने मिज़ाज, जाने को रोक दिया तो पिता से बोलेगी नहीं। फिर उनकी पत्नी ने ही सूचना दी कि अमर अलग रहने की सोच रहा है।

''क्यों?'' गजाधर बाबू ने चकित होकर पूछा।

पत्नी ने साफ-साफ उत्तर नहीं दिया। अमर और उसकी बहू की शिकायतें बहुत थीं। उनका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पड़े रहते हैं। कोई आने-जाने वाला हो तो कहीं बैठाने की जगह नहीं। अमर को अब भी वह छोटा-सा समझते थे; और मौके-बेमौके टोक देते थे। बहू को काम करना पड़ता था और सास जब-तब फूहड़पन पर ताने देती रहती थीं। ''हमारे आने के पहले भी कभी ऐसी बात हुई थी?'' गजाधर बाबू ने पूछा। पत्नी ने सिर हिलाकर जताया कि नहीं। पहले अमर घर का मालिक बनकर रहता था- बहू को कोई रोक-टोक न थी। अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था और अन्दर से नाश्ता-चाय तैयार होकर जाता रहता था। बसंती को भी वही अच्छा लगता था।

गजाधर बाबू ने बहुत धीरे से कहा, ''अमर से कहो, जल्दबाज़ी की कोई ज़रूरत नहीं है।''

अगले दिन वह सुबह घूमकर लौटे तो उन्होंने पाया कि बैठक में उनकी चारपाई नहीं है। अन्दर आकर पूछने वाले ही थे कि उनकी दृष्टि रसोई के अन्दर बैठी पत्नी पर पड़ी। उन्होंने यह कहने को मुँह खोला कि बहू कहाँ है, पर कुछ याद कर चुप हो गए। पत्नी की कोठरी में झाँका तो अचार, रज़ाइयों और कनस्टरों के मध्य अपनी चारपाई लगी पाई। गजाधर बाबू ने कोट उतरा और कहीं टाँगने को दीवार पर नज़र दौड़ाई। फिर उसे मोड़कर अलगनी के कुछ कपड़े खिसकाकर, एक किनारे टाँग दिया। कुछ खाए बिना ही अपनी चारपाई पर लेट गए। कुछ भी हो, तन आखिरकार बूढ़ा ही था। सुबह-शाम कुछ दूर टहलने अवश्य चले जाते; पर आते-आते थक उठते थे। गजाधर बाबू को अपना बड़ा-सा, खुला हुआ क्वार्टर याद आ गया। निश्चिंत जीवन, सुबह पैसेंजर ट्रेन आने पर स्टेशन की चहल-पहल, चिरपरिचित चेहरे और पटरी पर रेल के पहियों की खट्-खट्, जो उनके लिए मधुर संगीत की तरह था। तूफान और डाक गाड़ी के इंजनों की चिग्घाड़ उनकी अकेली रातों की साथी थी। सेठ रामजीमल की मिल के कुछ लोग कभी-कभी पास आ बैठते; वही उनका दायरा था; वही उनके साथी। वह जीवन अब

उन्हें एक खोई निधि-सा प्रतीत हुआ। उन्हें लगा कि वह जिन्दगी द्वारा ठगे गए हैं। उन्होंने जो कुछ चाहा, उसमें से उन्हें एक बूँद भी न मिली।

लेटे हुए वह घर के अन्दर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास की छोटी-सी झड़प, बालटी पर खुले नल की आवाज़, रसोई के बरतनों की खटपट और उसी में दो गौरेयों का वार्तालाप; और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह यहीं है, तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, तो अपने ही घर में परदेसी की तरह पड़े रहेंगे... और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले। नरेन्द्र माँगने आया तो बिना कारण पूछे उसे रुपये दे दिए; बसंती काफी अँधेरा हो जाने के बाद भी पड़ोस में रही तो भी उन्होंने कुछ नहीं कहा; पर उन्हें सबसे बड़ा ग़म यह था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य नहीं किया। वह मन-ही-मन कितना भार ढो रहे हैं, इससे वह अनजान ही बनी रहीं। बल्कि उन्हें पति के घर के मामले में हस्तक्षेप न करने के कारण शान्ति ही थी। कभी-कभी कह भी उठतीं, ''ठीक ही है, आप बीच में न पड़ा कीजिए, बच्चे बड़े हो गए हैं। हमारा जो कर्तव्य था, कर रहे हैं। पढ़ा रहे हैं, शादी कर देंगे।''

गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त-मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई हैं कि अब वही उनकी सम्पूर्ण दुनिया बन गई है। गजाधर बाबू उनके जीवन के केन्द्र नहीं हो सकते। उन्हें तो अब उनकी शादी के लिए भी उत्साह बुझ गया। किसी बात में हस्तक्षेप न करने के लिए निश्चय के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण का एक भाग न बन सका। उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी। उनकी सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गई।

इतने सब निश्चयों के बावजूद गजाधर बाबू एक दिन बीच में दखल दे बैठे। पत्नी स्वभावानुसार नौकर की शिकायत कर रही थीं, ''कितना कामचोर है, बाज़ार की हर चीज़ में पैसा बनाता है, खाने बैठता है, तो खाता ही चला जाता है।'' गजाधर बाबू को बराबर यह महसूस होता रहता था कि उनके घर का रहन-सहन और खर्च उनकी हैसियत से कहीं ज्यादा है। पत्नी की बात सुनकर लगा कि नौकर का खर्च बिलकुल बेकार है; छोटा-मोटा काम है, घर में तीन मर्द हैं, कोई-न-कोई कर ही देगा; उन्होंने उसी दिन नौकर का हिसाब कर दिया। अमर दफ्तर से आया तो नौकर को पुकारने लगा। अमर की बहू बोली, ''बाबूजी ने नौकर छुड़ा दिया है।''

''क्यों?''

''कहते हैं खर्च बहुत है।''

यह वार्तालाप बहुत सीधा-सा था, पर जिस टोन में बहू बोली, गजाधर बाबू को खटक गया। उस दिन जी भारी होने के कारण गजाधर बाबू टहलने नहीं गए थे। आलस्य में, उठकर बत्ती भी नहीं जलाई। इस बात से बेखबर नरेन्द्र माँ से कहने लगा, ''अम्मा, तुम बाबूजी से कहतीं क्यों नहीं? बैठे-बिठाए कुछ नहीं तो नौकर ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी यह समझें कि मैं साइकिल पर गेहूँ रख आटा पिसाने जाऊँगा, तो मुझसे यह नहीं होगा।'' ''हाँ अम्माँ''- बसंती का स्वर था, ''मैं कॉलेज भी जाऊँ और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊँ, यह मेरे बस की बात नहीं है।''

''बूढ़े आदमी हैं,'' अमर भुनभुनाया, ''चुपचाप पड़े रहें। हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं!'' पत्नी ने बड़े व्यंग्य से कहा, ''और कुछ नहीं सूझा तो तुम्हारी बहू को ही चौके में भेज दिया। वह गई तो पन्द्रह दिन का राशन पाँच दिन में बनाकर रख दिया।'' बहू कुछ कहे इससे पहले वह चौके में घुस गईं। कुछ देर में अपनी कोठरी में आईं और बिजली जलाई तो गजाधर बाबू को लेटे देख बड़ी सिटपिटाईं। गजाधर बाबू की मुखमुद्रा से वह उनके भावों को अनुमान न लगा सकीं। वह चुप, आँखें बन्द किए लेटे रहे।

गजाधर बाबू चिट्ठी हाथ में लिये अंदर आए और पत्नी को पुकारा। वह भीगे हाथ लिये निकलीं और आँचल से पोंछती हुई पास आ खड़ी हुईं। गजाधर बाबू ने बिना किसी भूमिका के कहा, ''मुझे सेठ रामजीमल की चीनी-मिल में नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, वही अच्छा है। उन्होंने तो पहले ही कहा था, मैंने मना कर दिया था।'' फिर कुछ रुककर, जैसे बुझी हुई आग में एक चिनगारी चमक उठे, उन्होंने धीमे स्वर में कहा, ''मैंने सोचा था कि बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद, अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूँगा। खैर, परसों जाना है। तुम भी चलोगी?''

''मैं?'' पत्नी ने सकपकाकर कहा, ''मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा? इतनी बड़ी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की...''

बात बीच में काट गजाधर बाबू ने थके, हताश स्वर में कहा, ''ठीक है, तुम यहीं रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा था।'' और गहरे मौन में डूब गए।

नरेन्द्र ने बड़ी तत्परता से बिस्तर बाँधा और रिक्शा बुला लाया। गजाधर बाबू का टिन का बक्स और पतला-सा बिस्तर उस पर रख दिया गया। नाश्ते के लिए लड्डू और मठरी की डलिया हाथ में लिये गजाधर बाबू रिक्शे पर बैठ गए। एक दृष्टि उन्होंने अपने परिवार पर डाली और फिर दूसरी ओर देखने लगे और रिक्शा चल पड़ा। उनके जाने के बाद सब अन्दर लौट आए। बहू ने अमर से पूछा, ''सिनेमा ले चलिएगा न?'' बसंती ने उछलकर कहा, ''भइया, हमें भी।''

गजाधर बाबू की पत्नी सीधे चौके में चली गईं। बची हुई मठरियों को कटोरदान में रखकर अपने कमरे में लाईं और कनस्तरों के पास रख दिया; फिर बाहर आकर कहा, ''अरे नरेन्द्र, बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं है।''

⊙

2 दो कलाकार

भगवतीचरण वर्मा

(जन्म : सन् 1903 ई. : निधन : सन् 1981 ई.)

भगवतीचरण वर्मा का जन्म उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए., एल. एल. बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे पत्रकारिता एवं आकाशवाणी से सम्बद्ध रहे। स्वतंत्र लेखन की वृत्ति अपनाकर वे लखनऊ में बस गये। उन्हें राज्यसभा की मनोनीत सदस्यता प्रदान की गयी थी। वे मुखयत: उपन्यासकार थे। उन्होंने चौदह उपन्यास, तीन कहानी -संग्रह, तीन कविता-संग्रह, नाटक तथा एकांकी हिन्दी साहित्य को प्रदान किए हैं।

'दो कलाकार' एक हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी है। इसमें दो कलाकारों के शोषण का चित्रण मात्र नहीं अपितु कलाकारों के साहस एवं बुद्धिचातुर्य के द्वारा शोषण से मुक्त होने की बात पर बल दिया गया है। कवि चूड़ामणि एवं चित्रकार मार्तंड अनुक्रम से प्रकाशक परमानन्द तथा रईस रामनाथ एवं मकान मालिक बुलाकीदास से जमकर लोहा लेते हैं। इन सबको बारी-बारी से पराजित करते हैं। प्रस्तुत एकांकी में आशावादी संघर्ष की चेतना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ढंग से रेखांकित हुई है।

पात्र-परिचय

चूड़ामणि : एक कवि

मार्तंड : एक चित्रकार

परमानंद : एक प्रकाशक

रामनाथ : एक रईस

बुलाकीदास : मकान मालिक

स्थान : किसी बड़े नगर के एक बड़े मकान का एक कमरा।

समय : दिन में कोई समय ।

(एक बड़ा-सा कमरा। कमरे में किसी प्रकार का कोई फर्नीचर नहीं है। अंदर की तरफ कमरे के आधे भाग में तसवीरें बिखरी पड़ी हैं और दूसरे आधे भाग में पुस्तकें बिखरी पड़ी हैं। फर्श पर स्टेज के एक विंग से लेकर दूसरे विंग तक एक चटाई बिछी है। चटाई के बीचो बीच एक तकिया है, जो स्टेज के सामने न होकर दोनों विंगों के सामने हैं। तकिये को अपनी पीठ पर रखकर विंग की ओर मुँह किए एक ओर पंडित चूड़ामणि बैठे हैं और दूसरी ओर मिस्टर मार्तंड बैठे हैं। चूड़ामणि के आगे एक मोटा-सा रजिस्टर है, जिस पर वे फाउंटेनपेन से लिख रहे हैं। मार्तंड के आगे एक छोटा-सा स्टैंड है, जिस पर एक अधबनी तसवीर लगी है। मार्तंड के हाथ में एक तूली है और वह तसवीर बना रहा है।)

चूड़ामणि : (लिखते-लिखते कलम रोक कर पर उसकी आँखें रजिस्टर पर ही लगी हैं।) सुना मार्तंड! आज मैं प्रकाशक परमानंद के यहाँ गया था। वह बोला कि किताबें बिकती ही नहीं, पैसा कहाँ से आए। एक पैसा मेरे पास नहीं। और बदमाश ने कल ही एक मोटर खरीदी है।

मार्तंड : (तूली रोककर और तसवीर की ओर ध्यान से देखते हुए) भाई, यह तो बुरी सुनाई। मैं तो सोचता था कि तुम रुपए ले आए होगे, नहीं तो मैं ही लाला रामनाथ के हाथ सात रुपए में ही तसवीर बेच देता।

चूड़ामणि : (रजिस्टर पर आँखें गड़ाता है; मस्तक पर बल पड़ जाते हैं।) क्या कहा? तुम भी रुपए नहीं लाए?

मार्तंड : (चित्र पर तूली से रंग देते हुए) लाता कैसे? भला बताओ, पचास रुपए की तसवीर के अगर कोई पच्चीस तक दे, तो भी वह बेची जा सकती है। लेकिन जब कोई यह कहे कि मैं सात रुपए के ऊपर एक कौड़ी भी नहीं दे सकता, तब भला तुम्हीं बतलाओ मैं क्या कर सकता था!

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) हुँ! ऐसी बात है! तुम्हारी जगह अगर मैं होता तो मैं उससे साफ कहता कि तुम्हारे

बाप ने भी कभी तसवीर खरीदी है कि तुम्हीं खरीदोगे- यह कहकर मैं सीधा वापस आता।

मार्तंड : (तसवीर बनाता हुआ) अच्छा होता यार कि तुम्हीं मेरी जगह वहाँ होते।

चूड़ामणि : (लिखा हुआ) तो क्या तुम बुद्धू की तरह चले आए?

मार्तंड : (तसवीर बनाना रोककर तसवीर की ओर देखता है।)

नहीं यार; मैंने तो उठने की तैयारी करते हुए सिर्फ इतना कहा - तुम चोर हो। और जब उसने सिर उठाया, तब मुझसे न रहा गया और मैंने उससे कहा - तुम उठाईगीर हो! और जब उसने मेरी तरफ देखा, तब मैं उससे इतना कहने का लालच न रोक सका और मैंने उससे कहा - तुम गिरहकट हो!

चूड़ामणि : (हँसते हुए रजिस्टर को देखता है।) बात तो तुमने बेजा नहीं कहीं।

मार्तंड : (मुस्कराते हुए तसवीर पर तूली चलाने लगता है।) नहीं, बात तो बेजा नहीं थी, लेकिन जो बात कहने के जोश में मैं यह भूल गया था कि मैं उसके घर में बैठा हूँ और उसके दस-पाँच नौकर भी हैं।

चूड़ामणि : (कलम जमीन पर ठोंकते हुए।) तो फिर तुम पिटे भी?

मार्तंड : (तूली रोककर) अगर पिटता तो भी अच्छा था; क्योंकि इधर बहुत दिनों से पिटा नहीं हूँ, लेकिन इसकी नौबत ही न आई। उसने नौकरों को आवाज दी और चार आदमी कमरे में घुस आए। उसने कहा - मारो! और मैं समझा कि मुझसे कह रहा है। लिहाजा मैंने ताना घूँसा, और वह बैठा था सामने। सो घूँसा ठीक उसकी नाक पर पड़ा।

चूड़ामणि : (चौंककर हाथ ऊपर उठाते हुए) वेल डन! शाबाश!

(फिर लिखने लगता है।) लेकिन तुम बच कैसे आए?

मार्तंड : (तूली नीचे रखते हुए) यह बात हुई कि नौकरों ने सँभाला उसे, और मैं तसवीर उठाकर वहाँ से भागा। लोग ले-दे करते ही रहे - और मैंने सीधे घर पहुँचकर साँस ली।

(कुछ रुककर) लेकिन आएगा वह जरूर! गलती से मैं अपनी तसवीर की जगह उसके बाप की तसवीर, जो उसी दिन विलायत से बनकर आई थी, उठा लाया हूँ।

चूड़ामणि : (लिखते हुए) खैर चिंता न करो। मैं परमानंद की सोने की घड़ी उठाकर यह कहता भागा कि अगर दो-घंटे के अंदर रुपया न दिया तो घड़ी मैं बेच दूँगा।

(जेब से घड़ी निकालकर वह देखता है। बाहर से दरवाजा पीटने की आवाज आती है। दोनों अपना काम रोककर दरवाजे की ओर देखते हैं।)

आवाज : चूड़ामणि जी!

मार्तंड : नहीं हैं। (मुँह फेरकर तसवीर बनाने लगता है।)

आवाज : मार्तंड जी!

चूड़ामणि : नहीं हैं। (मुँह फेरकर लिखने लगता है।)

आवाज : आप दोनों मौजूद हैं। किवाड़ खोलिए।

दोनों : नहीं खोलेंगे।

आवाज : हम दरवाजा तोड़ देंगे।

चूड़ामणि : बड़ी खुशी से! आपका दरवाजा है।

मार्तंड : और अपनी चीज अगर आप तोड़ें तो भला हम रोकने वाले कौन होते हैं?

आवाज : हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि दरवाजा खोलिए।

चूड़ामणि : किससे? चूड़ामणि से या मार्तंड से?

आवाज : दोनों से।

मार्तंड : दरवाजा खोलने का काम सिर्फ एक आदमी ही कर सकता है।

आवाज : अगर आप लोग दरवाजा नहीं खोलते – तो मैं बाहर से ताला बंद किए देता हूँ।

चूड़ामणि : ऐसी हालत में दरवाजा हमें तोड़ना पड़ेगा।

मार्तंड : और नुकसान आपका होगा।

आवाज : मार्तंड जी, आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दरवाजा खोलिए।

मार्तंड : हाँ, अब तुमने बात ढंग की की। (मार्तंड उठकर जंजीर खोलता है। बुलाकीदास का प्रवेश। मार्तंड जंजीर खुली छोड़कर लौटता है और अपनी जगह बैठकर तसवीर बनाने लगता है।)

बुलाकीदास : (बीच कमरे में खड़े होकर) छह महीने हो गए। मुझे किराया चाहिए।
(दोनों चुप रहते हैं।)

बुलाकीदास : आप लोग सुनते हैं?

चूड़ामणि : (बुलाकीदास की ओर मुड़कर) कृपा करके आप बात मार्तंड जी से करें।

बुलाकीदास : क्यों? आपसे क्यों नहीं?

चूड़ामणि : इसलिए कि आपने किवाड़ खुलवाया है मार्तंड से, मेरा किवाड़ अभी बंद है। लिहाजा आपको मुझसे बात करने का कोई अधिकार नहीं।
(लिखने लगता है।)

बुलाकीदास : मैं आप दोनों से कहता हूँ कि जब से आप लोग इस कमरे में आए हैं, तब से आप लोगों ने एक पैसा भी नहीं दिया। छह महीने हो गए। पच्चीस रुपए के हिसाब से डेढ़ सौ रुपए होते हैं।

चूड़ामणि : (लिखना बंद करके बुलाकीदास की ओर घूमता है।) बिलकुल झूठ! आपके नाती के मुंडन के निमंत्रण-पत्र पर मंगलाचरण की कविता मैंने लिखी थी, एक महीने का किराया यह अदा हुआ। (चूड़ामणि फिर लिखना शुरू कर देता है, बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि की ओर देखता है।)

मार्तंड : (तेजी से घूमकर) और आपको पूजा करने के लिए राधाकृष्ण की तसवीर मैंने बना दी थी। दूसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (यह कहकर तसवीर बनाने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से मार्तंड को देखता है।)

चूड़ामणि : (घूमकर) आपके छोटे लड़के के विवाह पर मैंने कवि-सम्मेलन करवा दिया था। तीसरे महीने का किराया वह अदा हुआ। (कहकर लिखने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से चूड़ामणि को देखता है।)

मार्तंड : (घूमकर) जन्माष्टमी में आपके मंदिर की झाँकी मैंने सजवा दी थी। चौथे महीने का किराया वह अदा हुआ। (कहकर तसवीर बनाने लगता है। बुलाकीदास आश्चर्य से मार्तंड को देखता है, फिर कुछ चुप रहकर)

बुलाकीदास : अजी वाह! इतने जरा-जरा-से काम के रुपए? वह तो आपने अपनेपन में कर दिया था।

मार्तंड : (तसवीर बनाता हुआ) हमने काम तो किया, आप तो बिना काम किए हुए ही रुपया माँगते हैं।

चूड़ामणि : (लिखता हुआ) और आप भी अपनेपन में किराया जाने दीजिए।

बुलाकीदास : आप लोग अजीब तरह के आदमी हैं। अच्छा यह चार महीने का किराया हुआ। अब दो महीने का किराया दीजिए और मकान खाली कीजिए।

चूड़ामणि : (घूमकर) संसार का एक महाकवि आपके इस चिड़ियाखानेनुमा मकान में रहा। पाँचवें महीने का किराया वह अदा हुआ।

मार्तंड : (घूमकर) संसार का एक श्रेष्ठ चित्रकार आपके इस जानवरों के रहने के काबिल मकान में रहा, छठे महीने का किराया वह अदा हुआ। (परमानंद का प्रवेश। उन्हें देखते ही चूड़ामणि उठ खडा होता है।)

चूड़ामणि : आइए परमानंद जी, पधारिए, आपका स्वागत है। अभी-अभी आपकी कीर्तिकथा पर एक पुराण आरंभ किया है। (बैठकर पढ़ता है।)

झूठ, दगाबाज़ी, मक्कारी, दुनिया के जितने छल-छंद, नहीं बचे हैं इनसे कोई, धन्य प्रकाशक परमानंद! इसीलिए हम लिखने बैठे लंबा-चौड़ा एक पुराण...

परमानंद : (हाथ जोड़ता है।) चूड़ामणि जी, अब बस कीजिए। मैं आपके रुपए लाया हूँ।

चूड़ामणि : (घूमकर) अच्छा! रुपए लाए हैं।

(मुसकराता हुआ रजिस्टर की कविता काटता है।) तो यह पुराण लिखना बंद किए देता हूँ। (परमानंद जेब से कुछ नोट निकालकर देता है। चूड़ामणि बैठे-ही-बैठे नोट लेकर बिना गिने उन्हें अपनी जेब में रख लेता है।)

परमानंद : अच्छा, अब मेरी घड़ी?

चूड़ामणि : (आश्चर्य से परमानंद को देखता है।) तो आप घड़ी वापस ले जाएँगे?

परमानंद : जी हाँ।

चूड़ामणि : बहुत अच्छा। (बाएँ हाथ से घड़ी निकालकर परमानंद को देता है, दाहिने हाथ से रजिस्टर पर लिखता है।) यह लीजिए अपनी घड़ी और यह शुरू हुआ परमानंद पुराण। उनकी बीबी मना रही है हो जाए वह जल्दी बेवा!

परमानंद : (हाथ जोड़ते हुए) नहीं, नहीं, यह घड़ी मेरी ओर से आपको भेंट है।

(चूड़ामणि घड़ी वापस लेता है। इसी समय लाला रामनाथ का प्रवेश। लाला रामनाथ के हाथ में एक चित्र है। मार्तंड उठ खड़ा होता है।)

मार्तंड : आइए, पधारिए लाला रामनाथ साहब! कैसे कष्ट करना पड़ा?

रामनाथ : मार्तंड जी! आप अपनी तसवीर की जगह मेरे पिता जी का चित्र ले आए हैं। यह लीजिए और मेरे पिता जी का चित्र वापस कीजिए।

मार्तंड : अरे हाँ, बड़ी गलती हो गई, मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। (बगल से चित्र उठाकर रामनाथ को देता है।) यह लीजिए अपने पिता जी का चित्र।

रामनाथ : (चित्र देखता है, फिर क्रोध में) यह आपने क्या किया? नाक गायब कर दी?

मार्तंड : लाला जी, नाक तो आपने अपने पिता जी की कटवा दी। पचास रुपए के चित्र के दाम सात रुपए लगाकर! (मार्तंड सब लोगों की ओर घूमता है।) आप लोग जानते हैं- ये हैं लाला रामनाथ। आपके पिता बड़े दानी थे, बड़े पुण्यात्मा थे और आप, उनके सुपुत्र ने उनकी नाक कटवा दी। आपकी तारीफ...

रामनाथ : (बात काटकर) अच्छा, अच्छा! यह तसवीर मैंने ले ली। यह लीजिए पचास रुपए और यह तसवीर ठीक कर दीजिए। (रामनाथ मार्तंड को नोट देता है। मार्तंड बिना गिने ही नोट अपनी जेब में रख लेता हैं, फिर रामनाथ के हाथ से चित्र लेकर तूली से नाक ठीक कर देता है।)

मार्तंड : यह लीजिए उनकी नाक सही सलामत वापस आ गई। (रामनाथ चित्र लेकर जल्दी-जल्दी जाता है और पीछे-पीछे परमानंद जाता है।)

बुलाकीदास : अब आपके पास रुपए आ गए हैं। किराया अदा कर दीजिए।

चूड़ामणि : कह तो दिया कि किराया हम लोग दे चुके। अब जब चढ़ेगा तब ले लेना।

बुलाकीदास : किराया चढ़ने की नौबत ही न आएगी। आप लोग अभी यह मकान खाली कीजिए।

मार्तंड : बुलाकीदास, हम आपकी तसवीर बनाकर प्रदर्शनी में भेजेंगे और आपकी उस तसवीर में आपकी नाक का होना या न होना हमारे इस मकान में रहने या इस मकान से जाने पर निर्भर है।

चूड़ामणि : और अगर हम इस मकान से गए तो परमानंद पुराण को हम बुलाकी पुराण बना देंगे। समझे!

बुलाकीदास : आप दोनों बड़े बदमाश हैं। हम आप लोगों को समझ लेंगे।

(तेजी से जाता है। चूड़ामणि उठकर दरवाजा बंद करता है। फिर अपनी जगह बैठकर लिखने लगता है। मार्तंड चित्र बनाने लगता है।)

(पटाक्षेप)

⊙

3 दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो

गोपालदास सक्सेना नीरज

(जन्म : सन् 1925)

नीरज का जन्म पुरावली गाँव ज़िला इटावा (उ.प्र.) में हुआ था। उन्होंने काम करते-करते हिन्दी साहित्य में प्रथम श्रेणी में एम.ए. किया। उन्होंने मेरठ कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य किया। इसके बाद अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में अध्यापक नियुक्त हुए। यहीं पर स्थायी निवास बनाकर रहने लगे। कवि संमेलनों में उन्हें अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई। वे बम्बई के फिल्म जगत में 'नई उमर की नई फसल' नामक फिल्म के 'कारवाँ गुजर गया....' गीत से बहुत प्रसिद्ध हुए । उनके गीत कई फिल्मों में वर्षों तक जारी रहे। बम्बई से बहुत जल्द उनका मन उचट गया और फिल्म नगरी को अलविदा कहकर मुक्त जीवन व्यतीत करने अलीगढ़ लौट आये।

उन्होंने 17 कविता संग्रह तथा गीत संग्रह लिखे। उन्हें 'पद्मश्री' एवं 'पद्मभूषण' सम्मान से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें भाषा संस्थान का सदस्य नामित किया था।

प्रस्तुत गीत में शक्ति और महानता का निरूपण है। प्रेम में तलवारों और बमों से अधिक ताकत होती है। शत्रुओं को पशुबल से ही नहीं जीत सकते, स्नेह की शक्ति से जीत सकते हैं। स्नेहपूर्ण व्यवहार करके हम सबके साथ प्यार बाँट सकते हैं। विश्व युद्धों की ज़हरीली छाया से बच सकता है। अमन और चैन के गीत चारों ओर गूँज सकते हैं। यही आशावाद यहाँ व्यक्त हुआ है।

यह नफरत की बारूद न बिखराओ साथी!
यह युद्धों का जहरीला नारा बंद करो,
जो प्यार तिजोरी-सेफों में है तड़प रहा
उसके बंधन खोलो, उसको स्वच्छंद करो!
मृत मानवता जिंदगी माँगती है तुमसे
दो बूँद स्नेह की उसके प्राणों में ढालो,
आदम का जो यह स्वर्ग हो रहा है मरघट
जाओ ममता का एक दीया उसमें बालो!

निर्माण घृणा से नहीं, प्यार से होता है;
सुख-शांति खड्ग पर नहीं, फूल पर चलते हैं,
आदमी देह से नहीं, नेह से जीता है,
बमों से नहीं, बोल से बज्र पिघलते हैं।
तुम डरो न, आगे आओ निज भुज फैलाओ
है प्यार जहाँ, तलवार वहाँ झुक जाती है,
पतवार प्रेम की छू जाए जिस किश्ती को
मँझधार पार उसको खुद पहुँचा आती है।

जिसके अधरों पर गीत प्रेम का जीवित है
वह हँसकर तूफानों को गोद खिलाता है,
जिसके सीने में दर्द छिपा है दुनिया का
सैलाबों से बढ़कर वह हाथ मिलता है।
कितना ही क्यों न बड़ा हो घाव हृदय में, पर
सच कहता हूँ यह प्यार उसे भर सकता है,
कैसा ही बागी-दुश्मन हो आदमी मगर
बस एक अश्रु का तार कैद कर सकता है।

कितना ही ऊबड़-खाबड़ हो रास्ता किंतु
यह प्यार फूल-सा तुम्हें उठा ले जाएगा,
कैसी ही भीषण अँधियारी हो धुआँधुंध
पर एक स्नेह का दीप सुबह ले आएगा।

मैं इसीलिए अक्सर लोगों से कहता हूँ,
जिस जगह बँटे नफरत, जा प्यार लुटाओ तुम
जो चोट करे तुम पर उसके चूम लो हाथ,
जो गाली दे उसको आशीष पिन्हाओ तुम

तुम शांति नहीं ला पाए युद्धों के द्वारा
अब फेंक जरा तलवार, प्यार लेकर देखो,
सच मानो निश्चय विजय तुम्हारी ही होगी
दुश्मन को अपना हृदय जरा देकर देखो।

⊙

4 मैं एक मजदूर

फूलचंद गुप्ता
(जन्म : सन् 1958 ई.)

हिन्दी के प्रगतिशील कवि फूलचंद गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अमराई गाँव में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा गाँव के सरकारी स्कूल से प्राप्त की। इसके अलावा एम.ए. (अंग्रेजी), एम.ए. (हिन्दी) गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद से, पी.एच.डी. वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत से और पी.जी. डिप्लोमा इन जर्नालिज्म भारतीय विद्याभवन, अहमदाबाद से किया। संप्रति वे साबर ग्राम सेवा महाविद्यालय सोनासन, जिला साबरकांठा में अंग्रेजी के अध्यापक हैं। वे इस समय हिंम्मतनगर में रह रहे हैं।

'इसी माहौल में', 'हे राम', 'साँसत में हैं कबूतर', 'कोई नहीं सुनाता आग के संस्मरण', 'राख का ढेर', 'कोट की जेब से झाँकती पृथ्वी', 'दीनू और कौवे', 'झरने की तरह', 'फूल और तितली' आदि इनके कविता-संग्रह हैं। 'ख़्वाबख़्वाहों की सदी है' एवं 'आरजू-ए-फूलचंद' उनके गजलसंग्रह हैं। 'प्रायश्चित नहीं प्रतिशोध' उनका कहानी-संग्रह है। अंग्रेजी और गुजराती में एक-एक पुस्तक के अलावा उन्होंने गुजराती से हिन्दी में कई पुस्तकों के अनुवाद किए हैं। फूलचंदजी को प्रगतिशील लेखन के लिए सफदर हाश्मी सम्मान, गुजरात साहित्य अकादमी पुरस्कार, अरावली शिखर सम्मान प्राप्त हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि के सृजनशील व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। मानवीय करुणा से भरा हुआ इस कविता का काव्य-नायक समस्त सृजन के मूल में मेहनतकश वर्ग को देखता है। पत्थर से मूर्ति बनानेवाला और काष्ठ, लोहे तथा कपास को मनुष्योपयोगी वस्तुओं में तब्दील करनेवाला नायक एक कलाकार है, जो संसार से बुराइयों को दूर कर हर प्रकार के सौंदर्य की रचना करता है।

पत्थर को देखते ही
मेरे भीतर जन्म लेता है संगतराश
काष्ठ के सामने मैं बढ़ई बन जाता हूँ
लोहे को देखते ही कसमसाने लगता है मेरे भीतर
एक लुहार
घन और हथौड़े के साथ
कपास की लहलहाती खेती में पाँव रखते ही
मैं बुनकर में तब्दील हो जाता हूँ

मिट्टी के हर ढेले में मुझे
मूर्ति के दर्शन होते हैं
हर धातु के स्पर्श में मुझे अनुभूति होती है
धार की
मैं शाश्वत शिक्षक
हर मासूम में मुझे सर्जक दिखाई देता है
मैं एक मजदूर, एक कारीगर
एक कलाकार हूँ
मुझे हर कच्ची चीज में
सौंदर्य दिखाई देता है!

⊙